पेंगुइन मेट्रो रीड्स

टूटे दिल वाला लड़का

दुर्जोय दत्ता का जन्म नई दिल्ली में हुआ था और उन्होंने लेखन के क्षेत्र में कदम रखने से पहले इंजीनियरिंग और बिजनेस मैनेजमेंट में डिग्री हासिल की। उनकी पहली किताब—बिल्कुल, मैं तुमसे प्यार करता हूँ …उनकी यह रचना इक्कीस वर्ष की आयु में प्रकाशित हुई और तुरंत ही बेस्टसेलर बन गई। उनके बाद के उपन्यास—अब जब आप अमीर हो गए हैं...उसने ब्रेकअप किया, मैंने नहीं!...हाँ, मैं अविवाहित हूँ!...

20 जुलाई 2002

मुझे किससे शुरुआत करनी चाहिए? 'हाय' से या 'डियर डायरी' से? 'हाय' बहुत अनौपचारिक है, और 'डियर' थोड़ा पुराना लगता है। शायद अगर मैं सवाल को गहराई से समझूँ, तो मुझे जवाब मिल जाएगा। मैं किसके लिए लिख रही हूँ? अपने उस बड़े रूप के लिए जिसके पास इसे पढ़ने का समय भी नहीं होगा? या अपनी उस बहन के लिए जो अगर मुझे यह पढ़ ले तो मेरा अंतहीन मज़ाक उड़ाएगी?
अगर किसी को इसके बारे में पता चल गया? तो उस सबसे अच्छी दोस्त के लिए जो मेरे पास है ही नहीं? या उस बॉयफ्रेंड के लिए जिससे मैंने कभी न मिलने की कसम खाई है?

ठीक है, अब कारण ढूंढने की चिंता छोड़िए, सीधे मुद्दे पर आते हैं। कल से मेरे

जीवन का एक नया अध्याय शुरू हो रहा है और मैं इसे यादगार बनाना चाहता हूँ। कल वो दिन है जब सब कुछ बदल जाएगा; ये फिल्मों के उन दृश्यों जैसा है जहाँ एक लड़की सड़क पर चल रही होती है, उलझन में होती है, खोई हुई सी, आँखों में आँसू और लड़खड़ाते कदम, लेकिन फिर धीरे-धीरे उसके अंदर आत्मविश्वास भर आता है, उसे आशा और खुशी से सराबोर कर देता है, वो मुस्कुराने लगती है, और फिर दौड़ पड़ती है, अपने अतीत से भागती हुई, अपने सारे दुखों को पीछे छोड़ते हुए, अपने भविष्य की ओर बढ़ती है, पागलों की तरह हँसती हुई। अठारह साल एक अच्छी लड़की की तरह ज़मीन की ओर देखती नज़रों से, धीमे कदमों से, धीमी और मुश्किल से सुनाई देने वाली आवाज़ों से, और एक निरंतर, विनम्र मुस्कान के साथ बिताना बहुत लंबा समय होता है। अब सब कुछ बदलने वाला है। बदलना ही होगा। है ना?

क्या अपना परिचय न देना असभ्यता

होगी? चलिए शुरू करते हैं।

नमस्कार! मैं अद्वैता वैद्य हूँ, ओम प्रकाश वैद्य और नीलिमा वैद्य की बेटी और दिव्या वैद्य की छोटी बहन। मैं देहरादून से हूँ और मम्मी, पापा, दीदी, दादाजी, बुआजी (पापा की बहन), फूफाजी (बुआजी के पति), मनीष चाचा (पापा के छोटे भाई) और अपने दो चचेरे भाई-बहनों, करण भैया और अंशुमन भैया के साथ एक पुराने से घर में रहती हूँ। मैं तीन और लोगों के साथ एक ही कमरे में रहती हूँ और इस बात को मैं पूरी तरह से बदलना चाहती हूँ।

21 जुलाई 2002

'कॉलेज में दाखिला लेने के बाद तुम जो चाहो वो कर सकती हो,' मेरी माँ स्कूल के दिनों में मुझसे हमेशा यही कहती थीं।

कुछ भी।

मैंने उसकी बात मान ली और उससे पूछा कि क्या उसकी बातें अभी भी सही हैं, और क्या मैं सचमुच ऐसा कर सकता हूँ।कुछ भी अब जबकि कॉलेज में मेरा पहला दिन था। उसने मुझे घूरकर देखा और मुझे लगता है कि वह सोच रही थी कि क्या मैं उसे भी उन्हीं रातों की नींद हराम कर दूंगी और उसी अपमान का सामना करवाऊंगी जो दिव्या दीदी ने उसे कॉलेज के दूसरे साल में पढ़ाई छोड़ने से पहले करवाया था।

उसने कहा, 'किसी से चोरी मत करो।'

यह अन्याय था। दिव्या दी और मैं—जो कलम, चॉकलेट और अखबार चुराने के लिए मशहूर थे, और बाद में नकदी भी चुराते थे—आखिरी बार चोरी करते पकड़े गए थे तीन साल पहले, जब हमने एक दुकान से तीन सौ रुपये चुराए थे।शगुनहमारे दूसरे चचेरे भाई की शादी में हमें लिफाफे मिले। उसके बाद हमें बाकी समारोहों में जाने से रोक दिया गया, लेकिन मैंने सुना है कि पनीर उतना खास नहीं था और आइसक्रीम शादी से एक घंटे पहले ही खत्म हो गई थी।*phera*अपने बचाव में मैं यह कहना चाहूँगी कि मैं दी से कहीं बेहतर चोर हूँ (सारी गड़बड़ उसी की गलती थी), हालाँकि वो मुझसे कहीं ज़्यादा अच्छी तरह से कूद सकती है, दौड़ सकती है, लात मार सकती है और घूंसे मार सकती है। दी और मैंने शादी में कभी चोरी नहीं की थी। मम्मी ने हमें अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दिया। लेकिन मम्मी और पापा दोनों ने ही हमें कभी भी ऐसी चीज़ें मिलने पर डाँटा नहीं जो हमारी नहीं थीं। पापा कहते हैं, 'हर कोई चोरी करता है,' क्योंकि वो हमेशा चोरी का शिकार होते रहे हैं। इसलिए हम दोनों धीरे-धीरे संतुलन बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

जब मैं कॉलेज में अपने पहले दिन के बाद घर लौटा, जो काफी निराशाजनक रहा और जिसमें मुख्य रूप से एक के बाद एक फॉर्म भरना, सीनियर्स के प्रति विनम्रता दिखाना और लड़के-लड़कियों को पहली नजर में प्यार में पड़ने की कोशिश करते देखना शामिल था, तब मम्मी पड़ोस की एक आंटी से बहस कर रही थीं।

‘टांके खुल गए हैं,’ चाची ने जोर से शिकायत की।

जब मैंने तुम्हें दिया था तब यह बिल्कुल सही था। तुम्हारा वजन बढ़ गया होगा।
'भाभीजी,' मम्मी ने कहा। 'कोई बात नहीं, मैं इसे दोबारा सिल दूंगी, चालीस रुपये लगेंगे।'

आंटी के विरोध करने से पहले ही, मम्मा ने आंटी की बांहों को हल्के से छूते हुए और आंखों में दयालु भाव लिए कहा, 'तुम मेरी दोस्त हो, अगर मैं तुम्हें विशेष छूट न दूं तो मैं कैसी इंसान कहलाऊंगी?'

यह हमेशा कारगर नहीं होता। दीदी मुझे बताती हैं कि उन्होंने मम्मी को थूकते, धक्का-मुक्की करते, उनकी सिलाई मशीन तोड़ते और एक बार कुछ चाचियों द्वारा थप्पड़ मारते हुए देखा है। उन पर आरोप था—जो शायद सच भी है—कि मम्मी कपड़ा चुराती हैं। और अगर उन्होंने चोरी नहीं भी की, तो भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि मम्मी की चतुराई और दृढ़ता के कारण ही दीदी और मेरी पढ़ाई का खर्च पूरा हुआ है।

मां के लिए इकबाल और अल्ताफ नाम के दो अंशकालिक दर्जी काम करते हैं।

मम्मी अक्सर कहती हैं कि उनका पूरा कारोबार इन्हीं दो आदमियों की वजह से है, लेकिन वे दादाजी और बुआजी के निर्देशों के अनुसार उन्हें कभी भी हमारे घर के अंदर आने की अनुमति नहीं है। वे मिट्टी के गिलासों में पानी पीते हैं, जिन्हें इस्तेमाल के बाद हमें तोड़ना पड़ता है।

‘कम से कम अल्ताफ चाचा तो अंदर आ सकते हैं, वो हमेशा मेरे लिए नटखट और किस्मीस की टॉफियां लाते हैं!’ मैं बचपन में अक्सर यही शिकायत करती थी। मैं उन्हें इतनी बार देखती थी कि मुझे लगने लगा था कि अल्ताफ मेरे चचेरे भाई चाचा हैं। मुझे इकबाल की कोई परवाह नहीं थी, जो कभी टॉफियां लेकर नहीं आते थे।

‘तुम्हारी बुआजी और दादाजी उन्हें पसंद नहीं करते क्योंकि वे मुसलमान हैं।’ मम्मी अक्सर कहा करती थीं

‘बुआजी और दादाजी किसी को पसंद नहीं करते! हमें भी नहीं!’ मैं जवाब देता।

बाद में मुझे एहसास हुआ कि अल्ताफ और इकबाल के प्रति उनकी नफरत न केवल इसलिए थी कि वे मुसलमान थे, बल्कि इसलिए भी थी कि वे निम्न जाति के हिंदू परिवारों से थे, जिन्होंने दो पीढ़ियों पहले इस्लाम धर्म अपना लिया था, क्योंकि वे उच्च जाति के हिंदुओं के हाथों झेले गए अपमान से तंग आ चुके थे।

दादाजी की हमसे नफरत का कारण यह था कि परिवार के सबसे बड़े बेटे पापा ने निचली जाति की महिला मम्मी से शादी करने का फैसला किया था। पापा ने दादाजी के साथ विश्वासघात किया था, जो एक स्वाभिमानी, कट्टर ब्राह्मण थे और जिन्होंने अपनी जवानी राज्य भर की मोहयाल सभाओं में ब्राह्मणों की उच्च स्थिति, उनके शुद्ध रक्त और छुआछीद की आवश्यकता का बचाव करते हुए बिताई थी। मम्मी और हमने उन्हें काफी असहज स्थिति में डाल दिया था।

हमारे रिश्तेदार, जिन्हें खून चूसने वाले राक्षस भी कहा जा सकता है, ने दिव्या दी और मुझे यह बात हमेशा याद दिलाई है, यहां तक कि तब भी जब हम इतने छोटे थे कि इनमें से कुछ भी समझ नहीं पाते थे।

'अपनी बहनों को देखो, तुम्हें ये रंग अपने पिता से मिला है,' वे कहा करते थे। 'तुम्हें अपनी माँ से कुछ नहीं मिला, तुम भाग्यशाली हो। अपने पिता को देखो, दूध की तरह गोरे हैं, और तुम्हारी माँ...'क्या क्या.'

लेकिन पापा एक*langda!* 'वह तो चल भी नहीं सकता!' दिव्या दी और मैं एक साथ कहतीं। पापा, एक लंबे, प्रभावशाली और सम्मानित होम्योपैथ डॉक्टर वैद्य के बेटे थे।

पापा अपाहिज थे। कभी-कभी वे छड़ी का इस्तेमाल करते थे, लेकिन ज़्यादातर समय वे चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान लिए लंगड़ाते हुए चलते रहते थे, इस उम्मीद में कि इससे लोगों का ध्यान उनके टेढ़े पैर से हट जाएगा। मानो दुनिया के प्रति उनका यही फर्ज़ हो कि वे कम से कम खुश तो रहें।

जब हम ऐसा कहते थे, तो रिश्तेदार चौंक जाते थे, और जल्द ही आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला शुरू हो जाता था, और मम्मी पर उंगली उठाई जाती थी कि उन्होंने हमें पापा को लंगड़ा कहकर उनका अनादर करना सिखाया है।

ये लोग ऐसी बातें और कहाँ से सीखेंगे! चाहे इनकी शादी कहीं भी हो जाए, ये हमेशा कर्कश आवाज में ही बात करेंगे। इन्हें सिखाने का कोई फायदा नहीं। 'शिष्टता।' वे हांफने लगते और जाप करने लगते, बुआजी उनमें सबसे जोर से चिल्लातीं, 'राम, राम, राम!'

बाद में पापा हमें चॉकलेट देते थे। उन्होंने ही हमें सिखाया था कि अगर कोई मम्मी को बुरा-भला कहे तो उन्हें 'लंगड़ा' कहकर बुलाना है; वे यह भी कहते थे कि मम्मी भाग्यशाली नहीं बल्कि वे खुद भाग्यशाली हैं।

23 जुलाई 2002

भाई-बहनों में ऐसी क्या बात होती है कि शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो जब वे एक-दूसरे का गला घोंटना न चाहें? पिछले कुछ महीनों में शायद ही कोई ऐसा समय रहा हो जब हमारे कमरे में रखा ट्रांजिस्टर बंद रहा हो। हम तो उस घटिया चीज़ को चालू करके ही सोते हैं, कहीं वो '*Dola Re*'गीत सेदेवदासअरबों बार। हालांकि शाहरुख खान को भगवान मानने में कोई शक नहीं है, लेकिन एक समय ऐसा आता है जब आप इस गाने को इतनी बार सुन चुके होते हैं कि आपका मन करता है कि आप ब्लैकबोर्ड पर अपने नाखून रगड़ने की आवाज़ ही सुन लें। लेकिन दिव्या दी ने तो इस स्थिति को और भी बदतर बना दिया है, क्योंकि उन्होंने एक छोटा सा स्टीरियो उधार लिया है जिसके घटिया और खराब स्पीकर से यह गाना बार-बार बजता रहता है।

मैंने पूछा, 'यह तुम्हें कहाँ से मिला?'

'एक दोस्त,' दिव्या दी ने कहा और आगे कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया। हमारे पास समय के साथ मुझे यह पता चल गया कि उससे कोई स्पष्टीकरण मांगना बेकार है क्योंकि वह झूठ बोलने में शाहरुख से भी कहीं अधिक माहिर है, जितना कि शाहरुख अपनी फिल्मों में लोगों का दिल तोड़ने और मरने में माहिर है।

'कॉलेज कैसा था?' माँ ने गर्म पानी डालते हुए पूछा।कार्डमेरे कटोरे में। 'तुमने पकौड़े नहीं बनाए? बिना पकौड़ों के कढ़ी कैसी?' मैंने बड़बड़ाते हुए कहा।

'तुम्हारी बहन वजन कम करने की कोशिश कर रही है,' उसने जवाब दिया।

'मुझे इस महीने के अंत से पहले पचपन किलो वजन करना है,' दिव्या दी ने कहा, जो पहले से ही कुपोषित दिखती हैं—खूबसूरत तो हैं, लेकिन कुपोषित। कई बार जब वह अपने लंबे बालों में कंघी करती हैं, तो मम्मी और मैं उनसे अपनी नज़रें नहीं हटा पाते।

काले बालों वाली वह लड़की उन्हें कसकर पोनीटेल में बांधती है और मम्मी द्वारा सिले हुए चुस्त सलवार कमीज पहनती है। बचपन से ही, जब वह साइकिल चलाती थी, तो उसकी ऊंची ठुड्डी, चिकनी, चमकदार त्वचा और उसकी तीखी, भेदक आंखें हमेशा एक अजीब सी बात लगती थीं। उसे तो एयर-कंडीशन्ड होंडा सिटी में होना चाहिए था। हर कुछ दिनों में, मम्मी उसे बुरी नजर से बचाने के लिए छोटी लाल मिर्च जलाती हैं या चप्पल से जमीन पर मारती हैं। जब मैं छोटी थी, तो मैं बस अपनी बड़ी बहन की तरह दिखना चाहती थी, लेकिन मैं

दिव्या दी की पांच फुट दस इंच की ऊंचाई से वह शर्मनाक रूप से आठ इंच छोटी हैं। वह सत्रह वर्षीय जुड़वां भाइयों करण और अंशुमन भैया से भी लंबी हैं, जो अपनी मर्दानगी बचाने के लिए उनसे भी लंबे होने की उम्मीद रखते हैं। अगर दादाजी की विशाल ऊंचाई उन्हें नहीं, बल्कि सिर्फ दी को ही मिले, तो वे बुरी तरह टूट जाएंगे। दिव्या दी ने आगे कहा, 'और भी कई बातें हैं।
अगले महीने एक पंजाबी म्यूजिक वीडियो के लिए ऑडिशन हैं। इसमें बहुत पैसा है।'

'कई लड़कियां ऑडिशन दे रही हैं,' मम्मी ने बची हुई कढ़ी खुरचते हुए कहा। उसकी थाली में। 'लड़कियाँ इसके लिए शॉर्ट्स पहनने को भी तैयार हैं। ज़्यादा उम्मीद मत रखो।'बीटा.'

'माँ, ऐसा नहीं है'वह 'यह एक तरह का वीडियो है। हमें सिर्फ सलवार कमीज पहनने के निर्देश दिए गए हैं,' दिव्या दी ने कहा।

इन दिनों दिव्या दी ' के स्टेप्स का अभ्यास कर रही हैं*Dola Re*वह पूरी दोपहर कमरे में ही रही, जिसका मतलब था कि मुझे और मम्मी को उसकी सफाई की जिम्मेदारियों को आपस में बांटना पड़ा।

'वो तो सपने जैसी नाचती है, है ना?' हम सब उसे मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे और मम्मी ने कहा। वो ऐसे घूम रही थी, झुक रही थी और झूम रही थी जैसे उस पर किसी भूत का साया हो, और जब गाना खत्म होते ही वो दिल टूटे हुए ज़मीन पर गिर पड़ी, तो उसने ऐश्वर्या राय, माधुरी दीक्षित और उस गाने पर नाचने की कोशिश करने वाली हर किसी को शर्मिंदा कर दिया।

'देवी,' मैंने माँ से फुसफुसाकर कहा, क्योंकि यह सच था। और फिर दिव्या दीदी से कहा, 'बस करो नाचो। अब माँ और मेरे लिए चाय बना दो। हमने बहुत मेहनत की है।'

हांफती, पसीने से तर और बेहद खूबसूरत लग रही उस लड़की ने
पूछा, 'कैसा रहा?' मैंने उसे छेड़ते हुए कहा, 'ठीक-ठाक, इससे कहीं
बेहतर हो सकता था।'

'बकवास, यह बहुत सुंदर था!' मम्मी ने कहा और अपनी खास, बहुत ज्यादा उबली हुई, किसी को भी पसंद न आने वाली चाय बनाने के लिए उठ गईं।

पापा को छोड़कर हममें से कोई भी अच्छी चाय नहीं बना सकता। बुआजी हर शाम हमें यह याद दिलाना नहीं भूलतीं, जब दादाजी और वह क्लिनिक से लौटते हैं और हम उनके लिए चाय बनाते हैं। हम जानबूझकर खराब चाय बनाते हैं, जैसे अपना छोटा सा बदला ले रहे हों—हजारों कप खराब चाय से मौत। दादाजी इसकी शिकायत बुआजी से करते थे, हमसे नहीं, मानो हमारे देखने और बोलने से वे अपवित्र हो जाएंगे। उन्होंने कभी हमारा नाम नहीं लिया, और हमें '*vo ladkiyan*'

'अगर मेरा चयन हो जाता है तो क्या बुआजी मुझे वीडियो करने देंगी?' दिव्या दी ने बाद में रात में पूछा।

पिछले साल, सैकड़ों लड़कियों में से दिव्या दी को एक संगीत वीडियो में अभिनय करने के लिए चुना गया था, जिसे वह दृढ़ता से मानती थी कि यह इस शहर से बाहर निकलने और हम सभी के लिए एक बेहतर जीवन की ओर जाने का उसका ज़रिया होगा। शूटिंग से दो दिन पहले, बुआजी को पता चला कि दिव्या दी ने झूठ बोला था और उन्हें वीडियो के लिए छोटी स्कर्ट पहननी पड़ेगी, जिससे उन्हें हमेशा के लिए एक वेश्या का लेबल लग जाएगा। पाँच हज़ार रुपये मिलने के बावजूद, बुआजी ने दिव्या दी के बाल पकड़कर उन्हें तीन दिनों तक स्टोररूम में बंद कर दिया।

‘बुआजी! पैसे ले लीजिए! मुझे वीडियो करने दीजिए! मैं वादा करती हूं कि मैं शॉर्ट्स नहीं पहनूंगी,’ दिव्या दी तब तक चिल्लाती रही जब तक उनकी आवाज बैठ नहीं गई।

लेकिन बुआजी ने मम्मी और पापा को घूरकर कहा, 'यही तो तुम्हारी बेटी की...'इज्जतइसकी कीमत? पाँच हज़ार रुपये? मुझसे ये लो और अपनी बेटी को एक थप्पड़ मारो! अगर तुमने उसे पहले ही थप्पड़ मार दिया होता तो वो...

‘दीदी, हमें उस बात को दोबारा उठाने की जरूरत नहीं है,’ पापा ने कहा था।

‘लोग कभी नहीं भूलते। तुम्हें क्या लगता है कि वे कभी इस बारे में बात करना बंद कर देंगे कि तुम्हारी चमारनी बेटी ने उस लड़के के लिए अपने पैर कैसे फैलाए और—’ बुआजी की आवाज धीमी पड़ गई, मानो वह और कुछ कह ही न पा रही हों।

मुझे लगता है कि बुआजी की समस्या केवल इस बात से नहीं थी कि दिव्या दीदी को क्या पहनना पड़ेगा या उन्होंने अतीत में हमारे परिवार की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के लिए क्या किया था। उन्हें सबसे ज्यादा डर इस बात का था कि हमारा भविष्य होगा, हमारे पास पैसा और उम्मीद होगी, और यह बात उन्हें स्वीकार्य नहीं थी।

अगर मैं वैद्य परिवार के सदस्यों द्वारा हमारे प्रति घृणा के स्तर को आंकूं, तो बुआजी सबसे ऊपर होंगी, उनके ठीक पीछे दादाजी और फिर फूफाजी और उनके बेटे करण भैया और अंशुमन भैया होंगे, जिन्हें अपनी घृणा को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए प्रशिक्षित और तैयार किया गया है; और अंत में मनीष चाचा हैं, जो इतने आत्ममुग्ध हैं कि उन्हें किसी बात की परवाह नहीं है।

अगर पापा के बड़े भाई अनिल ताऊजी जीवित होते, तो शायद हालात कुछ और होते, लेकिन अब पछताने से क्या फायदा? हमने बचपन में ही सीख लिया था कि अगर

आप एक मिश्रित जाति के परिवार हैं जिसमें एक विकलांग पिता और दो दागदार प्रतिष्ठा वाली लड़कियां हैं, ऐसे में आप दोनों के पास सहारा और प्यार के लिए केवल एक-दूसरे का ही सहारा होगा।

समय के साथ मैंने यह जाना है कि बुआजी दिव्या दीदी के लिए अपने मन में घृणा और दुर्भावना का गुप्त भंडार रखती हैं, जबकि दिव्या दीदी उनसे बिल्कुल विपरीत निकलीं।

बुआजी ने पापा और मम्मी के नाजायज और वासनापूर्ण विवाह से जिस घिनौने बच्चे के जन्म की भविष्यवाणी की थी, दिव्या दीदी एक सुंदर बच्ची थी, और यह बात बुआजी को खलती थी। वह बुआजी से बिलकुल अलग थी, जो झुर्रीदार, झुलसी हुई और बदसूरत थीं, जिन्हें देखना भी असहनीय था। शायद दिव्या दीदी को देखकर बुआजी को अपनी छिपकली जैसी और भयानक शक्ल याद आ जाती थी। मम्मी ने हमें बुआजी की शक्ल पर टिप्पणी न करने के लिए सख्ती से मना किया है, कई बार डांट भी लगाई है और थप्पड़ भी मारे हैं, लेकिन हम ऐसा सिर्फ इसलिए करते हैं क्योंकि वह अंदर से बिलकुल वैसी ही हैं। बंजर ज़मीन की तरह झुर्रीदार। मुरझाई हुई। पपड़ीदार। घिनौनी।

27 जुलाई 2002

हमारे परिवार का बस एक ही सपना है—अपना घर हो, जहाँ हम अभी रहते हैं वहाँ से भाग जाएँ—और सब कुछ इसी सपने की ओर केंद्रित है। मम्मी जो भी सूट और सलवार बेचती हैं, पापा जो भी एजेंट बनकर रेल और बस का टिकट बुक करते हैं, दिव्या दीदी जो भी डांस क्लास लेती हैं, सब इसी उम्मीद से कि एक दिन हम दादाजी के पुश्तैनी घर के एक कमरे से निकलकर कम से कम एक बेडरूम वाले घर में रह पाएँगे। क्या यह उस एक कमरे से बेहतर नहीं होगा जिसमें हम अभी रह रहे हैं?

अब तक उस सपने पर बहुत कम प्रगति हुई है, लेकिन उम्मीद ही हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। कुछ रविवारों को हम चारों बस से हरिद्वार की ओर, शहर के बाहरी इलाके में, निर्माणाधीन इमारतों का निरीक्षण करने जाते हैं, प्रॉपर्टी डीलरों से वर्ग फुट, कारपेट एरिया और मासिक किस्तों के बारे में व्यर्थ की बातचीत करते हैं, और फिर उन अपार्टमेंटों में घूमते हैं जहाँ दूसरे लोग रहते थे, और कल्पना करते हैं कि उनमें से किसी एक में रहना कैसा होगा।

'कम से कम यह किसी मूर्ख का सपना तो नहीं है,' मम्मी ने आज का अखबार दिखाते हुए कहा।

दलित महा सभा ने आंध्र प्रदेश में दलित महिलाओं की एक रैली का आयोजन किया था, जिसमें भूमि पुनर्वितरण की मांग की गई थी ताकि उन्हें भी अपनी जमीन मिल सके।

'कुछ नहीं होने वाला,' मम्मी ने अखबार का इस्तेमाल करके मेरा लंच पैक करने से पहले कहा।

हालांकि अब उनका उपनाम वैद्य है, फिर भी माँ सभी निचली जातियों के प्रति अपनापन महसूस करती हैं। ब्राह्मणवाद से घृणा करने के बावजूद, दीदी और मैंने अपने उपनामों के विशेषाधिकार का भरपूर आनंद लिया है। स्कूल में न तो दीदी और न ही मुझे कभी हीन भावना का अनुभव कराया गया क्योंकि हर कोई हमें वैद्य बहनें, एक सम्मानित, वृद्ध मोहयाल ब्राह्मण की पोतियाँ, के रूप में जानता था। लेकिन घर आने पर हमें यह बात कभी भुलाई नहीं गई। हमें लगातार याद दिलाया जाता था कि हम पाखंडी हैं, अपवित्र रक्त वाली हैं, औरभाग्यशाली ब्राह्मण के घर में रहना

हमारा परिवार। 'भाग्यशाली' की परिभाषा ही संदिग्ध है। हम तीनों जाति-विहीन, धर्म-विहीन परिवार में रहना पसंद करेंगे, बजाय भाग्यशाली होने के।

आपके भाइयों द्वारा आपको लगातार चूरी या चमार कहकर बुलाने और आपसे सेप्टिक टैंक साफ करने के लिए कहने और फिर हंसने के दीर्घकालिक दुष्प्रभावों पर शोध होना चाहिए।

वे कहते थे, 'यही तुम्हारा भाग्य है, हमारी गंदगी साफ करना, हमारे पैरों पर लोटना, चमार्नी!'

'हमारी नियति में तुम्हारे शवों को ढोना भी लिखा है। क्या यह रोमांचक नहीं है? मैं सोच रही हूँ कि हम तुम्हारे मृत, निहत्थे शरीरों का क्या करेंगे,' दिव्या दी कहती थीं।

'कुत्तों के भरोसे छोड़ दें? नहीं, बहुत आसान है,' मैं जवाब देता। 'नग्न घुमाएँ? ओह। रुकिए। उन्हें सूअरों के साथ छोड़ दें। उनके कटे हुए सिरों से फुटबॉल खेलें? उनकी गेंदों से हॉकी खेलें? अनगिनत संभावनाएं। क्या यह अद्भुत नहीं होगा?'

वे रोते-रोते भाग जाते थे।

कॉलेज में एक और निराशाजनक दिन के बाद, अपने पुराने स्कूल के पास एक साइबर कैफे में तीन घंटे तक मैंने डिप्लोमा धारकों और कॉलेज स्नातकों के लिए सीवी टाइप किए, जिन्हें दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बेंगलुरु में नौकरी की ज़रूरत थी। ये ऐसे शहर हैं जहाँ सड़कें चौड़ी हैं, लोग छोटे कपड़े पहनते हैं, इमारतें ऊंची हैं और रातें लंबी होती हैं। जब मैंने उन्हें प्रिंट किए हुए सीवी सौंपे तो उनकी आँखों में जो उत्सुकता थी, उसे देखकर मेरा भी मन हुआ कि मैं अपने लिए भी एक सीवी टाइप कर लूँ।

जब मैंने कुछ नए कीबोर्ड शॉर्टकट इस्तेमाल किए तो एक लड़के ने पूछा, 'तुमने इस तरह फॉर्मेट करना कहाँ से सीखा?' मैंने जवाब दिया, 'स्कूल से। मैं कंप्यूटर लैब का मॉनिटर था,' और रूखेपन से कहा, 'अगर तुम्हारा काम हो गया है तो तुम जा सकते हो।'

दिव्या दीदी को मुझ पर गर्व होता। वह हमेशा से मेरे आस-पास लड़कों को देखकर सतर्क रहती थीं।

'बेशक मुझे तुम्हारे लड़कों के साथ रहने की चिंता होती है। तुम इतनी खूबसूरत और इतनी भोली हो!' दिव्या दी हमेशा मुझसे यही कहती रही हैं।

'मैं नहीं, तुम हो। मैं बदसूरत बत्तख हूँ और तुम... हंस की तरह हो,' मैं अक्सर कहा करती थी।

अगर तुमने एक बार फिर ऐसा कहा तो मैं तुम्हें थप्पड़ मार दूंगी। दिल्ली की हर मॉडल मेरे जैसी दिखती है, और ऐसी लाखों मॉडल हैं। लेकिन तुम, अपनी आँखों को देखो, मानो किसी खिलौने से निकाली गई हों, एकदम काली, गहरी और चमकदार, और तुम्हारी प्यारी सी

आपका नन्हा सा चेहरा, मानो सुबह की ही तरह सुकून दे रहा हो। और देखो, देखो, बस अपने चेहरे को देखो।
होंठ कितने मुलायम हैं! ऐसा लगता है जैसे तुम अब भी बच्चे हो। देखो, जब कोई तुमसे ऐसा कहता है तो तुम्हारे गाल कैसे गुलाबी हो जाते हैं।
मैं इतनी छोटी हूँ और तुम मुझे देखकर...
'और तुम नन्ही बत्तख की तरह इधर-उधर लंगड़ाते हो, क्वैक-क्वैक करते हुए। कितना प्यारा है! तुम्हें असेंबली लाइन में लगाकर हज़ारों बना देने चाहिए। तनाव का स्तर एकदम गिर जाएगा, मैं तुम्हें बता रही हूँ। हर जगह पहली नज़र में प्यार हो जाएगा। बिल्कुल ऐसे ही।' वह उंगलियां चटकाती।
'कृपया, दी—'
'मम्माएक साथ'मैं पलक झपकते ही तुम्हारी जगह ले लूंगी,' दिव्या दी कहती थीं। माँ की कसम पवित्र थी। ऐसा नहीं था कि हम मानते थे कि अगर उनके नासमझ बच्चे झूठ बोलेंगे तो ब्रह्मांड उनकी जान ले लेगा, लेकिन यह हमारे बीच एक वादा था। माँ की कसम खाकर झूठ न बोलना। और जब भी वह यह कहतीं, मुझे तुरंत खूबसूरत महसूस होता था।
लेकिन ऐसा भी नहीं है कि मैंने उसे मेरे आसपास लड़कों की मौजूदगी को लेकर चिंता करने के कई मौके दिए हों।
हम दोनों ही लिंग के लोगों से दोस्ती करने में बेहद बदकिस्मत रहे हैं। हम हमेशा कक्षा में सबसे गरीब थे, और छोटे बच्चों के लिए भी, जब आपके पास एक भी रुपया न हो तो दोस्ती निभाना मुश्किल होता है।
खासकर तब जब दूसरे बच्चों के माता-पिता उन्हें वैद्य परिवार की लड़कियों से मेलजोल न रखने की हिदायत देते थे। गंदी वर्दी, खाली लंच बॉक्स, कोई उपहार नहीं, जन्मदिन की पार्टियाँ, उपहार वापसी, और मुश्किल से पास होने लायक अंक—कुछ भी हमारे पक्ष में नहीं था। स्थिति और भी बदतर थी क्योंकि हमारी सीमित बुद्धि के बावजूद, हम एक ऐसे स्कूल में थे जो हमारी हैसियत से परे था।
जैसे-जैसे हम बड़े होते गए, हालात और भी मुश्किल होते गए। दीदी और मैं चीजें चुराने के लिए मशहूर थे, और मम्मी को घिनौनी औरत और पापा को दुष्ट लंगड़ा कहकर चिढ़ाया जाता था।
जब डि को कलंकित किया गया तो हमारा भाग्य अंततः तय हो गया।गंदी लड़की विभोर गुप्ता के साथ उसके अफेयर के बाद से, हम दोनों का उस पर बुरा प्रभाव पड़ने लगा था।
टाइपिंग की बात पर वापस आते हैं। तीन घंटे के आसान काम के लिए 120 रुपये बहुत ज्यादा हैं। अगर मुझे हर दिन तीन घंटे टाइपिंग का काम मिले, तो मैं महीने में 3600 रुपये कमा लूंगी, और इससे घर के कई काम आसान हो जाएंगे। लेकिन

इसके लिए देहरादून के हर युवा को इस सुस्त कस्बे को छोड़कर जाने का सपना देखना होगा।

लेकिन कुल मिलाकर आज का दिन अच्छा रहा। दिव्या दी को उस महीने की तनख्वाह मिल गई, जिस महीने उन्होंने एक पारिवारिक नृत्य सिखाया था।*Dola Re*तो आज वैद्य परिवार के बच्चे अमीर हो गए! हम सबने मिलकर बुआजी से इजाज़त लेकर एक सेकंड-हैंड कूलर खरीदा। वाह, क्या ही विलासिता थी!

29 जुलाई 2002

फुफाजी बीमार पड़ गया है। दुर्भाग्य से, दादाजी का कहना है कि यह पेट के संक्रमण से ज्यादा कुछ नहीं है और ठीक हो जाएगा। हम चाहते थे कि यह बहुत गंभीर हो।

दिव्या दी ने कैंसर को चुना। मैंने दिव्या दी के इस फैसले पर आपत्ति जताते हुए कहा, 'आप कैंसर को नहीं चुन सकतीं। यह मृत्यु का एक लंबा और खर्चीला रास्ता होगा। और आप जानती ही हैं दादाजी कैसे हैं, यह उनकी प्रियतम का मामला है।'दूल्हाऔर वह उसके लिए क्या-क्या नहीं करेगा।

हम फुफाजी की जल्दी और कम खर्च में मौत के अन्य भयावह तरीकों पर चर्चा कर रहे थे, तभी मम्मी ने हमें रुकने के लिए कहा।

'जैसे कि तुम भी यही नहीं चाहती हो,' दिव्या दी ने कहा।

'नहीं,' मम्मी ने कपड़े के मटेरियल में छेद और खामियों की जांच करते हुए कहा। फिर उसने धीरे से कहा, 'और क्या आप कृपया ऐसी बातें इतनी जोर से न कहें?'

अगर आप सोचें तो—दिव्या दीदी और मैंने इस बारे में विस्तार से बात की है—फूफाजी की मौत चाहे भयानक हो या सामान्य, उससे हमें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन बुआजी की मृत्यु वैद्य परिवार के पूरे सत्ता समीकरण को उलट-पुलट कर देगी। दादाजी इस घर को एक सामंत की तरह चलाते हैं, विरोधियों पर अपनी छड़ी को तलवार की तरह लहराते हैं। इतनी उम्र होने के बावजूद, उनका शरीर बैल की तरह तगड़ा है, छह फुट तीन इंच की ऊंचाई के साथ वे हम सब से काफी लंबे हैं, और उनकी हड्डियों वाली भुजाओं में आज भी जवानी जैसी ताकत और फुर्ती है। कहते हैं कि जब वे जवान थे, तो वे नंगे हाथों से किसी की खोपड़ी कुचल सकते थे। और अगर अफवाहों पर यकीन किया जाए, तो दादाजी के एक जोरदार थप्पड़ के बाद कुछ लोगों की सुनने की शक्ति आंशिक रूप से कम हो गई है।

लेकिन उनके अधिकांश गंदे काम बुआजी करती हैं, जिन्होंने अनिल ताऊजी के निधन के बाद क्लिनिक में उनके डिप्टी/सहयोगी/कंपाउंडर का पदभार संभाला। वह मृत्यु बिल्कुल अनावश्यक थी। मुझे बताया गया है कि अनिल ताऊजी पापा और हम सभी से बहुत प्यार करते थे। वह एक दयालु, प्रतिभाशाली व्यक्ति थे, जिन्हें सही समय आने पर दादाजी से काम संभालने के लिए नियुक्त किया गया था।

पापा अक्सर कहते थे, ‘वह दादाजी की आंखों का तारा था और मैं उनके लिए मुसीबत। वह लंबा और बेहद खूबसूरत था, जबकि मैं तुम्हारे दादाजी को उनकी नाकामी की याद दिलाता था। वह मुझे अपने आसपास नहीं रख पाते थे। मैं उनके लिए शर्मिंदगी का कारण था।’

पापा जिस असफलता की बात कर रहे थे, वह दादाजी के होम्योपैथी के प्रति गर्व को ठेस पहुँचने का मामला था, जब पापा को पोलियो हो गया था। दादाजी ने अपने किसी भी बच्चे को टीका नहीं लगवाया था और वे इसके खिलाफ थे, क्योंकि उनका मानना था कि होम्योपैथी दवाओं ने टीकों को अनावश्यक बना दिया है। अनिल ताऊजी, बुआजी और मनीष चाचा स्वस्थ होकर बड़े हुए, जबकि पापा अपाहिज हो गए—दादाजी की असफलता की एक जीती-जागती निशानी, जिसे हर कोई देख सकता था। स्वाभाविक रूप से, पापा ने हमें टीका लगवाया था, लेकिन फिर दादाजी ने पूरे मोहल्ले के सामने उनकी पिटाई कर दी। यही उनके रिश्ते में आखिरी दरार थी। यही वह दिन था जब मम्मी और पापा ने फैसला किया कि वे इस घर में अपना जीवन नहीं बिताएंगे और इस दिशा में काम करना शुरू कर दिया। अनिल ताऊजी ने ही पापा को यह एहसास दिलाने में मदद की थी।

'हम आखिरकार इस विषाक्त संयुक्त परिवार से मुक्त हो गए थे। हमारा अपना घर था, जिसमें सिर्फ हम चार लोग रहते थे। वो बहुत अच्छा समय था,' पापा ने मुझे बताया था।

क्या हम खुश थे?

'बहुत खुश हो, अद्वैता। तुम्हें अपनी दीदी और मम्मी को देखना चाहिए था! आह, कितनी प्यारी मुस्कानें!' पापा ने नम आँखों से कहा था। 'तुम्हारे अनिल ताऊजी ने सब कुछ संभाल लिया। उन्होंने तुम्हारे दादाजी या दादीजी को बिना बताए हमें हर चीज़ का भुगतान कर दिया। किराया, जमा राशि, फर्नीचर, सब कुछ। तुम्हारे ताऊजी जानते थे कि तुम्हारे दादाजी के साथ उस घर में रहना तुम्हारे और तुम्हारी बहन के लिए अच्छा नहीं था। लेकिन तुम्हारे दादाजी जानते थे कि मेरे पास इतने पैसे होने की कोई गुंजाइश नहीं थी।'

'क्या दादाजी ने तुमसे पूछा कि तुम्हें पैसे कहाँ से मिले?'

उन्होंने मान लिया था कि मैं वर्षों से घर से चोरी कर रहा था,
मैं तुम्हारी माँ के अथाह लालच का शिकार हो गया था। पूरे शहर में इस बात की खूब चर्चा थी। लोग हैरान थे कि मैं परिवार से अलग क्यों हो गया। उनमें से ज्यादातर ने इसका दोष तुम्हारी माँ पर मढ़ा। लेकिन तुम्हारे ताऊजी ने दादाजी को हमारे खिलाफ कोई कदम न उठाने के लिए मना लिया।

लेकिन फिर ताऊजी बीमार पड़ गए?

'घर से निकलने के एक महीने बाद ही उन्हें लाइलाज बीमारी का पता चला। फिर बुआजी दिल्ली से वापस आ गईं।'

मुझे बताया गया है कि जब अनिल ताऊजी को पता चला कि वे अपनी लंबी बीमारी से नहीं बचेंगे, तो बुआजी बाज की तरह घर पर टूट पड़ीं। फिर उन्होंने घर, क्लिनिक, हर कीमती चीज़ पर अपना दावा ठोक दिया और दादाजी के कान भरकर मम्मी-पापा के खिलाफ़ भड़का दिए, जिनसे वे पहले से ही नफ़रत करती थीं। इतने सालों बाद भी, वे

उसने उन्हें माफ नहीं किया था। उसकी नफरत और भी गहरी, और भी कपटी हो गई थी। वह एक चालाक गिद्ध की तरह घर में डेरा डाले बैठी थी। तुम्हारी फुफाजी भी उसके साथ आई थी, कुछ ज्यादा ही सूटकेस ढोते हुए, और फिर कभी वापस नहीं गई।

लेकिन हम वापस क्यों आए? हम दूर भी रह सकते थे।

पापा ने आह भरी। 'यह हमारी मर्जी से नहीं था। तुम्हारे ताऊजी के गुजर जाने के बाद हमें ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा, बेटा।'

मैंने गुस्से से पूछा, 'वे ऐसा कैसे कर सकते हैं!'

पापा ने मेरा हाथ ऐसे पकड़ा था जैसे किसी को कोई भयानक कहानी सुनाते समय पकड़ते हैं। 'जब अनिल ताऊजी का देहांत हुआ, तो दादाजी ने अपने दुःख को क्रोध में बदल दिया। इसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ा। दादाजी के पास आज के मुकाबले कहीं ज्यादा शक्ति थी।'

आज हमारे समुदाय में। लोग उनकी बात सुनते थे। देहरादून में हर कोई किसी न किसी ऐसे व्यक्ति को जानता था जिसका इलाज दादाजी ने किया था। आपके दादाजी के पास कभी पैसे नहीं थे, लेकिन उनकी बात सुनी जाती थी, उनका सम्मान किया जाता था और उनसे डरा जाता था।

‘दादाजी ने तुम्हें धमकी दी थी?’

‘तुम्हारे दादाजी ने हमें किराए के घर से निकलवा दिया, हमारा सारा सामान छीन लिया, हम पर चोरी का आरोप लगाया और यह सुनिश्चित किया कि हमें रहने की कोई जगह न मिले। वे हमें भूख से मरते देखना चाहते थे। तीन दिन तक हम गेट के बाहर इंतजार करते रहे, आखिरकार तुम्हारी दादीजी आंगन में आईं और धमकी दी कि अगर तुम्हारे दादाजी ने हमें अंदर नहीं आने दिया तो वह खुद को आग लगा लेंगी।’

उस समय मैं चार साल की थी, लेकिन जिस छोटे से घर में हम रहने गए थे, उसकी धुंधली सी यादें मेरे दिमाग में हैं। लेकिन यह भी हो सकता है कि मैंने सुनी-सुनाई बातों के आधार पर ये यादें गढ़ी हों। लेकिन दिव्या दी को वह घर, छोटा सा बगीचा, पुराना नीम का पेड़ और मम्मी द्वारा लगाया गया तुलसी का पौधा सब कुछ साफ-साफ याद है।

पापा ने मुझे बताया कि जब हम पहली बार यहाँ रहने आए थे, तब दादीजी ने दादाजी को हमें परेशान करने से रोका था।

लेकिन उनके देहांत के बाद हालात तेज़ी से बदल गए। दादीजी के निधन के बाद बुआजी हमें घर से निकालना चाहती थीं, लेकिन जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि घर में तीन लड़कियाँ होने से नौकरानी का खर्च नहीं उठाना पड़ेगा। हमारे साथ नौकरानी जैसा ही व्यवहार किया जाता है।

हमें शौचालय इस्तेमाल करने की इजाज़त नहीं थी—और आज भी नहीं है—इसलिए पापा को बगीचे के पास बाहर शौचालय बनाना पड़ा। हम आज भी उसी का इस्तेमाल करते हैं। वहाँ पानी या बिजली नहीं है। हमारा रसोईघर भी अलग है। वह छत पर बने एक शेड में है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि बुआजी नहीं चाहतीं कि उनका खाना मम्मी के खाने के साथ मिले, हालांकि विडंबना यह है कि सबके लिए खाना मम्मी ही बनाती हैं।

एक बार बेहद मुश्किल भरे दिन के बाद मम्मी ने कहा था, 'वह हमें खुश नहीं देख सकती।' जब नगर निगम द्वारा भेजे गए जमादार सभी घरों के सेप्टिक टैंकों की सफाई कर रहे थे, तब बुआजी ने पूरी बस्ती के सामने मजाक में कहा था, 'हमें इसकी जरूरत नहीं है, हमारे घर में ही एक जमादारनी है।'

माँ ने कड़ा विरोध किया और जब दोनों के बीच कहासुनी चरम पर पहुँच गई, तो दादाजी ने हस्तक्षेप किया। उन्होंने दोनों को घर से बाहर निकाल दिया और माँ को घर साफ करने को कहा।

'*TU NAHI KAREGI TO KAUN KAREGA!* (अगर आप नहीं करेंगे तो कौन करेगा?)' दादाजी चिल्लाए थे।

मम्मी ने लगातार छह घंटे तक घर के तालाब से बाल्टी भर-भरकर गोबर नगर निगम के ट्रक तक ढोया। पूरी गली दुपट्टों और रुमालों से नाक ढककर देखती रही, जबकि छोटे बच्चे बदबू बर्दाश्त न कर पाने के कारण उल्टी कर रहे थे। मम्मी दो बार बेहोश हो गईं, और दोनों बार दादाजी ने पापा को मम्मी की मदद करने से रोकने के लिए उनके पैर पर लाठी मारी।
कितना मूर्खतापूर्ण, मूर्खतापूर्ण प्यार!

और जब वह बुखार से कांपते हुए बिस्तर पर लेटी हुई थी, तब दादाजी ने कहा, 'तुम क्यों नहीं मर गईं! अगर तुम लोगों ने हमसे चोरी न की होती तो मेरा बेटा ज़िंदा होता। हम उसका बेहतर इलाज कर सकते थे! तुमने मेरे मरते हुए बेटे से चोरी की! यही तुम्हारी सज़ा है!!'

वह बात सरासर झूठ थी, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। बुआजी और दादाजी ही नहीं, बल्कि हमें जानने वाले सभी लोग भी उस पर विश्वास करते थे। इसीलिए इस घर में जब कोई हमारे साथ बुरा बर्ताव करता है तो कोई भी हैरानी नहीं जताता।

बाद में ये कहना आसान है, लेकिन मम्मी-पापा सोचते हैं कि जब दादाजी ने उन्हें घर में नहीं आने दिया था, तब उन्हें धैर्य रखना चाहिए था। उन्हें लगता है कि दिव्या दीदी को कुछ सालों के लिए स्कूल से निकाल लेना चाहिए था और जैसे-तैसे गुजारा कर लेना चाहिए था। सालों बीतते-बीतते, दादाजी की छवि एक अभागी बेटी के बेहद सुरक्षात्मक पिता, गरीबों के लिए एक महान डॉक्टर और उस दुखद व्यक्ति के रूप में बढ़ती गई, जिनके सबसे बड़े बेटे ने उनकी बाहों में दम तोड़ दिया था। लोगों ने पापा को सबसे बुरे नजरिए से देखना शुरू कर दिया। सालों से उन्हें 'अकृतज्ञ', 'चोर', 'घिनौना' कहा जाता रहा है, और अगर कोई और होता, तो वो टूट जाता।

फुफाजी को बेहतर महसूस कराने के लिए कूलर को आज के लिए बुआजी के कमरे में रख दिया गया है।

इसके बिना बहुत गर्मी लगती है। मुझे इसकी आदत कितनी जल्दी पड़ गई? सच कहूँ तो, वैद्स विलासिता के लिए ही बने हैं।

4 अगस्त 2002

सत्रह वर्षीय जुड़वां भाई करण भैया और अंशुमन भैया, जो दादाजी के लाडले हैं, हमसे नफरत करने, हमें नीचा समझने, हमारा अपमान करने और हमारा मनोबल तोड़ने के लिए पूरी तरह से अभ्यस्त हो चुके हैं—और उन्हें वाकई में ये सब अच्छी तरह सिखाया गया है। लेकिन मम्मी और मेरे विपरीत, दिव्या दीदी को अब भी उनमें कुछ अच्छाई नज़र आती है और उन्हें विश्वास है कि वे एक दिन सुधर जाएंगे, घुटने टेककर माफी मांगेंगे। वह उनके साथ पली-बढ़ी हैं। जब वे बारह वर्ष के थे और हमारे दुख में आनंद लेने वाले नीच और धूर्त कमीनों की अपनी भूमिका को पूरी तरह से स्वीकार करने लगे थे, तब दिव्या दीदी उनका बचाव करती थीं और उनके अतीत के अच्छे व्यवहार की छवि पेश करने की कोशिश करती थीं।

'जब वे छोटे थे, तो वे मुझे कभी अपना सामान नहीं उठाने देते थे।' 'बुआजी के मना करने के बावजूद, वे अपना पनीर मेरे साथ बाँटते थे। यहाँ तक कि तुम्हारे साथ भी, लेकिन तुम्हें याद नहीं है।' 'वे तुम्हारे जूते पॉलिश करते थे, याद है?'

आज भी, दिव्या दीदी उनसे सिर्फ निराश हैं, हम सब की तरह नाराज़ नहीं। इसलिए आज दिव्या दीदी ने उनसे विनती भरे लहजे में कहा, उम्मीद थी कि वे समझ जाएंगे। लेकिन वे नहीं समझे। दीदी और मेरे ज़ोरदार विरोध के बावजूद, करण भैया और अंशुमन भैया ने खुद ही मामले को सुलझाने का फैसला कर लिया। और वह भी तब जब दिव्या दीदी ने अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर ली थी; उन्हें लगा कि यह उनका भाईचारा है, क्योंकि जब से दिव्या दीदी और मैं तेरह साल के हुए थे, वैद्यों की इज़्ज़त पूरी तरह से इस बात पर टिकी थी कि हम घर के बाहर कैसा व्यवहार करते हैं।

उन्होंने खुद को योग्य पुरुष साबित करने का एक पिछला अवसर गंवा दिया था, ऐसे पुरुष जो बहादुरी से लाठी, डंडे और हॉकी स्टिक उठा सकें और जरूरत पड़ने पर अपने परिवार की महिलाओं की रक्षा कर सकें। तीन साल पहले, जब यह अफवाह फैली कि दिव्या दी ने विभोर गुप्ता नाम के एक लड़के के साथ अपना कौमार्य खो दिया है, तब वे कुछ नहीं कर सके। जब घर पर उनसे इस बारे में पूछताछ की गई और थप्पड़ मारे गए कि क्या ये अफवाहें सच हैं, तब वे चुप रहीं। उन्होंने एक महीने तक बिना किसी भाव के मार सहन की; यहां तक कि करण भैया और अंशुमन भैया, जो उनसे कई साल छोटे थे, ने भी उन्हें अधिकारपूर्वक पीटा था।

चौदह साल के उस लड़के ने कई दिनों से उस पर हमला करने और उसे पीटने की योजना बनाई थी, लेकिन उन्हें एहसास हुआ कि यह काम पहले ही कोई और कर चुका है। विभोर गुप्ता को बुरी तरह पीटा गया था, उसके घर में तोड़फोड़ की गई थी और उसकी स्कूटर जला दी गई थी। उसके कॉलेज के क्लासरूम में आग लगा दी गई थी और उसका (और दी का भी) एडमिशन रद्द कर दिया गया था। यह सब करने वाला मेघनाद शर्मा था, जो सहारनपुर के प्रभावशाली और राजनीतिक रूप से जुड़े शक्तिशाली माता-पिता का बेटा था और दिव्या दी से उसके स्कूल के दिनों से ही बेइंतहा प्यार करता था। वह रोज़ाना झगड़ों और हाथापाई में शामिल होने के लिए बदनाम था; वह दो-तीन बार पुलिस स्टेशन भी गया था, लेकिन वहाँ उसके चाचा ही ज़िम्मेदार थे।

लेकिन जब मैंने उसे पहली बार देखा, तो वह मुझे बुरा आदमी नहीं लगा। शुरुआत तो बिलकुल हानिरहित थी।

वह हमारे स्कूल के बाहर धैर्यपूर्वक स्कूल खत्म होने का इंतजार करता और फिर बस में चढ़ने तक हमें देखता रहता। कुछ महीनों बाद वह बस के साथ-साथ गाड़ी चलाने लगा, शरमाते हुए हमारी तरफ देखता और धीरे से मुस्कुराता। दिव्या दी और मैंने शर्मिंदगी से बचने के लिए खिड़की के पास बैठना बंद कर दिया।
दूसरी लड़कियां उसके पीछा करने को प्यारा कहती थीं और उसके साथ जगह बदलना चाहती थीं।

जब दिव्या दीदी कॉलेज जाने लगीं, तो मेघनाद भी वहीं मौजूद रहने लगा, अपने दोस्तों के साथ कार पर झुककर रोज़ाना दीदी को देखता रहता था। जब आखिरकार उसने हिम्मत जुटाई, तो दिव्या दीदी ने उसे ठुकरा दिया। (उस समय, वह अपने कॉलेज के एक साथी से प्यार करती थीं, लेकिन यह बात मेरे सिवा किसी को नहीं पता थी। मुझे उनके लिखे हुए प्रेम पत्र मिल गए थे।) इस अस्वीकृति ने मेघनाद में कुछ बदलाव ला दिया, वह हमारे घर के सामने डेरा डालने लगा, उसकी आँखें ठंडी और शरीर अकड़ा हुआ। मम्मी-पापा की चेतावनियाँ कुछ समय के लिए ही कारगर रहीं।
कुछ समय बाद पता चला कि दादाजी मेघनाद के पिता को जानते थे। इसलिए उनकी गलतियों को 'लड़कों की हरकतें' कहकर टाल दिया गया। दिव्या दी उनसे बचने के लिए कॉलेज जाने के लिए लंबे रास्ते अपनाने लगीं, और जब उन्हें इस बात का पता चला, तो उन्होंने कॉलेज जाना ही छोड़ दिया। जैसे-जैसे दी उनसे दूर होती गईं, वैसे-वैसे वह और भी ज्यादा दखलंदाजी और आक्रामक होते गए।

वह दिन भर हमारे घर के पास ही मिलता था, दीदी के बाहर आने का इंतज़ार करता और उनसे बात करने की कोशिश करता। कभी-कभी वह उनका दुपट्टा या हाथ पकड़ लेता था। जब दीदी चीखने-चिल्लाने लगतीं, तभी वह उन्हें छोड़ता था।

फिर फोन आने शुरू हुए। दिन में एक बार, फिर दिन में दो बार, और उसके बाद तब तक आते रहे जब तक बुआजी ने फोन का तार खींचकर निकाल नहीं दिया।

दो बार उसने आधी रात को दरवाजा जोर से खटखटाया और फिर दादाजी के लाठी लहराते हुए बाहर आने पर भाग गया। बेशक, बुआजी और फूफाजी ने दिव्या दी पर उंगली उठाई थी।

उन्होंने कहा था, 'तुमने ही उसे प्रोत्साहित किया होगा।'

और फिर अचानक ही यह अफवाह जंगल की आग की तरह फैल गई कि कॉलेज के बाद लाइब्रेरी में दिव्या वैद्य और विभोर गुप्ता के बीच शारीरिक संबंध बने थे। हमारे जैसे छोटे कस्बे में लोग ऐसी अफवाहों पर ही जीते हैं, और जल्द ही कई लोगों ने इन अफवाहों की पुष्टि करते हुए कहा कि उन्हें हमेशा से इन दोनों के बीच कुछ न कुछ चल रहा था, ऐसा शक था। मुझे यह अफवाह बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी क्योंकि मैं जानती थी कि विभोर गुप्ता ने दिव्या से रिश्ता तोड़ दिया था—जिससे वह हफ्तों तक रोती रही—और अफवाहें शुरू होने से महीनों पहले ही उसने किसी और लड़की के साथ रिश्ता बना लिया था।

तो फिर दिव्या दी ने सच क्यों नहीं बताया?

बीते हफ्तों में मुझे अपना जवाब मिल गया। मेघनाद का हमारे घर आना धीरे-धीरे बंद हो गया। आखिरी बार जब वह हमारे घर के बाहर डेरा डाले हुए था, तो उसने और उसके दोस्तों ने शराब की बोतलें तोड़ दीं, आधी रात को एक घंटे तक गालियां बकीं और स्प्रे पेंट से 'रैंडीदीवार पर '' लिखा हुआ था। दिव्या दी और मुझे उसे मिटाकर एक बड़ा काला धब्बा बनाने में लगभग पूरा दिन लग गया।

एक दिन दिव्या दीदी ने मुझसे कहा, 'मेघनाद जैसे लड़के? वे किसी ऐसी लड़की को स्वीकार नहीं करेंगे जिसका किसी दूसरे आदमी के साथ संबंध रहा हो। यह उनकी मर्दानगी के खिलाफ है।' दरअसल, यह अफवाह दीदी ने ही गढ़ी और फैलाई थी। उन्होंने कहा था, 'इसे इस तरह देखो। विभोर शहर छोड़कर दिल्ली चला गया है, और अब मुझे मेघनाद से कोई वास्ता नहीं रखना पड़ेगा।'

करण और अंशुमन भैया ने तब इस अवसर को गंवा दिया था, लेकिन अब वे इसे गंवाने वाले नहीं थे।

मधुबन होटल, वहीं पर...*madarchod* 'वह यहीं रुक रहा है!' करण भैया ने अपने हाथ में बल्ला घुमाते हुए कहा।

वह मूर्खतापूर्ण बहादुरी दिखाने वाला है, जबकि अंशुमन भैया, जो एक डरपोक है, दोनों में से अधिक चालाक है।

करण भैया ने कहा, 'हम उसकी जमकर पिटाई करेंगे।'

हमारे समझाने से पहले ही वे दादाजी के स्कूटर पर सवार होकर तेजी से निकल गए। हम अपनी साइकिलों पर सवार होकर उनके पीछे-पीछे चले। वे बहुत जल्दी हमारी नजरों से ओझल हो गए।

उस शाम पहले, ऑडिशन के दौरान, पंजाबी गायक ने दिव्या दी के नृत्य में शामिल होने का फैसला किया और अपने हाथ उन जगहों पर रख दिए जहां उन्हें नहीं रखने चाहिए थे।

जैसा कि उम्मीद थी, दिव्या दी ने उसकी नाक पर इतनी जोर से घूंसा मारा कि वह टूट गई, और पुलिस को बुलाने की धमकी दी। उन्होंने उसे होटल से बाहर निकाल दिया। वैद्य भाई इस कहानी से संतुष्ट नहीं थे। आखिर भाई तब तक भाई नहीं कहलाएगा जब तक वह ऐसा न करे।

क्या वह अपनी बहन के मामलों में दखल देगा?

हमें वैद्य बंधुओं मिले, जो भाईचारे के आदर्श और अपने दुश्मनों का बदला लेने वाले थे। बहन का स्वाभिमान, खून से सनी नाक के साथ होटल के बाहर फुटपाथ पर बैठा था। गायक जा चुका था, और अपने दल को मेरे भाइयों से निपटने के लिए पीछे छोड़ गया था।

Karan Bhaiya was all bloodied while Anshuman Bhaiya didn't have a सच में। वे भाई थे, लेकिन एक-दूसरे से बिलकुल अलग। करण भैया झगड़ा ढूंढते हैं और उसमें कूद पड़ते हैं; उन्हें योजना बनाने का कोई शौक नहीं है, उनकी एकमात्र योजना है मुक्के। दूसरी ओर, अंशुमन भैया डरपोक और चालाक हैं। पिछले ही हफ्ते, जब दिव्या दीदी ने उनके स्कूल बैग में मेंढक भर दिए थे, तो वे बच्चे की तरह भड़क उठे थे। उन्होंने हमारे खाने में थूककर बदला लिया था।

करण भैया ने कहा, 'अगली बार उसे शहर आने दो। हम देखेंगे कि वह कैसे जाता है।'

काफी रात हो चुकी थी, इसलिए मैं और दी साइकिल से घर वापस आए, अपनी साइकिलें बिजली के खंभे से बांधीं और बाड़ फांदकर अंदर जा रहे थे कि तभी घर की बत्तियां जल उठीं। होटल में हुए झगड़े और हमारे भाइयों के वीरतापूर्ण बचाव की खबर बड़ों तक भी पहुंच चुकी थी।

दादाजी छड़ी घुमाते हुए बाहर आए और जोर से चिल्लाए, 'तुम दोनों कहाँ गए थे?'

दादाजी हमारी ओर बढ़े और अपनी छड़ी उठाकर दी के ठीक सामने रुक गए, जो खुद को एक गेंद की तरह समेटे हुए थी।

दिव्या दी ने धीरे से हकलाते हुए कहा, 'यह... यह मेरी गलती नहीं थी... उस

गायिका की...' बुआजी ने कहा, 'मैंने उससे जाने से मना किया था।'

फुफाजी ने पापा से कहा कि वे हमें अपने नियंत्रण में रखें।*Bechkar izzat khaa jaengi ye dono.* (वे हमारी इज्जत बेच देंगे।) प्रकाश, पैसा ही सब कुछ नहीं है।

बुआज ने सख्ती से कहा, 'दो लड़कियां हैं, और दोनों ऐसी ही हैं।'दिवालीवह हमेशा से ऐसा ही था, चरित्रहीन, लेकिन अब तो और भी*chhoti* बात हद से ज्यादा बिगड़ती जा रही है, लोग साइबर कैफे वगैरह जाने लगे हैं!

हम जानते हैं कि दादाजी, एक सम्मानित होम्योपैथ के रूप में अपनी प्रतिष्ठा के बावजूद, खतरनाक हिंसा करने में सक्षम हैं। आज भी, हर कोई उस घटना का जिक्र करता है जो उन्होंने दो दशक से भी पहले उनके क्लिनिक में सेंध लगाने वाले उन तीन गरीब लड़कों के साथ की थी। दादाजी ने अपने क्लिनिक में चोरी करने वाले तीन किशोरों को ढूंढ निकाला और उन पर अपनी लाठी से हमला कर दिया। खोपड़ी टूटने, पसलियां टूटने और जबड़े चकनाचूर होने के बावजूद उनका बच जाना एक चमत्कार ही था। प्रत्यक्षदर्शी आज भी आपको बताएंगे कि अगर लोगों ने हस्तक्षेप न किया होता तो वह उस दिन उन्हें जान से मार देते। लड़के गरीब दलित थे, और दादाजी इतने सम्मानित थे कि उन्हें छूना भी उचित नहीं था, इसलिए मामला दबा दिया गया। वर्षों से, दादाजी ने अपनी लाठी से अपनी क्रूरता के कई उदाहरण दिए हैं। हर कुछ महीनों में, लाठी बदलनी पड़ती है, क्योंकि वह बस कुछ ही महीनों तक चलती है।

दादाजी वहीं खड़े रहे, बारी-बारी से हमारी और मम्मी-पापा की तरफ देखा, तिरस्कारपूर्ण ढंग से अपना सिर हिलाया, और मुड़कर अंदर चले गए।

बाद में रात में, दादाजी ने करण भैया और अंशुमन भैया से हमारे कमरे की बिजली की लाइन का फ्यूज निकलवा दिया, जिससे पूरा कमरा अंधेरे और गर्मी में डूब गया। छत का दरवाजा बंद था।

उनकी बचकानी हरकतों पर मम्मी जोर से हंस पड़ीं।

हम चारों अपने कमरे में पसीने से तरबतर हो गए।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

7 अगस्त 2002

मैं खुद को आशावादी मानता हूँ, और मेरे जैसे आशावादी मूर्ख या वास्तविकता से कटे हुए नहीं होते; उनमें बस सहनशीलता होती है, दर्द सहने की क्षमता अधिक होती है, और वे दूरदर्शी होते हैं। बार-बार निराशा मिलने के बावजूद, मैंने अपने कॉलेज को एक मौका दिया था। मेरी बड़ी योजना थी कि मैं कॉलेज के उत्सव परिषदों में अपनी जगह बना लूँ, कोषागार या प्रायोजन विभाग के लिए अपरिहार्य बन जाऊँ और इस देश की खासियत को उजागर कर दूँ।
—यह एक धोखा है। दुर्भाग्य से, कॉलेज के प्रोफेसरों ने फैसला किया कि प्रथम वर्ष के छात्र महत्वपूर्ण विभागों का हिस्सा बनने के लिए बहुत छोटे हैं और उन्हें बुनियादी ढांचे और संगठनात्मक भूमिकाओं में लगा देना चाहिए, जिनमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। भला मैं इस घटिया कॉलेज में क्यों पढ़ना चाहूँगा?
आप कॉलेज जाए बिना भी डिग्री हासिल कर सकते हैं। वो भी ऐसी डिग्री जिसकी कोई कीमत नहीं। वैसे भी, वैद्य हमेशा से ही बेहद खराब रहे हैं।
पढ़ाई-लिखाई। यह तो चमत्कार ही है कि दिव्या दीदी और मैंने स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली। करण भैया और अंशुमन भैया को आठवीं और नौवीं कक्षा में फेल होने के कारण दो बार स्कूल बदलना पड़ा। फिर भी, बुआजी और फूफाजी इन दोनों बेवकूफों को इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला दिलाने का एक अजीब सपना देखते हैं। इसलिए घर का हर अतिरिक्त रुपया इन दोनों गधों के लिए जमा हो जाता है, जिन्हें बुआजी इंजीनियर बनते देखना चाहती हैं।

अब वापस कॉलेज जाना है।

मुझे अन्य अवसरों का इंतजार करना पड़ा, और आखिरकार मुझे एक शानदार अवसर मिल ही गया।

मेरी कक्षा, जो महत्वाकांक्षी न होने के कारण आलसी और निकम्मे छात्रों से भरी थी, अपने लाइब्रेरी कार्ड का दुरुपयोग कर रही थी, और यहीं मुझे अपना छोटा सा अवसर मिला।

मैंने अलग-अलग छात्रों से उन्नीस लाइब्रेरी कार्ड एकत्र किए और घर पर प्रोफेसरों द्वारा अनुशंसित पाठ्यपुस्तकों और संदर्भ पुस्तकों के नवीनतम संस्करणों को एक साथ रखा। एक सप्ताह के भीतर, जब छात्र सामाजिक ऊँच-नीच में अपनी जगह बनाने में इतने व्यस्त थे कि उन्हें किताबों की परवाह ही नहीं थी, तब तक मैंने अपनी चुनी हुई सभी पुस्तकों की साइक्लोस्टाइल प्रिंटिंग करवा ली थी।

मैंने परीक्षा के समय का इंतज़ार किया, जब घबराहट चरम पर पहुँच जाती थी; सभी छात्र अब वैद्य के घर में करीने से रखी किताबों को ढूंढ रहे थे। एकदम सटीक जमाखोरी। फोटोस्टेट भैया और मैंने मिलकर 4500 रुपये का अच्छा खासा मुनाफा कमाया।

लेकिन इस बार हम चारों कुछ भी नहीं खरीद रहे थे। पैसा हमारी गोदरेज अलमारी में एक जूते के डिब्बे में छिपा हुआ है।

पापा हमारे लिए आलू लाए।सिलाईजश्न मनाने के लिए, लेकिन उसे बुआजी, फुफाजी और आवारा लोगों के चले जाने तक घर के बाहर इंतजार करना पड़ा। हमने खाने से पहले अगरबत्तियाँ जलाईं ताकि उनकी गंध किसी की नाक तक न पहुँचे।

'इन्हें देखो! बिजली का बिल आसमान छू रहा है; ये अपना हिस्सा नहीं देते और फिर रोज टिक्की खाते हैं! उस औरत की धृष्टता तो देखो,' बुआजी चिल्लाकर कहती थीं।

ये अच्छी रकम थी, लेकिन अस्थायी थी, और इससे हम इस घर से बाहर नहीं निकल पाते। लेकिन छोटी-छोटी जीतों का जश्न मनाना तो बनता है।

आज कुछ और भी हुआ है और मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसका क्या मतलब निकालूँ। आज पुस्तकालय में एक लड़का था।

हाथों को जेबों में डाले, वह सिर झुकाए इधर-उधर घूम रहा था, किताबों के पन्नों को टटोल रहा था, बड़ी किताबों पर थोड़ी देर रुकता, मानो सोच रहा हो कि उनमें क्या लिखा होगा। उसके कोमल होंठ धीरे-धीरे हिल रहे थे, मानो ज़बान पर नामों का स्वाद ले रहा हो, हल्की सी मुस्कान बिखेर रहा हो, मानो कुछ याद कर रहा हो, और फिर आगे बढ़ जाता। दो बार मुझे लगा कि उसने मुझे उसे देखते हुए पकड़ लिया है। अब सोचती हूँ तो लगता है कि मैं बस उसके चेहरे पर मौजूद विरोधाभासों के जाल को समझने की कोशिश में उसे घूर रही थी।

लड़कपन के अवशेष—अपने मालिकों द्वारा त्यागे गए पिल्ले की लालसा भरी आँखें और एक लड़की के भरे हुए होंठ—वयस्कता के उग्र संकेतों—एक जिद्दी, अंतर्वर्धित दाढ़ी और एक लगभग क्रूर और दर्दनाक रूप से तीखी जबड़े की रेखा—के साथ अधिकार के लिए युद्ध छेड़ते थे।

हर दो मिनट में उसका हाथ उसकी जेब में चला जाता और वह अपने वॉकमैन पर गाना बदल देता। या शायद वह उसी गाने को बार-बार सुन रहा था? मैंने उसे वह किताब उठाते देखा जिसे मैंने अगली बार पढ़ने के लिए रखा था। क्या मैंने उसकी आँखों में उत्साह की एक चमक देखी, एक शरारत, मानो उसके हाथों में कोई खिलौना हो? वह ज़मीन पर बैठ गया, रैक पर झुक गया और पन्ने पलटने लगा।

कहीं-कहीं वह बहुत जोश में था, कहीं-कहीं धीरे-धीरे, लगातार गुनगुनाता हुआ। मुझे उसके प्यारे से बिगड़ैल लड़के वाले अंदाज से उतना आकर्षण नहीं हुआ जितना कि उसके...

उसकी गंभीर, कर्कश आवाज़ की धड़कन, जो मानो कल ही टूटी हो, गूंज रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेरे सीने पर भारी-भरकम कॉन्सर्ट स्पीकर रखे हो। धप। धप। थोड़ी देर बाद, उस खूबसूरत लड़के ने बड़ी शांति से किताब का हार्डकवर फाड़ दिया—पुस्तकालय से किताबें बाहर ले जाने का एक आसान तरीका। उसने किताब को अपनी जींस की कमर में पीछे की तरफ दबा लिया और बेफिक्री से बाहर निकलने की तरफ चल पड़ा। मैं शायद बहुत विचलित थी, क्योंकि बाहर निकलते समय वह मुझसे टकरा गया।

'माफ़ करना, अद्वैत।' उसकी आवाज़ सीधे मेरे पेट में उतर गई और

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

9 अगस्त 2002

मैं दीदी से इस बारे में बात कर सकती थी, लेकिन वो हमेशा कहती हैं, 'लड़के बेकार होते हैं और हमें उनके बारे में कभी बात नहीं करनी चाहिए।' विभोर गुप्ता के जाने के बाद, दीदी ने लड़कों के प्रति कड़ा विरोध जता दिया था, जो दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि 'लड़के' एक बेहतरीन अवधारणा है (मेरी राय में, प्रेम-प्रसंग बकवास है, लड़के नहीं)। लड़के तब तक अच्छे होते हैं जब तक वे खराब नहीं हो जाते। सात साल के लड़कों के समूहों को खेलते-कूदते, खिलखिलाते, हंसते, सीढ़ियों से कूदते, गेंद खेलते और एक-दूसरे पर गिरते देखना सबसे बड़ा आनंद है। वे शरारती होते हैं, लेकिन अपनी बहनों और माताओं का सम्मान करते हैं, जितना वे खुद का या अपने जैसे लोगों का नहीं करते। वे शिकायत करते हैं, लेकिन जो कहा जाता है वो करते हैं; उनके पास सही-गलत के बारे में सख्त नैतिक नियम होते हैं; वे साफ-सफाई अच्छे से रखते हैं और
बेहद प्यारे। भला किसे पसंद नहीं आएंगे? फिर उन ग्यारह सालों में क्या होता है जब अठारह साल की उम्र में वे असहनीय हो जाते हैं? भला कोई इन चिड़चिड़े, बदतमीज़ लड़कों से प्यार कैसे कर सकता है? शुक्र है वैद्य परिवार में प्यार करना मना है, यहाँ तक कि प्यार के अस्तित्व को भी नकार दिया जाता है।
मम्मी और पापा की प्रेम कहानी। क्या मुझे पूरी कहानी बतानी चाहिए? मुझे बस कुछ अधूरी जानकारी है... लेकिन चलो छोड़ो।

बुआजी को एक युवा, जीवंत, आशाओं से भरी, सपनों से लबालब और उत्साही महिला के रूप में कल्पना करना मेरे लिए मुश्किल है, लेकिन कहा जाता है कि एक समय वह बिल्कुल वैसी ही थीं। चौदह साल की एक लड़की, पढ़ाई में होशियार, फुर्तीली चाल वाली और आंखों में शरारत भरी चमक लिए हुए। कुछ लोग कहते हैं कि वह दिव्या दीदी की हूबहू प्रतिरूप थीं और सभी उन्हें बहुत प्यार करते थे। मैंने उनकी पुरानी तस्वीरें देखी हैं और मैं इस बात की गवाह हूं। वह सचमुच बहुत खूबसूरत थीं।

घटना घटने का महीना, घटनाओं का क्रम और पात्र हर बार कहानी सुनाए जाने पर बदल जाते हैं, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में मैंने सभी कहानियों में मौजूद सामान्य कथानकों को चुनकर अपनी एक कहानी बनाई है।

जनवरी का महीना था और कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। दादाजी अपने भाइयों और उनकी पत्नियों के साथ आग के पास बैठे थे, जिसे दादीजी बीच-बीच में छोटी-छोटी टहनियाँ डालकर और हवा देकर जलाए रखती थीं। पापा तब सात साल के थे और दादीजी के भाई की गोद में थे, जबकि अनिल ताऊजी दूसरे बच्चों के साथ खेल रहे थे।

किसी ने नहीं देखा कि यह कैसे हुआ, लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों के बयानों से स्पष्ट है कि इसमें किसी की गलती नहीं थी। आग बुझ रही थी और दादीजी बुझती हुई चिंगारियों को कुरेदते हुए थोड़ा ज्यादा झुक गई थीं, तभी उनकीपल्लूवह गिर पड़ी और पल भर में आग की लपटों में घिर गई। वह चीखी-चिल्लाई, और जहाँ सब लोग स्वाभाविक रूप से स्तब्ध खड़े थे, वहीं बुआजी ने मूर्खता और साहस दिखाते हुए उनकी ओर दौड़ लगाई और दादीजी की साड़ी खींच ली। लोगों के भय से देखते ही देखते बुआजी लड़खड़ा गईं और साड़ी उनके चारों ओर लिपट गई। आग, जिसने दादीजी को बख्श दिया था, अब बुआजी की त्वचा को जला रही थी, उनके ऊतकों को पिघला रही थी और जब तक दादाजी और उनके भाई आग बुझाने में कामयाब हुए, तब तक उनकी हड्डियाँ तक झुलस चुकी थीं।

पापा मुझे बताते हैं कि उन्हें आज भी कभी-कभी आंगन में जलते हुए मानव मांस की भयानक दुर्गंध आती है।

'क्या मां ठीक हैं?' बुआजी ने अस्पताल ले जाते समय पूछा था। पापा, जिनकी याददाश्त इतनी कमजोर है कि वे ठीक से याद नहीं रख सकते, कहते हैं कि बुआजी ने तब और अस्पताल में भर्ती होने के दौरान एक भी आंसू नहीं बहाया था। ठीक हो रहा है।

हालात तेज़ी से बदल गए। वह गर्दन से कलाई तक फैले धब्बेदार, झुलसे हुए निशानों के साथ घर लौटी, उसके शरीर का दाहिना हिस्सा बुरी तरह जलकर खाक हो गया था। घृणा का माहौल छा गया, लोग दया और शर्मिंदगी से आँखें फेर लेते थे, जिससे बुआजी को एहसास हुआ कि वह अब वैसी नहीं रही जैसी पहले थी। डॉक्टर के कहने पर शीशों पर रंग चढ़ा दिया गया। कुछ समय बाद ही उसने स्कूल छोड़ दिया और फिर घर से निकलना ही बंद कर दिया। दादाजी और दादीजी, दोनों अपराधबोध से व्याकुल थे, उन्होंने बुआजी को अलग महसूस न कराने के लिए हर संभव प्रयास किया, लेकिन वे कुछ नहीं कर सके। वह आग बुआजी के साथ दादाजी और दादीजी के रिश्ते का निर्णायक मोड़ थी; उनके लिए उनका प्यार कई गुना बढ़ गया, और अक्सर हद से ज़्यादा हो गया। पारिवारिक विरासत और गहने बेच दिए गए, सारी बचत खत्म हो गई, और दादाजी ने दिल्ली में हुई सर्जरी का खर्च उठाने के लिए जी-जान से काम किया। लेकिन इससे कुछ खास फायदा नहीं हुआ, और बुआजी ने ही इस निरर्थक प्रयास को समाप्त किया।

उसे यह एहसास भी हो गया था कि उसकी कभी शादी नहीं होगी। एक बेहद अनुचित क्षण में, दादाजी ने अनिल ताऊजी और पापा ने शादी न करने का फैसला इसलिए किया क्योंकि उन्हें पता था कि जिस दिन उनकी शादी होगी, बुआजी की शादी को लेकर खूब चर्चा होगी।

ताऊजी ने प्रेम, विवाह और परिवार को त्याग दिया, लेकिन पापा ने सबको धोखा दिया जब उन्होंने मम्मी में प्रेम और खुशी पाने का साहस किया। इसके बाद ड्रामा हुआ, लेकिन वह कहानी किसी और समय के लिए है। अनिल ताऊजी और दादीजी बुआजी के साथ जो हुआ उसके लिए खुद को दोषी ठहराते रहे और हर बार उन्हें देखकर दयनीय रूप से दुखी होते रहे, और पापा ने उनका दिल तोड़ दिया था। ऐसे में केवल दादाजी ही थे जिन्होंने उनके घावों से परे जाकर उन्हें समझा और उनके लिए सब कुछ बन गए: दोस्त, परिवार, पिता। वे अपने आप में पूर्ण थे।

बुआजी दादाजी से कहा करती थीं, 'मैं सिर्फ आपकी बेटी बनकर रहूंगी। किसी की पत्नी नहीं, किसी की मां नहीं। मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है।'

लेकिन कुछ ही समय बाद, फुफाजी बुआजी के जीवन में आए और बिना दहेज के उनसे शादी करने के लिए राजी हो गए, जिससे बुआजी को सामान्य जीवन जीने का मौका मिला। बुआजी को फुफाजी से प्यार हो गया और एक महीने के भीतर ही उनकी शादी हो गई। बुआजी की शादी का दिन ही एकमात्र ऐसा दिन था जब दादाजी रोए थे। बुआजी की शादी की तस्वीरें इस बात की पुष्टि करती हैं; दादाजी खुश तो दिखते हैं लेकिन अंदर से दुखी भी।

मैं यहाँ जो कुछ भी कह रहा हूँ वह पूरी तरह सुनी-सुनाई बातें हैं और इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि इनमें से कुछ भी सच न हो। फूफाजी वैसे इंसान नहीं थे जैसा सब उन्हें समझते थे। उनके लिए शादी महज़ अपने अय्याशी भरे व्यवहार को जारी रखने का एक बहाना थी, और बुआजी से बेहतर बहाना क्या हो सकता था, जो एक दया का पात्र थीं? कहा जाता है कि उनकी शादी कभी संपन्न नहीं हुई और करण भैया और अंशुमन भैया का जन्म प्रयोगशाला में हुआ था और वे बुआजी की संतान थे।

'अधिक उम्र की महिलाओं में आईवीएफ से अक्सर जुड़वां बच्चे होते हैं,' डाय कहती हैं, जो इस कहानी पर दृढ़ विश्वास रखती हैं।

तो हमारे घर में प्यार का इतिहास कुछ खास अच्छा नहीं रहा है। हालांकि मैं प्यार के भ्रमपूर्ण, रोमांटिक पहलू में कभी नहीं पड़ना चाहती, फिर भी मुझे कभी-कभी लड़कों को देखना अच्छा लगता है। मैंने सुना है कि दिल्ली के लड़के ज़्यादा सुंदर होते हैं, बेंगलुरु के ज़्यादा बोलने में माहिर, मुंबई के ज़्यादा महत्वाकांक्षी और कोलकाता के ज़्यादा प्यार करने वाले, लेकिन फिलहाल देहरादून के लड़कों ने मेरी ज़रूरतें पूरी कर दी हैं।

और ये लड़का... उफ़।

लेकिन उसे मेरा नाम कैसे पता चला?

11 अगस्त 2002

जितना ज़्यादा समय मैं उसके बारे में सोचती हूँ, उतना ही वो मेरी नज़रों में और भी आकर्षक लगता है, और उतना ही मेरा गुस्सा बढ़ता जाता है। मुझे पता है कि ऐसा होना ही चाहिए, लेकिन किताबों को प्यार से निहारते हुए उसकी छवि मेरे दिमाग से निकल ही नहीं रही। अगर उसके हाथ में AK-47 होती, तो मैं उसे एक अपराधी समझ लेती—एक भारी-भरकम आवाज़ वाला—लेकिन उसके हाथ में किताबें थीं। वो ज़्यादा... एक कवि जैसा लग रहा था, एक ऐसे गुस्से वाले कवि जैसा जिसे टूटे-फूटे शब्दों का कोई फल नहीं मिला, जिसका दिल बेवजह चकनाचूर हो गया हो। मुझे बस उसके बारे में सोचना बंद करना था। आखिर वो कौन था?
उसने मेरे बारे में पूछा? उसे मेरा नाम कैसे पता चला? क्या पीछा करने वाले ऐसा ही नहीं करते? क्या मेघनाद ने भी ऐसा ही नहीं किया था? शायद मैं ज़्यादा सोच रही हूँ। मैं भी बहुत से लोगों के नाम जानती हूँ, जिनमें से कोई मेरा नाम नहीं जानता। लेकिन मुझे उससे बात करनी होगी, इससे पहले कि बात हाथ से निकल जाए, मुझे इसे रोकना होगा। और मुझे उसके बारे में सोचना बंद करना होगा।

अब कुछ अधिक महत्वपूर्ण बातों की ओर बढ़ते हैं, मनीष चाचा सहारनपुर से वापस आ गए हैं।

मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव के रूप में असफल होने और रियल एस्टेट में काफी पैसा गंवाने के बाद, उन्होंने फर्नीचर व्यवसाय में हाथ आजमाने का फैसला किया है।

'तुम्हारे चाचा व्यापार के लिए बहुत नरम दिल हैं। उन्हें तो एक बड़ा फिल्म स्टार बनना चाहिए था,' पापा हमेशा कहते हैं।

चाचा दादाजी के चहेते थे क्योंकि वे बुआजी के चहेते थे, लेकिन फिर वे बूढ़े और असफल हो गए और दादाजी की नजरों से गिर गए। स्थिति तब और बिगड़ गई जब उन्होंने शादी के सवाल को टालना शुरू कर दिया। पापा द्वारा दादाजी को दो पोतियां देने की नाकाम कोशिश के बाद, मनीष चाचा ही एकमात्र सहारा थे।महान वैद्य का नाम तो कायम रहेगा। लेकिन फिर भी, बुआजी के प्यार की वजह से दादाजी से उन्हें शायद ही कभी कोई बुरा बर्ताव झेलना पड़ता है। उस भयानक आग लगने की घटना के एक साल बाद जन्मीं बुआजी चाचा से बहुत जल्दी जुड़ गईं; वे इकलौते ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने उन्हें पीड़ित नहीं समझा और उन्हें देखकर कभी विचलित नहीं हुए। बुआजी ने मनीष चाचा का पालन-पोषण बखूबी किया। बुआजी ने उनके लिए हर संभव प्रयास किया।

मनीष चाचा को एक और दादाजी बनाने की कोशिश की गई, लेकिन केवल एक बेहद कमजोर संस्करण ही बन पाया।

पिछले साल, दादाजी के गहनों का बचा हुआ हिस्सा गिरवी रख दिया गया ताकि चाचा को उन संदिग्ध साहूकारों से बचाया जा सके जिनसे उन्होंने कर्ज लिया था। बिना कोई सवाल पूछे।

‘मैं और अधिक दर्जी रख सकती थी, एक दुकान किराए पर ले सकती थी, और दुगुने ब्याज के साथ पैसा वापस कर सकती थी। तुम्हारी बुआजी अंधी हैं, उन्हें पैसे की कोई समझ नहीं है,’ माँ ने तब शिकायत की थी।

मैंने जवाब दिया था, 'वह तुम्हारी मदद करने के बजाय अपनी कलाई काटना ज्यादा पसंद करेगी।'

वो बेहद आकर्षक थे, इसमें कोई शक नहीं। इतना कि आठ साल की उम्र तक मैं यही ठान लेती थी कि उन्हीं से शादी करूंगी। मैं छड़ी से दूसरी औरतों को उनसे दूर भगाती थी। जब वो छोटे थे, तो हमारे भाइयों से भी ज़्यादा हमारे प्रति दयालु थे, और हम उनसे चिपके रहते थे। वो दिन बहुत अच्छे थे।

मनीष चाचा पैंतीस वर्ष के हैं, जो शादी के लिए उपयुक्त उम्र से कम से कम पाँच साल अधिक है। हालांकि, अपनी बढ़ती उम्र और जीवन में कुछ खास न कर पाने के बावजूद, वे आज भी शादी के लिए एक अच्छा विकल्प हैं।
लंबा-चौड़ा, दादाजी की तरह सुंदर और पहनावे के मामले में उतना ही नखरे वाला। दादाजी की तरह, वह भी कभी अपने कड़क, कड़क सफेद कुर्ते के बिना नहीं दिखना चाहता।
पायजामा। जब चाचा छोटे थे, तो उद्दंड बूढ़ी औरतें अपनी बेटियों के लिए रिश्ते लेकर दादीजी के पास आती थीं, जिन्हें दादाजी नाक चढ़ाकर और अपनी छड़ी लहराकर ठुकरा देते थे। वे अमीर, सुंदर और कम मोटी लड़की चाहती थीं। मनीष चाचाजी की पैसों की बदकिस्मती का पता चलने के बाद, पहले तो ऐसे रिश्तों की बाढ़ सी आ गई थी, लेकिन अब थोड़ी धीमी पड़ गई है।

‘तुम्हारी बुआजी तो अपने लिए लड़की ढूंढ ही रहे होंगे,’ मम्मी ने आज कहा। ‘तुम्हारे दादाजी अक्सर बीमार पड़ते रहते हैं, इसलिए उन्हें पैसों की ज़रूरत है। क्या तुम्हें लगता है कि ऐसा ही होगा?’
क्या आपके दादाजी के मरीज़ उन्हें कुछ पैसे देते हैं? कुछ नहीं।खरीदना।सिर्फ सम्मान, पैसा नहीं।

फुफाजी और बुआजी देहरादून की ज्यादातर बड़ी लड़कियों और उनके परिवारों को नाम से और उनकी आर्थिक स्थिति के आधार पर जानती हैं।

'घर में खुशियां लाने वाली और सब कुछ ठीक करने वाली सिर्फ एक लड़की ही हो सकती है,' बुआजी आजकल अक्सर कहती हैं।

दिव्या दी और मैंने हाथ उठाए, लेकिन हमारी बात अनसुनी कर दी गई। हम सब जानते हैं कि खुशी से उनका मतलब पैसा है। दहेज तभी बुरा होता है जब इसके लिए महिलाओं को जला दिया जाता है।

'शायद तब वे हमें घर से निकाल देंगे अगर उन्हें कोई अमीर लड़की मिल जाए,' माँ कहती थीं। 'तब तो वे नौकरानियों का खर्च उठा सकेंगे।'

'तुम इस बात से दुखी क्यों हो? अगर हम चले जाएं और वे हमें पूरी तरह से भूल जाएं तो अच्छा ही होगा!' दिव्या दी कहती थीं।

मैं बीच में टोकते हुए पूछता, 'तुम्हें क्या लगता है कि हमारा राशन कहाँ से आता है?'

'हम इसे वहन कर सकेंगे,' दिव्या दी आत्मविश्वास से कहतीं। 'आप लोग जोखिम नहीं लेना चाहते।'

मैं व्यंग्य करते हुए कहती, 'मुझे नहीं लगता कि मैं भुखमरी का जोखिम उठाना चाहती हूँ। दीदी, हम किराया तो चुका ही नहीं पाएँगे। घर भी नहीं मिल पाएगा।'

'अरे, बिलकुल नहीं,' दिव्या दी असहमति जतातीं। 'अगर वे हमें जाने के लिए कहते हैं, तो वे हमारे लिए घर ढूंढना मुश्किल नहीं करेंगे। अपनी पीड़ित मानसिकता से बाहर निकलो।'

दिव्या दी हम सब में हमेशा सबसे आशावादी रही हैं, और हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रही हैं।

सब कुछ छोड़कर दादाजी के प्रभाव से दूर दिल्ली चली जाती है और वहाँ अपना जीवन यापन करने की कोशिश करती है। उसे लगता है कि मम्मी के ग्राहक अपने आप आ जाएँगे और उसे भी खूब काम मिलेगा: 'लोग मुझे छोटे-मोटे काम या इंटर्नशिप देने के लिए बेताब हैं, और मॉडलिंग के कई असाइनमेंट मेरा इंतजार कर रहे हैं।'

'उसकी शादी के बारे में बात करना बंद करो!' मम्मी कहतीं। 'अभी कुछ हुआ नहीं है।'

यह सच है। मनीष चाचा शादी करने के लिए बिल्कुल भी उत्सुक नहीं थे। जब उन्होंने दादाजी और फूफाजी से अपने फर्नीचर के व्यवसाय के लिए पैसे देने का अनुरोध किया, तभी उन्हें उनकी शादी की मांग माननी पड़ी।

'अगर उसका कोई चलता-फिरता कारोबार या कम से कम एक दुकान नहीं है, तो कोई भी उससे शादी नहीं करेगी,' फुफाजी ने दादाजी के सामने बहस करते हुए कहा था। 'हम लड़की के परिवार से सब कुछ वसूल लेंगे। मुझ पर भरोसा करो।'

दिव्या और मैंने अपने परिवार की साजिशों को नाकाम करने की कसम खाई है।

'मनीष चाचा? क्या आप सच में शादी करना चाहते हैं? मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आप ऐसा करेंगे,' दिव्या दी ने पूछा।

'सभी को ऐसा करना पड़ता है। आपका समय भी जल्द ही आएगा,' उसने अपना हेलमेट उठाते हुए कहा।

14 अगस्त 2002

15 अगस्त का दिन दिव्या दी और मेरे लिए बहुत खास है।

जो प्रतियोगिता एक तरफ करण भैया और अंशुमन भैया और दूसरी तरफ दीदी और मेरे बीच शुरू हुई थी, अब हमारे लिए उसका बहुत अधिक महत्व है।

मम्मी को इस बात पर गुस्सा आता है कि हम इस दिन को कितनी गंभीरता से लेते हैं—यह बेहिचक आक्रामकता, युद्ध जैसी तैयारी और पूरा रवैया। लेकिन दी और मैं पतंगबाजी प्रतियोगिता जीतने के रोमांच का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं, और टूटे हुए कांच से बने निशानों को गिनने का भी।हाथहमारी उंगलियों को काटते हुए। ये हमारी बेल्ट पर निशानों की तरह हैं, हमारे सीने पर बैज की तरह, हमारे युद्ध-रंग की तरह। हम निस्संदेह शहर में सबसे अच्छे हैं। हालांकि, हमने अभी तक यह तय नहीं किया है कि हममें से बेहतर कौन है। एक बार जब हमने आपस में लड़ने का फैसला किया था, तो नौ साल की उम्र में मैंने दिव्या दीदी के गले में मांजा लपेटकर उन्हें हार मानने पर मजबूर कर दिया था। मम्मी-पापा कहते हैं कि उस दिन मैं उन्हें मार सकती थी, जिसे मैंने तब अतिशयोक्ति समझा था, लेकिन अब मुझे लगता है कि यह सच हो सकता है। उनके गले पर एक लंबी मुस्कान के आकार का मुश्किल से दिखाई देने वाला निशान आज भी उस दिन की गवाही देता है।

पिछले साल से पहले हमने शर्त लगाई थी और कागजों पर हमने 3000 रुपये जीते थे।

सोचिए ज़रा! एक ही शाम में! लेकिन फिर किसी ने भी पैसे नहीं दिए और कुछ बच्चों के माता-पिता ने तो दादाजी से दिव्या दीदी द्वारा उन्हें डराने-धमकाने की शिकायत भी कर दी, और बात वहीं खत्म हो गई।

खैर, आज वो दिन है जब हम पतंगें और बाज़ार के सबसे बढ़िया, तेज़ धार वाले मांझे खरीदते हैं। दुकानदार नाज़ुक पतंगों को पूरे साल जमा करके नहीं रखते, इसलिए इतनी छूट मिल रही है। और 15 अगस्त के अलावा किसी और दिन पतंग उड़ाने का क्या मतलब? आख़िर आप लोग क्या मना रहे हैं? गुरुवार? 15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस, आसमान में उड़ती पतंगें, क्या लोगों को ये प्रतीक समझ नहीं आता?

लेकिन अब न तो दी और न ही मैं मजे के लिए पतंग उड़ाते हैं, हम तो जीतने के लिए उड़ाते हैं। यह वो दिन है जब वैद्य बहनें हमेशा जीतती हैं।

हम बाजार से वापस आ रहे थे तभी हमने बच्चों के एक समूह को दौड़ते और चिल्लाते हुए देखा। 'बरवन! ये बरवन था!'

'क्या उन्होंने सच में बारह कहा था?' डी ने स्कूटर रोकते हुए पूछा।

एक पतंग से मैंने और दी ने मिलकर सबसे ज़्यादा सात पतंगें काटी हैं। और यही देहरादून का अनौपचारिक रिकॉर्ड है। हमें पता लगाना था कि ये बच्चे सच कह रहे हैं या नहीं। हम बच्चों के पीछे-पीछे गाड़ी चलाकर आसमान पर नज़रें गड़ाए उस पतंग को ढूंढने लगे जो हमारा रिकॉर्ड तोड़ने वाली थी।

कुछ ही मिनटों में, हमने उसे देख लिया। एक चमकीली काली पतंग जो अविश्वसनीय दृढ़ता के साथ हवा में झपट्टा मारती, सरकती और चीरती हुई आगे बढ़ रही थी। दी और मैं, पूरी कोशिश करने के बावजूद कि हम प्रभावित न हों, अवाक रह गए। अगले ही पल, दी ने स्कूटर को एक चीज़ से टकरा दिया।बहनालीचियों से भरी एक लकड़ी की गाड़ी।

'जाकर देखो कि कौन है,' डी ने मुझसे कहा, जबकि वह ठेले वाले आदमी के साथ गाली-गलौज कर रही थी।

मैंने पतंग के मांजा का अनुसरण किया और उसी दिशा में दौड़ पड़ा... रिस्पना से बाईं ओर मुड़ा।धनजोगीवाला से होते हुए, टैक्सी स्टैंड के पास से गुजरते हुए, बस स्टॉप से एकदम बाईं ओर मुड़ें और सीधे हरिद्वार बाईपास पर चले जाएं।

और वह सड़क पर खड़ा था, उंगलियों से खून बह रहा था, जीभ गालों में लटक रही थी, आंखें कसी हुई मांजा पर टिकी थीं, कलाइयां मरोड़ रही थीं, पैर तेजी से चल रहे थे—सचमुच पतंग का देवता! वह बहुत अच्छा था, बेहद अच्छा! उसका सुंदर चेहरा एकाग्रता का एक आदर्श उदाहरण था।

वह पुस्तकालय वाला लड़का था। क्या मैं कल्पना कर रही थी? नहीं। वह सचमुच वहीं था। सचमुच वहीं।

मुझे उससे बात करने के लिए कोई निर्देश नहीं मिला था, इसलिए मैं वहीं खड़ा देखता रहा। सच कहूँ तो, मैं घर से बहुत दूर था, और मुझे उसके पास जाने में थोड़ा डर लग रहा था।

उसके पास कोई अतिरिक्त पतंग नहीं थी, न ही इस पतंग के खो जाने पर कोई बैकअप प्लान था। उसका आत्मविश्वास इतना घमंडी था कि मूर्खतापूर्ण लग रहा था। उसने न तो खुशी मनाई, न जश्न मनाया, न मुट्ठी लहराई और न ही चिल्लाया। 'अरे बाप रे!' जैसे कोई नौसिखिए द्वंद्वयुद्ध जीत लेता, वैसे ही वह कंधे उचकाकर अगले मुकाबले की ओर बढ़ जाता, उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं झलकता। मैं बैठ गया और उसे मैदान पर अपना दबदबा बनाते हुए देखता रहा, उसकी कलाइयों की नकल करता रहा, उसकी तरकीबों को याद करता रहा; मैं मंत्रमुग्ध भी था और क्रोधित भी। थोड़ी देर बाद, आखिरकार वह हार गया। पतंग। वह हारा नहीं था। पुराना मांजा टूट गया था और पतंग

वह पहाड़ों में बह गया, जो उसकी पारी का एक उपयुक्त अंत था। उसने उसे उठा लिया।*charkhari*रस्सी का तकला घूमा और चला गया। मैं उसके पीछे गया, लेकिन वह इतनी तेज़ी से चला कि खुले खेतों में गायब हो गया।

मैंने पतंग के पीछे दौड़ रहे कुछ बच्चों को रोका और उनसे पूछा कि वह कौन है।

लड़कियों में से एक ने कहा, '*Mai nahi jaanti. Ek–do baar bas basti mein dekha hai*(मुझे नहीं पता, मैंने उसे झुग्गी-झोपड़ियों में बस कुछ ही बार देखा है।)

उस लड़के की एक घंटे तक की मेरी खोज बेकार गई, कोई नहीं जानता था कि मैं किसके बारे में बात कर रही थी (लेकिन मैं किसी को यह नहीं बता सकती थी कि वह बहुत सुंदर था, या वह पुस्तकालय से किताबें चुराता था, या वह पतंग उड़ाने में माहिर था, इसलिए मुझे यकीन नहीं है कि वे सही लड़के के बारे में बात कर रहे थे)।

वापस लौटते समय मुझे सड़क किनारे उसकी चरखारी पड़ी मिली। सच कहूँ तो, मैंने उसे उठा लिया और घर ले आई। पहले तो मैं बस यह देखने के लिए उत्सुक थी कि क्या यह हमारी इस्तेमाल की जाने वाली चरखारी से अलग है या नहीं, और जब मैंने देखा कि यह अलग नहीं है तो लगभग इसे फेंक ही दिया था, लेकिन किसी कारणवश मैंने इसे छुपा कर रखा।

घर पहुँचते ही दिव्या दी ने मुझसे झल्लाकर पूछा, 'तुम कहाँ खो गए थे?'

मैंने झूठ बोलने की कोशिश की, लेकिन दिव्या दी तुरंत समझ गईं कि मैं झूठ बोल रही हूँ। मैंने सब कुछ बता दिया।

‘लड़के कभी हमारे दोस्त नहीं बन सकते। जहाँ तक उसके रिकॉर्ड की बात है, हम उसे कल तोड़ देंगे,’ उसने सख्ती से कहा।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

17 अगस्त 2002

दो दिन बीत गए हैं, लेकिन मेरी उंगलियों में अभी भी दर्द है। दी की हालत तो और भी खराब है। हम उस लड़के का रिकॉर्ड तोड़ने के आस-पास भी नहीं पहुँच पाए, लेकिन उस लड़के को देखकर मैंने जो टिप्स सीखे थे, उनका इस्तेमाल करके हमने अपना रिकॉर्ड ज़रूर तोड़ दिया। एक समय तो बुआजी भी हमारा हौसला बढ़ा रही थीं, मोहल्ले के लड़कों के खिलाफ हमारी हर जीत पर खुशी मना रही थीं।
ऐसे ही क्षणों में मैं एक वैकल्पिक वास्तविकता की कल्पना करता हूँ जहाँ हमारी दुख और नफरत से रिश्ते खराब नहीं होते, और यह देखकर मेरा दिल बहुत खुश होता है। लेकिन फिर भी, मुझे लगता है कि इंसान होने के नाते, एक-दूसरे के प्रति क्रूरता और नफरत हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति है, और लोग जितना अधिक समय एक-दूसरे के साथ बिताते हैं, उतनी ही संभावना होती है कि सभ्यता और शालीनता का मुखौटा उतर जाए...

हमें उसकी पतंग नज़र नहीं आई। भला इतना अच्छा कलाकार 15 अगस्त को, जिस दिन हर कोई अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता है, क्यों पीछे हट जाएगा? डाय अब इसके बारे में नहीं सोच रही है; उसे अगले साल तक सोचने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन उसे लगा कि मैं कुछ ज़्यादा ही चिंता कर रही हूँ।

उसने सीधे-सीधे पूछा, 'क्या तुम उसे पसंद करती हो?'

'क्या! नहीं? मैंने उसे सिर्फ दो बार देखा है।'

उस लड़के से दूर रहो। अगर उसे लगता है कि तुम्हारे जैसी प्यारी लड़की से उसे कुछ अटेंशन मिल रही है, तो कौन जाने वो क्या करेगा?

मैंने कहा, 'मैं सुंदर नहीं हूं।'

'तारीफ पाने की कोशिश मत करो,' उसने कहा। 'हमें एक और मेघनाद नहीं चाहिए। तुम्हें पता नहीं होगा कि ऐसी लड़की को कैसे संभालना है—'

'चुप रहो और बताओ कि क्या तुम कल मेरे साथ सहारनपुर आ रहे हो,' मैंने कहा। मुझे नहीं पता क्यों मैं दीदी द्वारा उस लड़के की बुराई करने के मुद्दे से ध्यान हटाना चाहती थी। मैं उसे जानती भी नहीं थी और फिर भी...

'क्या हमें जाना ही पड़ेगा?' उसने नाराज़गी से पूछा।

'मम्मा को लहंगे के ऑर्डर के लिए कपड़े की जरूरत है। अगर आप नहीं जाना चाहतीं तो मैं अकेले जा सकती हूँ।'

दिव्या दी ने थोड़ी देर रुककर कहा कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। मेरी तरह, दी को सहारनपुर नापसंद करने का पूरा हक है। लेकिन ऐसा नहीं है कि देहरादून में अजीबोगरीब जगहों पर उनकी मुलाकात मेघनाद से नहीं हुई है। कभी-कभी मुझे लगता है कि वह जानबूझकर ये आकस्मिक मुलाकातें करवाता है, और वह अभी भी दी को भुला नहीं पाया है। आज भी जब भी वे सार्वजनिक स्थानों पर दी से मिलते हैं, तो वह और उसके दोस्त 'वेश्या' और 'रंडी' कहकर पुकारते हैं।

जब हमें लगता है कि हमने उसे और उसकी हरकतों को आखिरी बार देख लिया है, तभी कोई न कोई हमें याद दिला देता है कि इतने साल पहले क्या हुआ था।

18 अगस्त 2002

सहारनपुर तक का दो घंटे का सफर उबाऊ और धूल भरा है। हर बार मैं यही सोचता हूँ कि काश सफर पिछली बार जितना खराब न होता, लेकिन हमेशा ऐसा ही होता है। बस हद से ज्यादा गंदी है: कोनों पर पान के दाग, हर खिड़की पर उल्टी के निशान, तरह-तरह की बदबूएँ—खाना और सब्जियाँ बेचने के लिए ले जा रहे लोगों की। आमतौर पर दो घंटे की पूरी यात्रा के दौरान दिव्या दी सोती रहती थी और दी के कंधे पर लार टपकाती रहती थी। 'हम पहुँच गए हैं,' दिव्या दी ने कहा और बस लड़खड़ाते हुए रुक गई। 'हम'

पिछली बार की तरह यहाँ समय बर्बाद नहीं करेंगे। सतर्क रहो। उसके यहाँ होने की संभावना बहुत कम है, लेकिन कौन जानता है।

मैंने सिर हिलाया और हम बाहर निकल गए।

वैद्य परिवार मोलभाव करने में माहिर है। हमें इस पर गर्व है! और इस तरह जो काम जल्दी से हो जाना चाहिए था, वह चार घंटे तक खिंच गया। दीदी और मैं सहारनपुर के अनुभवी थोक विक्रेताओं से बेहतर छूट पाने के लिए आपस में जमकर बहस कर रहे थे। जब तक हमारा काम खत्म हुआ, सूरज डूब चुका था और हमें चिल्लाते-चिल्लाते देहरादून वापस जाने वाली आखिरी बस पकड़नी पड़ी। हमने पूरा किराया दिया, लेकिन हमें सीट नहीं मिली।

'पैसे बचाने का तो यही नतीजा निकला,' डि ने कहा।

बस सहारनपुर से निकली ही थी कि हमारे पीछे वाली खिड़की से एक बीयर की बोतल अंदर आ गिरी। कांच के छोटे-छोटे टुकड़े हमारे पैरों के नीचे चटकने लगे। हम सब डर के मारे बाहर देखने लगे। हमने एक कार देखी जिसमें कुछ लड़के दरवाजे से बाहर लटके हुए थे, चिल्ला रहे थे, चीख रहे थे और सीटी बजा रहे थे। *'OYE! IDHAR! IDHAR!'*

दिव्या ने थोड़ी घबराहट में मेरा हाथ पकड़ लिया और मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

मेघनाद ड्राइवर की सीट पर बैठा सड़क की ओर सीधे देख रहा था, उसकी नाक के नथुने फूले हुए थे, मानो उस घटना को बीते हुए सालों नहीं बल्कि कुछ ही दिन हुए हों। वह देख रहा था

नशे में धुत; कार में बैठे सभी लोग नशे में थे। अब उसने एक भयानक दाढ़ी बढ़ा ली थी जिससे उसकी टेढ़ी नाक और नशे में धुत्त आँखें और भी भद्दी लग रही थीं, और वह पहले से कहीं अधिक घृणित और छिपकली जैसा दिख रहा था। डि ने मेरा हाथ

खींचा, मुझे बिठाया और

उसने मुझे बाहर न देखने के लिए कहा। कार कुछ और किलोमीटर तक हमारा पीछा करती रही; कंडक्टर और लड़कों के बीच कहा-सुनी हुई—कंडक्टर तो विनम्र था, लेकिन लड़के अड़ियल—और कुछ बोतलें फेंकी गईं। बस में शराब की बदबू फैली हुई थी। जब कार ने हमारा पीछा करना बंद किया, तो कुछ यात्रियों ने हमें संदेह भरी निगाहों से देखा।

'Kya hai?' डी ने झट से जवाब दिया, 'हम उन्हें नहीं जानते!'

हम अभी एक किलोमीटर ही आगे बढ़े थे कि ज़ोरदार धमाका हुआ और बस रुक गई। टायर फट गया था। यात्रियों ने शिकायत की, लेकिन उन्हें पता था कि उनके पास कोई विकल्प नहीं है, इसलिए सभी उतर गए। पता चला कि टायर में कुछ लोहे की कीलें फंसी होने के कारण पंचर हुआ था।

सड़क पर बिखरा पड़ा हुआ। मेघनाद का यह सबसे बुरा काम नहीं होगा। वास्तव में, पिछले महीने की तुलना में यह काफी सुधार है, जब उसने ट्रैफिक में उसे ओवरटेक करने वाले किसी व्यक्ति पर बंदूक तान दी थी।

जब ड्राइवर और कंडक्टर टायर बदल रहे थे, तब हमने सड़क किनारे के ढाबे पर एक कप बेहद मीठी चाय पी।

फिर मैंने उस लड़के को दोबारा देखा—किताबें चुराने वाला, नाम जानने वाला, पतंग उड़ाने वाला लड़का, ढाबे के हैंडपंप पर हाथ धो रहा था। मैंने दोबारा जांच की। यह वही था, इसमें कोई शक नहीं था।

बल्कि, उसका कुर्ता और भी गंदा था और उसके पास एक बैग था। अब वह ढाबे के एक कोने में बेंच पर अकेला बैठा नोटबुक में कुछ लिख रहा था। कंडक्टर द्वारा सबको बस में चढ़ने के लिए बुलाने से पहले उसने एक बार भी ऊपर नहीं देखा।

'कुछ और लोग बस में चढ़ रहे हैं, इसलिए अगर आप छत पर जाना चाहते हैं, तो बेझिझक जा सकते हैं,' कंडक्टर ने कहा।

लोग अंदर घुस आए, और डी ने मुझे अंदर धकेलने की
कोशिश की। मैंने कहा, 'मैं छत पर जाऊंगी।'
'क्यों? अगर मम्मी को पता चला तो वो हमें मार
डालेंगी।' 'उन्हें जानने की ज़रूरत नहीं है,' मैंने कहा।
'ठीक है, मैं अंदर बैठती हूँ,' उसने कहा और अंदर चली गई।

मैं उस लड़के और कुछ अन्य लोगों के पीछे-पीछे बस की छत पर चढ़ गया। कंडक्टर ने बस के किनारे पर ज़ोर से हाथ मारा और हमें ऊपर सावधानी बरतने को कहा।

मेरे और उसके बीच दस और लोग बैठे थे। मैंने दो बार बस के आगे वाले हिस्से तक जाने की कोशिश की जहाँ वह बैठा था, लेकिन लोगों ने मुझे रोक दिया और कहा कि वहाँ बहुत भीड़ है।

खतरनाक। लड़का पीछे मुड़कर नहीं देखा और अपनी नोटबुक में लिखता रहा, जिसे वह मुश्किल से पकड़े हुए था, उसके खुरदुरे लंबे बाल उसके सिर के पीछे लहरा रहे थे।

'ओये!' मैंने आखिरकार चिल्लाकर कहा। 'ओये, तुम!' लड़का मुड़ा और मेरी तरफ देखा।

'क्या?' उसने रूखे स्वर में कहा।

'तुम्हें मेरा नाम कैसे पता!' मैंने बस के हॉर्न की तेज आवाज के बीच चिल्लाकर जवाब दिया।

बिना रुके उन्होंने कहा, 'आदरणीय डॉ. वैद की पोतियों को कौन नहीं जानता?'

उसने मुझसे नज़रें फेर लीं।

मुझे यह स्पष्ट था कि वह झूठ बोल रहा था, लेकिन मुझे आगे पूछताछ करने के लिए, उसका नाम पूछने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे।

मैंने बातचीत शुरू करने का तरीका ढूंढने की कोशिश की लेकिन असफल रहा और वह वापस अपनी नोटबुक में लग गया।

अगले एक घंटे तक मैं सीधा और सतर्क बैठा रहा, ताकि बस रुकते ही लड़के को पकड़ सकूँ। लेकिन बस रुकते ही वह आगे से कूदकर गायब हो गया। मुझे बहुत निराशा हुई।

लड़का गायब हो गया था।आदरणीय डॉ. वैद की पोतियों को कौन नहीं जानता?

जब भी यह बात मेरे दिमाग में गूंजती है, मैं हैरान रह जाता हूँ।

जब मैंने इसे पहली बार सुना, तो इसका अर्थ सरल था। यह दिव्या दी और मुझ पर, शर्मनाक बिगड़ैल बेटियों पर एक ताना था। असल में, वह कह रहा था, 'कुख्यात के बारे में कौन नहीं जानता,*bigdi-hui* डॉ. वैद की पोतियां?

लेकिन अब जब मैं बार-बार अपने मन में उन शब्दों को दोहराता रहता हूँ, तो मुझे लगता है कि उनका जोर शब्दों पर था।आदरणीय डॉ. वैदजैसे कि वह दीदी या मुझे नहीं, बल्कि दादाजी को ताना मार रहा हो।सम्मानितये शब्द व्यंग्य से कहे गए थे, श्रद्धा से नहीं। शायद दादाजी से सम्मान और डॉक्टर की उपाधि दोनों छीनने के लिए ऐसा कहा गया था। और क्यों नहीं? मुझे तो ये बात समझ में आती है। हमारे लिए तो इनमें से कोई भी बात जायज़ नहीं थी। लेकिन आखिर दादाजी के खिलाफ उनके पास क्या था?

23 अगस्त 2002

मनीष चाचा की नई दुकान पर पूजा हो रही है।

दादाजी और मनीष चाचा ने सफेद, कड़क कुर्ते पहने हुए थे और वे नवयुवक राजनेताओं की तरह लग रहे थे। फूफाजी ने अपना एकमात्र सूट पहना हुआ था और पापा पुराने कमीज-पैंट में थे, मानो वे उनके अकाउंटेंट हों।

‘हमें जाना ही क्यों है?’ दी ने बुदबुदाते हुए कहा।

मैंने पूछा, 'दादाजी ने आखिरी बार हमारे खाने का बिल कब चुकाया था?'

'चुप रहो, चाचा पर मत हंसो, और दादाजी की आंखों में मत देखो,' मम्मी ने हमारे जाने से पहले कहा।

करण भैया और अंशुमन भैया ने पिछली रात और आज सुबह का काफी समय दुकान की सफाई, धुलाई और रंगाई में बिताया था। घंटाघर से लगभग सौ गज की दूरी पर स्थित यह दुकान एक प्रमुख स्थान पर थी और इसे काफी ऊँची कीमत पर खरीदा गया था। दादाजी और बुआजी ने करण भैया और अंशुमन भैया की इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल किया था।

अब देखिए किस तरह कारिश्ता‘अब तो ग्राहक झुंड बनाकर आएंगे!’ फुफाजी ने खुशी से कहा, जब करण भैया और अंशुमन भैया दुकान का बोर्ड लगा रहे थे: वैद्य का फर्नीचर। मालिक: मनीष वैद्य

पंडित जी एक घंटे देरी से आए और दादाजी ऐसे बड़बड़ाने लगे जैसे यह हमारी गलती हो।

Dadaji made Karan Bhaiya and Anshuman Bhaiya dust every corner of the shop again while we waited outside.

मोटरसाइकिल की आवाज़ ने मेरा ध्यान खींचा। मैं मुड़ा। क्या यह एक आम चलन बन गया था? कि मैं उसे तब और वहाँ देखता था जहाँ मुझे उसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं होती थी? धूल के गुबार में, एक 150 सीसी की खड़खड़ाती, खांसती, गुस्सैल एनफील्ड मोटरसाइकिल पर सवार, उसका मैला सफेद कुर्ता हवा में लहरा रहा था, और एक पंडित—जिसके मुँह के कोनों से खून की तरह पान टपक रहा था—जान बचाने के लिए उससे चिपका हुआ था, वह वहीं था।

'अरे!के अनुसार‘इस तरह कौन गाड़ी चलाता है? क्या तुम पागल हो?’ पंडित ने बाइक से उतरते हुए गुस्से में कहा।

‘तुम्हारा भगवान तुम्हें बचाएगा, है ना?’ लड़के ने धृष्टतापूर्वक कहा।

घर की जिन महिलाओं को अपने बुजुर्ग रिश्तेदारों के अलावा किसी और के पैर छूने की मनाही थी, उन्हें इस बदज़ुबान, पान चबाने वाले आदमी के पैर छूने के लिए कहा गया। पंडित ने नाक सिकोड़ी और बिना देखे ही हमें ऐसे भगा दिया जैसे हम कोढ़ी हों।

उन्होंने दादाजी से पूछा, 'क्या इनमें से कोई भी महिला
अपवित्र नहीं है?' बुआजी, मम्मी, दीदी और मैंने सिर
हिलाकर मना कर दिया।

पंडित जी अंदर आए और उनके पीछे दादाजी और मनीष चाचाजी भी। फिर पंडित जी मुड़े और पापा जी से बड़े ही सहज लहजे में कहा: 'आपकी बेटियां अंदर आ सकती हैं, लेकिन आपकी पत्नी नहीं।'

‘*Haanji*"बिल्कुल। ये मेरी गलती है। मुझे याद रखना चाहिए था," माँ ने विनम्रता से कहा और दुकान के प्रवेश द्वार से हट गईं, उनके आँसू मुश्किल से छिपे हुए थे। "...ये मेरी गलती है।"

‘But, panditji—’

‘पूजा समाप्त होने के बाद वो अंदर आ सकती हैं,’ पंडित जी ने पापा की बात काटते हुए कहा। फिर फूफाजी, बुआजी, करण भैया और अंशुमन भैया अंदर चले गए। पापा और हम सब गुस्से से कांपते हुए बाहर खड़े रह गए।

'ओम प्रकाश!' दादाजी ने पापा से गरजते हुए कहा। 'तुम्हारी यहाँ जरूरत है।'

यह पहली बार नहीं था, फिर भी हर बार जब मम्मी को हवन और पूजा-अर्चना जैसे घर के धार्मिक अनुष्ठानों में भाग न लेने के लिए कहा जाता है, तो हमारे अंदर कुछ टूट जाता है; यह भावना और भी बदतर होती जा रही है। हमें अब बुरा भी नहीं लगना चाहिए, लेकिन...

पहले दिव्या दीदी और मेरे साथ एक जैसा बर्ताव होता था, लेकिन समय के साथ यह बदल गया है। ऐसा लगता है जैसे पापा ने किसी तरह हमारी मां के निम्न जाति के वंश को हमसे मिटा दिया हो।

‘पिताजी, उन्हें भी होना चाहिए’—’पापा ने
कहा, ‘हम तुम्हारे बिना भी शुरू कर सकते हैं।’
दादाजी ने कहा, ‘हम तुम्हारे बिना भी शुरू कर
सकते हैं।’

पापा ने सिर झुकाकर कहा, 'मेरे बिना शुरू करो।' दादाजी गुस्से से आग बबूला हो गए।

दिव्या दी अभी मुँह फेरने ही वाली थी कि माँ ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें रोक लिया। हम सब देखते रहे, शर्म और गुस्से से हमारे चेहरे लाल हो रहे थे।

हवन, यानी पवित्र अग्नि, प्रज्वलित की गई, जिसमें पुरुष आगे और बुआजी पीछे थीं।

मां ने फुसफुसाते हुए कहा, 'मैं ठीक हूं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'

मुझे अच्छी तरह पता है कि इन घटिया, फूट डालने वाले रीति-रिवाजों का क्या मतलब है! ये सब बकवास हैं, मंदबुद्धि लोगों के लिए हैं।

दिव्या दी, मम्मी की पकड़ में छटपटा रही थी। इसी बीच, मैंने उस लड़के पर नज़रें गड़ाकर अपना ध्यान भटकाया, जो समारोह देखने के लिए वहीं रुक गया था। लड़का मोटरसाइकिल से टेक लगाकर आग को बिना पलक झपकाए घूर रहा था। कभी-कभार वह अपने वॉकमैन पर गाने बदल देता और फिर से घूरने का काम जारी रखता। दो बार उसने पंडित जी के श्लोक के चरम पर पहुँचते ही ज़मीन पर थूका।

तीसरी बार, वह दिव्या दी के पास गया।

‘इससे आराम मिलेगा,’ उन्होंने कहा और अपना वॉकमैन उन्हें दे दिया, जिसमें इयरफ़ोन लटक रहे थे। उन्होंने सीधे मेरी तरफ देखा और कहा, ‘तुम एक ले लो,’ और इयरफ़ोन के एक सिरे की ओर इशारा किया। पापा और मम्मी के कुछ कहने से पहले ही, वे हमसे मुँह मोड़कर मोटरसाइकिल की तरफ वापस चलने लगे। मम्मी के विरोध को अनसुना करते हुए, हमने ‘प्ले’ बटन दबा दिया और इयरफ़ोन से एकदम कर्कश रॉक/मेटल/जो भी इसे कहते हैं, बजने लगा। पंडित जी के शब्द सुनाई नहीं दे रहे थे और ऐसा लग रहा था जैसे गाने में गालियाँ वही बोल रहे हों। दीदी अब गुस्से में नहीं थीं। गाना बदल गया था और अब वह मेटल नहीं था। वह हमारे बचपन का गाना था—फिल्म का।*Dulaara*; गीत '*Meri Pant Bhi Sexy*उस गाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था क्योंकि उसमें 'सेक्सी' शब्द था। यह बहुत हास्यास्पद था। दिव्या दी और मैंने लड़के की इस बेशर्म पसंद पर अपनी हंसी रोकने की पूरी कोशिश की। दिव्या दी ने लड़के को देखकर मुस्कुराया और उसे अंगूठा दिखाया, जिस पर उसने हल्के से सिर हिलाया।

करण भैया ने अंशुमन भैया को कोहनी मारी और हमारे कानों में लगे इयरफ़ोन और चेहरों पर मुस्कान की ओर इशारा किया। हमने हवन से अपनी नज़रें नहीं हटाईं, जो अब काफी सहनीय हो गया था।

पूजा समाप्त होने के बाद पंडित जी ने कहा, 'अब आप अंदर आ सकते हैं,' और हम सब धीरे-धीरे अंदर चले गए।

अब हम बहुत खुश थे।

‘तुम भी अंदर आ सकते हो,’ दादाजी ने लड़के से कहा।

लड़का देखता रहा, कोई जवाब नहीं दिया, और काफी देर चुप रहने के बाद बोला, 'मैं इस बकवास में नहीं पड़ना चाहता। मुझे पंडित जी को यहाँ छोड़ने और वापस ले जाने के लिए कहा गया था। अगर और काम है, तो मुझे उसके लिए पैसे मिलने चाहिए।' उसने एक और सिगरेट जलाई और उसे अपने होठों से बेजान सा लटका लिया। मैं सही थाआदरणीय डॉ. वैद की पोतियों को कौन नहीं जानता?उनके व्यवहार में दादाजी के प्रति किसी प्रकार का सम्मान नहीं झलकता था।

बुआजी ने सख्ती से कहा, 'क्या इसी तरह तुम्हारी परवरिश हुई है?' 'उसे पंडितजी कहो!' उसने कठोर स्वर में कहा, 'क्या तुम्हें लगता है कि मैं आपसे बात कर रहा हूँ, चाची?'

दिव्या दी और मैंने एक-दूसरे की ओर देखा, और हमारे बीच एक पल के लिए मुस्कान का आदान-प्रदान हुआ, इससे पहले कि करण भैया खड़े हुए और बोले, 'सालेक्या बात करने का यही तरीका है?*Tameez nahi hai kya*तुम्हारे शिष्टाचार कहाँ गए??'

लड़के ने सिगरेट ज़मीन पर फेंक दी और चप्पलों से उसे मसल दिया। करण की ओर सीधे देखते हुए उसने कहा, 'मैं यहाँ कोई समस्या पैदा नहीं करना चाहता।' भैया, जो लड़ाई के लिए बेताब थे।

अंशुमन भैया उस लड़के को परख रहे थे और शायद उन्हें एहसास हो गया था कि उनका भाई उस लड़के के शांत लेकिन रूखे स्वभाव का मुकाबला नहीं कर सकता।

पंडित ने कहा, 'उसे अकेला छोड़ दो।'

'क्या तुमने नहीं देखा कि उसने तुमसे कैसे बात की? माँ से?' करण भैया ने पूछा।

'मेरी बात सुनो, करण। हम उससे बाद में निपटेंगे।'*Abhi jaane de suar ko* अंशुमन भैया ने सावधानी से कहा, 'सूअर को जाने दो।'

लड़का वहीं अविचल खड़ा रहा, करण भैया को बिना पलक झपकाए घूरता रहा, भावहीन और बेहद घमंडी। फिर वह आगे बढ़ा, उसके पैर पक्के थे, आँखें केंद्रित थीं। मैं जानता था कि आगे क्या होने वाला है। लड़का करण भैया के बिल्कुल पास जाकर खड़ा होगा, उनके पहले वार का इंतज़ार करेगा, निडरता से वार सहेगा, और फिर करण भैया को अपनी चोटिल उंगली सहलाते देखेगा; फिर मुस्कुराएगा, एक और सिगरेट जलाएगा, एक लंबा, संतुष्टि भरा कश लेगा, और सारा धुआँ करण भैया के चेहरे पर उड़ा देगा; अंत में, वह एक तेज़ अपरकट मारेगा और करण भैया को नॉकआउट कर देगा। फिर वह अंशुमन भैया की गर्दन पकड़कर उनके चेहरे पर लात मारेगा।

ऐसा कुछ नहीं हुआ।

वह मेरे पास आया और शांति से मेरे दाहिने कान से इयरफ़ोन निकाला, फिर डाय के कान से भी। उसने उन्हें सावधानीपूर्वक वॉकमैन के चारों ओर लपेटा और सब कुछ वापस अपनी जेब में रख लिया।

लड़के ने अपनी पिछली जेब से एनफील्ड राइफल की चाबी निकाली, मेरे हाथों में थमा दी और कहा, 'अपने दादाजी से कहो कि बूढ़े आदमी को घर छोड़ दें। उनसे कहो कि थोड़ी मदद कर दें।' वह मुड़ा और चला गया।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

25 अगस्त 2002

देहरादून एक छोटा शहर है। गपशप, अफवाहें, घोटाले जंगल की आग की तरह फैलते हैं और यह बात हमसे बेहतर कोई नहीं जानता। दीदी कहती हैं कि बड़े शहरों में ऐसा नहीं होता।
जहां लोग बंद दरवाजों के पीछे छिपते हैं और अपने पड़ोसियों पर भरोसा नहीं करते। पड़ोसियों पर भरोसा करने से किसी को कोई फायदा नहीं होता, खासकर अगर आपके पड़ोसी हमारे जैसे हों।
तो हमारे जैसे मोहल्ले और कस्बे में, लोग उस लड़के के बारे में बहुत उत्सुक थे जिसे सबने देखा था, लेकिन उसके बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। एनफील्ड मोटरसाइकिल पंडित जी के घर के पास एक गैराज से थी।
ये उन लोगों के दर्ज किए गए बयान हैं जिन्होंने उनसे बात की थी।

वह यहाँ कई बार आ चुका है। वह हमेशा उस कोने में रखे कंप्यूटर पर बैठता है। जाने से पहले वह अपनी ब्राउज़र हिस्ट्री मिटा देता है, इसलिए मुझे नहीं पता कि वह क्या देखता है। मैंने उससे कभी बात नहीं की। वह गुंडे जैसा दिखता है, इसलिए मैंने कभी कोशिश भी नहीं की। वह हमेशा थोड़ा गुस्से में रहता है। पता नहीं वह कहाँ से आया है। मेरा काम सवाल पूछना नहीं है।सुरेश अंकल, गुप्ता साइबर कैफे

वो इतने सुंदर नहीं हैं। नहीं, मैंने कभी उनका नाम पूछने की जहमत ही नहीं उठाई। वो मुझे भाई कहते हैं, और मैं भी उन्हें भाई कहता हूँ।गैराज से एक लड़का

लंबा-चौड़ा लड़का? कुर्ता पहनता है? भारी आवाज़, जैसे किसी ने उसकी गर्दन पर स्कूटर चला दिया हो? हाँ, हाँ, मैं उसे जानता हूँ। अच्छा लड़का है। हर पैग के बाद पैसे देता है। कभी कोई परेशानी नहीं करता। वैसे थोड़ा डरावना ज़रूर है। ज़्यादा बात नहीं करता, यहाँ रहते हुए हर समय अपने ड्रिंक को घूरता रहता है। किसी से एक शब्द भी नहीं बोलता। लगता है उसका दिल टूटा हुआ है। वैसे उसका नाम नहीं पता। भला मैं किसी ग्राहक से उसका नाम क्यों पूछूँ?राजमार्ग पर एक बार के मालिक चाचाजी

लड़का देखने में काफी सुंदर है। लेकिन वो हमेशा गुस्से में ही रहता है, है ना? अपने अतीत के बारे में हमेशा रहस्यमय रहता है। लगता है कहीं से भागकर आया है।—

गैराज से एक और लड़का

क्या आप ओम प्रकाश की बेटी नहीं हैं?नीरज अंकल, मालिक, नीरज मिठाई की दुकान

मैंने उसे झुग्गी बस्ती के उन लड़कों के साथ कुछ बार देखा है। वह कम बोलता है। कहीं सुना है कि उसने दिल्ली में कोई बड़ा काम किया था। उसे भागकर यहाँ आना पड़ा। कितने समय से? कुछ लोग कहते हैं एक साल से? इससे पहले वह गाजियाबाद में था। अक्सर यहाँ फोन का इंतज़ार करता रहता है। अपने माता-पिता को कभी फोन नहीं करता।
ये तो अजीब बात है ना? बेटा, तुम क्यों पूछ रही हो? क्या तुम वैद्य भाई साहब की बेटी नहीं हो?

पीसीओ बूथ से सुमन आंटी

उसने दिल्ली में ज़रूर कुछ किया होगा। वरना वो अपना नाम क्यों छुपाता है? मैंने उससे एक बार पूछा था। उसने जवाब देना ज़हमत ही नहीं उठाई। वैसे, वो आवारा टाइप का लगता है।
उससे बात मत करो। यह सुरक्षित नहीं लगता।सुमन आंटी का बेटा

मैंने उसे एक-दो बार सिगरेट पीना छोड़ने के लिए कहा था। लेकिन उसके अंदर बहुत गुस्सा भरा है, इसलिए उसे सिगरेट पीनी ही पड़ती है। उस गुस्से का क्या? क्या आपको लगता है कि मैं उससे पूछूँगी? कौन जाने उसने क्या किया होगा! मैं इस झंझट में नहीं पड़ना चाहती।Rajesh, corner paanwala

इन सब बातों से एक ऐसे क्रोधित, दुखी लड़के की छवि उभरती है जो दिल्ली में किसी बड़ी घटना के बाद वहां से भाग गया था और देहरादून में अकेलेपन, सिगरेट और कभी-कभार शराब में सुकून ढूंढ रहा था। लेकिन पुस्तकालय में वह उस किताब के साथ क्या कर रहा था?

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

29 अगस्त 2002

आज सुबह गैराज वाले ने फोन किया। लड़का अपनी बाइक लेने आया था, जो उनकी सबसे सस्ती यामाहा आरएक्स100 थी, और उसने दिन का दोगुना किराया और साथ ही सिक्योरिटी डिपॉजिट भी दिया।

मैंने पूछा, 'आपने उसका नाम नहीं पूछा? आप किस तरह का व्यवसाय चला रहे हैं? क्या आपको पता है कि वह कहाँ गया?'

'Sahastradhara I think,' he had answered.

एक मूर्खतापूर्ण और लापरवाह सनक में, मैंने स्कूटर निकाला और सहस्त्रधारा चला गया, जो मेरे स्कूल द्वारा जाना जाने वाला एकमात्र पिकनिक स्थल था। बच्चे होने के नाते, हमें गंधक युक्त पानी में डुबकी लगाने या फिसलन भरी चट्टानों पर बैठने की भी अनुमति नहीं थी। मैं अपना स्कूटर पार्क कर रहा था तभी मेरी नज़र उस पर पड़ी।

पानी उसके चारों ओर बहता हुआ और तेज़ बहता हुआ था, वह रोती हुई चट्टानों में से एक पर बड़ी मुश्किल से टिका हुआ था। बिना कमीज़ के, भीगा हुआ, वह वहाँ बैठा था, उसकी आँखें आसमान की ओर थीं, शांत लेकिन तनावग्रस्त। मैंने चिल्लाया और मुझे फिर से एहसास हुआ कि मेरा कोई नाम नहीं है।समझना/मैंने चिल्लाया। मेरासुनोउस तक नहीं पहुंचा।

लगातार चिल्लाने से थककर मैं वहीं बैठा उसका इंतज़ार कर रहा था कि वो तैरकर इस तरफ आ जाए। वो अब लेटा हुआ था, अपनी ही दुनिया में खोया हुआ। फिर घंटों बाद, वो उठा और उथले तालाब में कूद गया। काफी देर तक वो दिखाई नहीं दिया। फिर हांफते हुए ऊपर आया।

पानी छोटी-छोटी धाराओं में उसके शरीर से बहता हुआ, उसकी कठोर मांसपेशियों के बीच से अपना रास्ता बनाता हुआ आगे बढ़ रहा था। उसका शरीर माइकल एंजेलो के डेविड की भूखी प्रतिकृति जैसा लग रहा था। उसके पास मांसपेशियां, नसें और बांहों पर फैली हुई शिराएं तो थीं, लेकिन वह दुबला-पतला था, शायद और भी सुडौल, शायद और भी परिपूर्ण। उफ़! उसे मांसपेशियों की बनावट का अध्ययन करने के लिए प्रयोगशाला में रखा जा सकता था।

मैं उठा, और इस नमूने की रोशनी में, मुझे अचानक एहसास हुआ कि खड़े होते समय मेरी जांघें कैसे कांप रही थीं। उसने कपड़े से खुद को सुखाया, और अपनी जींस और एक काली टी-शर्ट पहन ली जो उस पर ढीली लटक रही थी।

'अरे!'

‘हां?’ उसने कहा, इस बार उसकी आंखें मुझे भेद रही थीं, उसकी आवाज मेरे अंदर गूंज रही थी।

क्या तुम्हें मैं याद नहीं?

“अद्वैत वैद्य,” उसने कहा और ठंडी नज़र से मेरी ओर मुड़ गया, जो उस दिन उसके मददगार स्वभाव से बिलकुल अलग थी। उसने एक सिगरेट जलाई और एक लंबा, बेताब कश लिया।

मैंने विनम्रतापूर्वक मुस्कुराते हुए कहा, 'उस दिन के लिए धन्यवाद।'

उन्होंने बिना सिर हिलाए अपनी मोटरसाइकिल स्टार्ट कर दी। बातचीत जारी रखने की चाहत में और थोड़ी सी जिज्ञासावश, मैंने कहा, 'उस दिन आपने जो कहा था, उसका क्या मतलब था? आदरणीय डॉ. वैद्य की पोतियाँ?'

उसने फिर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, और मुझे मजबूर होकर कहना पड़ा, 'आप लड़कियों के बारे में इस तरह बात नहीं कर सकते।'

मैंने नहीं किया।

‘आप हम पर, दिव्या दी पर, ताना मार रही थीं, मैं बेवकूफ नहीं हूँ।’

‘मैंने किसी भी लड़की के बारे में उस तरह से बात नहीं की जिस तरह से आप मुझ पर आरोप लगा रहे हैं।’ ‘तो फिर आप किसके बारे में बात कर रहे थे?’

‘तुम इतनी समझदार हो कि समझ सको,’ उसने कहा, मोटरसाइकिल को किक मारकर स्टार्ट किया और चला गया।

'अरे!'

वह पहले ही काफी दूर जा चुका था।

अगले डेढ़ घंटे तक, मैं देहरादून तक उसका पीछा करता रहा, अपनी टू-स्ट्रोक मोटरसाइकिल के इंजन की पूरी ताकत लगाता रहा। थोड़ी देर बाद, ऐसा लगा जैसे वह मेरा मज़ाक उड़ा रहा हो—वह धीमा हो जाता, जिससे मुझे लगता कि मैं दूरी तय कर रहा हूँ, और फिर अचानक तेज़ हो जाता। बाद में, उसने अपनी मोटरसाइकिल टमाटर सूप वाले के पास खड़ी कर दी, हालाँकि यह नाम ठीक नहीं था क्योंकि वह चिकन सूप भी बेचता है। यहीं पर दीदी और मैंने करण भैया और अंशुमन भैया को चिकन के टुकड़ों से भरे सूप को मज़े से पीते हुए पकड़ा था।

‘तुम क्या चाहते हो?’ उसने पूछा।

उसके शब्द मेरे दिमाग पर हथौड़े की तरह पड़े। मैं उससे क्या चाहती थी? मैं बस इतना तो नहीं कह सकती थी कि वह मुझे दिलचस्प लगता है, और मुझे कोई आपत्ति नहीं होती।

उससे बातचीत करना। कितना हास्यास्पद होता! इसलिए, एक अज्ञानी मुर्गे की तरह, मैं लड़खड़ाने और हकलाने लगा।

‘अरे? तुम मेरे दादाजी का मजाक उड़ाकर यूं ही चले नहीं जा सकते,’ मैंने कहा।

उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा, 'मैंने उनके बारे में जो कहा, उसके लिए मैं माफी नहीं मांगूंगा।' 'यह असभ्य है। मुझे नहीं पता आपने मेरे दादाजी के बारे में क्या सुना है, लेकिन यह...'

यह अनुचित है। मुझे बताओ, तुमसे किसने क्या कहा?

उसने मेरी तरफ ऐसे देखा मानो मैंने उससे कोई बेतुका सवाल पूछ लिया हो।

'जब तक तुम मुझे यह नहीं बताओगे कि तुम्हें किसने क्या बताया, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा। मैं इस तरह की अफवाहें बर्दाश्त नहीं करूँगा,' मैंने कहा और कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया।

'क्या तुम सचमुच तब तक यहीं बैठे रहोगे जब तक मैं तुम्हें बता न दूं?' 'हां।'

'अपने आप को जो उचित लगे।'

पंद्रह मिनट बीत गए और वह अखबार पढ़ता रहा, पलकें भी नहीं झपकाता रहा, जिससे मुझे बेचैनी होने लगी। वह सूप पी रहा था और ज़ोर-ज़ोर से धुआँ उगल रहा था। ऐसे महंगे और गंदे शौक को निभाने के लिए अमीर होना वाकई अच्छा है।

मुझे उठकर चले जाना चाहिए था, लेकिन मैं वहीं रुकी रही। मैंने इस काम के लिए बहुत बड़ी प्रतिबद्धता जता दी थी और मैं इसे पूरा करके ही रहूंगी। मैं जिद्दी भी हो सकती थी। अगर मैं अपने दादाजी के बारे में फैली 'अफवाहों' को खत्म नहीं करती, तो मैं कैसी पोती कहलाती?

मैंने पूछा, 'क्या तुम हमेशा इतने उदास रहते हो या सिर्फ तुम्हारी आवाज ऐसी है?'

उसने फिर से मेरी ओर देखा, कुछ नहीं कहा, बस उसकी दर्द भरी आंखें मुझे ऐसे देख रही थीं मानो मैंने ही कुछ गलत किया हो।

'आपने हमारे लिए जो वॉकमैन वाला काम किया था, उसके लिए मैं आपको यह देना चाहता था।'

मैंने कहा, 'लो, इसे ले लो।'

'यह क्या है?' उसने पॉलिथीन का थैला खोला और कुर्ता अपने सामने रखा। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आई, लेकिन उसने कहा, 'मैं इसे नहीं ले जा सकता।'

'यह तुम्हारे लिए ही बना है और इसे तुम्हारे लिए हासिल करने में मुझे बहुत परेशानी उठानी पड़ी। इसे रखो या फेंक दो।'

उसने कुर्ते को वापस पॉलिथीन बैग में रखा और धीमी आवाज़ में 'धन्यवाद' कहा।

'आपका स्वागत है,' मैंने कहा। 'लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं भूल गया हूँ।'

तुम्हारी अफवाहें फैलाने की आदत!

उसने चिड़चिड़ाते हुए अपनी आँखें घुमाईं।

'तुम मेरा नाम तो जानते हो। कम से कम अपना नाम तो बता दो। तुम आदित्य जैसे दिखते हो, है ना? रुको, रुको। तुम समीर हो, है ना? या रेहान?'

‘इनमें से कोई भी चुन लें।’

‘ठीक है, मैं ऐसा करूँगा, लेकिन आपका असली नाम क्या है? वह नाम जो आपके माता-पिता ने आपको दिया है।’

मेरी निगाहें पकड़ते हुए और दयनीय मुस्कान के साथ उसने कहा, 'रघु गांगुली, कभी एक गर्वित हिंदू हुआ करता था, तुम्हारे दादा और बुआजी की तरह एक ब्राह्मण।'

‘तुम क्यों मुस्कुरा रहे हो? देखो, किसी ने भी तुम्हें जो कुछ भी बताया हो, वह सच नहीं है।’

‘क्या यह सही है?’ ‘बिल्कुल!’

‘क्या उन्होंने इस साल की शुरुआत में जो हुआ उसका जश्न नहीं मनाया? जुलाई में मोहयाल सम्मेलन में मुसलमानों के खिलाफ जोशीला भाषण नहीं दिया? सभी हिंदुओं से एकजुट होकर मुसलमानों को देश से बाहर निकालने का आह्वान नहीं किया?’ उनके अंतिम शब्द गुस्से से फूट पड़े।

‘देखो, मैं तुम्हें मुश्किल से जानता हूँ और तुम यूँ
ही—’ उसने बुदबुदाते हुए कहा, ‘क्या उसने ऐसा किया
या नहीं?’

‘उसने किया।’

इस साल की शुरुआत में, हज़ारों मुसलमानों और उनसे कुछ कम संख्या में हिंदुओं को बेरहमी से मार डाला गया था। दोनों समुदायों ने एक-दूसरे की महिलाओं का बलात्कार किया, शिशुओं को त्रिशूल और तलवारों पर लटका दिया और एक के बाद एक कई मोहल्ले जला दिए। कहा जाता है कि तगड़े मुख्यमंत्री भी इसमें शामिल थे, लेकिन सभी जानते हैं कि भारत में होने वाले अधिकांश दंगों की तरह, उनके खिलाफ कुछ नहीं होने वाला। उन्हें देशभर के हिंदुओं का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष समर्थन ज़बरदस्त था। दादाजी देहरादून में सबसे आगे थे, सभाओं में भड़काऊ मुस्लिम-विरोधी भाषण दे रहे थे और हिंदू घरों को लोहे की छड़ें, तलवारें और कुल्हाड़ियाँ जमा करने की ज़रूरत पर ज़ोर दे रहे थे, ताकि अगर युद्ध उनके राज्य तक फैल जाए तो वे उनका सामना कर सकें।

बुआजी ने कहा था, 'हमें धीरे-धीरे उन्हें इस देश से बाहर निकाल देना चाहिए।'

दादाजी ने कहा था, 'वे भी हम ब्राह्मणों के खिलाफ युद्ध में शामिल हो गए होंगे।'

बाद में मम्मी ने मुझे बताया कि अल्ताफ और इकबाल दादाजी के भाषण के बारे में सुनकर हमारे घर आने से बहुत डर गए थे।

‘मुझे जाना होगा,’ उसने कहा और अखबार को मोड़ दिया।

‘लेकिन...लेकिन इससे तुम्हारा क्या लेना-देना है?’ मैंने पूछा।

‘तुम्हारे दादाजी जैसे लोगों ने मेरी जिंदगी बर्बाद कर दी।’ उसने मेज पर हाथ पटका।

1 सितंबर 2002

हालात काफी तेजी से बदले हैं, और मनीष चाचा की दुकान से पहले ही अच्छा मुनाफा मिलने लगा है। कल ही मनीषा चाचा, फूफाजी और बुआजी राजपुर रोड पर दो और टर्नर रोड पर एक घर में गए और योग्य लड़कियों से मिले। मनीष चाचा ने सिर झुकाए, मानो किसी मरते हुए आदमी की तरह दिलचस्पी दिखाते हुए सारी कार्यवाही देखी। उनमें से दो लड़कियां तीस साल की उम्र की थीं।कभी-कभीलेकिन वे धनी और चापलूस थे, और आखिरी वाला, बुआजी के शब्दों में, 'असहनीय रूप से बदसूरत था और उसने बहुत ज्यादा पढ़ाई की थी'।

‘उनकी हिम्मत कैसे हुई यह सोचने की कि मैं मनीष को ऐसी डायन को सौंप दूंगी?’ बुआजी ने उस लड़की के घर से निकलने के बाद कहा था।

लेकिन चौबीस घंटे के भीतर ही बुआजी का रवैया बदल गया और वह उस लड़की के प्रति आसक्त हो उठीं जिसे उन्होंने पहले एक विकराल प्राणी समझा था। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि कुछ अफवाहें उन तक पहुँच चुकी थीं। चर्चा थी कि लड़की भाग गई थी, शादी कर ली थी, लेकिन दो महीने के भीतर ही उसके पति ने उसे छोड़ दिया और वह चेहरे पर चोट के निशान, टूटे हाथ और टूटे दिल के साथ अपनी माँ के घर लौट आई थी।

‘उसके माता-पिता इस शादी को करवाने के लिए हर संभव कोशिश करेंगे। हम उनसे कुछ भी मांग सकते हैं,’ उसने फुफाजी और दादाजी से अपने रहस्यमय लहजे में कहा होगा।

‘मनीष का क्या होगा? क्या वो हाँ कह देगा?’ बुआजी पूछतीं। ‘यह मुझ पर छोड़ दो। मैं भैया को संभाल लूंगी,’ बुआजी कहतीं।

और मुझे लगता है कि दादाजी चुप ही रहते, क्योंकि वे जानते थे कि बुआजी ज्यादा समझदार थीं।

मैं उसका खूबसूरत चेहरा, उसके शब्द, उसकी पीड़ा से भरी आँखें, उसकी कर्कश लेकिन कोमल आवाज़, और मेरे दादाजी और उनके जैसे लोगों के प्रति उसकी कथित नफरत को अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रही हूँ। मैं जागती रहती हूँ और सोचती रहती हूँ कि रघु गांगुली के साथ क्या-क्या हुआ होगा जिसकी वजह से उसने वो सब कहा, और उससे सिर्फ एक ही बात का इशारा मिलता है। वो एक मुस्लिम लड़की से प्यार करता था।

और यह कि उनका रिश्ता टूट गया था—जैसा कि अक्सर होता है—उनके धर्मों के

कारण। किसी भी स्वाभिमानी जासूस की तरह, मैंने इसकी पुष्टि करने के लिए आसपास पूछताछ की।

अगर मेरी कहानी सच साबित होती।

4 सितंबर 2002

काफी समय बाद दिव्या दी को प्रिंट कैटलॉग का काम मिला है और वो पिछले कुछ दिनों से इस पर काम कर रही हैं। बुआजी और बाकी सबने कई बार नाक-भौं सिकोड़ी है, लेकिन उससे जो पैसा आएगा उससे घर का खर्च चल जाएगा, इसलिए उन्होंने कोई बड़ा कदम नहीं उठाया है। इसलिए मुझे अकेले ही निकलना पड़ा जब मुझे खबर मिली कि राजपुर रोड की सुमित्रा बाली का नाम मनीष चाचा के लिए शॉर्टलिस्ट में है। उन्हें बचाना जरूरी था।

मैंने सुमित्रा बाली को पलटन बाजार में आइसक्रीम के टुकड़े खरीदते देखा। क्या वे मेहमानों के आने की उम्मीद कर रहे थे? या फिर वे उतने ही अमीर थे जितना फुफाजी और बुआजी उम्मीद करते थे और हर दिन आइसक्रीम खाते थे?

बुआजी ने उसका जैसा वर्णन किया था, वह उससे बिलकुल अलग थी। उसके लिए 'बदसूरत' शब्द तो मैं कभी इस्तेमाल ही नहीं करता। 'शक्तिशाली', 'निर्णायक' और 'मजबूत' जैसे शब्द तुरंत मेरे दिमाग में आए। तीर की तरह लंबी और सीधी खड़ी वह बाज़ार में सबसे अलग दिख रही थी। एक ऐसी साड़ी पहने, जिसकी एक भी तह इधर-उधर न हो, सिर ऊंचा, कंधे आत्मविश्वास से भरे और कदम लंबे और दृढ़, वह ऐसी लग रही थी मानो किसी विश्व-परिवर्तनकारी बोर्ड मीटिंग से सीधे बाहर आई हो।

मुझे अपनी स्कूटी पर बैठा देखकर वह हैरान रह गई। पहले तो वह मुझे पहचान ही नहीं पाई। फिर जब उसने मुझे पहचाना, तो उसका व्यवहार बदल गया—कंधे झुके हुए, नज़रें नीचे झुकी हुई, चेहरे पर बनावटी मुस्कान।

मैंने कहा, 'तुम मेरे चाचा से शादी नहीं कर सकती। घर जाओ और अपने माता-पिता को बताओ कि ऐसा नहीं हो सकता। कोई भी बहाना बना लो, ठीक है?'

मैं उसके चेहरे पर दिख रहे सदमे को समझ सकता था, इसलिए मुझे उसे समझाना पड़ा।

'जानते हो, हम वैद्य अपने रंग-रूप पर बहुत गर्व करते हैं। हम सब गोरे, लंबे और मजबूत हड्डियों वाले हैं। हमारी माँ को छोड़कर, हम सब पक्के आर्य हैं। लेकिन तुम...'

मुझे पता है कि तुम भी ब्राह्मण हो, लेकिन तुम तो एकदम बदसूरत हो। तुम्हारा रंग भूरा है और मैं नहीं चाहूँगा कि मेरे छोटे भाई-बहन तुम्हारी तरह काले और बदसूरत हों। क्या तुम्हें मेरी बात समझ आ रही है? मनीष चाचा खुद भी...

मैं ये कहना चाहता था, लेकिन उसने मुझे भेज दिया। घर जाओ और वही करो जो मैंने अभी तुम्हें बताया है। हम अपने घर में तुम्हारे जैसे दिखने वाले किसी और को नहीं रख सकते। वरना—'

'या?'

मैं बस इतना कहना चाहती हूँ कि हमारे घर में आपकी मौजूदगी को अच्छा नहीं माना जाएगा। और आपके इतिहास को देखते हुए, मुझे नहीं लगता कि आपके माता-पिता भी आपकी मदद के लिए आगे आएंगे। या फिर आप किसी दूसरे घर से भगाए जाना पसंद करेंगे?

मेरी धमकियों से बेपरवाह सुमित्रा ने कहा, 'तुम मेरे साथ ऐसा क्या करोगे जो पहले नहीं किया गया हो?'

'तुम्हें अंदाजा भी नहीं है,' मैं लड़खड़ाते और हकलाते हुए बोला, उसे डराकर भगाने की मेरी योजना चकनाचूर हो गई।

'क्या तुम्हारे चाचा मेरा
बलात्कार करेंगे?' 'मैं...'

'या तुम्हारी बुआजी पैसे मांगेंगी?'

'सुमित्रा...'

'या फिर फुफाजी और दादाजी मुझे उस चाय से जला देंगे जो मैं उनके लिए बनाऊंगी?' उसने गुस्से से कांपते होंठों के साथ कहा, उसके हाथों में रखी आइसक्रीम धीरे-धीरे पिघल रही थी।

'उम्म—'

'क्यों? क्या आपके पास धमकी देने के लिए और कुछ नहीं है?'

'मैंने तो अभी शुरू भी नहीं किया!' मैंने विरोध किया, फिर भी मैं उसे उस भयानक जाल से डराकर दूर रखने की अपनी योजना पर कायम रहने की कोशिश कर रहा था जिसमें वह फंसने वाली थी।

'तो फिर तुम ऐसा क्यों कर रहे हो, अद्वैत?' उसने पूछा।

'देखो—'

'मैं तुमसे नहीं डरता, अद्वैत। तुम तो बच्चे हो।' 'मैं
बच्चा नहीं हूँ!' मैंने झल्लाकर कहा।

'क्या तुम आइसक्रीम खाना चाहते हो?'
उसने पूछा। 'नहीं!'

'तुम बहुत प्यारी हो, अद्वैत।'
बेशक मुझे भी कुछ चाहिए था।

सुमित्रा पहले से ही मेरे बगल में बैठी थी और आइसक्रीम के ऊपर से कागज़ का कवर हटा रही थी। फिर उसने प्लास्टिक के चम्मच से आइसक्रीम निकाली, थोड़ी खुद खाई और फिर मुझे भी दी। मैंने बेमन से खाई, और तय किया कि मुझे इसका

ज़्यादा आनंद नहीं लेना है।

जब मैं उसका स्वाद ले रहा था, उसने पूछा, 'अच्छा है ना? और चाहिए?'

मैंने हाँ में सिर हिलाया, और उसने मुझे ईंट और चम्मच दे दी। वह मेरे दिखावे और मेरी खोखली धमकियों को भली-भांति समझ गई थी।

सुमित्रा ने कहा, 'तुम्हारे चाचा अच्छे इंसान हैं। यह तो मुझे साफ दिख रहा है। तुम्हारी बुआजी और फूफाजी शैतान हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वे मेरे माता-पिता से ज्यादा बुरे हो सकते हैं।'

'लेकिन-'

'मैं जानता हूँ कि मैं किस चीज में पड़ रहा हूँ, अद्वैत।'

मैंने जो कहा उसके लिए मुझे खेद है। तुम सचमुच बहुत खूबसूरत हो।

सुमित्रा ने मेरी खातिर मुस्कुराया। मुझे यकीन है कि मेरे शब्दों का उस पर कोई असर नहीं हुआ। इतने सालों में उसने बहुत से लोगों से कई बार सुना होगा कि वह सांवली है।*saanwli*बदसूरत सा। यह उसकी मोटी त्वचा से व्यर्थ ही टकराया।

'यह मत कहना कि मैंने तुम्हें चेतावनी

नहीं दी थी।' 'इसके लिए धन्यवाद,'

उसने कहा।

'तुम्हारा जीवन कितना बुरा रहा है कि तुम मेरे परिवार को एक बचाव योजना के

रूप में सोच रहे हो?' 'तुम्हारे चाचा ने भी यही कहा था। लेकिन दुख तो सापेक्ष ही

होते हैं, है ना?'

मैं उम्मीद नहीं छोड़ सकता, है ना?

हम दोनों उसकी बदकिस्मती पर हँसे। बाद में, उसने मुझे अपनी स्कूटी चलाने दी। वह एक अच्छी लड़की है। मुझे वह पसंद है। मैंने उसकी रक्षा करने की कसम खाई है।

उसने मुझे पलटन बाजार तक वापस छोड़ दिया, और जाने से पहले उसने मुझे सुंदर बताने के लिए धन्यवाद दिया।

'मुझे आप पर विश्वास है,' उसने मुस्कुराते हुए कहा, उसके मोती जैसे सुंदर दांत चमक रहे थे। फिर जब मैं जाने ही वाला था, उसने मुझे फोन किया,

'हे?' 'हां?'

'क्या तुम्हारी बहन को तुम्हारे चाचा और मेरे बारे में पता है?' उसने उदास स्वर में पूछा।

'क्यों?'

उसने कहा, 'वह कॉलेज में मेरी सबसे अच्छी दोस्त हुआ करती थी।'

यह अजीब बात है कि मैंने दिव्या दी से उनका नाम कभी नहीं सुना।

जब मैंने दिव्या दीदी को बताया कि बुआजी ने मनीष चाचा के लिए किसे चुना है, तो उनका चेहरा ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने भूत देख लिया हो। गुस्से से उनका पूरा शरीर कांप रहा था और वे कमरे में इधर-उधर ऐसे घूम रही थीं जैसे किसी को मुक्का मारने के लिए ढूंढ रही हों। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें दौरा पड़ जाएगा।

'मुझे यह बात पहले किसी ने क्यों नहीं बताई!'

‘सुमित्रा कौन है—’

‘वो लड़की कमीनी है! वो झूठी, धोखेबाज वेश्या है!’

‘क्या तुमने किया? शांत हो जाओ—’

‘मुझे शांत होने के लिए कहने की हिम्मत मत करना। वह औरत मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी और विभोर के साथ संबंध बना रही थी! वह मेरी दोस्त थी, विभोर के लिए उपहार चुनने में मेरी मदद कर रही थी और उसके साथ संबंध बना रही थी!’ गुस्से से उसकी आँखों में आँसू भर आए।

उसने आगे कहा, 'उसमें इतनी धृष्टता थी कि मेघनाद द्वारा उसे शहर से भगा दिए जाने के बाद भी वह उससे संपर्क में रही। एक साल बाद वह भाग गई।'

‘Vibhor Gupta wasn’t a good guy, Di.’

‘तुम उसे नहीं जानती, अद्वैत। कौन जाने, हो सकता है उसने दिल्ली के हर आदमी के साथ संबंध बनाए हों!’

‘देखो उसने सुमित्रा के साथ क्या किया। मेरी राय में, तुमने खुद को जीवन भर के दर्द से बचा लिया।’

‘तुम्हें यह नहीं मिलेगा। वह औरत हद से ज़्यादा बुरी है। अगर वह इस घर में आई तो मैं उसके चेहरे पर घूंसा मार दूंगी!’ उसने कहा और गुस्से में चली गई।

सच कहूँ तो, मैं इसे पाना नहीं चाहती। अगर दिव्या दी और वो लड़का (अगर प्यार ने उसे तोड़ दिया) प्यार में पड़ने पर ऐसे बन जाते हैं, तो मैं इसे महसूस नहीं करना चाहती। जब कोई भावना सिर्फ़ असहनीय दर्द देती है, तो उसमें इतना समय क्यों लगाना? दुनिया में पहले से ही बहुत दुख हैं, एक और क्यों बढ़ाना?

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

6 सितंबर 2002

हम सबने इसे अपने घर से सुना।

जब हम अपने पड़ोसियों के साथ दुर्घटनास्थल पर पहुंचे, तब तक लगभग तीस लोग वहां मौजूद थे, जो सदमे में थे और अपनी जगह पर जमे हुए थे।
खून, आग और जले हुए मांस की दुर्गंध हवा में फैली हुई थी। करण भैया हममें से सबसे पहले भीड़ को चीरते हुए उस जगह पहुंचे जहां पलटी हुई बस जल रही थी। चारों ओर ऐसी चीखें गूंज रही थीं जो मुश्किल से ही किसी इंसान की आवाज लग रही थीं।

इन सबके बीच, मुझे रघु की जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी—गहरी, भारी और दमदार। दिव्या दीदी और मैं धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़े। तीन एम्बुलेंस हमारे सामने आकर ज़ोर से रुकीं। खून से लथपथ रघु, करण भैया, अंशुमन भैया और अन्य लोग ट्रक से आमने-सामने टकराई क्षतिग्रस्त बस से एक-एक करके लोगों को बाहर निकाल रहे थे। वे लोगों को एम्बुलेंस में लाद रहे थे। सड़क पर फैले खून और मांस को देखकर और भी पुरुष और महिलाएं बचाव कार्य में जुट गए। किनारे खड़े लोग भी रो रहे थे, शायद अपनी जान की आशंका से।

मैंने रघु को सिर पकड़े हुए, रोते हुए, बिलखते हुए और कांपते हुए इधर-उधर घूमते देखा। फिर पलक झपकते ही वह भागा, सड़क के डिवाइडर को फांदकर चलती गाड़ियों के बीच में कूद गया और सड़क के बीचोंबीच खड़ा होकर गाड़ियों को हाथ हिलाकर रोक रहा था, सड़क के हमारे हिस्से में हुए हादसे की ओर इशारा कर रहा था। कुछ गाड़ियाँ बाल-बाल उससे बचते हुए निकल गईं, लेकिन उन्होंने मरने वाले की तरफ देखा तक नहीं, कहीं ऐसा न हो कि उन्हें जीवन भर इस अपराधबोध के साथ जीना पड़े कि वे नहीं रुके। रघु ने एक पत्थर उठाया और उसे उस गाड़ी पर फेंक दिया जो उससे बचने की कोशिश कर रही थी। एक आदमी और एक औरत गालियाँ बकते हुए बाहर निकले। रघु ने आदमी को घूंसा मारा, औरत को धक्का देकर दूर कर दिया और उनकी गाड़ी की ओर दौड़ा। फिर उसने गाड़ी को डिवाइडर के ऊपर से उस जगह की ओर दौड़ा दिया जहाँ मरने वाला पड़ा था।

‘सब लोग! अंदर आओ!’ उसने चिल्लाकर कहा।

लोग तुरंत हरकत में आ गए। घायलों को तब तक अंदर धकेला गया जब तक कि अंदर जगह बिल्कुल नहीं बची।

‘अद्वैत! ऐसा मत करो!’ दिव्या दी चिल्लाई।

‘मुझे शॉर्टकट पता हैं!’ मैं कार की ओर दौड़ते हुए चिल्लाई।

जैसे ही रघु ने गाड़ी चलाना शुरू किया, सालों से बस पकड़ने की आदत ने मुझे मजबूर कर दिया और मैंने दरवाजा खोलकर गाड़ी में छलांग लगा दी।

‘रुको।’ उसने एक्सीलरेटर पर पैर रख दिया।

‘मेरी तरफ देखो,’ मैंने उससे कहा।

अगले पंद्रह मिनट तक, मैंने उसे संकरी गलियों, पार्क रोड, टर्नर रोड और क्लेमेंट टाउन के शॉर्टकट रास्तों से होते हुए अस्पताल पहुँचाया, और हम दुर्घटनास्थल से निकल चुकी अन्य एम्बुलेंस से पहले ही वहाँ पहुँच गए। जैसे ही उसने ब्रेक लगाया, वार्ड बॉय दौड़कर हमारे पास आ गए।

रघु वहीं खड़ा रहा जब वार्ड बॉयज़ ने अपना काम शुरू किया। वह तब तक देखता रहा जब तक कि आखिरी व्यक्ति को स्ट्रेचर पर नहीं उतारा गया, उसके अंग बेजान से लटक रहे थे। वह उन धब्बों और खून के तालाबों को बिना पलक झपकाए देखता रहा जहाँ कभी शव पड़े थे, उसकी मासूम आँखें आँसुओं से भरी थीं, उसके हाथ बगल में काँप रहे थे। वह टूटा हुआ लग रहा था। खोया हुआ। हारा हुआ।

जब आखिरी शव को भी ले जाया गया, तो मैंने कहा, 'हमें यहां से निकलना होगा।'

वह मेरी ओर मुड़ा, उसकी आँखें लाल थीं और होंठ काँप रहे थे। उसने अपना मुँह हिलाया, लेकिन शब्द नहीं निकल रहे थे। खून से लथपथ दृश्य की ओर इशारा करते हुए उसकी आँखों से आँसुओं की पतली-पतली धाराएँ बह रही थीं।

‘ब्रह्म...ब्रह्म...’ वह हकलाते हुए बोला।

‘वे ठीक हो जाएंगे।’

वह बुरी तरह टूट चुका था और मुँह फेर लिया। वह ज़मीन पर गिर पड़ा और अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया। उसका शरीर ज़ोर-ज़ोर से हिल रहा था।

मैंने उसे उठाते हुए कहा, 'हमें चलना चाहिए।'

‘लेकिन वो...’ उसने किसी की ओर इशारा नहीं किया, बस खून

और मांस के टुकड़े ही दिखाई दिए। ‘वहाँ कोई नहीं है, रघु।’

‘वह... वह बिल्कुल वहीं थी... वह... मैं उससे प्यार करता था और मैं उसे बचा नहीं सका...’ फिर उसने खुद को देखा, अपने शरीर पर लगे खून को देखा और घबरा गया। वह बेतहाशा खून को अपने शरीर से पोंछने लगा।

मुझे उसे पकड़कर वहाँ से घसीटकर बाहर निकालना पड़ा। वह खो गया था, उसका शरीर उसके नियंत्रण से बाहर था, उसकी आँखें व्यर्थ ही आगे घूर रही थीं। पहले तो वह मेरे पीछे-पीछे धीरे-धीरे चलता रहा,

लड़खड़ाते और गिरते हुए, दो बार गिर पड़ा, लेकिन अस्पताल परिसर से बाहर निकलते ही वह दौड़ने लगा। मुझे उसका हाथ छोड़ना पड़ा। दस मिनट बाद भी वह दौड़ रहा था, मुझसे दूर भागता हुआ, कुछ बुदबुदाते हुए।

'रुको!' मैंने चिल्लाकर कहा, लेकिन उसने मेरी बात नहीं सुनी।

मैंने उसके साथ चलने की कोशिश की, लेकिन मेरी सांस फूल गई और मैं लड़खड़ाकर गिर गया। वह अभी भी भाग रहा था, मेरे दिमाग में धुंधला सा दिख रहा था। उसने अपनी गति धीमी नहीं की, मेरी चीखें उस तक पहुँच ही नहीं रही थीं। बल्कि, वह हर पल और तेज़ दौड़ रहा था। मैं उसके पीछे लंगड़ाते हुए चल रहा था, वह बेसुध होकर भाग रहा था, गाड़ियों से बाल-बाल बच रहा था। फिर वह अपनी आज किराए पर ली हुई स्प्लेंडर मोटरसाइकिल पर बैठ गया। एक पल की लापरवाही में, मैं भी उस पर चढ़ गया। मैंने उससे बात करने की कोशिश की, उसके कानों में चिल्लाकर उसे रुकने को कहा, उससे कहा कि हम बात कर सकते हैं, लेकिन वह चलता रहा।

* * *

झारीपानी जलप्रपात, वहीं वह हमें दो घंटे में ले गया, और मैं एक छोटे बंदर की तरह उसके पीछे चिपका रहा।

वीआईपी अंडरवियर पहने हट्टे-कट्टे आदमी और भीगे हुए सलवार-कमीज़ पहने औरतें और लड़कियाँ इधर-उधर भागती हुई तस्वीरें खींच रही थीं। उसने अपना भीगा हुआ कुर्ता उतार दिया। उसने अपनी पैंट उतारी और पानी में उतर गया, वहाँ ठंडे पेय पदार्थों के बक्सों को पार करते हुए आगे बढ़ा।

मैं बैठा रहा और उसे झरने के दूसरे छोर तक जाते हुए देखता रहा। मैंने मम्मी-पापा के साथ पिकनिक के दौरान कई बार पानी के गिरने की जगह पर खड़े होने की कोशिश की है। पानी इतनी ज़ोर से सीने पर पड़ता है कि आप उसके लिए तैयार नहीं होते, और जल्द ही दर्द असहनीय हो जाता है और आप झुक जाते हैं। वह वहाँ बिना हिले-डुले खड़ा रहा, पानी उसे ज़ोर से थपथपा रहा था। दूसरे आदमी और लड़के, अपने अहंकार से प्रेरित होकर, उसके पास जाने की कोशिश करने लगे, लेकिन बुरी तरह नाकाम रहे। जब वह बाहर आया, तो पहले से थोड़ा कम थका हुआ लग रहा था, वह चट्टानों पर बैठ गया और सिगरेट जला ली।

एक पल के लिए मेरा मन किया कि उसे खरी-खोटी सुना दूं, लेकिन वह अब भी कांप रहा था, सिगरेट और उसकी उंगलियां हिल रही थीं। मैंने पास में टी-शर्ट बेच रहे एक लड़के से 'आई लव देहरादून' लिखी टी-शर्ट खरीदी और उसे पहनने के लिए दे दी।

'हं?'

मुझे वहाँ देखकर वह हैरान हुआ, लेकिन उसने उसे ले लिया और पहन लिया। आँसू थम गए थे, आँखों में फिर से वही जोश और जुनून लौट आया था, लेकिन उसमें अभी भी वही कमज़ोरी थी। और गुस्सा, दर्द, दर्द और गुस्सा।

मैंने पूछा, 'क्या मुझे चले जाना चाहिए?'

उसने कोई जवाब नहीं दिया। मेरी नज़र उस पर पड़ी और उसकी आँखों से फिर से आँसू बहने लगे। क्या इसका मतलब था कि वह चाहता था कि मैं रुकूँ? उसे दिलासा देने की उम्मीद में, मैंने हाथ बढ़ाकर उसका हाथ थाम लिया। कुछ ही पलों में, उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया और मुझसे नज़रें हटा लीं। मैं उससे पूछना चाहती थी कि उसे क्या परेशान कर रहा है, लेकिन उसका दर्द शब्दों से परे और असहनीय लग रहा था, इसलिए मैं बस वहीं बैठी रही और उसे सिगरेट पीते हुए देखती रही।

मैंने पूछा, ‘क्या इससे आपको किसी चीज़ की याद आई?’ ‘दुर्घटना? खून?’ कुछ देर बाद उसने धीरे से कहा, ‘मृत्यु।’

मैंने काफी देर तक इस सवाल पर विचार किया, फिर पूछा, 'रघु?'

दिल्ली में क्या है? आप क्या पीछे छोड़ आए हैं?

वह मेरी ओर मुड़ा, शायद भय, क्रोध या आश्चर्य से, और फिर उठकर दूर जाने लगा।

‘रघु? शायद मैं तुम्हारी मदद कर सकूँ। मुझसे बात करो।’ मैंने कहा और एक आवारा कुत्ते की तरह उसके पीछे-पीछे चल दिया। ‘रघु? तुम मुझे क्या बताने की कोशिश कर रहे थे? ब्रह्म...’

.?’

वह नहीं रुका।

मैंने कहा, 'मैं मदद कर सकता हूँ।'

वह मेरी ओर मुड़ा और गुस्से से बोला, 'तुम मदद नहीं कर सकते। कोई नहीं कर सकता। कोई भी नहीं कर सकता...' आखिरी शब्द लड़खड़ाते हुए निकले। उसने मेरी ओर देखा और कहा, 'धन्यवाद, लेकिन कोशिश मत करो... रुक जाओ।'

उसकी आवाज़ में मौजूद गुस्सा और दर्द ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। मैं और कुछ नहीं पूछ सका। मैंने उसे जाते हुए देखा।

मैं अकेले ही घर लौट आया।

16 सितंबर 2002

बुआजी ने सादे विवाह पर जोर दिया था। जब सुमित्रा के माता-पिता को शादी का प्रस्ताव दिया गया, तब मैं वहीं मौजूद था। उन्हें खाना और पानी परोसा गया, जिसे उन्होंने लेने से इनकार कर दिया।
लड़कियों के परिवारों की तरह विनम्रता से। मैंने दो बार दिव्या दी और सुमित्रा को एक-दूसरे को देखते और फिर नज़रें हटाते देखा, उनके बीच तनाव साफ महसूस हो रहा था। मैंने दिव्या दी से घर से दूर रहने की ज़िद की थी, लेकिन वह मेरी बात नहीं मानती थीं।

बुआजी ने सहानुभूति भरे लेकिन थोड़े गुस्से भरे लहजे में कहा, 'आप अपनी बेटी को जानते हैं। हम कोई बड़ा आयोजन नहीं करना चाहते और फिर उसके अतीत के बारे में सवालों का सामना नहीं करना चाहते।'
रिश्ते के बारे में, उसकी पवित्रता के बारे में। आप यह मुझसे बेहतर जानते हैं, है ना?

सुमित्रा के माता-पिता और सुमित्रा सिर झुकाए बुआजी की बातें सुन रहे थे, जब वह उन्हें शादी में अपनी अपेक्षाएं बता रही थीं। बुआजी धीरे-धीरे अपनी बात रख रही थीं, लेकिन धीरे-धीरे अपनी बात को बढ़ा रही थीं। मनीष चाचा, जो उनके रक्षक थे, चुपचाप सब देख रहे थे।

फुफाजी ने बात संभाली। 'हम कोर्ट मैरिज करेंगे। रिसेप्शन नहीं होगा। बेशक, हमारे रिश्तेदार मनीष की शादी में आने का इंतजार कर रहे हैं, इसलिए हम उन्हें खाली हाथ नहीं जाने दे सकते। यह शर्मनाक होगा।'

बुआजी ने सुमित्रा के पिता की ओर क्षमा मांगते हुए देखा और उन्होंने तुरंत कहा, 'ज़रूर। हम समझते हैं। बस हमें बताइए कि आपको हमसे क्या चाहिए और हम हर संभव प्रयास करेंगे। हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश करेंगे। हम परिवार को निराश नहीं करना चाहते।'

दादाजी, जो गिद्ध की तरह चुपचाप सब कुछ देख रहे थे, ने बुआजी को सिर हिलाकर इशारा किया, जिन्होंने उनके सामने एक नोट रख दिया। सुमित्रा के पिता ने कागज़ उठाया, उसे देखा और फिर अपनी पत्नी की ओर देखा, जिसने कागज़ की ओर देखने की ज़हमत भी नहीं उठाई, और सिर हिला दिया। वे अपनी बेटी का अंतिम संस्कार करने के लिए इतने उतावले थे।

दादाजी ने हमारी ओर देखते हुए कहा, 'लड़कियों को अंदर जाना चाहिए। उसे भी अंदर ले जाओ।'

मैंने सुमित्रा का हाथ पकड़ा और हम अपने कमरे की ओर चल पड़े; दिव्या दीदी भी पीछे-पीछे आईं। करण भैया को दरवाजा बंद करने के लिए भेजा गया।

मैंने सुमित्रा से पूछा, 'तुम्हें क्या लगता है उस कागज पर कौन सा नंबर था?'

‘मेरे माता-पिता की हैसियत से ज़्यादा।’

‘क्या तुम पूछोगे नहीं?’

उसने कहा, 'मैं थप्पड़ नहीं खाना चाहती।'

'अगर तुम्हें तब थप्पड़ पड़ा होता जब तुम्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी, तो ऐसा नहीं होता,' दिव्या दी ने बुदबुदाते हुए कहा।

‘दीदी? यह इस सब का समय नहीं है। मैंने आपसे आने से मना किया था,’ मैंने सख्ती से कहा।

'तुम मुझे यह नहीं बताओगे कि मुझे क्या करना है,' दिव्या दी ने कहा।

सुमित्रा ने कहा, 'मैंने तुम्हें उस आदमी से बचाया। अगर कुछ है तो तुम्हें मेरा शुक्रगुजार होना चाहिए, वरना तुम भी वहीं होते जहां मैं आज खड़ी हूं।'

हमें कैसे पता चलेगा कि यह आपकी गलती नहीं थी? आप क्या कर रहे थे, यह किसे पता था?हाँ'दिल्ली में तुम कितने लोगों के साथ सो चुकी हो, कौन जानता है?' दी ने आरोप लगाया।

सुमित्रा की आँखों में क्रोध और पीड़ा की आग
जल रही थी। 'दिव्या दीदी, हम उसे दोष नहीं
देने वाले!'

‘मैं हमेशा उसे ही दोषी ठहराऊंगी, अद्वैत,’ उसने कहा और सुमित्रा की ओर देखा। ‘तो क्या हुआ? तुमने किसे ढूंढा?’

वे एक-दूसरे को ऐसे देख रही थीं मानो उन्होंने एक ही प्रेमी को साझा न किया हो, बल्कि मानो वे स्वयं प्रेमी रही हों और एक-दूसरे का दिल तोड़ा हो। एक ही व्यक्ति के प्रति उनका क्रोध, प्रेम और निराशा उस छोटे से कमरे में गूंज रही थी। अचानक दरवाजा खुला और माँ अंदर आईं। वह सुमित्रा को बाहर ले गईं, और उनका आँसुओं से भीगा चेहरा अचानक खिल उठा, माथे की शिकन गायब हो गई, उनका शरीर अब क्रोध से कठोर नहीं था। वह सहजता से एक पत्नी की भूमिका में ढल रही थीं।

‘चलो बाहर चलते हैं,’ मैंने दीदी से कहा और मैं मम्मी और सुमित्रा के पीछे-पीछे चलने लगी।

दरिश्ताबात पक्की हो गई। जैसे ही हम सब घर से निकले, कुछ हिजड़े पहले से ही बाहर थे, शादी, प्यार और दिल टूटने के गीत गा रहे थे। पता नहीं उन्हें त्योहारों की जानकारी कैसे मिलती है और फिर वे पैसे मांगने आ जाते हैं। वे खुशी चाहते हैं या दुख, यह भी कोई नहीं जानता। कुदरत ने उन्हें जो नियति दी है, उसे देखते हुए मेरा मानना है कि वे दुख ही चाहते हैं। सुमित्रा के परिवार ने सोने का हार भेंट किया था, और अब उसे बेचकर घर की दीवार की मरम्मत करवाने की बात चल रही थी।

दिव्या दी बैठक कक्ष में शोकग्रस्त प्रेत की तरह इधर-उधर घूम रही थी।

19 सितंबर 2002

शनिवार। मैं मम्मी का सामान बड़बड़ाती हुई चाचियों को देकर वापस आ रही थी, तभी मेरी नज़र बस स्टॉप पर पड़ी। मैं आजकल उसके बारे में इतना सोच रही थी कि एक पल के लिए मुझे लगा जैसे वो मेरे ख्यालों का ही कोई रूप हो। मैंने साइकिल की रफ़्तार धीमी की और उसके पीछे-पीछे चलने लगी। वो तराजू से कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़े फाड़कर बस स्टॉप के खंभों, बिजली के खंभों और गाड़ियों की खिड़कियों पर चिपका रहा था। वो लोगों का इंतज़ार करता, उन्हें बेतरतीब ढंग से चुनता और पर्चियाँ बाँट देता। ज़्यादातर लोग उन्हें पढ़ने से पहले ही फेंक देते थे। मैं रुककर उसकी साफ़ लिखावट पढ़ने लगी:

उदास हैं? एक और हफ्ता क्या फर्क
पड़ता है? चलिए बात करते हैं।
रविवार को।
013-3343447
सुबह *10* बजे–शाम *6* बजे

शुरू में तो ऐसा लगा जैसे ये वेश्यावृत्ति का विज्ञापन हो, जिसमें दबी हुई कामुकता को बाहर निकालने की चाह रखने वाली दुखी गृहिणियों को ढूंढा जा रहा हो। मैंने कल्पना की कि वो आईएसबीटी के पास एक तंग, छोटे से रसोईघर में बैठा है, नग्न अवस्था में, टांगें फैलाए कामुक महिलाओं का इंतज़ार कर रहा है, उनकी आकर्षक योनियों में उनके उबाऊ जीवन की नीरसता को मिटाने के लिए। बाद में मुझे समझ आया और तब मुझे अपनी मूर्खता का एहसास हुआ। ये इतना स्पष्ट था कि उसका इरादा किसके लिए था—इसमें कोई शक नहीं था।

फिर भी उत्सुकतावश मैंने वह नंबर डायल किया। यह बाहरी इलाके में स्थित एक पीसीओ का नंबर था, जहाँ मैंने उसे पतंग उड़ाते देखा था।

> मैंने पीसीओ के आदमी से पूछा, 'आप कह रहे हैं कि वह हर रविवार को यहाँ आता है?' उसने कहा, 'हर रविवार को ठीक समय पर। आठ घंटे तक वह बस वहीं बैठा रहता है और घूरता रहता है।'

वो लड़का फोन पर ही लगा रहता है। न खाता है, न पीता है, न बात करता है। वो लड़का थोड़ा अजीब है, लेकिन वो मुझे मेरी उम्मीद से ज्यादा पैसे देता है, इसलिए मुझे कुछ समझ नहीं आता।

‘आपको पता नहीं है कि वह यहाँ क्यों आता है? उसे किस तरह के लोग बुलाते हैं?’

कुछ नहीं?'

पीसीओ में बैठा आदमी हंसने लगा। 'बेटा, वह एक साल से यही कर रहा है। किसी ने फोन नहीं किया। क्या तुम्हें लगता है कि इसका कुछ लेना-देना है?'*pyaar ka chakkar,* प्यार? क्या वो किसी लड़की के फोन का इंतज़ार कर रहा है? मैं आपको बता रही हूँ, ये बॉलीवुड फिल्में तो हद ही कर रही हैं।*aashiq*हमारे नेक इरादे वाले लड़कों के।

'नहीं।'

22 सितंबर 2002

मैं आज का इंतजार कर रहा था। मैंने सुबह उठते ही सबसे पहले उस नंबर पर कॉल किया। फोन की घंटी बजने से पहले ही उसने फोन उठा लिया।

मैंने अपनी आवाज से बिल्कुल अलग आवाज में कहा, 'हेलो?'

'हाय,' उसने कहा, उसकी आवाज नरम, सहानुभूतिपूर्ण और भारीपन से रहित थी।

मैंने कल्पना की कि वह पीसीओ में बैठा है और रुमाल से ट्रकों और बसों के गुजरने की आवाज़ों को दबा रहा है, और पीसीओ में बैठा आदमी उसे वास्तव में फोन पर बात करते हुए देखकर आश्चर्यचकित हो रहा है।

मैंने कहा, 'मुझे आपसे बात करनी थी।'

उन्होंने विनम्रता से कहा, 'अगर आपने अभी तक पेशेवर आत्महत्या सहायता हेल्पलाइन के नंबर नहीं आजमाए हैं, तो मैं आपको दे सकता हूं। अगर उससे भी आपको कोई फायदा नहीं हुआ, तो हम यहां बात कर सकते हैं। आप जिस भी विषय पर बात करना चाहें।'

मैंने बनावटी लहजे को बनाए रखने की कोशिश करते हुए कहा, 'मुझे यकीन नहीं है कि मैं फोन पर बात कर सकती हूं। मेरे माता-पिता यहां हैं।'

उन्होंने कहा, 'हम आपकी पसंद की जगह पर मिल सकते हैं।

आप मुझे कहाँ देख सकते हैं?'

बिना पलक झपकाए उन्होंने कहा, 'शुक्रवार। सुबह? अगर आपको ठीक लगे तो? नौ बजे, या आप समय चुन सकते हैं।'

मैंने कहा, 'ज़रूर,' और कॉल काट दी।

रघु के पूरे ऑपरेशन की बेतुकी और हताशा भरी हरकत ने मुझे पूरी रात जगाए रखा। अब मैं सचमुच उत्सुक हो गया था। आखिर वह क्या करने की कोशिश कर रहा था?

23 सितंबर 2002

मैं साढ़े आठ बजे FRI पहुँची, लेकिन वह पहले से ही इंतज़ार कर रहा था। मैं छिपकर उसे देखती रही, वह घबराकर जगह को साफ कर रहा था और फूल तोड़कर ऐसे सजा रहा था जैसे किसी डेट पर जाने की तैयारी कर रहा हो। बैठने से पहले उसने तीन बार अपनी जगह बदली। उसके घुटने काँप रहे थे और वह बेचैनी से अपने हाथ मल रहा था। ठीक नौ बजे मैं पेड़ों के पीछे से निकली और उसकी तरफ चली। मुझे देखते ही वह उठ खड़ा हुआ, पहले तो बनावटी मुस्कान के साथ, फिर उलझन में, और फिर नफरत और गुस्से से। पलक झपकते ही वह मुझ पर टूट पड़ा, उसका गुस्से से भरा मुँह मेरे मुँह से बस एक बाल बराबर दूर था। मैं एक बार, दो बार पीछे लड़खड़ा गई और पाया कि उसका हाथ मेरा हाथ कसकर पकड़े हुए है।

'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' वह गरजते हुए बोला, उसकी आवाज की कोमलता अब गायब हो चुकी थी।

मुझे लगता है उसने यही कहा था। मेरे दिल की धड़कन इतनी तेज़ थी कि मैं उसकी आवाज़ मुश्किल से सुन पा रहा था। उन कुछ पलों में जब वह पागल कुत्ते की तरह चीख रहा था, मुँह से झाग निकाल रहा था, मुझे लगा जैसे वह मुझे मार डालेगा, मेरी पसलियों को तोड़ देगा और मेरे धड़कते दिल को कुचल देगा।

'क्या यह तुम्हारे लिए मजाक है!' वह चिल्लाया।

मैंने ये शब्द सुने। मैंने इन्हें बार-बार सुना, लेकिन मैं इतना स्तब्ध था कि जवाब नहीं दे सका। मैंने उसकी आँखों में देखा और चाहकर भी नज़रें नहीं हटा सका। सब कुछ हद से ज़्यादा था। छोटी-छोटी नसें बहुत लाल थीं, दर्द असहनीय था, क्रोध कम नहीं हो रहा था। मैंने उसके अंदर क्या हिला दिया था? मैंने क्या तोड़ दिया था? वह कुछ देर रुका और फिर उसकी मुट्ठी ढीली पड़ गई। वह मुड़ा और पेड़ों की ओर चल पड़ा।

'रघु!' मैंने चिल्लाकर कहा, लेकिन वह जा चुका था।

24 सितंबर 2002

टीवी कई घंटों से चल रहा है।

मैं दादाजी को तीसरी बार चाय परोस रहा था, तभी मैंने मनीष चाचा को फिर से चुपके से बाहर निकलने की तैयारी करते देखा। तीन दिनों में यह तीसरी बार था। उन्होंने बड़ी चतुराई से अपने कड़क सफेद कुर्ते छोड़कर सफेद कमीज और जींस पहन ली थी।

यह कोई रहस्य नहीं था कि यह सब सुमित्रा के लिए था। बुआजी ने मनीष चाचा के प्रयासों को प्रोत्साहित किया है। वह पहले से ही दिल्ली और बेंगलुरु के इंजीनियरिंग कॉलेजों के प्रॉस्पेक्टस एकत्र कर रही हैं और उनकी फीस संरचना का पता लगा रही हैं।

कल ही मैंने उन्हें डीआईटी के पास नए खुले कॉफी शॉप में देखा था, उनके हाथ पास थे लेकिन छू नहीं रहे थे, और उनके होंठ धीरे से हिल रहे थे, मानो वे हमेशा से प्यार में रहे हों। उन्हें देखकर मुझे लगा कि शायद प्यार भी तय किया जा सकता है। लेकिन यह सिर्फ मैं ही नहीं देख रही थी, दी ने भी देखा था, और उसने इसे हल्के में नहीं लिया था।

पिछले कुछ दिनों से वो हर किसी और हर चीज़ पर झगड़ रही है, मुझसे और मम्मी से लड़ने के बहाने ढूंढ रही है। कल ही तो उसने मुझे ज़्यादा पैसे कमाने के लिए मेहनत न करने पर डांटा था। 'आखिरी बार कब'
जब तुम सुरेश अंकल के यहाँ टाइपिंग करने गई थी? हाँ? तुम मुझे आठवीं कक्षा के छात्रों को पढ़ाने के बारे में बता रही थी? उसका क्या हुआ?

‘दीदी? मैं तो कल ही गई थी! और वहाँ कोई काम नहीं था! और आप वहीं थीं जब बुआजी ने कहा था कि मुझे लोगों के घर पढ़ाने नहीं जाना चाहिए—’

‘बहाने!’ उसने तुरंत पलटकर जवाब
दिया। ‘तुम जानते हो कि वे बहाने नहीं
हैं!’

‘बेशक वे हैं!’ ‘दी—’

‘जाओ, उस लड़के के चारों ओर थोड़ा और दौड़ो,’ उसने कहा और फिर अचानक मुझे पकड़ लिया। ‘अद्वैत, बेवकूफी मत करो! तुम जानती हो कि इस तरह की चीजें किसी के लिए भी फायदेमंद नहीं होतीं! खासकर हमारे लिए तो बिल्कुल नहीं! तुम्हें घर पर बैठकर अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहिए, तुम्हें जरूरत है।

बाहर निकलना। क्या तुम यह समझते हो? या तुम चाहते हो कि हम हमेशा के लिए इसी घर में सड़ते रहें? क्या तुम बस उस लड़के के आने का इंतज़ार कर रहे हो जो हमारे लिए संकटमोचक बनकर आएगा?

अपने आंसुओं को रोकते हुए मैंने कहा, 'नहीं!'

'तुम्हारे काम कुछ और ही कहते हैं। तुम कल कहाँ थे? और परसों कहाँ थे? और उससे भी परसों कहाँ थे?'

'कहीं नहीं!'

'अपनी हरकतें सुधारो और उस लड़के के बारे में सोचना बंद करो। क्या तुम मुझे सुन रही हो?'

इससे पहले कि मैं उससे पूछ पाती कि अगले हज़ार रुपये कहाँ से आएंगे, इसके अलावा किसी और चीज़ के बारे में सोचना इतना बुरा है क्या? क्या बात करने के लिए कोई दोस्त होना इतना बुरा है? मुझे याद नहीं कि दिव्या दीदी या मेरे पास आखिरी बार कोई ऐसा व्यक्ति कब था जिसे हम दोस्त कह सकें। यह सच है कि हम एक परिवार के रूप में बहुत करीब हैं और हमें एक-दूसरे से कुछ भी छिपाने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन फिर भी हमारी हर बातचीत हमारी परेशानियों और दुखों से भरी होती है।

क्या कभी-कभी मेरा मन करता है कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति से बात करूँ जिसने दीदी, मेरे और मम्मी-पापा के बारे में कहानियाँ न सुनी हों? बिल्कुल। भला ऐसा चाहने में क्या बुराई है—उन हंसमुख लड़कों-लड़कियों के समूहों का हिस्सा बनना जो साथ में फिल्में देखने जाते हैं, चाउमीन खाते हैं और क्लास बंक करने के तरीकों के बारे में बातें करते हैं?

शायद रघु वह जगह ले सकता है। उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कहाँ से हूँ या मेरे परिवार ने क्या-क्या झेला है; वह मुझ पर तरस नहीं खाता और न ही मुझे संदिग्ध समझता है, तो उससे दोस्ती करने की चाहत में भला क्या गुनाह है?

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:*techiestax.blogspot.in*

26 सितंबर 2002

यह बहुत दुख की बात है कि इन दिनों मुझे नींद नहीं आ रही है। इससे भी ज्यादा दुख की बात यह है कि मैं लोगों को उनकी दयनीय स्थिति से बाहर निकालने के उनके आदर्शवादी प्रयास के प्रति असंवेदनशील हूँ (जो, मैं कहना चाहूँगी, अब तक किसी की भी मदद नहीं कर पाया है)। मैं उनसे माफी मांगने के बारे में सोच रही हूँ, लेकिन दी शायद
ठीक है। मुझे इस बारे में और ज़्यादा नहीं सोचना चाहिए। दिल्ली में उसके अतीत में जो कुछ भी हुआ है, उसने उसे तोड़ दिया है, और मेरे पास खुद की इतनी उदासी है कि मैं किसी और की उदासी के बारे में क्यों सोचूँ। फिर भी, जब भी मैं आँखें बंद करती हूँ, मुझे वह घंटों तक उस पीसीओ में अकेला बैठा, फ़ोन को उदास निगाहों से घूरता हुआ, फ़ोन बजने का इंतज़ार करता हुआ, उस कॉल का इंतज़ार करता हुआ दिखाई देता है जो कभी नहीं आने वाली। उसने किसे नहीं बचाया कि वह इस पागलपन में डूब गया? वह दर्द कितना गहरा है? और इससे उबरने से पहले उसे कितनी जानें बचानी होंगी? या मैं सब कुछ गलत समझ रही हूँ? क्या उसने किसी को मारा है? वह कातिल जैसा नहीं दिखता, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से तो हो सकता है उसने ही किया हो, है ना? यही मेरे लिए उससे यथासंभव दूरी बनाए रखने का पर्याप्त कारण होना चाहिए।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

27 सितंबर 2002

हम सो रहे थे तभी हमें बाहर कुछ लोगों के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। पार्किंग की जगह और टूटी हुई चारदीवारी को लेकर झगड़े करने का यह सही समय नहीं था।

जब माँ ने मुझे उठते देखा तो उन्होंने कहा, 'तुम यहीं रहो।' मैंने उनसे कहा,

'नहीं, ऐसा नहीं होगा,' और उनके पीछे-पीछे बाहर चला गया।

दादाजी और बुआजी पहले से ही बाहर सिर पकड़े हुए आपस में कुछ बुदबुदा रहे थे। पूरा मोहल्ला—शेखावत, वह लंपट, शराबी चाचा जिसने सबसे बड़ी पार्टी दी थी—भी वहीं मौजूद थे।आई चौकहमारे आंगन में चिब्बर अंकल थे, जिन्होंने अपनी पत्नी के साथ महज दो हफ्तों में अपनी बहू को घर से निकाल दिया था, और नंदी अंकल थे, जिन पर सबको शक था कि मेरठ में उनका किसी और औरत से संबंध है। सबसे तेज़ आवाज़ शेखावत अंकल की थी। वे मम्मी का नाम पुकार रहे थे।

जब शेखावत चाचा ने माँ को देखा, तो वे उनकी ओर बढ़े और बोले, 'तुम्हें पता नहीं तुम्हारे घर में किस तरह के लोग आ रहे हैं! और वो भी ऐसे घर में जहाँ लड़कियाँ भी रहती हैं!' उन्होंने माँ की ओर एक आधा टूटा हुआ क्रिकेट बैट दिखाया जिस पर खून के धब्बे लगे हुए थे।

शेखावत अंकल, जिन्होंने अतीत में दिव्या दी और मुझ पर सीटी बजाई थी और फिर भी दादाजी के करीबी दोस्त हैं, ने एक छड़ी लहराई और चिल्लाया, 'अलताफ! साला!'*deshdrohi*गद्दार। हमें उसे मार डालना चाहिए था।

'उसके साथ क्या हुआ?' माँ ने टूटे-फूटे और खून से लथपथ बल्ले को टकटकी लगाए देखते हुए पूछा।

यह एक ऐसी कहानी थी जिसे हर कोई सुनाना चाहता था, या कम से कम अपने-अपने तरीके से। एक घंटे के भीतर, मैंने गिना तो कम से कम चार कहानियां सामने आईं। पहली कहानी (नंदी अंकल द्वारा सुनाई गई) यह थी कि किसी ने अल्ताफ को उन मुस्लिम आतंकवादियों के प्रति सहानुभूति जताते हुए सुना था जिन्होंने गांधीनगर के अक्षरधाम मंदिर में प्रार्थना करते समय अस्सी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को बेरहमी से मार डाला था।

दूसरी बात (जिसे दत्ता चाचा ने अधिक जोश के साथ सुनाया) यह थी कि अल्ताफ का चचेरा भाई इस ऑपरेशन का हिस्सा था।

तीसरी कहानी (पटनायक चाचा द्वारा सुनाई गई) में बताया गया कि कैसे अल्ताफ देहरादून में अक्षरधाम की घटना को दोहराना चाहता था, और कैसे वह इस ईद पर हिंदुओं का खून बहाना चाहता था।

चौथी और सबसे घिनौनी कहानी शेखावत चाचा ने सुनाई। उन्होंने कहा, 'हमने सुना है कि उसके घर में तलवारें और केरोसिन थे। वह ऐसा क्यों करेगा?' क्या उसके पास वो सब है? और पैसा, जितना उसके पास होना चाहिए उससे कहीं ज़्यादा। आपको क्या लगता है वो पैसा कहाँ से आया? साला, हमने उन्हें सही सबक सिखा दिया है,' शेखावत अंकल ने कहा, और बाकी आदमियों ने सहमति में आह भरी।

दादाजी ने शेखावत अंकल की पीठ थपथपाई और समय रहते उस बदमाश को पकड़ने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

'भाभी जी, कुछ भी हो सकता था। आप जानती हैं ये लोग कैसे होते हैं। ये बेरहमी से बलात्कार और हत्या करते हैं,' शेखावत चाचा ने माँ से कहा। 'अब मैं देखना चाहता हूँ कि उसका क्या हाल होता है, जब उसका दिमाग सड़क पर बिखरा पड़ा हो।'

माँ ने किसी तरह हिम्मत जुटाई और खुद को टूटने से बड़ी मुश्किल से रोका। जैसे-जैसे वह हर कहानी, हर उस विवरण के साथ मेरे हाथ में अपने नाखून गड़ाती जा रही थी, जिसमें बताया गया था कि उन्होंने उसे किस तरह बेरहमी से पीट-पीटकर अधमरा कर दिया था, उनका नाखून और भी गहरा होता जा रहा था।

शेखावत अंकल ने आगे कहा, 'वह अब इस शहर में काम करने की हिम्मत नहीं करेगा।'*Police mein hamare bahut Hindu bhai hai, baaki vo samhbal lenge* (पुलिस में हमारे पास पर्याप्त हिंदू भाई हैं, वे इसका ख्याल रखेंगे) आराम।)।'

दत्ता अंकल ने कहा, 'हमें पूरी झुग्गी बस्ती को जला देना चाहिए था।' 'समय आ गया है।'समयभीड़ में मौजूद एक अन्य व्यक्ति ने कहा, '।'

सभी पुरुषों में से केवल मनीष चाचा की राय अलग थी। उन्होंने 'सबूत', 'न्याय', 'कानून', 'आज़ादी' की बातें कीं, लेकिन ये शब्द आम नफरत में घुल गए। हमारे परिवार (और पूरी बस्ती) में हम दोनों के अलावा वही इकलौते व्यक्ति थे जिन्हें यह नहीं लगता था कि अल्ताफ और इकबाल से बात करना उनकी आत्मा को दूषित करता है। कई बार वह अल्ताफ और इकबाल को उनके घर तक छोड़ देते थे, और हमारी तरह शायद उन्हें भी पता था कि ये दोनों किसी भी हालत में आतंकवादी नहीं हो सकते।

'तुम उन्हें नहीं जानते,' मनीष चाचा से दादाजी ने सख्ती से कहा, जिसके बाद मनीष चाचा वहां से चले गए।

जब वे लोग बार-बार उस घटना के बारे में बात कर रहे थे, मैंने माँ को पकड़ा और उन्हें घर के अंदर ले गई। बिना कुछ कहे, वह छत पर गईं और खाना बनाने लगीं।

हम दोनों को अल्ताफ के बारे में उन लोगों की बातों पर ज़रा भी यकीन नहीं था। वह एक नेक इंसान थे, मेरे सगे भाई से भी ज़्यादा नेक। वह मम्मी से कम से कम दस साल छोटे होंगे, मनीष चाचा की उम्र के आसपास, फिर भी मैंने उन्हें मम्मी को हर बार उंगली में सुई चुभने पर बुरी तरह डांटते देखा था। मम्मी का खून देखकर वह सिहर उठते थे। उन पर आतंकवाद का आरोप लगाना बेतुका था। उन्हें क्या पता कि जब हम छोटे थे, तो हर दिवाली पर वह बचे हुए कपड़ों से दिव्या दीदी और मेरे लिए कैसे कपड़े सिलते थे? मेरे कपड़े हमेशा दीदी के कपड़ों से बेहतर होते थे और दीदी अक्सर उन पर पक्षपात का आरोप लगाती थीं। बस यही एक बात है जो उन्होंने की।

28 सितंबर 2002

आज सुबह मम्मी ने हमें दो पैक किए हुए लंच और एक पुराना, फटा हुआ पर्स दिया जिसमें 5000 रुपये थे। यह लगभग सारा पैसा था जो हमने बचाकर रखा था।

‘पता लगाओ कि इकबाल कहाँ है, उसे ये दे दो और कहो कि अगर उसे और ज़रूरत हो तो हम और भी दे सकते हैं। उससे पूछो कि इकबाल कहाँ है। दिव्या, उसके साथ जाओ,’ माँ ने कहा।

मैंने कहा, 'मम्मा, आपको आना चाहिए।'

‘मैं नहीं कर सकती,’ उसने कहा और हमें अल्ताफ के घर का पता बताया। ‘जब आप वहां जाएं, तो रास्ते में जिससे भी मिलें, उन्हें बता देना कि आप किसकी बेटियां हैं। वे आपको सही रास्ता बता देंगे। अल्ताफ और इकबाल को मेरी तरफ से खेद व्यक्त करना।’

दिव्या दीदी और मैं बस स्टॉप पर थे, तभी मनीष चाचा दादाजी के स्कूटर पर लड़खड़ाते हुए हमारी तरफ आए। उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हें छोड़ दूंगा, आओ, बैठो।'

‘क्या आपको पता है कि
कहाँ—’ ‘मुझे पता है,’
उसने कहा।

हम उसकी स्कूटर पर सवार हो गए और वह हमें उस झोपड़ी तक ले गया जिसमें इकबाल और अल्ताफ रहते थे।

‘क्या तुम आओगे?’ दिव्या ने पूछा।

उसने एक दूसरे से सटे हुए घरों की कतारों को घूरकर देखा—अगर उन्हें घर कहा जा सकता है—जो एस्बेस्टस और तिरपाल की चादरों का एक हिलता-डुलता, कराहता हुआ ढेर था, और हमसे आगे बढ़ने को कहा।

दुर्गंध, कीचड़ और लोगों की भारी भीड़ देखकर मेरा दम घुटने लगा। लेकिन जब मैंने देखा कि दी बिना किसी परेशानी के घर-घर जा रही है, तो मैंने अपनी घबराहट को काबू में कर लिया।

उसने इधर-उधर पूछताछ की और लोग हमें भूलभुलैया में और अंदर भेजते रहे। यह जानकर अजीब लगा कि माँ की बेटी होना एक सौभाग्य था और हम जिससे भी पूछते, वह हमें चाय के लिए अंदर बुला लेता। हमें वहाँ पहुँचने में पूरे पंद्रह मिनट लग गए।

हम अल्ताफ और इकबाल की झोपड़ी ढूंढने निकले थे। हमने दरवाजा खटखटाया और इंतजार किया। काफी देर बाद दरवाजा खुला।

वह रघु था। वह चुपचाप रास्ते से हट गया। वह बिल्कुल भी हैरान नहीं लग रहा था; ऐसा लग रहा था मानो उसे मेरी उम्मीद थी।

इकबाल उठ खड़ा हुआ। 'दीदी?'

उन्होंने हाथ जोड़कर हमारा स्वागत किया। हम शर्म से सिर झुकाए अंदर गए। ऐसा लगा जैसे हम भी उस भीड़ का हिस्सा थे।

'बैठो, बैठो,' इकबाल ने कहा।

रघु ने ज़मीन से धूल झाड़ी और हमारे बैठने के लिए दो स्टूल रखे। कमरा पाँचवें व्यक्ति के लिए काफी बड़ा नहीं था; हम इतने करीब बैठे थे कि एक-दूसरे की साँसें सुन सकते थे।

'चाय?' रघु ने हमसे पूछा।

'तुम क्यों पूछ रहे हो? बस कर दो'"भाई," इकबाल ने रघु से कहा। उसने हमारी तरफ देखा और कहा, "दीदी, आपको यहां नहीं आना चाहिए था।"

'हम कैसे नहीं जा सकते थे?' दिव्या दी

ने कहा। 'वह कैसा है?' मैंने पूछा।

अल्ताफ नर्सिंग होम में था। इकबाल ने हमसे वहां न जाने को कहा।

इकबाल ने धीमी आवाज़ में कहा, "उन्होंने उसकी उंगलियों पर बार-बार वार किए, उन्हें चूर-चूर कर दिया। वे उससे या हमसे इतनी नफरत नहीं करते थे कि उसे मार डालें। वे उसकी आत्मा को कुचलना चाहते थे, उसे अपाहिज बनाना चाहते थे। बस यही उनकी इच्छा थी। अगर हिंदू—" वह रुक गया।

'उन्होंने अल्ताफ को क्यों चुना?' दिव्या दी ने पूछा।

इकबाल के पास इसका कोई जवाब नहीं था। रघु ने तीन छोटे गिलासों में हमारे लिए चाय डाली।

'*Achhi nahi ho to batana* (अगर चाय अच्छी न लगे तो मुझे बता देना),' अल्ताफ ने कहा। 'नहीं तो भाई जैसी चाय कोई नहीं बनाता…' उसने धीरे से कहा और उसकी आँखों में आँसू भर आए।

'यह एकदम सही है,' दिव्या दी

ने कहा। 'हाँ, बिल्कुल,' मैंने भी

कहा।

उसके बाद ज्यादा कुछ कहने को नहीं था। हमने चाय खत्म की और अल्ताफ को भरोसा दिलाया कि उसे जो भी जरूरत होगी, हम उसके लिए मौजूद रहेंगे। हमने खोखले वादे किए कि अल्ताफ ठीक रहेगा। लेकिन हमने चाहे जितनी भी कोशिश की, उसने पैसे लेने से इनकार कर दिया, लेकिन खाना खुशी-खुशी ले लिया।

झोपड़पट्टी से बाहर निकलते समय, दिव्या दी ने पूछा, 'वह लड़का वहां क्या कर रहा था?'

मुझे नहीं पता था कि वह उन्हें जानता है।

जैसे ही हम उस जगह से निकले, हमारी सांस फूलने लगी और हमने देखा कि मनीष चाचा ठीक उसी जगह पर खड़े थे जहाँ उन्होंने हमें छोड़ा था। उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हें यहाँ यूँ ही नहीं छोड़ सकता था। चलो, मैं तुम्हें घर छोड़ देता हूँ।' हम उनके पीछे-पीछे स्कूटर तक गए। 'वह कैसा है? अल्ताफ है या इकबाल?'

मैंने कहा, 'अलताफ,' और उसे वही बताया जो इकबाल ने

मुझे बताया था। 'वह किस अस्पताल में है?'

'बौधियाल,' दिव्या दी ने कहा।

29 सितंबर 2002

मम्मी अब बेहतर हैं। दुःख तो अमीरों का शौक है। मम्मी फिर से पूरी तरह काम में जुट गई हैं। दादाजी ने घर में मुस्लिम दर्ज़ियों को आने से मना कर दिया है, उनके धर्म का जो गौरव इस पेशे में था, अब वह घृणास्पद बन गया है। कल मम्मी ने एक घटिया दर्ज़ी को भगा दिया।

सुमित्रा का लहंगा खराब करने के बाद, अब वह सिलाई का अधिकांश काम खुद ही कर रही है। उसकी नज़र पहले जैसी नहीं रही, और उसे घंटों कपड़े पर झुककर काम करते देखना मुझे बहुत दुख देता है। लेकिन जब भी मैं मदद करने की पेशकश करती हूँ, वह भड़क उठती है।

इसके बजाय, उसने मुझे सुमित्रा के माप को दोबारा जांचने के लिए कहा।

लहंगा। 'जल्दी वापस आना, ठीक है? इस लहंगे को बनाने में मुझे बहुत समय लग रहा है,' मम्मी ने मुझसे कहा जब मैं बाहर निकल रही थी।

सुमित्रा के यहाँ सब कुछ जल्दी से हो जाना चाहिए था, लेकिन तीन घंटे से ज़्यादा का समय लग गया। मुझे खाना खिलाया गया, प्यार दिया गया और मेरी खूब देखभाल की गई। उन पलों में मुझे एहसास हुआ कि माँ के प्यार और दुलार से लड़के कैसा महसूस करते होंगे; उन्होंने मुझ पर इतना ध्यान दिया कि मैं उसे संभाल नहीं पाया। तीन गुलाब जामुन जबरदस्ती खिलाने के बाद, मुझे सुमित्रा के नाप लेने की अनुमति मिली। वह मुझे अपने कमरे में ले गईं, एक ऐसा विचार जिसने मुझे हमेशा आकर्षित किया है, एक कमरा जो सिर्फ़ आपके लिए हो, आपकी चीज़ों और आपके रहस्यों के लिए, आपकी हर चीज़ के लिए।

मैंने कहा, 'तुम्हारी मां बहुत बढ़िया खाना बनाती है।'

सुमित्रा ने अप्रत्याशित रूप से तीखे लहजे में कहा, 'अगर कोई जीवन भर एक ही काम करता रहे तो उसमें सुधार होता ही जाता है।' फिर उसने पूछा, 'दिव्या इसे कैसे ले रही है?'

'ठीक नहीं है।'

‘वह मुझसे दो बार मिल चुकी

है।’ ‘क्या?! क्या—’

उसने मुझे शादी से बाहर चले जाने को कहा। मुझे नहीं पता कि मैं उसे क्या कहूँ। वह तर्क सुनने से इनकार कर रही है।'

'मैं उससे बात करूंगा।'

‘क्या तुम्हें लगता है कि वह सुनेगी?’ उसने पूछा और हल्की सी मुस्कान दी। हम दोनों को इसका जवाब पता था।

‘क्या हम शुरू करें?’

जैसे-जैसे वह मुड़ती-घुमती रही, मैंने उसका नाप लिया। मैंने पूछा, 'अपने परिवार के सामने उत्साहित चेहरा बनाना कितना मुश्किल होता होगा, है ना?'

‘यह मेरे साथ जो हुआ है उससे ज़्यादा मुश्किल नहीं है,’ उसने कहा। ‘मुझे पता है मैंने तुम्हारी बहन के साथ जो किया वह अक्षम्य था, लेकिन मैं उस आदमी से सचमुच प्यार करती थी। और वह हर बात को सही ठहरा सकता था, यहाँ तक कि मुझे गाली देने को भी। वह मुझे यह महसूस कराने में माहिर था कि हर चीज़ मेरी गलती है।’ उसने अपना सिर हिलाया और अपनी उंगलियों को घूरने लगी। ‘हर मुश्किल रात के बाद वह माफ़ी मांगता था, मेरे सभी अजन्मे बच्चों की कसम खाता था कि वह ऐसा कभी नहीं दोहराएगा और फिर भी...’

अगले एक घंटे में, मैं सुमित्रा के घावों और चोटों का लेखा-जोखा बन जाता हूँ, चोट और दर्द की डायरी, उसके दिल टूटने का वृत्तांत।

मैंने पूछा, 'क्या इसका अंत हमेशा इसी तरह होता है?'

'महिलाओं के लिए, हाँ,' उसने मुस्कुराते हुए कहा। 'काश भगवान ने हमें मिट्टी और मोम से बनाया होता। तब हमारे लिए तालमेल बिठाना, घुल-मिल जाना और दुनिया की चाहतों के अनुसार खुद को ढालना बहुत आसान होता।'

'और तुम प्लास्टिकिन को थप्पड़ भी नहीं मार सकते, इससे कोई फायदा नहीं होगा,' मैंने कहा और हम दोनों हँस पड़े, दुख और गुस्से से, अगर ऐसा संभव था तो।

जब मैं घर लौटा तो मनीष चाचा अपने कुर्ते से पानी निचोड़ रहे थे। बुआजी के लगातार विरोध के बावजूद, वे अपने कपड़े खुद धोने और सुखाने पर अड़े रहते हैं।

‘चाचू, मुझे आपसे बात करनी थी,’ मैंने कहा।

चाचा ने मेरी तरफ देखा। ‘मुझे पता है तुमने उससे

बात की।’ ‘वह अच्छी लड़की है, चाचा।’

‘मैं वो नहीं करूँगा जो उसके पिछले पति ने उसके साथ

किया था।’ ‘अगर तुम ऐसा करोगे तो?’ मैंने पूछा।

चाचा ने मुझसे वादा किया है कि वह ऐसा नहीं करेंगे।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

2 अक्टूबर 2002

दीदी ने सरासर झूठ बोला। दिल्ली का असाइनमेंट, बिलकुल नहीं! मम्मी ने तो उसकी हर बात पर यकीन कर लिया, पर मैंने नहीं। न तो उस मॉडलिंग एजेंसी पर, जिसके साथ उसने कथित तौर पर करार किया था, न ही उन तीन म्यूजिक वीडियो पर, जिनका उससे वादा किया गया था, और न ही उस एजेंट पर जिसने उसे बड़े-बड़े वादे किए थे। सब झूठ था, एक के बाद एक! मम्मी अपनी बेटी के भविष्य को लेकर इतनी खुश थीं कि वे दीदी द्वारा सुमित्रा की शादी में न जाने के लिए बनाए गए झूठे बहाने को भुला नहीं पाईं।

मैं मम्मी को बता दूंगी कि यह सब झूठ है। मुझे पता है कि आप सुमित्रा से मिल रहे हैं और उसे शादी तोड़ने के लिए कह रहे हैं।

डी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

मैंने कहा, 'अगर मैं यह कहूंगी तो वह मेरी बात मान लेगी। अगर नहीं, तो मैं सुमित्रा को मम्मी से बात करवा दूंगी।'

डी ने ऊपर नहीं देखाफिल्मफेयरउसने सैलून से चोरी की थी।

‘तो मैं तुम्हारे साथ दिल्ली चलूंगा। देखो यह एजेंसी क्या करती है और तुम्हें कितने म्यूजिक वीडियो के ऑफर मिले हैं। तुम्हें इससे कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए।’

दीदी ने बेपरवाही से एक पन्ना पलटा और शाहरुख खान की तस्वीर पर रुक गईं। फिर उन्होंने उसे फाड़कर अपनी जेब में रख लिया।

‘कब तक भागते रहोगे? देर-सवेर तुम्हारे पैसे खत्म हो ही जाएंगे, है ना? दिल्ली बहुत कठोर जगह है। मुसीबत में पड़ने पर तुम किसकी मदद मांगोगे?’

‘जब हम यहाँ मुसीबत में पड़ जाते हैं तो हम किससे मदद मांगें?’ उसने पूछा। ‘लेकिन आप जा नहीं सकते—’

‘मैं जा रही हूँ, अद्वैत। बात पक्की है। तुम या मम्मी-पापा कुछ भी कह लो, मेरा फैसला नहीं बदलेगा। तुम्हें मुझे मनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए,’ उसने कहा। और मुस्कुराते हुए बोली, ‘आज तक मेरी कोशिशें कब कामयाब हुई हैं?’

कुछ ही मिनटों में मेरा दिल पिघल गया, और उसे धमकाकर उसकी योजना बदलने के लिए मजबूर करने का मेरा इरादा तुरंत ही प्यार से मनाने और रोने में बदल गया। 'मैं यहाँ अकेले क्या करूँगी? तुम कब वापस आओगी?'

मेरे डर कम नहीं हुए। उसने मुझे अपनी बाहों में भर लिया और मेरे माथे पर चुंबन किया। 'अद्वैत, तुम मेरा दर्द नहीं समझ पाओगे। तुम बहुत छोटे हो। तुम्हें नहीं पता कि दिल टूटने का दर्द कैसा होता है,' उसने मेरे कानों में फुसफुसाया।

'अगर इसका मतलब अपनी इकलौती बहन को अकेला छोड़ना है, तो मैं प्यार में पड़ना ही नहीं चाहूंगी!'

'कई लोगों ने प्यार में न पड़ने की कोशिश की है और असफल रहे हैं,' डी ने कहा।

‘मैं ऐसा नहीं करूँगा। अगर प्यार का मतलब अपनी बहन को खोना ही है, तो तुमने प्यार क्यों किया?’

मैं ऐसा कभी नहीं करूंगी! यह तो आपकी बेहद स्वार्थपरता है,’ मैंने कहा।

वह खिलखिलाकर हंसा।

मैंने पूछा, ‘आपने बुआजी को क्या बताया? दादाजी को क्या बताया?’

दी नहीं जीती थी, और पहली बार मुझे लगा कि काश दादाजी जीत गए होते।

Buaji and Dadaji were told. The news had been slipped to Karan Bhaiya and Anshuman Bhaiya who relayed the information with the requisite anger.

किसी एजेंसी के बारे में सोचना, उसके किसी म्यूजिक वीडियो में होने की बात, उसका मजाक उड़ाने की बातटहलनालेकिन सबसे बढ़कर, यह विचार मात्र ही अपवित्र था कि हमारे परिवार को एक महिला के नाम से जाना जाएगा।

जब हम सब खाना खा रहे थे, तब दादाजी ने कहा, 'वह कहीं नहीं जा रही है।'

दादाजी और बुआजी ने सोचा कि नाक सिकोड़ने जैसी यह हल्की सी चेतावनी ही दी को यह समझाने के लिए काफी होगी कि दिल्ली जाने की उम्मीद करना नामुमकिन है। लेकिन न तो दिव्या दी और न ही दादाजी अपनी जगह से हिले और शाम होते-होते दिव्या दी की दिल्ली जाने की हिम्मत पर चर्चा ज़ोरों पर पहुँच गई।

बंद दरवाजे से जो कुछ मैं सुन पा रही थी, उससे लग रहा था कि बुआजी मम्मी और पापा को हमारी परवरिश में नाकाम रहने के लिए खूब खरी-खोटी सुना रही थीं। मम्मी और पापा का कहना था कि उन्हें कुछ पता नहीं था और अपनी बेटी के दिल्ली जाने के फैसले पर उन्होंने हैरानी जताई।

‘हमें पता ही नहीं था कि वो ऐसा करेगी,’ माँ ने कहा। ‘मैं ये सुनिश्चित करूँगी कि वो घर से बाहर कदम न रखे।’

यह विडंबनापूर्ण था क्योंकि दी तो घर पर थी ही नहीं। पापा बातचीत के दौरान ज्यादातर चुप रहे, अपनी बेटियों से नाराज़ और निराश दिखे। ऐसा लग रहा था कि अगर दिव्या दी ने अपना इरादा नहीं बदला तो उन्हें घर से भागना पड़ेगा।

‘उसे समझाओ कि वह ऐसा न करे,’ दादाजी ने पापा से कहा।

यह अल्टीमेटम धीमी आवाज़ में दिया गया था, मानो दोपहर के भोजन में क्या खाना है, यह तय किया जा रहा हो, और यही बात इसे अशुभ बनाती थी। दादाजी के मन में जो भी सज़ा हो, उसे हल्के में नहीं लिया जा सकता था।

पापा ने कहा, 'अगर उसमें कुछ काबिलियत है तो उसे यहां से चले जाना चाहिए। वह अब इस घर में सड़ती नहीं रह सकती।'

‘बेशक,’ माँ ने धीरे से कहा।

दिव्या दी को शाम को हुई सारी घटना के बारे में बताया गया। उन्होंने ध्यान से सुना, और हर शब्द के साथ उनका चेहरा और भी कठोर होता गया, उनकी त्वचा पीली पड़ती गई। हमने घटना को संक्षेप में बताया, क्योंकि हम जानते थे कि हमारे हर शब्द का उन पर और भी बोझ पड़ेगा। इतना नहीं कि वे यहीं रुक जाएं, लेकिन इतना ज़रूर कि उन्हें कई रातों तक नींद न आए।

दिव्या दी और मैं छत पर लेट गए, लेकिन नींद नहीं आई। मैंने व्यर्थ ही उन शब्दों को खोजने की कोशिश की जिनसे मैं उन्हें बता सकूँ कि उनके न रहने पर, इस विषैले रिश्तों के दलदल में अकेले रह जाने पर मुझे कितना दुख होगा। उनके पास मेरे दर्द को कम करने के लिए कोई शब्द नहीं थे।

‘आपके जाने के बाद मैं किससे बात करूंगा?’

‘क्यों? उस आदमी का क्या हुआ?’ डी ने शरारती अंदाज़ में पूछा।

‘मैंने उसे कई दिनों से नहीं देखा है।’

‘जो भी करो, प्यार में मत पड़ना।’

‘मैं पागल नहीं हूँ। मेरे पास पहले से ही काफी परेशानियाँ हैं, और उसके पास भी।’

‘उसकी क्या समस्या है? जब भी मैंने उसे देखा है, वह ऐसा लग रहा है जैसे उसका दिल टूट गया हो या जैसे किसी की मौत हो गई हो,’ उसने मजाक में कहा।

मैं और दी पूरी रात जागते रहे, तारों को देखते रहे और अपना पसंदीदा खेल खेलते रहे—अगर हमारे पास पैसे होते तो क्या होता।

7 अक्टूबर 2002

उसे छत पर देखकर मुझे बहुत हैरानी हुई। वह वहाँ बाहें मोड़े खड़ा था। मैं पड़ोसियों के देखने से पहले उसे फुसफुसाकर या चिल्लाकर वहाँ से चले जाने के लिए कहना चाहती थी, लेकिन मेरे मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे।

उन्होंने साफ-साफ, सीधे-सीधे शब्दों में कहा, 'तुम्हारे चाचा को उस लड़की से शादी नहीं करनी चाहिए। उन्हें किसी और से प्यार है, किसी लड़की से नहीं।'

'क्या?'

'अलताफ सांस लेने के लिए संघर्ष कर रहा है और वह किसी और से शादी कर रहा है। उससे कहो कि वह एक सभ्य इंसान बने और शादी रद्द कर दे,' उन्होंने कहा। आगे बढ़ा। 'उसे ऐसा करना होगा वरना मैं कर दिखाऊंगा। मैं इसे दोहराऊंगा नहीं।'

'रघु—'

उसे बताओ।

इससे पहले कि मैं उसकी कही बात को समझ पाता, वह पहले ही वहां से चला गया था।

'रघु!' मैंने पुकारा।

वह रुका और मुड़ा। मेरा दिमाग उसकी कही बात को समझने की कोशिश में लगा हुआ था। सच है, करण भैया और अंशुमन भैया का एक सहपाठी था जो लड़कों से प्यार करता था, और उस लड़के को इस वजह से काफी परेशानी झेलनी पड़ी थी। उसे हिजड़ा भी कहा जाता था।*chhakka* और न जाने क्या-क्या। दीदी बताती हैं कि मुंबई और दिल्ली में तो ऐसे मर्द और औरतें भी भरे पड़े हैं, लेकिन यहाँ देहरादून में? और चाचा? ये कैसे हो सकता है? वो तो बिल्कुल सामान्य लगते हैं।

'ज़रूर कोई गलती हुई होगी। मनीष चाचा... वो अय्याश हैं। ये तो सबको पता है। फिर वो ऐसा कैसे कर सकते हैं... और अल्ताफ—'

'मैं झूठ क्यों बोलूंगा?' रघु दहाड़ा। 'प्यार कोई मजाक की चीज नहीं है।'

'तुम झूठ बोल रही हो।'

'मैं तुम्हें समझाने नहीं आया हूँ, अद्वैत। चुनाव तुम्हारा है,' उसने कहा और तेज़ी से चला गया।

8 अक्टूबर 2002

लेकिन जितना मैं इसके बारे में सोचता हूँ, उतना ही यह बात सच लगने लगती है। हालांकि, चाचा उन पुरुषों से बिलकुल अलग हैं जो आम तौर पर दूसरे पुरुषों से प्यार करते हैं। उन्हें भड़कीले कपड़े पसंद नहीं हैं, न ही वे ऐसे हाथ हिलाते हैं जैसे उनकी कलाई में मोच आई हो, और न ही वे चलते समय लड़खड़ाते हैं।
मैंने फिल्मों में समलैंगिक पुरुषों के बारे में जो कुछ भी देखा था, उनमें से कोई भी मनीष चाचा से मेल नहीं खाता।

और फिर भी जब मैंने डाय को यह बात बताई, तो उसकी प्रतिक्रिया दबी हुई थी, मानो उसे हमेशा से इसकी उम्मीद थी।

'सोचो जब दादाजी को इसके बारे में पता चलेगा,' उसने आंखों में शरारत भरी चमक के साथ कहा।

उसकी बातों ने मुझे भी सोचने पर मजबूर कर दिया। इस तरह के राज़ के साथ संभावनाएं अनंत थीं। अगर दादाजी के पास कुछ पैसे बचे हों तो हम उन्हें ब्लैकमेल करके उनसे अपनी आज़ादी खरीद सकते थे और भाग सकते थे। लेकिन हम पर कौन विश्वास करेगा? और सबूत क्या होगा? लेकिन रघु झूठ क्यों बोलेगा? वह ऐसी बात लेकर मेरे पास क्यों आएगा? वह चुप रह सकता था और बात को वहीं खत्म कर सकता था।

‘सुमित्रा को उसे मिल जाने दो। वह उसके जैसे किसी व्यक्ति की हकदार है,’ दी ने आगे इस पर चर्चा करने से इनकार करते हुए कहा। ‘अगर उसने इतने सालों तक यह ढोंग किया है,
कुछ और होने से क्या फर्क पड़ता है?

मैंने पूछा, 'और अल्ताफ का क्या हुआ?'

‘मनीष चाचा और अल्ताफ को पता होना चाहिए था कि उनका रिश्ता कभी सफल नहीं हो पाएगा। यह उनकी गलती है,’ दी ने कहा।

हम कितनी जल्दी स्वार्थी हो जाते हैं, है ना? दिव्या दीदी, मम्मी और मुझे अल्ताफ पर हुए हमले वाले दिन ऐसा लगा जैसे हमारे सीने से दिल निकाल लिए गए हों। अभी एक महीना भी नहीं बीता है और हमारी सोच कितनी बदल गई है! दीदी और मैं इकबाल के घर दो बार खाना देने गए, उसके लिए दुआ की, और अब हम मनीष चाचा और अल्ताफ के इस गंदे राज का फायदा उठाने या सुमित्रा से बदला लेने के बारे में सोच रहे थे!

9 अक्टूबर 2002

मनीष चाचा हर शाम आठ बजे काम से घर लौटते हैं। कुछ लोग कहेंगे कि नए-नए कारोबार के लिए यह कुछ ज़्यादा ही देर है। लेकिन अब पीछे मुड़कर देखें तो मनीष चाचा के बारे में हर बात पर सवाल उठते हैं। उनका गायब हो जाना, यहाँ तक कि जीवन में बार-बार नाकाम होने के बावजूद उनका हमेशा खुशमिजाज़ रहना भी। पर आप ऐसा नहीं सोचते, है ना? ऐसी बातें आपके साथ नहीं होतीं, आपके आस-पास के लोगों के साथ होती हैं।

मैंने खुद सच्चाई का पता लगाने का फैसला किया था और आज मनीष चाचा के खाली पड़े दुकान को बंद करके घर से अलग दिशा में जाने के बाद मैं उनके पीछे-पीछे गया। अगर सुमित्रा एक घटिया, बदतमीज़ या ज़रा भी नापसंद करने लायक होती, तो मैं ऐसा नहीं करता। लेकिन सुमित्रा न सिर्फ बेहद प्यारी है, बल्कि उसके साथ अन्याय हुआ है—जैसा कि आमतौर पर महिलाओं के साथ होता है—बल्कि यह एक परीक्षा जैसा लगने लगा था। मानो रघु मुझे टेलीफोटो लेंस से देख रहा हो, झाँक रहा हो, मेरी अच्छाई को परख रहा हो।

और इसलिए मैं उनके पीछे-पीछे गया, यह चाहते हुए कि मनीष चाचा नीरज मिठाई की दुकान पर रुकें, कुछ समोसे और बन टिक्की खरीदें और वापस लौट आएं, जिससे रघु गलत साबित हो जाए।

मनीष चाचा कहीं नहीं रुके और सीधे बौधियाल नर्सिंग होम चले गए, जहाँ अल्ताफ अभी भी अपनी चोटों से जूझ रहा था। अस्पताल मरने वालों और डरे हुए लोगों से खचाखच भरा हुआ था, इसलिए छिपना मुश्किल नहीं था। इकबाल और झुग्गी बस्ती के उसके कुछ दोस्तों ने स्वागत कक्ष में मनीष चाचा का स्वागत किया और उन्हें उस कमरे में ले गए जहाँ अल्ताफ लेटा हुआ था। थोड़ी देर बाद, इकबाल और बाकी लोग कमरे से बाहर चले गए, मनीष चाचा को अल्ताफ के साथ अकेला छोड़कर।

उन आदमियों में रघु भी था, जिसके हाथों में एक पर्ची थी और वह डॉक्टर की बात ध्यान से सुन रहा था। मैंने मुड़कर वहाँ से जाने से पहले उसकी नज़रें नहीं बचाईं।

उसने मुझे जरूर देखा होगा क्योंकि वह पार्किंग लॉट में मेरे पास आया और मुझसे पूछा, 'तुम यहां क्या कर रहे हो?'

मैं यह देखना चाहता था कि तुम झूठ बोल रहे हो या नहीं।

‘मेरे साथ आओ,’ उसने कहा।

बिना कुछ और कहे, उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे अस्पताल के बिल्कुल पीछे, कूड़े के ढेर और पानी के संयंत्र के पास से ले गया। उसने खिड़कियाँ गिनीं और कहा, 'वो वाली। आओ।' वह सीढ़ी के किनारे पर चढ़ गया और मुझे अंदर आने में मदद की।

‘वहाँ,’ उसने कहा और एक भारी जालीदार खिड़की की ओर इशारा किया।

यह एक छोटा सा कमरा था, मुश्किल से 10 गुणा 10 फीट का, और एक जर्जर अस्पताल के बिस्तर पर अल्ताफ लेटा हुआ था। मनीष चाचा बिस्तर के किनारे बैठे लगातार लेकिन धीरे-धीरे रो रहे थे।

‘अब तुम्हें लगता है कि मैं झूठ बोल रहा हूँ?’ रघु ने फुसफुसाते हुए कहा।

सिसकते हुए मनीष चाचा अल्ताफ के चेहरे पर धीरे से उंगलियां फेरते और उसके कानों में फुसफुसाते। उनके हाथों में अल्ताफ का हाथ था और वे उसके साथ न होने के लिए माफी मांग रहे थे। यह देखना बहुत मुश्किल था। रघु ने मुझे वापस नीचे खींच लिया।

'हम्म?'

मैंने कहा, 'तुम नहीं थे। लेकिन तुम मनीष चाचा को क्यों नहीं बता सकते? तुम दोनों तो दोस्त लगते हो—'

उन्होंने कहा, ‘मैं उसका दोस्त नहीं हूँ। मैं अल्ताफ और इकबाल और कुछ अन्य लड़कों को जानता हूँ। अगर मैं मनीष चाचा को बता भी दूँ, तो वह कुछ नहीं करेगा। अगर वह

अगर उनका इरादा होता, तो वो अब तक कर चुके होते। दादाजी के सामने कोई खड़ा नहीं होता,’ मैंने कहा। ‘तो तुम चाहते हो कि तुम्हारे चाचा अपनी शादी का जश्न तब मनाएं जब...’

जिस आदमी से वह प्यार करता है, वह मर रहा है।

मुझे लगा जैसे मैं फँस गया हूँ। 'अरे! देखो, ये मेरे हाथ में नहीं है, ठीक है। बेवजह ज़िद करना बंद करो। तुम्हें नहीं पता कि मेरा परिवार कैसे चलता है।'

उसने आंखें घुमाईं। 'मैं अच्छी तरह जानता हूं कि परिवार कैसे काम करते हैं। कायर बनना बंद करो।'

मैंने गुस्से से पूछा, 'तुम किसे कायर कह रहे हो? क्या मैंने अपनी बात स्पष्ट रूप से नहीं कही?'

मैंने झट से कहा, 'तुम्हें इससे क्या फर्क पड़ता है?'

‘क्योंकि मैं करता हूँ। क्योंकि मेरे अंदर जो इंसान मर रहा है, वह मेरा दोस्त है,’ उसने जोर से कहा।

‘तो फिर जाओ और उसे बता दो, क्यों नहीं बताते? क्योंकि यह बात तुम्हारे लिए वाकई बेहद महत्वपूर्ण है!’

'शायद मैं ऐसा करूँ, कायर, जाओ और दुम दबाकर अपनी जिंदगी जियो,' वह गुर्राया और मेरे करीब आ गया।

‘कह रहा है वो आदमी जो हर चीज से भाग गया!’ ‘चुप रहो, अद्वैत। तुम वहाँ नहीं जाना चाहते।’

‘क्यों? अब तुम चाहते हो कि मैं चुप हो जाऊं, है ना? रहस्यों के उस्ताद!’ क्या मुझे तुम्हारे मामलों में दखल देना चाहिए? क्यों न तुम मुझे अपनी कहानी बताओ? आखिर हुआ क्या था?

'चुप रहो,' उसने गुस्से से भरी आँखों से कहा, मानो वह मुझे भेद रहा हो।

‘क्यों? मैं चुप क्यों रहूँ? और वैसे भी तुम्हारी एक भी बात पर कौन विश्वास करेगा!’ मैंने उपहास उड़ाते हुए कहा।

आपको बोलना बंद करना होगा।

‘नहीं, मैं नहीं करूँगा!’

‘धिक्कार है—’

उसकी आवाज़ अचानक रुक गई। उसने मुझसे नज़रें हटाकर ज़मीन की ओर देखा। मेरी तरह उसे भी एहसास हो गया था कि हमने एक ऐसी सीमा पार कर ली है जो हमें नहीं करनी चाहिए थी। हम दोनों ने गहरी साँसें लीं, हमारे चेहरे लाल हो गए। धीरे-धीरे हमारा गुस्सा शांत हो गया।

‘मुझे माफ कर दीजिए। मुझे आप पर चिल्लाना नहीं चाहिए था,’ उसने कहा। ‘हां, आपको नहीं चिल्लाना चाहिए था। मुझे भी नहीं चिल्लाना चाहिए था।’

हम कुछ देर तक असहज होकर वहीं खड़े रहे, यह नहीं समझ पा रहे थे कि यह बातचीत हमें कहाँ ले जाएगी। आखिरकार उन्होंने कहा, 'क्या आप चाय पीना चाहेंगे?'

मैं गुस्से में वहां से चले जाना चाहती थी, उसे कहना चाहती थी कि मेरे पारिवारिक मामलों में दखल देना उसका काम नहीं है, लेकिन अब मुझे गुस्सा नहीं आ रहा था और मुझे उस दिन की चाय याद आ गई। उसने थर्मस लाकर मुझे एक कप में थोड़ी सी चाय दी।

‘तुम्हारा कोई बच्चा नहीं होगा?’ मैंने पूछा और उसने सिर हिला दिया। मैंने आगे कहा, ‘रघु। अगर मैं किसी को बता भी दूं तो शायद कोई फायदा न हो। तुम्हारी नीयत नेक हो सकती है, लेकिन सब व्यर्थ हो जाएगा। दादाजी और मनीष चाचा इसे खारिज कर देंगे, इसे सरासर झूठ कहेंगे। अल्ताफ और इकबाल दोबारा मुसीबत में नहीं पड़ना चाहते, है ना? सबके भले के लिए यही अच्छा है कि यह बात छिपी रहे।’

‘उस लड़की का क्या हुआ?’ उसने पूछा। ‘वह...’

‘कम से कम तुम उसे बता तो सकते हो,’ उसने मेरी तरफ देखा, उसकी आँखों से

साहस, गुस्सा और दर्द गायब हो गया था। मुझे उसके चेहरे पर केवल गहरी हताशा और निराशा ही दिखाई दे रही थी।

मैंने उसे निराश न करते हुए कहा, 'मैं उसे बताने की कोशिश करूंगी।' 'क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूं?'

उसने सहमति में सिर हिलाया।

‘उनके प्यार का आपके लिए क्या मतलब है?’ ‘यह किस तरह का सवाल है?’

मैंने पूछा, ‘आपने किसे खोया?’

उसने कहा, ‘किसी को नहीं।’

‘यह किसी के बारे में नहीं है। यह किसी के लिए नहीं है कि तुम दिल्ली छोड़कर यहाँ आवारागर्दी कर रहे हो, धूम्रपान करके खुद को मौत के घाट उतार रहे हो, फोन आने का इंतजार कर रहे हो, और मन ही मन बुदबुदा रहे हो कि तुम किसी को बचा नहीं सके। कोई तो था, है ना?’

उसने आह भरी, और काफी देर रुकने के बाद, उसके होंठ हल्के से हिले, और उसने मानो खुद से बात करते हुए कहा, ‘...रहमी।’

मैंने दबी आवाज़ में उसका नाम लिया। ब्राह्मी।

‘उसके साथ क्या हुआ? क्या वो—क्या इसीलिए तुमने आत्महत्या करवाई—’ ‘मुझे अब जाना चाहिए,’ उसने कहा, मानो उसे एहसास हो गया हो कि उसने कुछ ऐसा बता दिया है जो... मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था।

रघु ने मुझसे कप लिया, उसे थर्मस पर वापस बंद किया और चला गया।

अब जब मैं यह लिख रही हूँ, तो मेरे मन में यह सवाल उठ रहा है कि उस लड़की, ब्राह्मी का क्या हुआ होगा। अजीब नाम है। मेरे मन में कुछ स्पष्ट निष्कर्ष निकले हैं, लेकिन मैं उन्हें लिखना नहीं चाहती, कहीं वे सच न हो जाएँ। हर गुजरते दिन के साथ, यह बात हास्यास्पद लगती है कि लोग प्यार में क्यों पड़ते हैं। इससे भला किसी का भला हुआ क्या है?

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

10 अक्टूबर 2002

पिछले कुछ दिन मम्मी के लिए अच्छे नहीं रहे। कोई और दर्जी न होने के कारण काम का बोझ बढ़ता जा रहा है। अब वो हर काम खुद करने की उम्र पार कर चुकी हैं और उनकी परेशानी साफ दिख रही है। हालात और भी बदतर हो गए हैं क्योंकि लाख कोशिश करने के बावजूद भी वो दिव्या दीदी के दिल्ली चले जाने से अपने गहरे गम को छुपा नहीं पा रही हैं।

आज सुबह मैंने सूट पहुंचाने में उसकी मदद की। ज़्यादातर समय वह चुप रही, जैसे कोई ज़ॉम्बी हो। उसका मूड ठीक करने के लिए, मैंने
उन्होंने जोर देकर कहा कि घर जाने से पहले हम सिंहवाल के चाट कॉर्नर पर जरूर रुकें।

हम अपना दूसरा टिक्का खा रहे थे कि तभी मैंने पूछताछ शुरू की। मनीष चाचा के कथित व्यभिचार, देहरादून की महिलाओं के साथ उनके कथित संबंध और इतने वर्षों तक शादी के सवाल से दूर रहने का कारण।

मम्मी ने हैरानी से और फिर गुस्से से मेरी तरफ देखा। हम दोनों को यह जानकर झटका लगा कि दूसरे को पता था। लेकिन मुझे तो अभी-अभी पता चला था। मम्मी को मनीष चाचा के समलैंगिक होने के बारे में कब से पता था?

'अद्वैत, तुम इसमें दखल मत दो,' माँ ने सख्ती से कहा।

वह जानती थी।

उसने कहा, 'तुम्हें किसने बताया? इसके बारे में और किसे पता है? तुम किसी को नहीं बता सकते।'

'मम्मा, आपको इसके बारे में कब से पता है? मनीष चाचा के बारे में, अल्ताफ के बारे में?' मैंने हैरानी से पूछा।

मम्मी ने मुझसे यह बात क्यों छिपाई?

'वे जो कर रहे थे वह घिनौना था। मैंने अल्ताफ को इसे रोकने की चेतावनी दी थी और मुझे लगा था कि उन्होंने ऐसा कर लिया है। इकबाल ने खुद मुझे बताया था कि सब खत्म हो गया है,' माँ ने कहा। 'मैंने उससे कहा था कि अगर यह जारी रहा तो उसे मुझसे कोई काम नहीं मिलेगा। मुझे लगा... कि उन्होंने इसे भुला दिया है। इकबाल ने तो मुझे यह भी बताया था कि अल्ताफ के माता-पिता उसके पैतृक शहर में उसके लिए एक लड़की ढूंढ रहे हैं।'

‘आप समलैंगिकता से उबर नहीं सकते—’

‘ऐसी बातें मत करो। ये एक बीमारी है, जिसका इलाज नामुमकिन नहीं। दादाजी ने खुद इसका इलाज किया है। करण और अंशुमन का सहपाठी? लोग कहते हैं कि वो काफी बेहतर हो गया है,’ उसने दृढ़ता से कहा, जिसका विरोध करना नामुमकिन था। उसने ये भी नहीं बताया कि उस लड़के की समलैंगिकता को शायद मार-पीटकर दूर किया गया था और मीठी गोलियों से ठीक नहीं हुई थी।

‘सुमित्रा का क्या हुआ?’

उसका क्या होगा? शादी हो जाने के बाद वह अपनी आदतें सुधार लेगा। सब कुछ ठीक हो जाएगा। आपको इसमें दखल देने की जरूरत नहीं है,’ उसने अधीरता से कहा।

लेकिन सुमित्रा—

‘वो वही करेगी जो हम सब करते हैं। इसे स्वीकार कर लेगी। औरतें यही तो करती हैं,’ माँ ने थोड़ा गुस्सा होते हुए कहा। ‘उसे उस लड़के के साथ नहीं जाना चाहिए था।’ सबसे पहले तो दिल्ली की बात ही छोड़ो। क्या उसे नहीं पता था कि वह लड़का अच्छा नहीं था? अब उसके पास क्या विकल्प बचे हैं? वह एक अच्छी छात्रा थी। वह कुछ बन सकती थी।

'यह-'

‘अद्वैत, मैं इस बारे में एक शब्द भी नहीं सुनना चाहती। अगर इसकी एक भी बात किसी तक पहुँच गई, तो पता नहीं क्या होगा,’ उसने चिढ़कर कहा।

वापस लौटते समय उसने कहा, 'सुमित्रा की गलतियों से कुछ सीखो। तुम्हारी दीदी ने मुझे बताया कि तुम रघु नाम के उस लड़के के साथ बहुत समय बिता रही हो। मैं तुम्हें चेतावनी दे रही हूँ—'

‘मम्मा—’

‘मेरी बात सुनो। क्या मैंने कभी तुम्हें कुछ करने से रोका है?’ लेकिन वह ऐसा नहीं लगता कि उसका कोई भविष्य या योजना है। अगर कोई और लड़का होता तो मैं ऐसा नहीं कहती। अगर प्यार करना है तो किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढो जो तुम्हारे लायक हो, न कि सड़क पर किसी भी अनजान लड़के को। मैं जानती हूँ कि ये सारे लड़के कैसे होते हैं। वे किसी जरूरतमंद लड़की को देखते हैं और...

वह वैसा नहीं है।

‘तुम अभी से उसका बचाव कर रही हो,’ माँ ने झल्लाकर कहा। ‘बस याद रखना कि सभी पुरुष सूअर होते हैं। तुम्हारे पिता को छोड़कर।’

‘मम्मा, मुझे उसके लिए कुछ भी महसूस नहीं होता।’

'तुम्हें किसी बेहतर कॉलेज में जाकर नौकरी ढूंढ लेनी चाहिए थी,' मां ने सिर हिलाते हुए कहा।

'42 प्रतिशत के साथ तो मैं कभी कहीं नहीं जा सकता था।'

‘अद्वैता, मुझसे चालाकी मत करो,’ उसने कहा, और फिर थोड़ी उदासी और हताशा के साथ बोली, ‘मैं नहीं चाहती कि तुम्हारा हाल सुमित्रा या तुम्हारी बहन जैसा हो। सावधान रहना।’

11 अक्टूबर 2002

जब मैं सुमित्रा के घर पहुंची, तो वह अपनी अलमारियां साफ कर रही थी। बिस्तर पर, ज़मीन पर और मेज पर कपड़ों के करीने से ढेर लगे हुए थे। मुझे ईर्ष्या की एक लहर सी महसूस हुई।

'कुछ पसंद आया?' उसने पूछा।

मैंने सिर हिलाकर मना कर
दिया।

'ये सब तुम्हारे हैं,' उसने कहा और मेरा हाथ पकड़ लिया। 'मुझे लगता है कि हमें कुछ कपड़ों में बदलाव करना पड़ेगा, लेकिन उनमें से ज़्यादातर तुम्हें फिट आ जाएँगे।' उसने एक ड्रेस चुनी और उसे मेरे ऊपर रखकर कहा, 'यह तुम पर बहुत सुंदर लग रही है।'

मैंने कहा, 'दादाजी मुझे इसे पहनने नहीं देंगे।

हम कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे—'

'सुमित्रा भाभी, मुझे आपको कुछ बताना था।' 'क्या
हुआ?'

मैं थोड़ी देर रुकी और अपने फैसले पर फिर से विचार किया। रघु के शब्द बार-बार मेरे कानों में गूंज रहे थे। मैंने सुमित्रा को बिना रुके सब कुछ बता दिया, मैं अपना मन बदलना या अपनी बात नरम करना नहीं चाहती थी। सुमित्रा ने मेरी बात सुनी और मैं देख सकती थी कि उसका दिल धीरे-धीरे टूट रहा था, उसकी आँखें थोड़ी नम थीं, उसका हाथ मेरे हाथ पर थोड़ा हल्का था, और उसके माथे की नसें फड़क रही थीं।

'किसी को पता नहीं था?' उसकी आवाज डर और गुस्से से कांप रही
थी। 'मम्मी को पता है,' मैंने कहा।

'अब तुम्हें चले जाना चाहिए,' उसने
कहा। 'सुमित्रा, हमें इस बारे में बात
करनी चाहिए।' 'बस चले जाओ।'

वह उठी और मैं उसके बाद उठा।

'सुमित्रा, क्या हम इस बारे में बात कर सकते
हैं?' 'मुझे अकेले रहने की ज़रूरत है,' उसने
कहा।

जैसे ही मैं घर से निकला, सुमित्रा द्वारा मेरी और मेरी माँ की शिकायत करने पर क्या होगा, इस बात का डर कम हो गया, और एक प्रकार की बेपरवाही का भाव मुझ

पर हावी हो गया।

शायद यही बात उन मूर्ख लोगों के दिमाग में चलती है जो एक ऐसे समाज के लिए अपनी छाती में गोली खा लेते हैं जिसे बचाने लायक नहीं है।

जब मैं घर पहुंची, तो मम्मी ने दीदी और मुझे मेज के पास बैठाया, हम दोनों के हाथ पकड़े और हमसे कहा, 'सब ठीक हो जाएगा।'

उसे पता था कि मैंने सुमित्रा को बता दिया है, और इससे हमारी जिंदगी बदल सकती है।

'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था,' डी ने कहा। 'उसे वही मिलना चाहिए था जिसकी वह हकदार थी।'

तुमने उसके लिए हमें खतरे में डालकर मूर्खता की है।

15 अक्टूबर 2002

सुमित्रा को मनीष चाचा और अल्ताफ के बारे में बताए हुए पाँच दिन बीत चुके हैं, और कुछ नहीं हुआ। शादी रद्द नहीं हुई है, कपड़ों की सिलाई अभी भी तेज़ी से चल रही है, और कार्ड बाँटे जा रहे हैं। जब शादी सच में रद्द हो जाएगी, तो हालात और भी बिगड़ जाएँगे।

हमने घंटों इस बात पर चर्चा की है कि खबर फैलने पर हमारा क्या हाल होगा। पापा को अब भी यकीन नहीं हो रहा कि उनका भाई समलैंगिक हो सकता है। मम्मी के विपरीत, वह समलैंगिकता को बीमारी नहीं मानते और जानते हैं कि यह स्थायी होती है।

पिछले दो दिनों से मैं रघु के बारे में पूछ रहा था ताकि उसे बता सकूँ कि मैंने उसका काम कर दिया है। सच कहूँ तो, यह उससे मिलने का एक बहाना भी था। यह बात बिल्कुल अविश्वसनीय है कि रघु सबके घर और अस्पताल जाता है, लेकिन किसी को ठीक से पता नहीं कि वह कहाँ रहता है।

'रघु भाई अपने बारे में ज्यादा बात नहीं करते। वो सिर्फ अल्ताफ के साथ ही घंटों बातें करते हैं। पता नहीं वे किस बारे में बातें करते रहते थे,' जब मैंने इकबाल से रघु के पते के बारे में पूछा तो उसने यही कहा। कमरे में मौजूद बाकी लोगों ने सिर हिलाया।

'वैसे, वो बहुत बढ़िया चाय बनाते हैं। देहरादून में सबसे अच्छी!'

इकबाल ने आगे कहा। मैंने भी उनकी बात से सहमति जताई।

'क्या आप उस लड़की के बारे में जानते हैं जिसे वह दिल्ली में छोड़कर गया था?'

इकबाल ने अपना सिर हिलाया। यह जानकर अच्छा लगा कि मैं अकेला ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उसके बारे में कुछ नहीं जानता था।

जैसे ही मैं झुग्गी बस्ती से निकल रहा था, मैंने इकबाल को चिल्लाते हुए सुना, 'अद्वैताजी!' उसके बगल में तेरह साल का एक लड़का खड़ा था। 'वह इसी बस्ती में रहता है। मुझे यह बात बिल्कुल याद नहीं थी कि रघु भाई उसे गणित और विज्ञान पढ़ाते हैं। उसे पता है कि वह कहाँ रहता है। है ना?'

क्या आप कृपया मुझे बता सकते हैं?

लड़के ने उत्साह से सिर हिलाया और मेरी साइकिल पर बैठ गया। 'कितनी दूर है?'

लड़के ने खुशी से कहा, 'बीस मिनट।'

चालीस मिनट बाद जब मेरे पैर एकदम सुन्न पड़ने लगे तो मैंने पूछा, 'अभी और कितना दूर है?'

उन्होंने कहा, 'बस बीस मिनट।'

'जब हम निकले थे तब तुमने यही कहा था।' लड़का बेशर्मी से हँस पड़ा। 'तो वह बहुत सारे बच्चों को पढ़ाता है?'

'नहीं, बस मैं और कुछ और बच्चे। कोई भी इतनी दूर आना नहीं चाहता। उनके माता-पिता उन्हें आने की अनुमति नहीं देते,' उन्होंने कहा।

'क्या आप उसे भुगतान करते हैं?'

लड़के ने सिर हिलाया। "हालांकि अम्मी ने पिछले दो महीनों से उन्हें पैसे नहीं दिए हैं। रघु भैया कहते हैं कि कोई बात नहीं, मैं उन्हें अगले महीने दे दूंगा। ये रहा!" उसने इशारा किया। "ये रहा उनका घर," उसने कहा और साइकिल से कूद गया। "मैं खुद वापस जा सकता हूँ!" वह दौड़ पड़ा।

कहने की जरूरत नहीं, रघु मुझे अपने दरवाजे पर दस्तक देते देख हैरान रह गया। मैंने समझाते हुए कहा, 'आप जिस लड़के को पढ़ाते हैं, उसने मुझे रास्ता दिखाया।'

'आओ,' उसने अनिश्चितता से कहा।

यह उस मकान का भूतल था जिसका निर्माण बीच में ही रुक गया था। रघु सिर्फ एक ही कमरे का इस्तेमाल कर रहा था।

ज़मीन पर गद्दों का ढेर लगा हुआ था, एक लड़के के लिए ज़रूरत से ज़्यादा। वहाँ न तो टीवी था, न फ्रिज, न अलमारी; उसके कपड़े कमरे के कोने में ढेर लगे हुए थे। उसने अंधेरे के लिए माफ़ी मांगी।

'घर सस्ता है। बिजली या पानी नहीं है। कोई भी इस जगह को नहीं चाहता था,' उसने कहा। 'क्या आपको कुछ चाहिए? चाय? पानी?'

यह घर कम और ईंटें एक दूसरे के ऊपर सीमेंट से जोड़ी हुई ज़्यादा लग रही थीं।

'चिंता मत करो,' मैंने कहा।

वह पहले की तुलना में काफी कम तनावग्रस्त और कम क्रोधित लग रहे थे। ऐसा लगा जैसे वह वहीं पर था।घरफिर उन्होंने मिट्टी के तेल का चूल्हा जलाया और बड़ी कुशलता से चाय उबालने के लिए रख दी। उनकी हरकतें बहुत तेज़ और सटीक थीं। थोड़ी देर में उन्होंने चाय को दो डिस्पोजेबल कपों में डाला और एक कप मुझे दे दिया।

'आप वहां कितने समय से रह रहे हैं?'

‘काफी समय हो गया,’ उसने कहा और झट से विषय बदल दिया। ‘क्या तुमने शादी रद्द कर दी?’

‘ये फैसला मुझे तो नहीं लेना है, है ना?’ मैंने कहा। ‘मैंने सुमित्रा को बता दिया है। अब फैसला उसी के हाथ में है। वो क्या फैसला करती है, ये उसी पर निर्भर करता है।’

'धन्यवाद।'

‘यही सही फैसला था। अगर मैं इसे ऐसे ही रहने देती तो मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पाती। बेशक, मम्मी और दीदी की सोच अलग है। दीदी की अपनी अलग राय है। कारण तो हैं, और मम्मी को लगता है कि यही सभी महिलाओं का भाग्य है। खैर, अल्ताफ कैसा है? डॉक्टर क्या कह रहे हैं? क्या उसे किसी चीज़ की ज़रूरत है—

उसकी हालत में सुधार नहीं हो रहा है।

मैंने कहा, 'मम्मी उसके लिए हर दिन प्रार्थना करती हैं।'

हम थोड़ी देर तक एक दूसरे से चुप रहे।

मैंने असहजता को दूर करने के लिए पूछा, 'आप क्या पढ़ाते हैं?'

गणित और विज्ञान। आईआईटी में प्रवेश की इच्छा रखने वाले छात्र। डॉक्टर बनने की चाह रखने वाले लोग।

‘यहाँ? कितने?’

उन्होंने कहा, 'छह, बहुत कम लोग इतनी दूर यात्रा करना चाहते हैं। और मेरा गुजारा हो जाता है, इसलिए मुझे इससे ज्यादा की जरूरत नहीं है।'

क्या आप आईआईटी के छात्र हैं?

‘मैंने कभी कॉलेज नहीं किया। और चाहिए?’ उसने पूछा और मैंने सिर हिला दिया। उसने अपने कप से थोड़ी सी चाय मेरे कप में डाली। मैंने उसे यह नहीं बताया कि यह अब तक की सबसे अच्छी चाय थी।

‘रघु?’

'हाँ।'

मैंने कहा, ‘मैं आपके बारे में कुछ नहीं जानता और आप मेरे बारे में, मेरे परिवार के बारे में काफी कुछ जानते हैं। मुझे यह जानने का अधिकार है कि कैसे। क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ?’

रघु ने कहा, 'अल्ताफ अक्सर तुम्हारे बारे में बात

करता था।' मैंने पूछा, 'वह मेरे बारे में बात करता था?'

कुछ हिचकिचाहट के बाद उसने कहा, 'हाँ।'

'तुम्हें और क्या पता है?'

‘मुझे कितना पता है, यह जानना क्यों ज़रूरी

है?’ ‘बस...’

‘अल्ताफ को जो कुछ भी पता था।’

‘लेकिन वो तुम्हारे साथ मेरे बारे में क्यों बात करेगा? इतनी सारी बातों में से उसने मुझसे ही क्यों बात की?’ मैंने पूछा।

मैं पूछूंगा। क्यों?

वह थोड़ी देर के लिए रुका, मानो यह सोच रहा हो कि मुझे बताए या नहीं, और फिर बोला, 'तुम मुझे उसकी याद दिलाती हो।'

'उसकी?'

उसने कोई जवाब नहीं दिया। ऐसा लगा जैसे उसने जितना बताना चाहा था, उससे कहीं ज़्यादा बता दिया हो। मैं और सवाल नहीं पूछना चाहती थी, लेकिन शब्द अपने आप ही मेरे मुँह से निकल गए।

‘ब्राह्मी?’

'क्या हम अभी इस बारे में बात नहीं कर सकते?' उसने लगभग विनती भरे लहजे में पूछा।

‘क्या मैं उसके जैसी
दिखती हूँ?’ उसने सिर
हिलाया। ‘तो फिर?’

उन्होंने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।

मैंने पूछा, 'आप दिल्ली में किसे छोड़कर गए हैं?'

मैंने देखा कि उसकी आँखों में तीव्रता आ गई। 'मुझे इस बारे में बात करने में असहजता हो रही है,' उसने कहा, उसकी आँखें अब लाल हो चुकी थीं।

मैंने कहा, 'मैं समझता हूँ,' और फिर माहौल को हल्का करने के लिए मुस्कुराते हुए कहा, 'अगर मैं कभी इस शहर को छोड़ने में कामयाब हो जाऊं, तो आखिरी चीज जिसके बारे में मैं बात करना चाहूंगा वह दादाजी या बुआजी होंगी।'

मैं हँस पड़ा और वह थोड़ा मुस्कुराया।

‘क्या मैंने अभी तुम्हें मुस्कुराते हुए देखा? वाह! यह तो बहुत कम देखने को मिलता है,’ मैंने कहा। ‘मुस्कुराने के बारे में लोग क्या कहते हैं, तुम तो जानते ही हो ना?’घास से घास तक?’

‘फिल्मों को लेकर तुम्हारी पसंद वाकई बहुत खराब है,’ उसने मुस्कुराने की पूरी कोशिश करते हुए कहा। ‘यह बात वो आदमी कह रहा है जिसने*Dulaara* उसकी प्लेलिस्ट में मौजूद गाने।

'केवल सबसे अच्छा।'

मैंने कहा, 'मुझे अब जाना चाहिए। हमारे पड़ोस में दशहरा का छोटा सा उत्सव है।'

वह मुझे दरवाजे तक छोड़ने आया, लेकिन उस समय बहुत तेज बारिश हो रही थी।

‘अब तो तुम्हारी खुशी का मज़ा किरकिरा हो गया,’ उसने कहा। उसने मुझे अपना छाता दिया—असल में, एक बड़ा सा पुराना तंबू। ‘छाता पकड़े हुए साइकिल चलाने में तुम कितने माहिर हो?’ उसने पूछा।

मैंने कभी कोशिश नहीं
की। आओ।

वह मेरे बगल में चल रहा था और मेरे ऊपर छाता पकड़े हुए था जबकि मैं साइकिल चला रहा था। हम दोनों को लगा कि बारिश रुक जाएगी और वह वापस चला जाएगा, लेकिन बारिश और तेज हो गई।

कुछ दूरी तय करने के बाद मैंने कहा, 'अब आप वापस जा सकते हैं।'

उसने ऐसा दिखाया जैसे उसने कुछ सुना ही न हो। पानी की मोटी-मोटी लहरें हम पर ज़ोर से टकरा रही थीं और हम पूरी तरह भीग चुके थे। फिर भी, उसने मुझे मेरे घर से दो लेन दूर छोड़ दिया।

‘मुझे छाता वापस चाहिए। इसे छत पर छोड़ दो, मैं ले आऊंगा।’ ‘हे?’
'हाँ?'

'क्या इससे हम दोस्त बन जाते हैं? क्योंकि इतने समय से मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं इस रिश्ते को कोई नाम देने की कोशिश कर रहा हूं।'

‘तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं अपने दोस्तों के लिए बदकिस्मत
रहा हूँ।’ ‘मैं इसे बर्दाश्त कर सकता हूँ। तुम मेरी ज़िंदगी को और
बदतर नहीं बना सकते।’ मैं अपने दोस्त का छाता लेकर साइकिल
से घर वापस चला गया।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

17 अक्टूबर 2002

छतरी अभी भी टेरेस पर पड़ी थी।

मैं घर पर ही रुका रहा, इस उम्मीद में कि शायद उससे दोबारा मुलाकात हो जाए, लेकिन उसका कोई अता-पता नहीं था।

क्या हमारी पनपती दोस्ती समय से पहले ही खत्म हो गई? यह कितनी बेवकूफी वाली बात है कि मेरे दिमाग ने मुद्दों को प्राथमिकता दे दी है। मेरी निगाहें शेखावत अंकल की छत पर टिकी हुई हैं, उस थोड़े से दोस्ताना इंसान को ढूंढ रही हैं। स्पाइडरमैन। उसका कोई अता-पता नहीं था। क्या हमारे बीच कभी कोई खास पल नहीं बीता था? मुझे लगा था कि हम दोस्त थे। मुझे उसके बारे में सोचना बंद कर देना चाहिए।

मुझे अभी ये डायरी बंद कर देनी चाहिए और मम्मी की मदद करने जाना चाहिए। भगवान जानता है कि उन्हें इसकी कितनी ज़रूरत है।

18 अक्टूबर 2002

ठीक है, मेरे पास छाता है। मुझे जाकर उसे लौटा देना चाहिए। यही काफी कारण है।

19 अक्टूबर 2002

मैं बाहर इंतज़ार कर रहा था और अंदर झाँक रहा था। तीन छोटे लड़के आसपास बैठे थे। रघु उनकी बातें ध्यान से सुन रहा था और कभी-कभी मुस्कुरा भी रहा था। उसे ऐसा अक्सर करना चाहिए। पहली बार ऐसा नहीं लग रहा था कि पूरी दुनिया का बोझ उसी पर है।

छात्रों के चले जाने और मुझे दरवाजे पर देखकर उसने पूछा, 'तुम कब से इंतजार कर रहे हो?'

उसके चेहरे से मुस्कान गायब हो गई, तनाव फिर से लौट आया। उसमें कुछ गड़बड़ थी।

मैंने छाता आपको देते हुए कहा, 'मुझे लगा कि आपको इसकी जरूरत होगी।'

मैं मुड़कर जाने ही वाला था कि उसने मुझे अंदर आने के लिए आमंत्रित किया। गद्दे पर अकार्बनिक रसायन विज्ञान, त्रिकोणमिति और कैलकुलस की ऐसी किताबें रखी थीं जिन पर बड़े-बड़े निशान लगे हुए थे। उसने कुछ नहीं कहा। उसने बड़ी बेरुखी से मेरे बैठने के लिए जगह साफ की।

मैंने पूछा, 'क्या आप हमेशा से पढ़ाना चाहते थे?'

उन्होंने मुझे थर्मस से एक कप चाय दी। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, 'यह गर्म है।' मैंने कहा, 'नहीं, मैंने नहीं डाली।'

‘तो फिर? क्या आपके परिवार में कोई शिक्षक है?’

हमारे बीच एक अजीब सी खामोशी छाई हुई थी और वह चाय की चुस्की ले रहा था। मैं यह जानते हुए आगे बढ़ गई कि वह जवाब नहीं देगा। अगर मैं उससे धीरे-धीरे सवाल करती रहूँगी, तो देर-सवेर वह खुल ही जाएगा।

‘तुम छाता लेने क्यों नहीं आए?’ ‘बारिश होने
की संभावना नहीं लग रही थी,’ उसने कहा। ‘तुम
झूठ बोलने में अच्छे नहीं हो।’

उसने मेरी तरफ देखा, उसकी आँखों में आँसू भर आए थे। ‘अल्ताफ मर गया। उन्होंने उसे कल दफना दिया,’ उसने कहा। ‘वे उसे बचा नहीं सके। तुम्हारे चाचा पूरे समय वहीं थे।’

लेकिन, लेकिन—

मैं अवाक रह गई। वह देखता रहा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे।

‘मम्मी ने मुझे जरूर बताया होता! उन्होंने मुझे कैसे नहीं बताया!’

‘वह ऐसा क्यों करती? वैसे भी वह तुम्हें क्या बताती? कि जिस आदमी से तुम्हारे चाचा प्यार करते थे, वह अब मर चुका है? कि अब उसे तुम्हारे परिवार की पसंद की किसी भी लड़की से शादी कराने में कोई दिक्कत नहीं है?’

कमरा अचानक और भी उदास लगने लगा। मुझे घुटन महसूस हुई। अंधेरा, उदासी और हमारी लंबी परछाइयाँ मेरे गले को जकड़कर निचोड़ रही थीं। अल्ताफ की यादें कौंध गईं। उसका मुस्कुराता चेहरा। वो टॉफियाँ जो वो मेरे लिए लाया था। उसकी दयालु आँखें। उसकी कुशल उंगलियाँ।

वह चला गया, वह चला गया।

यह सब अवास्तविक लग रहा था। कुछ मिनट या एक घंटा बीत गया, मुझे याद नहीं, लेकिन आखिरकार आंसू रुक गए। मैंने खुद से कहा कि वह उस अस्पताल के कमरे में झेली गई पीड़ा से मुक्त हो गया है, वह एक बेहतर जगह पर है। मैंने खुद से वे सारे झूठ बोले जो लोग किसी की मृत्यु होने पर बोलते हैं।

‘अल्ताफ के परिवार ने उसका शव लेने से इनकार कर दिया। अलीगढ़ से कोई भी नीचे नहीं आया।’

उन्हें पता था... उन्हें पता था कि उसकी जिंदगी में एक आदमी था। तुम्हारे चाचा ने अंतिम संस्कार का खर्च उठाया। उनसे बात करो, पता कर लो कि वो ठीक हैं।

मैंने रोते हुए कहा, 'मैं किसी से बात नहीं करूंगी!'

हमें उसे कब्रिस्तान से घसीटकर बाहर निकालना पड़ा। वह... वह पूरी तरह टूट चुका था।'

मैंने मनीष चाचा और पिछले कुछ दिनों से उनके उदासीन व्यवहार के बारे में सोचते हुए सिर हिलाया। मैंने उन पर कड़ी नज़र रखी थी ताकि पता चल सके कि सुमित्रा ने उन्हें कुछ बताया है या नहीं। माथे पर कोई शिकन नहीं, चेहरे पर बनावटी मुस्कान नहीं; उनकी समलैंगिकता ने उन्हें एक कलाकार, एक अभिनेता और एक सहज कलाकार बना दिया था।

मुझे अब कुछ कहना नहीं आ रहा था; मुझे यह भी नहीं पता था कि मैं अगले एक घंटे तक वहाँ क्यों बैठी रही, रघु का नमकीन खाती रही, उसकी चाय पीती रही और चुपचाप रोती रही।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

25 अक्टूबर 2002

सुमित्रा आज सुबह बिना बताए हमारे घर आ गई।

‘क्या तुम्हारे चाचा घर पर हैं?’ उसने मुझसे दृढ़ता से पूछा। मैंने धड़कते दिल से सिर हिलाया। यही अंत की शुरुआत होगी।

मैंने पूछा, 'क्या आप वाकई यह सब यहीं करना चाहते हैं?' मुझे इस बात का अंदाजा नहीं था कि मनीष चाचा इसे कैसे लेंगे।

मैं मनीष चाचा में खामियां ढूंढने की कोशिश कर रहा था, लेकिन नाकाम रहा। हां, वो लंबे समय तक गायब हो जाते थे, पर ये कोई असामान्य बात नहीं थी। आज भी वो हमेशा मुस्कुराते हुए अपने कमरे से निकलते थे, उनके बाल, कपड़े और माथे पर कोई शिकन नहीं होती थी। मैं चाहे जितनी भी कोशिश कर लूं, मनीष चाचा की ऐसी कोई छवि मेरे दिमाग में नहीं आती जिसमें वो छटपटा रहे हों, चिल्ला रहे हों, चीख रहे हों, और लोग उन्हें पीछे खींच रहे हों, ताकि वो उस कब्र में न कूदें जिसमें उनकी प्रेमिका को उतारा जा रहा था।

‘सुमित्रा बेटी? अचानक यहाँ? आपको फोन करना चाहिए था। हम आपके लिए कुछ बना देते। क्या आपके माता-पिता भी आ रहे हैं?’ बुआजी ने पूछा।

‘नहीं, वे नहीं हैं। मुझे बस उनसे बात करनी थी…’

बुआजी ने frowning किया।

‘क्या मुझे उसे फोन करना चाहिए? क्या कुछ गड़बड़ है?’ बुआजी ने लोहे जैसी ठंडी आवाज में पूछा।

उसने जवाब दिया, 'मैं उसके कमरे में जाकर बात करना ज्यादा पसंद करूंगी।'

बुआजी ने गुस्से से सिर हिलाया और कहा, 'ज़रूर। बिल्कुल। अब तुम दोनों की शादी हो रही है। उसका कमरा सिर्फ तुम्हारा ही है। जाओ, जाओ, उसे सरप्राइज दो।'

बुआजी के अपनी बात पूरी करने से पहले ही सुमित्रा मनीष चाचा के कमरे की ओर मुड़ चुकी थी।

बुआजी मेरी तरफ मुड़ीं। ‘चाय बनाओ और मनीष चाचा के कमरे में जाओ। जब तक वो लड़की चली न जाए, तब तक वहीं रहना। और मुझे बताना कि उनकी क्या बातें हुईं। समझे? जब तक वो चली न जाए, तब तक कमरे से बाहर मत निकलना। उस लड़की की धृष्टता देखी? अकेले में उनसे बात करना चाहती है। छी!’ उन्होंने गुस्से से चमकती आँखों से कहा।

मैंने उनके लिए चाय बनाई, बिस्कुट सजाए और कमरे में प्रवेश करने से पहले जितना हो सके उतना समय बिताया। गहरी खामोशी सुमित्रा के सिसकने की हल्की आवाज़ों से टूट रही थी।

मनीष चाचा ने मेरी तरफ देखे बिना कहा, 'ट्रे रख दो और चले जाओ।' मैं वहीं खड़ा रहा, मेरे पैर जमीन पर जमे हुए थे।

सुमित्रा ने कहा, 'हम ठीक हैं। आप जा सकते हैं।' 'मैं नहीं जा सकता—'

मनीष चाचा ने झल्लाकर कहा, 'तुम्हारा मतलब क्या है कि तुम नहीं कर सकते?' 'बुआजी। उन्होंने... उन्होंने मुझसे पूछा था...'

‘बस उसे कोई बहाना दे दो। सुमित्रा और मैं बात कर रहे हैं।’ ‘मैं नहीं दे सकता।’

‘अद्वैत!’

सुमित्रा ने कहा, 'रुको, मनीष। इसमें उसकी कोई गलती नहीं है, है ना?'

'तो फिर यह किसका है?' उसने गुस्से से ज्यादा हताश होकर कहा, दरारें अब दिखने लगी थीं, जो धीरे-धीरे चौड़ी होती जा रही थीं।

‘तो अब क्या होगा?’ मैंने पूछा।

मनीष चाचा ने सुमित्रा की ओर जवाब की उम्मीद से देखा। सुमित्रा ने आह भरी और अपने आंसू पोंछे।

‘सब कुछ वैसा ही रहेगा। शादी होगी। मुझे पूरा यकीन है और हम अब इस बारे में कभी बात नहीं करेंगे। किसी को जानने की ज़रूरत नहीं है। क्या हम सब ऐसा कर सकते हैं? मनीष? क्या तुम ऐसा कर सकते हो, अद्वैत?’ सुमित्रा ने पूछा।

मनीष चाचा ने कहा, 'आपको मेरे लिए यह करने की जरूरत नहीं है।' सुमित्रा ने जवाब दिया, 'मैं यह अपने लिए कर रही हूं।'

तभी बुआजी, जो यह जानने के लिए बेताब होंगी कि आखिर क्या हो रहा है, अंदर आईं और पूछा कि क्या हमें कुछ खाने की जरूरत है।

‘नहीं, मुझे अब जाना होगा,’ सुमित्रा ने कहा और उठ खड़ी हुई।

बुआजी ने मुस्कुराते हुए पूछा, ‘तुम किस बारे में बात करना चाहती हो?’ सुमित्रा ने कहा, ‘मैं इसलिए पूछ रही हूँ क्योंकि हमारे परिवार में कुछ भी गोपनीय नहीं रहता। हमारे यहाँ बंद दरवाजों के पीछे बात करने की परंपरा नहीं है।’ उन्होंने सुमित्रा का हाथ प्यार से थाम लिया।

सुमित्रा ने कहा, 'हम दरअसल इस बारे में बात कर रहे थे कि शादी में दोनों परिवारों को क्या सरप्राइज दें। हम डांस परफॉर्मेंस के बारे में सोच रहे थे। अच्छा रहेगा ना? वह थोड़ा झिझक रहा था, लेकिन मैंने उसे मना लिया।'

बुआजी मुस्कुराईं और अपनी उंगलियों को चूमकर सुमित्रा की ठुड्डी पर रख दिया। 'आह, मेरी प्यारी बच्ची!'माँआप कितने दयालु हैं! अद्वैत, आप उसे द्वार तक क्यों नहीं छोड़ देते?

जैसे ही हम बुआजी की सुनने की सीमा से बाहर निकले, सुमित्रा ने कहा, 'वह एक अच्छे आदमी हैं।'

लेकिन वो... वो समलैंगिक है।

'महिलाएं कितनी बार प्यार के लिए शादी करती हैं?' उसने कहा। 'और मैं उसे प्यार करने और बदले में प्यार पाने के अन्य तरीके खोज लूंगी।'

'यह सही नहीं है।'

'मेरा मानना है कि समलैंगिक पुरुष से शादी करना दुनिया की सबसे बुरी बात नहीं है। यकीन मानिए, मैं इस दौर से गुज़र चुकी हूँ। हर कोई खुश रहने का कोई न कोई तरीका ढूंढ ही लेता है, है ना?'

उसने स्कूटर की रफ्तार बढ़ाई और चली गई।

बाद में दोपहर में, दिव्या दी ने मुझसे कहा, 'लगता है कि म्यूजिक वीडियो का कॉन्ट्रैक्ट और मेरी दिल्ली यात्रा आखिरकार होने जा रही है।'

मेरे मन का एक हिस्सा चाहता था कि सुमित्रा ने खूब हंगामा किया होता और शादी छोड़कर चली गई होती, जिससे दीदी की हमें छोड़ने की योजना में बाधा आ जाती।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

26 अक्टूबर 2002

देहरादून की बारिश के बारे में मुझे कितनी कम जानकारी है, यह जानकर मुझे शर्म आती है। रघु के घर पहुँचते-पहुँचते मैं पूरी तरह भीग चुकी थी। जब मैंने कपड़े बदले और वह बाहर मेरा इंतज़ार कर रहा था, तब मुझे शर्म से शरीर में जलन होने लगी।

जब मैंने अपने भीगे हुए कपड़े कसकर पकड़े हुए थे, तब उसने कहा, 'मुझे दे दो।'सभी उनमें से। 'क्या आप चाहते हैं कि वे सूख जाएं या नहीं? अगली बार छाता लेकर आना, ठीक है?'

मैंने जाने दिया।

उस कमरे में अब एक सेकंड हैंड इन्वर्टर और एक वायर हीटर था।
मुझे बेहद शर्म आ रही थी कि उसने मेरे कपड़े हीटर के सामने फैला दिए, और मेरी ब्रा सीधे मेरे चेहरे के सामने थी।

मुझे कांपते हुए देखकर उसने पूछा, 'चाय या कुछ और?'

क्या आपने साथियों के दबाव के बारे में सुना है? हाँ, मैं टूट गया। मैंने इससे पहले कभी शराब नहीं पी थी।

‘ये लीजिए,’ उसने व्हिस्की का गिलास आगे बढ़ाते हुए कहा।

इसकी गंध बहुत खराब थी, लेकिन इसका स्वाद उतना बुरा नहीं था जितना मैंने सोचा था। बिल्कुल दादाजी की होम्योपैथिक दवाइयों जैसा, बल्कि थोड़ा मीठा। इसने मुझे बहुत जल्दी गर्मी दी।

मैंने कहा, 'मेरे लिए नई बोतल खोलने की कोई ज़रूरत नहीं थी। मैं
अकेले शराब नहीं पीता।'

मेरे हाथ-पैर ढीले पड़ गए थे और मेरा दिमाग पूरी तरह से उलझा हुआ था।

'क्या आप वाकई एक और लेना चाहते हैं?' उसने मेरे तीसरे के बाद पूछा।

मैंने झूठ बोला, 'मैं अक्सर पीता हूँ,' और अपने लिए एक और गिलास भरा, और उससे भी अपना गिलास भरने के लिए कहा।

मुझे तभी रुक जाना चाहिए था, लेकिन मैं नहीं रुका और मुझे हमारी बातचीत की बस कुछ धुंधली-सी बातें याद हैं। मैंने जो भी कहा, वह शराब के नशे में था और शायद सड़क किनारे बैठे शराबी की तरह लग रहा था। एक समय मैंने उससे पूछा कि वह इतना अकड़ू क्यों है। वह हँसा और बोला कि मुझे नींबू पानी पीना चाहिए, और ठीक उसकी चाय की तरह, उसका नींबू पानी भी।

पानी भी लाजवाब था। मैंने उससे कहा था कि उसे शेफ बनना चाहिए और वह फिर हँस पड़ा। क्या वह भी नशे में था? उसके कुछ ही देर बाद, मैं फूट-फूटकर रोने लगी और उसे मुझे दिलासा देना पड़ा। जहाँ तक मुझे याद है, वह स्नेही, दयालु और धैर्यवान था।

'इकबाल हमें कितना बुरा समझता होगा, है ना?' मैं रोते हुए बोली। 'मुझे उससे मिलने जाना चाहिए। मुझे अभी उससे मिलना चाहिए! तुम हिल क्यों नहीं रहे हो? चलो! आओ! मुझे उससे अभी मिलना है!'

उन्होंने मेरा हाथ मजबूती से पकड़ा और मुझे बिठा दिया। 'वह देहरादून से चले गए हैं।'

'क्या? क्यों? वो ऐसा कैसे कर सकता है...' मैं उदास होकर दीवार से टिक गई। वो मेरे लिए नींबू पानी की एक और बोतल लाया और मैंने धीरे-धीरे उसे पिया। शराब का असर कम होने लगा, जिससे मुझे थकान और सुस्ती महसूस होने लगी। इसके बावजूद, मैंने बोलना बंद नहीं किया।

मैंने कहा, 'तुम्हारे विपरीत, मेरे पास कोई अल्ताफ नहीं है जो मुझे तुम्हारे बारे में कुछ बता सके। तुम तो मानो एक रहस्यमयी किताब हो।'

'...'

'मैं तुम्हारे बारे में मन ही मन कहानियां गढ़ता रहता हूं, तुम्हें पता है।' 'मुझे एक कहानी सुनाओ,' उसने कहा।

'तुम मुझ पर हंसोगे, रघु।' 'मैं नहीं हंसूंगा।'

'ठीक है, ये लो एक। क्या तुम तैयार हो?' 'हम्म...'

'क्या मैं शुरू करूँ?' 'बिल्कुल।'

'तुम एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे, सचमुच असाधारण प्रतिभाशाली, ऐसे विद्यार्थी जो शिक्षकों के लिए छोटे विद्यार्थियों को प्रेरित करने का उदाहरण बनते हैं, बेहद लगनशील, परिश्रमी और ऐसे ही गुण। लेकिन फिर एक दिन, तुम्हें एक लड़की से प्यार हो गया... जिसका नाम ब्राह्मी था। क्या मैं कुछ सही कह रही हूँ?'

'यह तुम्हारी कहानी है। मुझसे मत पूछो।'

"तो तुम्हें प्यार हो गया, और बहुत गहरा प्यार हो गया। तुम्हारी जिंदगी बदल गई! हे भगवान!"

वो लड़की बहुत खूबसूरत थी, लगभग तुम्हारे जितनी ही आकर्षक। तुम दोनों एकदम परफेक्ट थे। स्कूल में दो खुशमिजाज लोग, जो एक आदर्श जोड़ी थे! हर कोई तुम दोनों को बहुत सम्मान देता था। लेकिन फिर, तुम्हारे माता-पिता को ये पसंद नहीं आया। मुझे पता है कि ऐसा क्यों हुआ, क्योंकि तुम हमेशा अपनी नाक ऐसे सिकोड़ते थे जैसे तुमसे बदबू आ रही हो।

जब भी मैं परिवार के बारे में बात करती हूँ, कुछ न कुछ बुरा हो जाता है। तुमने उससे कहा था कि

तुम नहीं कर सकते।

मैं उसके साथ थी और उसने... आत्महत्या कर ली। आप जानते हैं, इसीलिए आप उस पीसीओ में बैठकर कॉल का इंतजार करते हैं।'

मैंने उसकी प्रतिक्रिया का इंतजार किया।

फिर से वही बात, यह आपकी कहानी है, मेरी नहीं।

मुझे समझ नहीं आता कि तुम्हें दोस्तों और दोस्ती में क्या नापसंद है? तुम्हें इससे इतनी नफरत क्यों है? मुझे यकीन है कि इकबाल और अल्ताफ तुम्हें अपने दोस्तों में गिनते थे और तुमसे कुछ उम्मीदें रखते थे, लेकिन तुम नहीं रखते। जैसे, अगर मैं अभी इकबाल से पूछूं भी तो उसे तुम्हारे बारे में ज्यादा पता नहीं होगा, है ना? ऐसा क्यों है?

'आप ही कथावाचक हैं।'

'खुद को देखो। अपने चेहरे को देखो। उदासी, यह संक्रामक है। कितना समय हो गया है? एक साल? दो? तीन? कब तक यह तुम्हें दर्द देती रहेगी? तुम्हें इससे उबरने में कितना समय लगेगा? अब आगे क्या होगा?' मैंने पूछा।

'तुम अपनी कहानी मुझे बताओ।'

"हम्म... मुझे सोचने दीजिए। हम्म, हाँ! मुझे लगता है कि आपकी उपचार प्रक्रिया शुरू हो गई है। मुझसे मिलने के साथ ही यह शुरू हो गई है! मेरी दोस्ती आपको ठीक कर देगी। मुझे लगता है कि यह शुरू हो चुकी है। पहले आप मुझे देखकर नाक-भौं सिकोड़ते थे, और अब देखिए, आप मुझसे मिलने के लिए उत्सुक रहते हैं! मुझे गलत मत कहिए। मैंने देखा है कि आपका घर अचानक कितना साफ हो गया है, और आपके कपड़े भी। आपने मेरे दिए हुए कुर्ते के अलावा एक और सफेद कुर्ता खरीदा है, है ना?"

'ठीक है।'

इस क्षण मैंने खड़े होने की कोशिश की और दुनिया घूमने लगी। उन्होंने मुझे बिठाया और सहारा दिया। तभी अचानक मेरे सामने एक और नींबू पानी की बोतल प्रकट हो गई।

जाहिर है, मुझे अभी भी चक्कर आ रहे थे।

'जानते हो क्या? जानते हो क्या?' मैंने हंसते हुए कहा।

'क्या?'

'मुझे लगता है तुम मुझसे प्यार कर बैठोगे! और फिर सब ठीक हो जाएगा।' मैंने अपनी उंगलियाँ उसके चेहरे पर फिराईं। मैंने आगे कहा, 'लेकिन... लेकिन... ऐसा मत करो। मेरे पास प्यार के लिए समय नहीं है। तुम जानते हो ना? मैंने सीख लिया है कि प्यार समय की बर्बादी है। यह किसी के साथ होने वाली सबसे बुरी चीज है। देखो मम्मी, पापा, दीदी, यहाँ तक कि मनीष चाचा के साथ क्या हुआ, और फिर तुम हो। इसमें सौ प्रतिशत असफलता की संभावना है। क्या तुम मुझसे प्यार कर बैठोगे? क्या यहाँ यही होने वाला है?'

मुझे उसका जवाब याद नहीं क्योंकि मैं गद्दे पर बेहोश हो गई थी। जब मैं उठी, तो मेरे कपड़े मेरे पास करीने से रखे हुए थे। वह बाहर सिगरेट पी रहा था। मैंने जल्दी से कपड़े बदले। जब मैं उसके घर से निकली, तो मुझे याद नहीं था कि मैंने क्या-क्या कहा था। अब जाकर मुझे सब याद आ रहा है और काश धरती फट जाए और मैं उसमें समा जाऊं।

30 अक्टूबर 2002

आज दी का दिल्ली जाने का दिन है। सही शब्द समझ नहीं आ रहे। दादाजी के दिल्ली जाने के विचार पर आपत्ति जताने के बाद से दिव्या दी ने आश्चर्यजनक रूप से चुप्पी साध रखी थी। मम्मी और पापा दी के दिल्ली में रहने के खर्च के लिए पैसे जुटाने में जी जान से लगे हुए थे। पापा रात को खुलकर रोते थे, जबकि मम्मी अपने आँसू रोके रखती थीं।

डी ने ज़ोर देकर कहा था कि उसने अपने पैसे बचा रखे हैं, लेकिन हम सब जानते थे कि दो महीने में ही वो खत्म हो जाएँगे। हमारे पास जो बचत थी, उससे कम से कम वो छह महीने तक वहाँ रह सकती थी और उसे भूखे पेट नहीं सोना पड़ता। चाहे वो कितनी भी कोशिश करती, हम सब देख सकते थे कि वो अंदर से टूट रही थी। उसे भी धीरे-धीरे समझ आ रहा था कि वो क्या कर रही है, लेकिन इस बात का ज़िक्र उसके फैसले को और मज़बूत कर देता था और उसके ज़ख्म को और गहरा कर देता था।

कभी-कभी वह अनजाने में कह देती थी, 'वहाँ मॉडलिंग ही एकमात्र काम नहीं है।'

कई युवा काम कर रहे हैं।

मैंने कहा था, 'आपके पास कॉलेज की डिग्री नहीं है।' उसने

कहा था, 'मैं एक खरीद लूंगी।'

हमारा नाश्ता बहुत शानदार था और हमने उसे छुपकर खाया। मंदिर के पास बैठने वाले बनिया से आलू पूरी मंगवाई। दीदी और मुझे उसे पूरा खाने की छूट मिल गई। मम्मी और पापा ने हमसे झूठ बोला कि उनका पेट भर गया है। फिर मम्मी ने पापा को सख्त हिदायत दी कि शक से बचने के लिए शाम सात बजे से पहले घर न आएं। उन्होंने दीदी को गले लगाया, रोए और उदास चेहरे और झुके कंधों के साथ बाहर चले गए।

दी और मम्मा दोपहर भर इस बात पर झगड़ती रहीं कि क्या पैक करें और क्या

न करें। मम्मा ने कहा, 'मैं यह रख रही हूँ, तुम्हें क्या दिक्कत है?'

‘इस कमरे में जगह नहीं है, क्या तुम्हें दिख नहीं रहा? इनमें से कुछ चीजें फेंक दो, तुम्हें अपने लिए और जगह मिल जाएगी।’

‘तुम जा रहे हो। हमें और कितनी जगह छोड़कर जाना चाहते हो?’ माँ ने कहा।

‘मम्मी, ये तो—’

'तुम्हें बाद में इन सब चीजों की जरूरत पड़ेगी, मैं तुम्हें बता रही हूं, और तब तुम्हें इन्हें फेंकने का पछतावा होगा,' मां ने कहा।

'मुझे सातवीं कक्षा की सारी किताबें न होने का कोई अफसोस नहीं है। माँ, मैंने अपनी ज़रूरत की किताबें ले ली हैं। कृपया, कृपया, मुझे इन्हें फेंकने दीजिए।'

उसने मां के हाथ से किताबें छीनने की कोशिश की।

‘नहीं,’ माँ ने कहा। ‘तुम जहाँ चाहो जा सकते हो, लेकिन इन्हें फेंक नहीं सकते। मैं इनके लिए जगह ढूंढ लूंगी। तुम्हें चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।’

उसने सारा सामान समेटा, अलमारी में डाल दिया और उसे बंद कर दिया। फिर वह गुस्से में कमरे से बाहर निकल गई।

‘मुझे इसका कोई मतलब नहीं दिखता,’

डी ने मुझसे कहा। ‘लेकिन क्या यह

स्पष्ट नहीं है?’

जैसे-जैसे जाने का समय नज़दीक आता गया, हमारी आवाज़ें बैठ गईं, दिल बैठ गए और हम सब कमरे में एक-दूसरे को बेजान निगाहों से देखते हुए बैठे रहे। उदासी दूर करने के लिए दीदी ने सुझाव दिया कि हम सब लूडो खेलें। और हमने ऐसा ही किया। पापा ने ज़्यादातर मैच जीते, अपनी मर्ज़ी से चालें और मोहरे बदलते रहे। मम्मी तीन बार अंदर आईं और हमसे धीरे बोलने को कहा।

बाद में दिव्या दी ने मुझसे कहा, 'तुम जल्दी ही वहाँ आओगे। फिर हम

मम्मी-पापा को बुलाएँगे?'

'हाँ।'

‘और फिर हम शनिवार को इंडिया गेट जाएंगे।’ ‘रविवार को

बंगला साहिब?’

उसने सिर हिलाया।

मम्मी और पापा आपस में बातें कर रहे थे और ऐसा दिखावा कर रहे थे जैसे उन्होंने हमारी बातें नहीं सुनी हों।

आखिरी बस रात 10 बजे थी। वह नौ बजे निकल गई। रघु उसे उधार के स्कूटर पर लेने आया। मम्मी इस योजना के आखिरी हिस्से को लेकर कुछ खास उत्साहित नहीं थीं, लेकिन हमारे पास भरोसा करने के लिए और कोई नहीं था। हम सब पिछले एक घंटे से दीवार घड़ी को देख रहे हैं और मन कर रहा है कि दिव्या दीदी को बिस्तर से हथकड़ी लगा दें।

वह जा चुकी है।

1 नवंबर 2002

इसके बारे में लिखते हुए मेरा खून खौल
रहा है।

डीआई ने इसके बारे में कुछ किया होता। उसने इसे उठा लिया होता।
मैंने भाप वाली इस्त्री से बुआजी का सिर फोड़ दिया। यह सोचना भी मुश्किल है कि
वह मेरी तरह चुपचाप खड़ी रहती, एक मूर्ख की तरह यह सब देखती रहती।

बुआजी ने मम्मी का हाथ मरोड़ा और फिर उन्हें ऐसे थप्पड़ मारा जैसे वो कोई बड़ी औरत नहीं बल्कि बच्ची हों। एक पल के लिए मम्मी की आँखों में ऐसा गुस्सा झलक रहा था जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था, लेकिन जब बुआजी ने उन्हें आँखें नीचे करने या घर छोड़ने को कहा, तो उन्होंने आँखें नीचे कर लीं।

'बस करो!' दादाजी ने व्यंग्यपूर्वक कहा था क्योंकि वे न्यायाधीश थे और बुआजी जल्लाद।

पापा ने दादाजी से कहा, 'हमें नहीं पता था कि वह भाग जाएगी।'

दादाजी ने एक निराश, दयनीय मुस्कान के साथ सिर हिलाया और कहा, 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि तुम मेरे बेटे हो।'

वह पापा को शर्मिंदगी से जलता हुआ छोड़कर चला गया। हम तीनों—दिव्या दीदी, मम्मी और मैं—एक-दूसरे का दर्द समझते हैं, एक-दूसरे का हाथ थामते हैं और सही बातें कहते हैं, लेकिन हम कभी समझ नहीं पाए कि पापा से असल में क्या कहें। दीदी अक्सर पापा के बारे में एक बात कहती थीं और वह बिल्कुल सच है।

'उन्होंने उसे कभी इंसान नहीं बनने दिया, सिर्फ एक अपाहिज बनकर रहने दिया।'

माँ को छोड़कर, जिसने उसमें अच्छाई देखी या उस पर दया की—हम कभी नहीं जान पाएंगे—हम भी उसे उसी तरह देखते हैं। पापा बुनियादी भावनाओं को ज़रूरत से ज़्यादा दिखाते हैं—वे बहुत ज़्यादा मुस्कुराते हैं, बहुत ज़ोर से हँसते हैं और बच्चे की तरह रोते हैं। यहाँ तक कि अगर आप उनसे पूछें कि उन्हें क्या पसंद है, तो पिछले दो दशकों से उनका एक ही जवाब रहा है,
'आप तीनों को जो पसंद हो,' और साथ में वह भोली सी मुस्कान।

बुआजी ने पापा से कहा, 'अद्वैता को नौ बजे से पहले या पाँच बजे के बाद घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। अगर मैंने ऐसा होते देखा, तो वह बाहर ही रह सकती है और आप और आपकी पत्नी भी।' फिर उन्होंने मेरी तरफ मुड़कर कहा, 'और किसी को पता भी नहीं चलना चाहिए कि वह घर से बाहर गई है। हम कहेंगे कि वह दिल्ली में पढ़ाई कर रही है। क्या मेरी बात समझ में आई?'

बुआजी गुस्से में चली गई। फुफाजी तब तक हमें घूरती रही जब तक हम चुपके से कमरे में वापस नहीं चले गए।

14 नवंबर 2002

शादी को एक दिन में ही संपन्न कर दिया गया है। दहेज की रकम खाने-पीने, पंडाल सजाने-संवारने वगैरह पर बर्बाद होने के बजाय दादाजी और बुआजी के खातों में जमा की जाएगी।

मम्मी और पापा ने शादी की सारी तैयारियों में हिस्सा लिया था, लेकिन उन्हें चेतावनी दी गई थी कि अगर कुछ भी गड़बड़ हुई तो उन्हें अंजाम भुगतना पड़ेगा। उन्होंने चुपचाप उनकी बात सुनी और अपने काम में लग गए। दीदी के अचानक गायब होने की चर्चा ज़ोरों पर है। कुछ लोग कहते हैं कि वह किसी लड़के के साथ भाग गई है, कुछ का मानना है कि वह वेश्यावृत्ति गिरोह का हिस्सा है, और भी कई बातें कही जा रही हैं। हम अपनी कहानी पर अड़े हैं। वह दिल्ली में कंप्यूटर कोर्स करने गई है, जिससे उसे नौकरी मिलने की गारंटी है। हमने चेहरे पर मुस्कान लाकर पूरी हिम्मत से यह बात फैलाई है। दीदी, जो...

मैं रोज़ स्थानीय पीसीओ को फोन करती हूँ, उसने बताया कि वह आज फोन नहीं करेगी। मुझे उसकी बहुत याद आती है।

जाओ, अपने चाचा को देखो। पता करो कि सब ठीक है या नहीं। मैंने उन्हें नहीं देखा है। सुबह से ही। तुम्हारी बुआ हम पर चिल्लाने वाली हैं। हमें थोड़ी देर में निकलना होगा,' मम्मी ने मुझसे कहा।

चाचा को दरवाजे तक पहुंचने में दस मिनट लग गए।

चाचा का कमरा साफ करके, प्लास्टर करके और पेंट कर दिया गया है। सुमित्रा के कपड़ों के लिए जगह बनाने के लिए अलमारी को फिर से व्यवस्थित किया गया है। लेकिन पलंग के पास शराब की दो खाली बोतलें पड़ी हैं। मैंने उन्हें उठाया, अखबार में लपेटा और खिड़की के बाहर फेंक दिया।

मनीष चाचा बिस्तर पर लेटे हुए बाहर की ओर देख रहे थे, मानो खोए हुए से हों।

'ध्यान रखना, चाचा। आज इसे ज़ाहिर मत करना। दाढ़ी बना लो और खुश दिखो। तुमने ही तो यह रिश्ता चुना है।'

उसने मेरी तरफ देखा तक नहीं, बड़बड़ाया और खिड़की से बाहर देखने लगा।

मैं किसी के प्रति जवाबदेह नहीं हूं।

'बेशक आप हैं, चाचा। मेरी बहन इस शादी की वजह से यहां नहीं है।'
कम से कम आप इतना तो कर सकते हैं कि इसे खराब न करें।

कुछ देर बाद, वह एक प्रतिभाशाली अभिनेता के रूप में, जैसा कि मैं उन्हें हमेशा से जानता आया हूं, एक शानदार शेरवानी पहने हुए बाहर आए।

वह शाम मनीष चाचा और सुमित्रा द्वारा एक प्रेमी जोड़े की तरह निभाई जाने वाली रस्मों से भरी हुई थी, जबकि मुझे सख्ती से हिदायत दी गई थी कि मैं एक बैग में रखे पैसों के लिफाफों से दूर रहूं।

'क्या तुम मेरा पीछा करना बंद करोगे? भगवान के लिए!' मैंने कहा।

करण भैया और अंशुमन भैया हंसते हुए बोले, 'हमें तुम पर नजर रखने के लिए कहा गया है। आखिर तुम इतने छोटे-मोटे चोर हो, इसमें हम कुछ नहीं कर सकते।'

सौभाग्यवश, सुमित्रा के परिवार की कुछ लड़कियों ने उनका ध्यान मुझसे हटा दिया। कुछ लड़के मुझे खाते हुए देख रहे थे, लेकिन जब उनकी माताओं ने उन्हें बताया कि मेरे पिता गरीब हैं और मुझे दहेज में कुछ नहीं मिलेगा, तो उन्होंने तुरंत नज़रें फेर लीं।

'पनीर अच्छा है। मुझे पसंद
आया।' 'क्या?'

मैंने पीछे मुड़कर देखा तो एक आदमी कामुक निगाहों से मुझे घूर रहा था, उसके चेहरे पर एक विकृत मुस्कान थी।

'मेघनाद,' उसने कहा। शादी में शराब नहीं थी, फिर भी उससे शराब की तेज गंध आ रही थी। 'मुझे यकीन है कि तुम्हें मैं याद हूँ, है ना?'

'मैं नहीं।'

'तुम्हारी बहन और मैं रिश्ते में थे, जब तक कि उसने... तुम्हें पता है उसने उस आदमी के साथ क्या किया। विभोर गुप्ता, है ना? बेशक, मैंने उससे पहले तुम्हारी बहन के साथ वो कर लिया था, लेकिन मेरी लड़कियों को कोई हाथ नहीं लगाता... उस बेचारे को देहरादून छोड़ना पड़ा।'

मैंने उसके कंधे के ऊपर से भागने के रास्ते तलाशते हुए पूछा, 'क्या आप मेहमान हैं?'

'हम सुमित्रा के माता-पिता के अच्छे दोस्त हैं, असल में व्यापारिक साझेदार हैं। वे हमारे साथ यहां फर्नीचर शोरूम खोलने वाले थे, लेकिन फिर उन्होंने पैसों की दिक्कतों का हवाला देते हुए अपना इरादा बदल दिया। और देखिए, अब वे इतनी बड़ी शादी कर रहे हैं!'

मैंने तर्क दिया, 'यह वास्तव में बहुत बड़ा नहीं है।'

'यह उनके लिए बहुत बड़ी बात है,' उन्होंने कहा। 'खैर, अद्वैत। मुझे तुम्हारा नाम हमेशा से बहुत पसंद आया है। इसे ज़बान पर लेने का एहसास ही अलग है।' उन्होंने अपना हाथ मेरे हाथ पर रखा, मैंने अपना हाथ पीछे खींच लिया।

मुझे तुरंत चाहिए।

‘तुम्हारी बहन कहाँ है? लोग तरह-तरह की बातें कर रहे हैं।’ ‘वह दिल्ली में कंप्यूटर कोर्स कर रही है।’

लेकिन मैंने सुना है कि वो वहाँ एक म्यूजिक वीडियो के लिए गई है? या फिर वो उस आदमी के पास वापस चली गई है, हाँ? सुमित्रा का पूर्व पति, है ना? मैं दिल्ली में लोगों को जानता हूँ।

मुझे पता लगाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।’ मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

वह वहां कंप्यूटर कोर्स करने गई है।

‘क्या तुम्हें सच में लगता है कि यहाँ कोई इस बात पर विश्वास करेगा? तुम्हारी बुआ तो एक तोते की तरह यही बात दोहराती आ रही हैं,’ उसने कहा और हँस पड़ा।

'आप क्या चाहते हैं?'

'मैं बस बात करना चाहता हूँ। क्या यह उस लड़की की बहन से माँगना बहुत ज़्यादा है जिसने कभी मुझसे प्यार किया था, है ना?'

वह मेरी ओर झुक गया।

'उसने तुम्हें कभी प्यार नहीं किया।'

उन्होंने इस बात को नजरअंदाज कर दिया। 'तो अद्वैत, तुम शादी करने के बारे में कब सोच रही हो?'

आप ज्यादा बूढ़े नहीं होना चाहते, है ना? या आपकी बहन की तरह आपका भी कोई बॉयफ्रेंड है?

‘मैं उस तरह की लड़की नहीं हूँ,’ मैंने कहा। समय के साथ, आप ऐसी बातें कहना सीख जाते हैं। ‘हाँ, तुम अपनी बहन जैसी नहीं दिखती। मुझे उसी पल समझ जाना चाहिए था कि वह कितनी गुस्सैल है जब मैंने उसे देखा था…’ उसने अपने हाथों को कप की तरह बनाया और फिर वापस रख दिया।

उसकी जेब में। 'वैसे, शादी बहुत अच्छी थी। और तुम बहुत खूबसूरत लग रही हो!

फिर मिलेंगे।' 'बाय।'

वह जाने के लिए उठा। 'लेकिन सुनो? अगर तुम्हें अपनी बहन और उस आदमी के बारे में कोई खबर मिले तो मुझे जरूर बताना।'

मैं बेसब्री से उसके शादी से जाने का इंतजार कर रही थी, और बुआजी को एक मोटा लिफाफा सौंपने के तुरंत बाद वह चला गया। बुआजी ने उसे ऐसे गले लगाया जैसे वह उनका बिछड़ा हुआ बेटा हो।*varmala*माल्यार्पण समारोह के दौरान, उसने हवा में गोली चलाई। कुछ लोग उससे दूर भाग गए, जबकि अन्य ने उसे प्रोत्साहित किया। वह तब तक बंदूक में गोलियां भरता और चलाता रहा जब तक पंडित ने उसे रोकने के लिए नहीं कहा।

‘वो तुमसे क्या कह रहा था?’ मम्मी दौड़कर मेरे पास आईं। ‘कुछ नहीं।’

दइच्छापवित्र अग्नि की परिक्रमा का अनुष्ठान, हमेशा की तरह, रात के 2:30 बजे होना था। मुझे दो बार नींद आ गई, इसलिए करण भैया को मुझे घर छोड़ने के लिए कहा गया। मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं माँग सकती थी। मेरा शरीर थक चुका था और नींद के लिए तड़प रहा था।

लेकिन हमेशा की तरह, घर पहुँचते ही मेरी नींद खुल गई। कुछ ही मिनटों में मैं बेचैन हो गई, मेघनाद, विभोर और दिव्या दीदी के बारे में सोचने लगी। मैं घर के अलावा कहीं भी जाना चाहती थी। स्कूटर वहीं खड़ा था। पहले तो मैं जल्दी से अपना लहंगा उतारने लगी, फिर मैंने अपना इरादा बदल दिया। रघु मुझे इस हालत में देख ले, मैंने सोचा और जल्दी से घर से बाहर निकल गई। अगर कोई मुझे देख भी लेता, तो मैं बस यही कह देती कि मैं पंडाल वापस जाने का रास्ता ढूंढ रही थी। ऐसा करने से मेरी पिटाई तो नहीं बचती, लेकिन उस समय मैं ठीक से सोच नहीं पा रही थी।

जब मैं उसके पास पहुंचा तो उसने मेरे कपड़ों की ओर इशारा करते हुए कहा, 'तुम यहां क्या कर रहे हो? और इस ड्रेस में?'

अगली पंक्ति के लिए उन्होंने जो कुछ अतिरिक्त सेकंड लिए, वे काफी आश्वस्त करने वाले थे, बल्कि प्रशंसात्मक भी थे।

'तुम बहुत ही खूबसूरत लग रही हो।'

'शादी में खाना तो बहुत अच्छा था, लेकिन चाय अच्छी नहीं थी। साथ ही, वहां एक और व्यक्ति भी था जिसे मैं बिल्कुल पसंद नहीं करता।'

उसने पूछा कि कौन है, और हमेशा की तरह, मैंने एक बच्चे की तरह सब कुछ उसे बता दिया। आखिर क्यों, हमेशा मैं ही सब कुछ बता देती हूँ?

मुझे आज अपनी बहन की बहुत याद आई।

‘बेशक तुमने किया होगा,’ उसने कहा। ‘लेकिन क्या लिफाफे चुराने पर कोई प्रतिबंध नहीं था?’

‘तुम्हें कैसे पता... ओह, अल्ताफ। कोई बात नहीं। काश वो यहाँ होती। हम कम से कम थोड़ा नाच तो सकते थे।’

उसने सहमति में सिर हिलाया।

‘रघु, तुम इस तरह सिर क्यों हिला रहे हो? मैं कुछ ऐसा कहूँ तो तुम्हारी प्रतिक्रिया सिर्फ सहानुभूति भरी सहमति होती है।’

आप मुझसे क्या करने की उम्मीद करते हैं?

‘तुम ही मेरी इकलौती दोस्त हो यहाँ। डाय के चले जाने के बाद, तुम ही एकमात्र ऐसी इंसान हो जिससे मैं बात कर सकती हूँ, और अगर तुम मुझसे बातें साझा नहीं करोगी तो मुझे हमेशा ऐसा लगेगा कि मैं तुम पर बोझ हूँ। तुम मेरी मनोचिकित्सक नहीं हो।’

उसे ज़रूर अपराधबोध हुआ होगा क्योंकि वह थोड़ी देर तक चुप रहा। 'तुम क्या पूछना चाहते हो?'

क्या आपको भी अपने परिवार की याद आती है?

'हर दिन।' उसने अपना सिर हिलाया और अपनी उंगलियों को घूरने लगा। 'वे जैसी बन गई थीं, वैसी नहीं, बल्कि जैसी वे थीं। वे मुझसे बहुत प्यार करती थीं। और मैं भी उनसे बहुत प्यार करता था।'

'क्या आप ब्राह्मी से भी ज्यादा प्यार करते थे?'

इसके बाद जो लंबा सन्नाटा छाया रहा, वह मेरे लिए दखलंदाजी बंद करने का संकेत था। उसने मेरी हठधर्मिता को भांप लिया और बातचीत का रुख दूसरी ओर मोड़ दिया।

'क्या आपके चाचा खुश थे?' उसने पूछा। 'उन्होंने ठीक-ठाक अभिनय किया।'

अगले एक घंटे तक हमने उनके बनाए दाल-चावल खाए, उनकी चाय पी और यूं ही कुछ भी नहीं बोला। उन्होंने मुझे दिव्या दीदी की याद नहीं आने दी, और मैंने उन्हें आज रात पहले के सभी दिनों की तुलना में कहीं अधिक मुस्कुराते हुए देखा। मुझे ऐसा लगा...

... संतुष्ट, खुश, आप इसे जैसे भी कहना चाहें।

जब मैं उसके घर से निकला, तो मुझे हल्कापन महसूस हुआ, मेरे पैर जमीन से कुछ इंच ऊपर तैर रहे थे।

दी गलत थी। शायद कोई लड़का उतना भी बुरा नहीं है जितना हम सोचते हैं। और वो मेरा दोस्त है—रघु गांगुली।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

15 नवंबर 2002

सोचिए, देश के व्यापारियों और राजनेताओं ने हमसे जो कुछ भी लूटा है, उसके मुकाबले वैद्यों को सिर्फ बीस लाख रुपये की जरूरत थी। सिर्फ बीस लाख रुपये। उन्होंने सौ करोड़ में से एक लाख रुपये चुरा लिए! उन्हें पता भी नहीं चलेगा कि ये पैसे गायब हो गए हैं।

मैं पैसों की बात इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि आज सुबह सुमित्रा के माता-पिता ने बहुत देरी के बाद दादाजी को जो चेक दिया था, वह बाउंस हो गया। पहली बार दादाजी और बुआजी बाली परिवार पर भड़क उठे। आज सुबह दादाजी और बुआजी मनीष चाचा के दरवाजे पर जोर-जोर से दस्तक देकर उनसे लड़की को तुरंत घर से निकालने की मांग करने लगे।

यह तेजी से बन गया था 'लड़कीसुमित्रा ने एक घंटे के भीतर ही 'बेटी' कहा।

सुमित्रा और मनीष चाचा ने पिछले दस दिनों में अपना काफी लंबा समय अपने कमरे में बंद रहकर नवविवाहित होने का दिखावा करने में बिताया है।

‘यह क्या है?’ बुआजी ने नींद में डूबी सुमित्रा से पूछा और चेक को उसके चेहरे के सामने लहरा दिया।

सुमित्रा ने चेक को तिरछी नज़रों से देखा और मासूमियत का नाटक किया। 'मुझे नहीं पता, दीदी।' 'ओह! तुम्हें नहीं पता? कितनी भोली हो तुम! तुम्हारे परिवार में किसी को कुछ नहीं पता।'

बुआज ने कहा, 'तुम सब भेड़ जैसे हो, है ना? अगर मैं तुम्हारे गहने ले लूं तो तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं होगी? मैं उन्हें लौटा दूंगी, बेशक।'

‘जी हाँ, ज़रूर,’ सुमित्रा ने बुआजी को देखकर विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा। ‘आप कहाँ जा रही हैं, दीदी?’ मम्मी ने पूछा।

बुआजी ने कहा, 'ज्वेलर के पास,' और सुमित्रा की ओर एक नज़र डाली जो वहाँ एक गाय की तरह खड़ी थी, अनजान और शरमाई हुई। बुआजी और फुफाजी तुरंत सुमित्रा के गहने लेकर घर से निकल गए।

करण भैया और अंशुमन भैया सुमित्रा बाली को घूर रहे थे, वही लड़की जो उनसे बड़े शहर जाने, बड़े इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ने, ढेर सारी लड़कियों और मौज-मस्ती करने के उनके सपने को छीनने वाली थी। यह सुखद था।

उन्हें डरा हुआ और गुस्से में देखकर। वे बंधे हुए, भूखे कुत्तों की तरह थे जो झपटने के लिए तैयार थे, लेकिन अपने मालिक के आदेश का इंतजार कर रहे थे।

मम्मी ने मेरे कानों में फुसफुसाते हुए कहा, 'मैंने शादी में गहने देखे, वे नकली हैं। बाली वालों के पास पैसे नहीं हैं।'

उस पल मेरे दिमाग में सिर्फ मेघनाद की कही बातें ही घूम रही थीं। उसकी कही एक बात में तो सच्चाई थी।

मम्मी ने आगे कहा, 'बुआजी इसे हल्के में नहीं लेंगी।'

16 नवंबर 2002

हम ऐसे बैठे थे मानो यह जगह हमारी ही हो और बाली परिवार सिर झुकाए खड़ा था। लेकिन सुमित्रा का रवैया ऐसा नहीं था। वह चिल्लाई, रोई, बुआजी के चरणों में गिरकर अपने माता-पिता के लिए माफी मांगी, उन्हें समझाने की कोशिश की कि यह एक अनजाने में हुई गलती थी, लेकिन बुआजी उसे माफ करने के मूड में नहीं थीं।

सुमित्रा की मां ने पूछा, 'कुछ खाओगी?' बुआजी ने गहनों से
भरा थैला मेज पर फेंक दिया।

'तुमने हमसे झूठ बोला!' वह चिल्लाई। 'और तुममें इतनी हिम्मत है कि तुम हमसे पूछ रहे हो कि क्या हम अपनी बहू के घर खाना खाना चाहते हैं?' बुआजी इतनी गुस्से में थीं कि वे मुश्किल से बोल पा रही थीं।

सुमित्रा के पिता ने कहा, 'हम... हमें खेद है।' मैं सोच रहा था कि क्या उन्हें बुआजी को उनके हक की दहेज राशि से वंचित करने का अफसोस था या सुमित्रा को जीवित रहने देने के फैसले का। शादी के बाद से वे काफी बूढ़े लग रहे थे। उन्हें पता था कि एक दिन तो आना ही था जब उनका छल पकड़ा जाएगा और उनकी बेटी का भविष्य, उनके परिवार की इज्जत दांव पर लग जाएगी।

'माफ़ी? तुम्हें अफ़सोस है? तुम्हें पता है तुमने क्या किया है, हाँ?' मेरे भाई

"...मेरा भाई देहरादून में किसी भी लड़की से शादी कर सकता था, और अब उसे तुम्हारी बदसूरत बेटी से शादी करनी पड़ रही है। क्या तुम्हें पता है कि हमारे रिश्तेदार तुम्हारी बेटी को क्या कहते थे?" बुआजी ने ज़मीन पर थूका।

'क्या आपको पता है अब क्या होगा?' बुआजी ने सुमित्रा के माता-पिता से पूछा, जो बस जमीन की ओर देखते रहे, शायद इस उम्मीद में कि धरती फट जाएगी।

'दीदी, इसे रहने दो—'

बुआजी ने मां को घूरकर देखा और उन्हें चुप करा दिया। 'हमने तुम्हारे साथ जो गलती की, वह दोबारा नहीं दोहराई जाएगी।'

उसने सुमित्रा के माता-पिता की ओर देखा और तीखे स्वर में कहा, 'पिताजी स्वयं यहाँ आना चाहते थे... आपकी बेटी को लेकर, उसे यहाँ सड़ने के लिए छोड़ देना चाहते थे, लेकिन मैंने ही उन्हें रोका। मैंने उनसे कहा कि हमें आपको इसे सुधारने का मौका देना चाहिए।'

सुमित्रा की मां रोते और गिड़गिड़ाते हुए बोलीं, 'हम इसे कैसे ठीक कर सकते हैं? हमें बताओ? हम कुछ भी करेंगे।'

बुआजी ने घमंड से कहा, 'यह घर बेच दो! इससे तुम्हें हमारा किराया चुकाने और तुम दोनों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त पैसे मिल जाएँगे।'

सुमित्रा के माता-पिता ने एक-दूसरे को देखा और फिर हमारी ओर देखा।

सुमित्रा के पिता ने कहा, 'घर गिरवी रखा हुआ है,' और फिर दयनीय स्वर में बोले, 'लेकिन चिंता मत करो... मेरे पास कुछ पैसे आ रहे हैं। मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हारी ज़रूरत का सारा पैसा चुका दूँगा। उसे घर मत भेजो। वह उस घर में तुम्हारी हर बात मानेगी, लेकिन उसे घर मत भेजो।'

सुमित्रा के माता-पिता को हाथ जोड़कर भीख मांगते देख मुझे लगा कि उनके साथ जो हो रहा है वो उनके लिए उचित ही है।

बुआजी ने हथेली से अपना माथा रगड़ा और गुस्से से खुद को रोकने की पूरी कोशिश की। शांत भाव से उन्होंने संपत्ति के कागजात मांगे ताकि पता चल सके कि कहीं वे झूठ तो नहीं बोल रहे। उन्हें अपने ही घर में इस तरह आदेश दिए जाते देखकर अब मेरा दिल नहीं दुखता था। आखिर वे अपनी बेटी के साथ खुशी-खुशी क्यों नहीं रह सकते?

बाद में? अगर उन्होंने ऐसा करने का फैसला किया होता तो क्या सुमित्रा सबसे ज्यादा आभारी बच्ची नहीं होती?

बहुत हो जाने पर बुआजी अचानक उठ खड़ी हुईं।

सुमित्रा की मां ने चेहरे पर खौफ के साथ पूछा, 'क्या आप हमारी बेटी को वापस भेजने वाले हैं?'

बुआजी ने कुछ नहीं कहा और जाने के लिए मुड़ गईं। घर से बाहर निकलने से पहले उन्होंने करण भैया और अंशुमन भैया की ओर देखा और कहा, 'जो चाहो ले लो।'

और जब मैं और मम्मी बुआजी के पीछे-पीछे घर से बाहर निकले, तो मुझे महसूस हुआ कि करण भैया और अंशुमन भैया इधर-उधर उछल-कूद कर रहे थे और घर से हर कीमती चीज लूट रहे थे।

वापस आते समय, मेरे मन में बुआजी और सुमित्रा के बीच होने वाली हर बात के ख्याल घूम रहे थे। मैं सोचती रही कि क्या हम भी उन परिवारों में से हैं जो दुल्हनों को जला देते हैं। ऐसा न सोचने का कोई कारण नहीं था। ऐसा करने वाले परिवार अब हमारे परिवार से बहुत अलग नहीं दिखते, है ना?

घर लौटने पर बुआजी ने ऐसे ही अपना दिन बिताया जैसे कुछ बदला ही न हो, मानो शादी के सहारे घर को फिर से बसाने की उनकी योजनाएँ झूठी और धोखेबाज सुमित्रा बाली की वजह से पटरी से उतर ही न गई हों। हर बार जब बुआजी पानी की बोतल उठातीं, कुर्सी खिसकातीं या कैंची पकड़तीं, तो उसे फेंक दिया जाता।

सुमित्रा। यह एक अलग बात है कि मनीष चाचा सुमित्रा का समर्थन कर रहे हैं, और बुआजी उनके सामने कुछ भी करने की हिम्मत नहीं करेंगी।

लेकिन मुझे यह भी पता है कि यह सिर्फ समय की बात है।

25 नवंबर 2002

पिछले कुछ दिन हम सभी के लिए कठिन रहे हैं।

सुमित्रा की आंखों की चमक जैसे छिन गई हो। उसके अंदर कुछ मर गया है, वो चीज़ जिसे मम्मी, पापा, दिव्या दीदी और मैं बड़ी मुश्किल से बचाए रखते हैं—उम्मीद। मनीष चाचा उसकी देखभाल कर रहे हैं, लेकिन लगता नहीं कि इससे कोई फ़ायदा हो रहा है। इससे भी बुरी बात ये है कि अक्सर मुझे समझ नहीं आता कि वो क्या सोच रही है। वो मुस्कुराती है और सब कुछ सामान्य रूप से करती रहती है जैसे सब कुछ ठीक हो।
सामान्य है, लेकिन कभी-कभी वो खिड़की से बाहर देखती रहती है, उसकी आँखें बेजान और अंग निराशा से ढीले पड़ जाते हैं। भगवान जाने बुआजी उसे परेशान करने के लिए कोई और बहाना ढूंढ लेंगी तो क्या होगा।

लेकिन बुआज अपना गुस्सा सिर्फ उसी पर नहीं निकाल रही है।

बुआजी लगातार मम्मी को खरी-खोटी सुना रही हैं। वह उन पर आरोप लगाती रहती हैं कि सुमित्रा के झूठ के बारे में उन्हें पहले से ही सब पता था और यह सब घर में और अधिक दुख लाने की उनकी साजिश थी।

‘तुम लोग कहीं भी हमारे पैसे की गंध सूंघ सकते हो। क्या मैं तुम्हारे पैसे को नहीं जानता?आप साझा करते हैं'क्या?' उसने उस दिन कहा जब गहनों को नकली घोषित किया गया था।

बुआजी ने धमकी दी है कि सुमित्रा के काम करने के कारण वह हमें घर से निकाल देंगी और आर्थिक मदद देना बंद कर देंगी। मम्मी कई दिनों से माफी मांगती आ रही हैं क्योंकि हमें पापा की दवाइयों के लिए पैसों की ज़रूरत है। पापा की पीठ में दर्द है, सालों तक लंगड़ाकर चलने के कारण उनकी रीढ़ की हड्डियां धीरे-धीरे कमजोर होती जा रही हैं। डॉक्टर ने उनसे कहा है कि अब वे दवाइयां लेने से बच नहीं सकते। आखिरकार, उन्हें ऑपरेशन करवाना पड़ेगा, लेकिन मैं इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहती।

करण भैया और अंशुमन भैया हमें अपने ही अंदाज़ में बेइज्ज़त कर रहे हैं। नहाने के बाद वे पानी की टंकी खाली कर देते हैं, शौचालय को बेहद गंदा और फर्श को गीला और कीचड़ से सना रखते हैं। वे मुझे फर्श साफ़ करते, बर्तन धोते और एक ज़ॉम्बी की तरह इधर-उधर भटकते देखकर हंसते हैं।

‘अब तुम्हारे लिए कोई इंजीनियरिंग कॉलेज नहीं है। मुझे उम्मीद है कि तुम यह जानते हो, है ना? अब इसके लिए पैसे नहीं हैं,’ मैंने आज सुबह उनसे कहा और उनके चेहरे उतरते हुए देखे।

करण भैया के चले जाने के बाद अंशुमन भैया ने बड़े ही भयावह लहजे में कहा, 'जरूरत पड़ने पर हम तुम्हें बेच देंगे।'

‘क्या आपको नहीं पता कि वैद्य कितने घटिया व्यापारी हैं? आपको क्या लगता है कि मुझे कौन खरीदेगा?’ मैंने गुस्से से कहा।

अंशुमन भैया ने कहा, “यह सच है। वैसे भी तुम्हें कौन खरीदेगा! भगवान जाने तुम्हें कौन-कौन सी बीमारियां हैं, चमारनी।” और फिर वह गुस्से में वहां से चले गए।

आज जब दीदी ने फोन किया, तो मैंने उन्हें इस बारे में कुछ नहीं बताया। मुझे पता है कि वह दिल्ली में परेशान हैं, मुझे पूरा यकीन है। अगर वह परेशान न होतीं, तो उनकी यह हालत न होती।

वो नियमित रूप से फोन नहीं करती। तीन हफ्ते हो गए हैं और पीसीओ का फोन हर दिन ठीक सुबह 10 बजे बजता है। अगर उसकी तरक्की हो रही होती, तो वो ठीक उस समय फोन नहीं करती, शायद फोन करना भूल जाती और फिर माफी मांगती, और फिर अपने नए विज्ञापन या नए टीवी शो के ऑफर के बारे में बताती। लेकिन कुछ नहीं। न कोई म्यूजिक वीडियो है, न मॉडलिंग का काम, न दिल्ली में उसके लिए कोई नौकरी। बस अकेलापन और तन्हाई है।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

27 नवंबर 2002

मैंने आज रघु से कहा, 'तुम्हारी चाय से सब कुछ ठीक लगने लगता है।' इस पर उसने मजाक में कहा, 'अपनी बुआजी के लिए भी थोड़ी चाय ले लो।'

मम्मी को रघु या मेरे आस-पास के किसी भी पुरुष से शायद पसंद न हो, लेकिन उन्हें भी रघु की चाय बहुत पसंद आ गई थी, और कल तो उन्होंने मुझे उनके लिए पर्याप्त चाय न लाने पर डांट भी लगाई थी।

'राघु, तुम्हें पता है हमें क्या करना चाहिए? हमें एक चाय की दुकान खोलनी चाहिए। मैं तुमसे कह रही हूँ, यह एक शानदार विचार है। तुम पूरे शहर में चर्चा का विषय बन जाओगे,' मैंने खुशी से चिल्लाते हुए कहा।

'आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैं ऐसा चाहूँगा?'

'ठीक है, ठीक है, तुम पीछे रहो। मैं आगे रहूंगा। मैं तुम्हें बता रहा हूं, हजारों रुपये कमाने बाकी हैं। देहरादून के लोग एक अच्छी कप चाय के लिए क्या नहीं करेंगे? और तुम्हारी चाय तो नशे की तरह है।'

'मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हारी बुआजी को सड़क पर चाय बेचने का तुम्हारा विचार बहुत पसंद आएगा।' 'उन्हें मेरा कुछ भी करना पसंद नहीं आएगा,' मैंने कहा।

यह पहली बार नहीं है जब उन्होंने मेरे किसी व्यावसायिक अवसर को ठुकरा दिया हो।

बेशक, मैं चाय की दुकान वाले विचार को लेकर गंभीर नहीं हूँ। मैं तो उनसे यह प्रस्ताव रखना चाहता हूँ कि उनके साथ मिलकर एक कोचिंग संस्थान खोलें—पांचवीं से बारहवीं कक्षा तक—जिसमें IIT और मेडिकल परीक्षा की तैयारी पर ज़ोर दिया जाए। यह बात मेरे मन में तब से है जब मैंने उन्हें बच्चों को पढ़ाते देखा था, और सभी बच्चे उन्हें बहुत पसंद करते थे और उन्हें अपनी पढ़ाई में मज़ा आता था। इससे देहरादून में IIT-मेडिकल कोचिंग का परिदृश्य बदल सकता है। मेरे स्कूल में, पूरे बैच में से केवल कुछ ही छात्र इन प्रवेश परीक्षाओं में सफल हो पाए (वे भी असफल रहे) क्योंकि दिल्ली के विपरीत, यहाँ अच्छे शिक्षक नहीं हैं। यह बात समझ में भी आती है, जब आप दिल्ली और कोटा में तीन गुना ज़्यादा फीस ले सकते हैं तो देहरादून में रहकर क्यों पढ़ाएँगे?

लेकिन मुझे पता है कि वह इस विचार को नकार देगा। कोई भी ऐसी चीज़ जिसमें उसे लेन-देन वाले रिश्ते में शामिल होना पड़े, उसे बेचैन कर देती है। इससे बाहर निकलना...

जिस भंवर में वह खुद को फंसा चुका है, उससे निकलने के लिए उसे बहुत से लोगों के सामने खुलना पड़ेगा, जिसके लिए वह तैयार नहीं दिख रहा है। वह मुझसे बार-बार कहता है कि वह दूसरों की ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहता, उनसे बंधा नहीं रहना चाहता और वह जैसा है वैसा ही खुश है। लेकिन सिर्फ मैं जानती हूं कि वह मौजूदा हालात से खुश नहीं है।
वह एक खास तरह की उदासी और निराशा के माहौल का आदी हो चुका है।

मैंने बातचीत का रुख बदल दिया और सुमित्रा के बारे में उसे बताया, यह जानते हुए कि वह परिवारों की खामियों पर जमकर भड़ास निकालेगा, और उसने ऐसा ही किया।

'अब तुम्हें सुमित्रा की जिम्मेदारी महसूस हो रही है, है ना?' रघु ने कहा। 'तुम्हें उसे बचाने का मन कर रहा है।'

मैंने कहा, 'बिल्कुल, मैं करता हूँ। इसमें गलत क्या है?'

'अगर तुम्हारा सुमित्रा से कोई रिश्ता ही न होता तो तुम खुद को बचा सकते थे। उसकी पीड़ा की जिम्मेदारी तुम्हारी नहीं होती।'

'रघु, बदतमीजी करना बंद करो।'

'इसी तरह आप खुद को और अधिक पीड़ा से बचा सकते हैं। आप उसका स्वागत करते हैं।'

'गैर-जिम्मेदार होने का मतलब है कि अगर कल मुझे कुछ हो जाए, तो तुम बस यहाँ बैठे रहोगे और कुछ नहीं करोगे?' मैंने कहा और तुरंत ही अपने कठोर शब्दों पर पछतावा हुआ। 'मेरा मतलब ऐसा कहना नहीं था। लेकिन आप इस तरह से जीवन नहीं जी सकते।'
क्या आप ऐसा कर सकते हैं? आपको कुछ रिश्ते तो रखने ही होंगे, है ना?

वह उदास होकर मुस्कुराया और बोला, 'बात कुछ और ही निकली, है ना? मेरे सभी प्रियजन, मेरे सभी प्रतियाँ और मैं अपना वादा नहीं निभा पाए... उन्होंने भी नहीं, और न ही मैंने। मैं दोबारा असफलता का सामना नहीं करना चाहता।'

तो अगर कल मैं तुम्हें किसी मुसीबत में देखूं, तो तुम मुझसे यही उम्मीद करोगे कि मैं चुपचाप बैठा देखता रहूं। क्या तुम्हारा यही मतलब है?

'मैं आपसे अपेक्षा करता हूं कि आप अपनी क्षमता के अनुसार सब कुछ करें, लेकिन अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो मुझे गुस्सा नहीं आएगा।'

इससे मुझे गुस्सा आया। मैं चाहता था कि अगर मैं कभी उसकी मदद करने में असफल रहूँ तो वह मुझे डांटे।

लेकिन पिछले कुछ हफ्तों में मैंने उसे इतना देख लिया है कि मैं समझ गया हूँ कि उसने जानबूझकर दुखी रहना नहीं चुना है, और वह अपने दुख को दूर करने की कोशिश करता है, पर असफल रहता है। उसकी हर हंसी रुक-रुक कर आती है—वह अचानक रुक जाता है, मानो उसे कुछ याद आ गया हो, और फिर धीरे से हंसने लगता है, मानो उसे अपनी ही खुशी से डर लग रहा हो।

कई बार ऐसा होता है कि मैं उसके जागने से पहले ही उसके घर पहुँच जाता हूँ। मैं खिड़की से उसे नींद के लिए संघर्ष करते, करवटें बदलते और पसीना बहाते हुए देखता हूँ, और फिर
नींद से अचानक जाग जाना। अगर आप उससे पूछेंगे तो वो कहेगा कि कुछ नहीं। मैं बेवकूफ नहीं हूँ। अगर आप रात भर खाली दीवारों को घूरते हुए, कोने में जलती एक अकेली मोमबत्ती को देखते हुए जागते रहते हैं और फिर हर सुबह बुरे सपने देखते हैं, तो निश्चित रूप से आपमें कुछ गड़बड़ है।

लेकिन मैं ज्यादा पूछताछ करने की कोशिश नहीं करता—वह मेरा दोस्त है।

इसीलिए मैं अपना असली विचार उस पर थोपता नहीं हूँ। लेकिन जितना मैं परवाह करता हूँ

29 नवंबर 2002

मैंने अपने काम निपटाए और घर लौटकर देखा तो बाहर एक एसयूवी खड़ी थी। उसने पूरी लेन को ब्लॉक कर दिया था।

मुझे लगा कि शायद ये सुमित्रा के माता-पिता की गाड़ी है, और हो सकता है कि अब उनकी आर्थिक तंगी दूर हो गई हो और वे दादाजी और बुआजी को पैसे देने की स्थिति में हों। मेरी मुस्कान गायब हो गई जब मैंने मेघनाद को आंगन में बुआजी और दादाजी के साथ बैठे देखा। जब दादाजी ने मेरी तरफ देखा, तो मेघनाद ने भी मेरी तरफ देखा। उसकी निगाहें घर के अंदर तक मेरा पीछा करती रहीं। वो आदमी मुझे हमेशा घृणा दिलाता था।

वह यहाँ क्या कर रहा है?

'तुम्हारे दादाजी से कुछ काम है,' मम्मी ने बातचीत रोकने की कोशिश करते हुए कहा।

'क्या धंधा? वो फर्नीचर का व्यापार करते हैं, दादाजी मीठी गोलियां बांटते हैं। दोनों में क्या संबंध है?'

मम्मी और पापा ने एक दूसरे की तरफ देखा।

'क्या? बताओ?'

पापा ने कहा, 'मम्मा को लगता है कि वह या तो यह घर खरीदेगा या क्लिनिक।'

इस तरह दादाजी और बुआजी के पास करण और अंशुमन की पढ़ाई और उनके गुजारे के लिए पर्याप्त पैसे होंगे।'

'और हमारा क्या होगा?' मैंने पूछा।

माँ के पास कोई जवाब नहीं था। इतने साल पहले, अनिल ताऊजी की मृत्यु के बाद दादाजी ने बदले और गुस्से में आकर हमें इस घर में वापस आने के लिए मजबूर किया था। इतने सालों में, उन्होंने हमें पूरी तरह से तोड़ दिया था, हमारा अस्तित्व मिटा दिया था।

गरीबी से बाहर निकलने की हमारी कोई उम्मीद नहीं है। अब हम उनके लिए सिर्फ़ एक परेशानी हैं, और उन्होंने हमसे बदला लेने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई है। हम सस्ते में घर का काम करते हैं। हम महज़ नौकरानियाँ हैं, और अगर हमें बाहर निकालने की बात आए तो शायद उन्हें ज़रा भी परवाह न हो। अब उन्हें हमारी ज़रूरत नहीं है।

ए समझ का राहत और डरावनी सोचने के लिए मजबूरमुझे।

हमारे घर में पीड़ित-अपराधी का रिश्ता इतना गहरा है कि हम इसके अलावा किसी और रिश्ते की कल्पना भी नहीं कर सकते। लेकिन हम कहाँ जाएँगे? कहाँ रहेंगे? क्या हमारे पास पर्याप्त पैसा होगा? अगर पापा की पीठ की हालत और बिगड़ गई तो क्या होगा? ऐसे क्षणों में मुझे याद आता है कि इस घर से उठकर बाहर निकलना कभी इतना आसान क्यों नहीं था।

ये पुरानी यादें नहीं, ये तो ज़िंदा रहने की बात है। बुआजी चाहे कितनी भी ज़ालिम हों, दादाजी चाहे कितने भी नफ़रत भरे हों, इस घर में हमें कभी भूखा नहीं मरने दिया जाएगा। बरसात के दिनों में हम सड़क पर नहीं निकलेंगे, किसी मनमौजी मकान मालिक ने हमें घर से बाहर नहीं फेंका होगा। लेकिन बुआजी के व्यवहार का कोई अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। कौन जाने, कहीं वो हमसे नाराज़ तो नहीं हैं? हर बार जब मैं उन्हें अपने ज़ख्मों पर हाथ फेरते देखती हूँ, तो मुझे डर लगता है कि कहीं वो हम पर अपना गुस्सा न निकाल दें।

मैं उन तीनों आदमियों की बातें सुनने के लिए छत पर गया, लेकिन मुझे सिर्फ उनकी हंसी सुनाई दी। दादाजी के विदा लेने के बाद, फुफाजी और मेघनाद उनकी कार के पास खड़े होकर शराब पीते रहे। बाद में दादाजी फुफाजी को कार में घुमाने ले गए। जब वे जाने लगे तो दोनों लड़खड़ा रहे थे और मैंने भगवान से प्रार्थना की कि वे बाकी दुनिया के लिए जो भी अच्छा हो वही करें।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

10 दिसंबर 2002

डीआई ने आज फोन नहीं किया। मैं एक घंटे तक पीसीओ में इंतजार करती रही। जब उसने फोन नहीं किया, तो मैंने उस नंबर पर कॉल किया जिससे वह अक्सर कॉल करती है और दूसरी तरफ वाले आदमी ने मुझे खूब खरी-खोटी सुनाई। यह मिला-जुला अनुभव था; शायद उसे आखिरकार काम मिल गया था। आज वह दिन था जब मैंने सोचा था कि मैं डीआई को अपने साथ हुए सारे अन्याय के बारे में बता दूंगी। लगता है...
लगता है अब एक दिन और इंतज़ार करना पड़ेगा। पता नहीं वो दिल्ली में क्या कर रही है। क्या उसे मॉडलिंग का कोई काम मिला है? क्या किसी डायरेक्टर ने उसे किसी कॉफी शॉप में देखा और काम दे दिया? बिलकुल मुमकिन है। उसका चेहरा तो बहुत ही आकर्षक है। देहरादून हो या दिल्ली, किसी न किसी की नज़र उस पर तो पड़नी ही थी। या फिर, क्या उसे एक्टिंग का कोई काम मिल गया है? पर मैंने सुना है कि फिल्म इंडस्ट्री में बहुत कुछ चल नहीं पाता। अगर उसे कोई टीवी सीरियल मिल जाए तो कितना अच्छा होगा। वो औरतें तो बहुत मशहूर होती हैं। नवरात्रि में रिबन काटकर तो वो हज़ारों रुपये कमा लेती हैं।

मैं दिव्या दीदी का और अपना पसंदीदा खेल खेल रही थी—उस दिन का सपना देख रही थी जब हमारे पास पैसे होंगे—तभी पापा आए और मेरे बगल में बैठ गए।

'मोदी ही जीतने वाले हैं, है ना?' उसने कल के अखबार के पन्ने पलटते हुए बातचीत शुरू करने की कोशिश करते हुए कहा।

पिछले कुछ दिनों की तरह, वह घबराया हुआ और तनावग्रस्त लग रहा था। हमारा भविष्य अधर में लटका है। पता नहीं मेघनाद और दादाजी के बीच क्या चल रहा है। इससे हमारे भविष्य की दिशा बदल जाएगी।

'पापा? घर में कुछ बदलाव होने वाले हैं, है ना?' मैंने पूछा। उन्होंने सिर हिलाया।

आगे क्या होने वाला है?

'बेटा, तुम्हारे दादाजी को पर्याप्त मरीज़ नहीं मिल रहे थे, और हमारे चारों ओर क्लीनिक खुलते जा रहे थे, इसलिए तुम्हारी बुआ इस शादी पर निर्भर थीं। अब सब कुछ व्यर्थ हो गया है। उन्हें कुछ नहीं मिला। कुछ भी नहीं,' पापा ने सिर हिलाते हुए कहा। 'शादी में उन्हें कुल मिलाकर नुकसान हुआ। अब मनीष को दुकान के ज़रिए सब कुछ संभालना होगा।'

‘आपको नहीं लगता कि ऐसा होगा, है ना?’

पापा ने सिर हिलाया। 'जैसा कि मैं हमेशा कहता हूं, मेरा भाई सुपरस्टार है, दुकानदार नहीं।'

पापा हमेशा मुझे हंसाते हैं। वो भी मेरे साथ हंसे।

काफी देर चुप रहने के बाद उन्होंने कहा, 'बेटा। मैं तुम्हें ये बताना चाहता था कि अगर कुछ हो जाए तो तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए। दिल्ली चले जाना, अपनी बहन के साथ रहना।'

‘अगर कुछ हो जाए तो क्या होगा?’ ‘अगर हमारे
पास रहने के लिए घर न हो,’ उसने कहा। ‘तुम्हें
लगता है कि वे घर बेच देंगे?’ ‘मुझे पक्का पता
है, बेटा,’ उसने कहा।

'आपको कैसे मालूम?'

'कल से पेंटिंग का काम शुरू होने वाला है। आज पेंटर नाप लेने आए थे। और आपको पता ही है कि आपके दादाजी के पास इसके लिए पैसे नहीं हैं।'
मेघनाद इसका खर्च उठा रही है। अगर बिक्री से हमें थोड़ा पैसा मिले, तो तुम्हें वह पैसा लेकर अपनी बहन के पास चले जाना चाहिए और वहां अपना जीवन शुरू कर देना चाहिए।'

'आप कहाँ जाएँगे?'

पापा हिचकिचा रहे थे, लेकिन जब मैंने ज़िद की तो उन्होंने कहा, 'तुम्हारी मम्मी के यहाँ दोस्त हैं।'पर्याप्तवह इकबाल से बात करेगी और देखेगी कि क्या हमें वहां कोई कमरा मिल सकता है।

मेरी आँखों में गुस्से के आँसू आ गए। ‘तुम झुग्गी बस्ती में नहीं जाओगे!’ इकबाल जिन अमानवीय परिस्थितियों में रहता है, उनकी तस्वीरें मेरी आँखों के सामने कौंध गईं। ‘मैं तुम्हारे और माँ के बिना कहीं नहीं जाऊँगा!’

हमने एक अच्छा जीवन जिया है। हम यहां ठीक रहेंगे। आपका पूरा जीवन आपके सामने है। आप बस यहीं नहीं रह सकते।*Hamara kya hai* (हमारे साथ क्या होता है, यह महत्वपूर्ण नहीं है), पापा ने कहा।

‘मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहती, पापा। और वैसे भी, चिंता की कोई बात नहीं है। दीदी ने आज सुबह फोन नहीं किया, और आप जानते हैं कि इसका क्या मतलब है।’

‘क्या उसे काम मिल गया है?’

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे बस यही एक कारण सूझा,' और पापा का चेहरा खिल उठा। 'पापा? अगर आपको किसी एक व्यक्ति की तरह बनने का मौका मिले, तो आप कौन बनना चाहेंगे?'

उसने आह भरी, कुछ देर रुका, सोचा और फिर धीरे से बोला, 'मिल्खा सिंह।'

उसने मेरी प्रतिक्रिया देखने के लिए इंतजार किया और फिर जोर से हंस पड़ा। यह एक ऐसा मजाक था जो वह अक्सर सुनाता था।

लेकिन अब उसे देखकर ऐसा नहीं लगता कि यह कोई मजाक था। हमें कभी पता ही नहीं चला कि वह क्या चाहता था, या क्या उसने कभी खुद के लिए कुछ चाहने की क्षमता महसूस की भी थी।

वापस लौटते समय, उन्होंने अपराधबोध से कहा, 'जब मैं बूढ़ा हो जाऊंगा, तो मुझे वो पुश-बटन वाली व्हीलचेयर चाहिए।'

12 दिसंबर 2002

इस घटना के लिए बुआजी ज़िम्मेदार थीं, लेकिन हम सबने इसे होने दिया। हम सब बराबर दोषी थे। क्या लोग यही नहीं कहते? जो तमाशा देख रहा था, उसे भी उतना ही दोषी होना चाहिए? सुमित्रा को आज सुबह सेप्टिक टैंक साफ़ करने के लिए कहा गया था और हम सबने इसे होने दिया।

'तुम उसे ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकतीं। वो तो बस एक बच्ची है!' माँ ने विरोध किया। 'अगर वो किसी दूसरे आदमी के साथ भाग सकती है और बेशर्मी से झूठ बोल सकती है, तो वो ऐसा कर भी सकती है।'

'सेप्टिक टैंक साफ करो!' बुआजी ने गुस्से में कहा।

'कम से कम मुझे उसकी मदद करने दो,' मां ने विनती की थी।

'हम आपके हाथों से खाते हैं। क्या यह काफी नहीं है कि आप वही करें जो आपको हमेशा से करना था और फिर हमारे खाने को छुएं?'

सुमित्रा को तीन महीने की पेशाब और मल साफ करना था। हर छह महीने में इसे साफ करने में तीन आदमियों को दो दिन लगते हैं। मनीष चाचा घर पर नहीं थे, वरना बुआजी ऐसा नहीं करतीं।

सुमित्रा का हालचाल जानने के लिए ऊपर जाने पर मुझे डांट पड़ी। उसे फर्श पर उल्टी करते हुए और सेप्टिक टैंक से निकाली गई मल से भरी बाल्टी में उल्टी करते देख मेरा दिल टूट गया। उसने जबरदस्ती मुस्कुराने की कोशिश की और ऐसा दिखाया जैसे कुछ हुआ ही नहीं। मम्मी ने पॉलीथीन से उसके लिए एक सुरक्षात्मक आवरण बनाया था, लेकिन उसका कोई फायदा नहीं हुआ।

दुर्गंध बेहद भयानक थी और पूरी गली में फैल गई थी। दो पड़ोसियों ने शिकायत की, कुछ ने सुमित्रा के स्वास्थ्य को लेकर चिंता व्यक्त की और कुछ अन्य रात बिताने के लिए अपने रिश्तेदारों के घर चले गए।

यहां तक कि शेखावत अंकल ने भी चारदीवारी के उस पार से चिल्लाकर कहा, 'अरे, जमादारों को ही बुला लो। वे जल्दी कर देंगे। पूरे मोहल्ले को क्यों परेशान करना?' उनकी बात किसी ने नहीं सुनी।

हमारे घर में काम कर रहे मजदूर दहशत से यह सब देख रहे थे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। एक पेंटर ने मदद करने की इच्छा भी जताई, जिस पर करण भैया ने उसे तुरंत डांट दिया। करण भैया और

अंशुमन भैया को घर की मरम्मत और रंगाई के काम के लिए नियुक्त किया गया था और वे मजदूरों के साथ बेहद क्रूरता से पेश आए थे।

कल मम्मी ने अंशुमन भैया को डांटा था जब उसने एक मजदूर पर चप्पल लहराई थी। मम्मी ने कहा, 'तुम इसके पैसे नहीं दोगे! ये उस आदमी का पैसा है।'

'तो क्या हुआ? ये मेरा घर है!' माँ

ने आगे कोई बहस नहीं की।

बुआजी सुमित्रा के साथ वही कर रही थीं जो उन्होंने माँ के साथ किया था, उसकी गरिमा को ठेस पहुँचा रही थीं और उसका मनोबल तोड़ रही थीं। लेकिन हर कोई माँ जितना मजबूत नहीं था।

'वो औरत उस बेचारे बच्चे को मार डालेगी। क्या तुम जाकर उसे फिर से देख सकते हो?' माँ ने पूछा।

मैंने उससे कहा, 'करण भैया पहरा दे रहे हैं।'

सुमित्रा दो घंटे से यही काम कर रही थी कि मनीष चाचा बुआजी और फूफाजी को पीछे छोड़ते हुए दरवाजे से अंदर घुस आए, करण भैया को रास्ते से हटाते हुए सुमित्रा के हाथ से गंदगी से भरी बाल्टी छीन ली। सुमित्रा में अपने पति से कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी और वह उनकी बाहों में गिर पड़ी।

'वह ऐसा नहीं करने वाली!' मनीष चाचा ने कहा और उसे उठाकर बाथरूम में ले गए, उनके कपड़े अब गंदे हो चुके थे।

काम पूरा करने के लिए जमादारों को बुलाया गया, जबकि मनीष चाचा ने थकी हुई सुमित्रा को नहलाया और कपड़े पहनाए। मम्मी को मजदूरों की मदद करने के लिए कहा गया।

'वे वैसे भी तुम्हारे भाई हैं,' बुआजी ने बड़बड़ाते हुए कहा।

बुआजी मनीष चाचा के कमरे के बाहर बैठी थीं और बोलीं, 'देखो ये कैसा बर्ताव कर रहा है। अभी दो दिन भी नहीं हुए और ये उस झूठी, शातिर औरत के वश में आ गया है! क्या उसे पता नहीं कि उस औरत ने हमारे साथ क्या किया था?'

अंशुमन भैया ने कहा, 'हम मनीष चाचा से उसे तलाक देने के लिए क्यों नहीं कह सकते?'

बुआज ने कहा, 'उसे उस सेप्टिक टैंक में ही मर जाना चाहिए था।'

क्या यह सुविधाजनक नहीं होगा? क्या घर में अवांछित महिलाओं से छुटकारा पाने के लिए यही उसका पसंदीदा तरीका है? क्या वह माँ के लिए भी यही चाहती थी?

शाम को मनीष चाचा ने सुमित्रा के लिए चाय और बिस्कुट मांगे। रघु ने मुझे जो थर्मस दिया था, उसमें थोड़ी चाय बची हुई थी। उन्होंने मुझे अंदर आने दिया।

बुआजी गुस्से से लाल-पील कर देखती
रहीं। मैंने पूछा, 'सुमित्रा कैसी है?'
‘उसे हल्का बुखार है। पिताजी ने उससे मिलने से इनकार कर दिया,’ मनीष चाचा ने जवाब दिया।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

17 दिसंबर 2002

पिछले एक हफ्ते से, मम्मी और मैं बारी-बारी से उनके पास बैठकर उनके माथे पर स्पंज से पसीना पोंछकर बुखार कम करने की कोशिश कर रहे थे। मनीष चाचा रसोई में हमारी मदद करते थे, जिससे बुआजी बहुत नाराज़ होती थीं। बुआजी चाहती थीं कि घर में तीन तंदुरुस्त महिलाओं के होते हुए भी, उन्हें अपने भाई को खाना बनाते देखने से पहले ही मर जाना चाहिए था।

ताने सुनने के बावजूद, मनीष चाचा ने सुमित्रा के अच्छे खान-पान का पूरा ख्याल रखा। उन्होंने सुमित्रा को समय पर दवाइयां खिलाईं, उसे शौचालय तक ले गए, नहलाया, कपड़े पहनाए और सोते समय उसके लिए धीरे से रोए।

पहली बार मनीष चाचा किसी काम में नाकाम नहीं हुए थे। अगर मुझे पता न होता कि मनीष चाचा समलैंगिक हैं, तो मैं उन्हें प्यार में डूबे जोड़े की तरह देखती। हाँ, सुमित्रा की भविष्यवाणी के मुताबिक, उन्हें सुमित्रा में प्यार मिल ही गया था।

“क्या मैंने नहीं कहा था कि शादी से वो ठीक हो जाएगा?” मम्मी ने कल रोते हुए कहा। मैंने उन्हें टोकने की ज़हमत नहीं उठाई। खुशी एक दुर्लभ चीज़ है और अगर कुछ छोटे-मोटे झूठ इसे बनाए रखने में मदद कर सकते हैं, तो क्यों नहीं! सच, ईमानदारी और बाकी सब बातों को भाड़ में जाने दो।

एक और सच्चाई है जिस पर मैं विश्वास करना चाहूंगी, और पापा भी मेरा समर्थन करते हैं। (हालांकि मम्मी को इस बात का पूरा यकीन नहीं है)। गोलियों, सिरप और इंजेक्शन के साथ-साथ सुमित्रा के ठीक होने में एक और चीज़ ने मदद की - रघु की चाय। पिछले पांच दिनों से हर सुबह, गरमागरम चाय से भरे दो थर्मस तौलियों में लपेटकर छत पर रखे रहते थे, ताकि कोई उन्हें ले जाए। इससे हम सबका दिन निकल जाता था।

इस पूरे समय में मेरी उससे मुलाकात नहीं हुई थी; वह कभी-कभी आकर पानी की बोतलें रख देता और फिर उठा लेता था। जब सुमित्रा को तेज़ बुखार होता था, तो वह सिर्फ चाय और बिस्कुट मांगती थी, और कुछ नहीं।

सुमित्रा ने आज मुझसे कहा, 'अपने बॉयफ्रेंड को मेरी तरफ से
धन्यवाद कहना।' 'क्या? नहीं! तुम ऐसा क्यों कह रही हो?'

‘तुम उसके साथ काफी समय बिताते हो, है ना? मनीष ने मुझे बताया कि उसने तुम्हें किसी और के साथ इस तरह कभी नहीं देखा।’

‘नहीं, ऐसा कुछ नहीं है,’ मैंने कहा।

‘मुझसे चालाकी मत करो! मैं तुम्हारी चाची हूँ, मुझसे सीधे-सीधे बात करो,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा।

नहीं, चाची, मुझे उससे प्यार नहीं है।

'वह एक अच्छा लड़का लगता है। आपको उसके प्रति अपनी भावनाओं पर विचार करना चाहिए।'

क्या हम विषय बदल सकते हैं? ये रहा एक विकल्प। मनीष चाचा।

क्या हम उनके बारे में बात कर सकते हैं?

‘उसके बारे में क्या?’ उसने पूछा।

‘मम्मा को लगता है कि तुमने उसका समलैंगिकता का विकार
ठीक कर दिया है।’ वह हंस पड़ी।

‘वह वाकई बहुत अच्छे इंसान हैं, है ना?’ उसने पूछा।

‘मुझे वैद्य परिवार के पुरुषों से ऐसी उम्मीद नहीं थी, पापा अपवाद थे। मम्मी और मैं दोनों यह देखकर हैरान रह गए कि वह तुम्हारे लिए इस तरह भाग-दौड़ कर रहे थे।’

मुझे पता है। उसने मुझे भी चौंका दिया। मुझे लगता है... मुझे नहीं पता इसे कैसे कहूँ। ...कि हम प्यार की जगह दोस्ती में पड़ गए हैं। सुनने में थोड़ा अटपटा लग सकता है, लेकिन यही सच है। हमने बस उस हिस्से को छोड़ दिया जहां जोड़ों के बीच यौन संबंध होते हैं और सीधे अच्छे दोस्त बन गए।

मैंने कभी ऐसा नहीं किया है, इसलिए उबाऊ या दिलचस्प यौन जीवन के बारे में बात करना मुझे हमेशा असमंजस में डाल देता है।

मैंने पूछा, 'अगर तुम्हें कोई दूसरा आदमी आकर्षक लगे तो? कोई ऐसा जो तुमसे प्यार कर सके? कोई ऐसा जो तुम्हारे सबसे अच्छे दोस्त से बढ़कर हो?'

सुमित्रा खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'शायद उसे तुम्हारे चाचा जितना अच्छा बनना पड़ेगा, तब हम बात करेंगे।'

'यह लगभग सही लगता है।'

‘तो ये रघु नाम का लड़का? क्या वो तुम्हारा
सबसे अच्छा दोस्त है?’ ‘मैं उससे पूछकर तुम्हें
बता दूंगी।’

‘मैं इंतजार करूंगी,’ उसने कहा। फिर उसने हिचकिचाते हुए पूछा, ‘अद्वैता... दिल्ली में दिव्या कैसी है?’

‘उम्म... वो मुझसे झूठ बोल रही है,’ मैंने
कहा। ‘तुम ऐसा क्यों कह रही हो?’

कुछ तो गड़बड़ है, पर वो मुझे बता नहीं रही। कई दिनों तक उसका फोन नहीं उठा और आज उसने कहा कि कुछ नहीं हुआ। भला कुछ नहीं कैसे हो सकता? इसका मतलब यही है कि या तो उसे कुछ पता चल गया है और वो इसके बारे में बात करके सब कुछ खराब नहीं करना चाहती, या फिर जिस भी प्रोजेक्ट पर वो काम कर रही थी वो फेल हो गया है और वो नहीं चाहती कि हमें पता चले।

मुझे उम्मीद है कि वह सुरक्षित होगी।

मैंने कहा, 'आप आराम कीजिए और उसकी चिंता मत कीजिए। वह दिव्या दीदी हैं, वह हमेशा अपना ख्याल रखती हैं।'

18 दिसंबर 2002

मैंने रघु से वह सवाल पूछा जो मेरे मन में लंबे समय से चल रहा था। यही वह सवाल था। सबसे पहली बात जो मैंने उससे कही; मैंने उसे चाय के लिए या वहाँ मौजूद रहने के लिए धन्यवाद देने की जहमत भी नहीं उठाई। एक मूर्ख की तरह मैंने उससे बस इतना पूछा, 'क्या तुम मेरे सबसे अच्छे दोस्त हो?'

वह कुछ देर तक अजीब नजरों से मेरी तरफ देखता रहा, यह सोचता रहा कि क्या कहे।

मैंने समझाने की कोशिश की, 'मैं इसलिए पूछ रही हूँ क्योंकि आप दोनों में बहुत सी ऐसी बातें दिखती हैं जो सबसे अच्छे दोस्त करते हैं,' मैंने कहा। 'आप मुझसे दूसरों से ज़्यादा प्यार से पेश आती हैं। आप मुझसे वो बातें शेयर करती हैं जो आप किसी और से नहीं करतीं। आपके छात्रों के अलावा मैं ही अकेली हूँ जो यहाँ आई हूँ, तो ज़ाहिर है—'

'अद्वैत—'

इससे पहले कि आप कुछ कहें, मुझे यह कहना होगा कि मैंने अपने घर से यह सोचते हुए शुरुआत की थी कि आप मेरे सबसे अच्छे दोस्त हैं या नहीं, और बेशक आप हैं क्योंकि आप मेरे इकलौते दोस्त हैं, लेकिन पूरी संभावना है कि अगर मेरे कुछ और दोस्त भी होते तो भी आप मेरे सबसे अच्छे दोस्त होते। इसलिए अगर मैं आपका सबसे अच्छा दोस्त नहीं हूँ, तो मुझे बहुत निराशा होगी।

'तुम हो।'

'नहीं, ऐसा नहीं है। ऐसा नहीं है कि मैं तुम्हारा इकलौता दोस्त हूँ और इसलिए ऐसा है।' 'वैसे भी,' उसने कहा।

'क्या आपको यकीन है कि आप यह सब मनगढ़ंत नहीं कह रहे हैं?' 'नहीं, मैं नहीं कह रहा हूँ।'

'आप ऐसा इसलिए तो नहीं कह रहे हैं क्योंकि मैं आपसे बार-बार यही सवाल पूछता रहूंगा?'

'नहीं।'

'क्या आपको पूरा यकीन है?'

'हाँ।'

'तो फिर तुम मुस्कुरा क्यों नहीं रहे हो?'

'मुझे लगा कि यह आपके लिए एक गंभीर मामला है,' उसने स्पष्ट रूप से चिढ़ते हुए कहा। 'यह है, लेकिन एक सुखद, गंभीर मामला है।'

‘जानते हो मैं तुम्हारे लिए चाय क्यों बनाती हूँ? ताकि तुम उसे पी लो और चुप हो जाओ।’ तो मेरा एक सबसे अच्छा दोस्त है और उसका नाम रघु गांगुली है। वाह!

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

19 दिसंबर 2002

आज दिव्या दी काफी उत्साहित थीं। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें जल्द ही बहुत सारा पैसा मिलने वाला है।

‘बस एक साल इंतजार करो! और फिर देखो मैं क्या करती हूं,’ उसने कहा।

जब मैंने उससे इस बारे में विस्तार से पूछा, तो उसने विषय को टाल दिया और मुझसे रघु के बारे में पूछने लगी।

‘क्या तुमने उसे चूमा है?’ उसने खुशी से पूछा।

‘क्या तुम अपने सभी सबसे अच्छे दोस्तों को
चूमती हो?’

‘मैं तुम्हें हर समय चूमती हूँ, तो हाँ। और हाँ, मुझे वो बेवकूफी भरी बात मत कहो। तुम दोनों... साथ हो ना?’ उसने कहा।

‘ऐसा क्यों है कि हर कोई मुझसे एक ही सवाल पूछता है? पहले मम्मी से, फिर सुमित्रा से और अब तुमसे!’

'ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम्हारा कभी कोई बॉयफ्रेंड नहीं रहा! तुम हम सभी से इतनी चिपकी रहती थी कि तुम्हारा कोई बॉयफ्रेंड हो ही नहीं सकता था। इसलिए यह हमारे लिए कुछ हद तक अन्यायपूर्ण है कि तुम हमें छोड़कर एक दोस्त के साथ चली गई, बॉयफ्रेंड के साथ नहीं।'

‘जो मन करे, महसूस करो, लेकिन वो सिर्फ एक दोस्त है, बस इतना ही।’

‘क्या तुम्हें वो आकर्षक नहीं लगता? क्या तुम्हें उसे चूमने का मन नहीं करता?’

कुछ भी? तुम इसके लिए काफी बड़ी हो गई हो, तुम्हें पता है ना?’ ‘क्या तुमने
मुझसे प्यार न करने के लिए नहीं कहा था? रघु से दूर रहने के लिए?’

‘शायद मैंने अपना मन बदल लिया।’

‘मैंने नहीं किया। मैं उससे प्यार
नहीं करती।’ ‘तुम्हें इतना
यकीन कैसे है?’

'मैं अभी कर रहा हूँ।'

‘जिसने कभी ऐसा महसूस नहीं किया, उसके लिए तुम इतनी आश्वस्त हो,’ डि ने कहा। ‘तो मुझे बताओ। तुम्हें कैसे पता चलेगा कि तुम सचमुच किसी लड़के से प्यार करती हो?’

जब मैं उसके लिए तुम्हें छोड़ने को तैयार हो जाऊंगी। सिर्फ तुम्हें ही नहीं, बल्कि मम्मी और पापा को, सबको, और चाहे कुछ भी हो जाए, उसके साथ रहूंगी। क्या

मम्मी और पापा ने भी यही नहीं किया था? या तुमने विभोर के साथ यही किया था? तुमने उस व्यक्ति के साथ रहना चुना था।

परिणामों की परवाह किए बिना, है ना? आप जानते हैं कि अगर विभोर गुप्ता और आपके बारे में किसी को पता चल जाता तो क्या होता। आपको हम सबको छोड़कर उसके पास जाना पड़ता, और आप इसके लिए तैयार भी थीं। मैं उसके लिए ऐसा करने को तैयार नहीं हूँ, बिलकुल भी नहीं।

उन्होंने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि इसकी कभी परीक्षा नहीं होगी। मुझे खुशी है कि आपके साथ कोई है। लेकिन रघु का क्या?'

'उसकी क्या खबर है?'

'अगर वो तुमसे प्यार कर बैठे तो क्या होगा? तुम चाहे जितनी भी चिड़चिड़ी क्यों न हो, कोई भी आसानी से तुमसे प्यार कर सकता है। तुम्हारे मासूम चेहरे और प्यारे गालों की वजह से लोगों के पास कोई विकल्प ही नहीं बचता,' उसने कहा।

'शायद तुम सही कह रही हो,' मैंने हंसते हुए कहा। 'लेकिन नहीं, वो मुझसे प्यार नहीं करेगा। वो... वो अभी भी अतीत में जो कुछ भी हुआ था, उससे बहुत दुखी है। उसके लिए मुझसे या किसी और से प्यार करना नामुमकिन है।'

'मुझे उम्मीद है कि यह सच है। मेरा मतलब है, आप दोनों अपने रिश्ते को जिस भी रूप में बनाए रखने का फैसला करें, उससे खुश रहें।'

'अरे! क्या आपको पता है कि अल्ताफ रघु को मेरे बारे में कहानियां सुनाया करता था? रघु ने मुझे बताया कि अल्ताफ मुझे अपनी छोटी बहन मानता था। ये तो बहुत प्यारा है, है ना?'

उसने कहा, 'जैसा कि मैंने कहा, तुमसे प्यार न करना मुश्किल है।'

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

25 दिसंबर 2002

क्रिसमस। अमीर बच्चों का त्योहार।

हम हर साल स्कूल में इसे मनाते थे, पेड़ सजाते थे, चमकीले कागज़ और रुई से सांता क्लॉज़ बनाते थे, क्लास को लाल और सफेद रंग से सजाते थे, और न जाने क्या-क्या करते थे। अमीर बच्चे तो एक कदम और आगे बढ़कर इसे घर पर मनाते थे, तोहफे बांटते थे और इसे खूब धूमधाम से मनाते थे। ज़रा सोचिए, अगर उनके माता-पिता के पास इतना पैसा होता, तो वे मेरे घर के बाहर एक लिफाफे में रखकर मेरे सांता बन सकते थे! लेकिन क्योंकि यह एक जायज़ त्योहार था, मैं अपने नए बने सबसे अच्छे दोस्त रघु के घर गया क्योंकि मुझे लगा कि यही एक अच्छे दोस्त का फर्ज है। जब मैं वहाँ पहुँचा तो वह फर्श पर पोछा लगा रहा था।

“व्यस्त हूँ,” उसने कहा, उसके मुँह पर रुमाल बंधा होने के कारण उसकी आवाज़ दबी हुई थी। फिर उसने कमरे के बीच में एक स्टूल रखा और पंखा साफ़ करने लगा। उसने मुझसे एक मग में पानी भरकर उसमें डिटर्जेंट डालने को कहा। अगले आधे घंटे तक हम पंखे, खिड़कियाँ, चूल्हा और पर्दे साफ़ करते रहे, जिससे मेरी सारी ऊर्जा खत्म हो गई।

मैंने कहा, 'यह दिवाली नहीं है, तुम्हें पता है।'

‘अगर आपने मुझे नहीं बताया होता तो मुझे पता ही नहीं चलता।’

मैंने कहा, 'आज किसी का मूड खराब है। मैं तो बस यह देखने आया था कि क्या तुम बोर हो रहे हो, और वह भी त्योहार के दौरान।'

‘अहा। आपको भी क्रिसमस की बहुत-बहुत
शुभकामनाएं,’ उन्होंने कहा। ‘क्रिसमस अच्छा
है,’ मैंने कहा।

‘क्या वे घर नहीं बेच रहे हैं?’

‘इस बारे में कोई खबर नहीं है। मनीष चाचा और सुमित्रा को लगता है कि अगर ऐसा कुछ होने की संभावना होती तो उन्हें पता चल जाता। लेकिन कुछ कहा नहीं जा सकता। बुआजी और मनीष चाचा की आपस में बात नहीं हो रही है। लेकिन एक अच्छी खबर है! मुझे लगता है मेरी बहन जल्द ही पैसे कमाना शुरू कर देगी। लगता है आखिरकार वह कुछ तरक्की कर रही है।’

'शानदार।'

'तुम्हें मेरी बहन से मिलना चाहिए। तुम दोनों एक-दूसरे के लिए बिलकुल सही होते।'

उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हारी बहन से मिल चुका हूं।'

‘उम्म... ओह... हाँ, भूल जाओ मैंने ऐसा कहा था,’ मैंने कहा। ‘मैं बस...’ ‘क्या तुम मुझे कुछ बताना चाहती हो?’

‘मैं तुम्हें सिर्फ इसलिए बता रही हूँ क्योंकि तुम मेरी सबसे अच्छी दोस्त हो, वरना मैं ऐसा नहीं करती—’ ‘अद्वैत?’

'हाँ?'

क्या आप ऐसा करना बंद कर सकते हैं?सबसे अच्छा दोस्तव्यापार? अब तो यह थोड़ा गुस्सा दिलाने वाला हो गया है।

हमने यह बात स्थापित कर ली है और हमें इसे बार-बार दोहराने की जरूरत नहीं है, है ना?’ ‘लेकिन इसे कहना अच्छा लगता है।’

‘पिछले एक हफ्ते से मैं तुमसे ये बात लाखों बार सुन चुका हूँ। अब बस बहुत हो गया।’ ‘इसे कहने का और भी अच्छा तरीका हो सकता था, लेकिन ठीक है... तो क्या?’

मैं क्या कह रही थी? हाँ! तो बात ये है कि सुमित्रा और दिव्या दीदी दोनों ने मुझसे पूछा कि क्या तुम मेरे बॉयफ्रेंड हो और मैंने उन्हें बताया कि तुम नहीं हो। उन्होंने मेरी बात मान ली, लेकिन दीदी को चिंता थी कि कहीं तुम मुझसे प्यार न कर बैठो क्योंकि जाहिर तौर पर मैं प्यार करने लायक हूँ—'

‘अद्वैत, तुम मुझे बहुत परेशान कर रहे हो!’

‘क्या! मैंने तो ये कहा ही नहीं। मेरी बहन ने कहा।’

‘मुझे परवाह नहीं कि कौन क्या कह रहा है, ऐसा नहीं होने वाला। तुम मेरी हो और हमेशा मेरी रहोगी...’

‘मैं क्या बनूंगा? इसे पूरा करो!’

‘चुप रहो।’

‘इसे पूरा करो!’

‘नहीं।’

‘क्या तुम्हारा मतलब सर्वश्रेष्ठ से है...?’ ‘ऐसा मत कहो।’

'श्रेष्ठ।।।'

'नहीं।'

'श्रेष्ठ।।।'

‘कोई मुझे मार डालो।’ ‘सबसे अच्छा दोस्त!'

उफ़।

उसे छटपटाते देख मुझे हंसी आ
गई। 'तुम तो बिलकुल ही
असंभव हो।'
और तभी मेरी नज़र किताबों के ढेर के ठीक बगल में एक छोटे से केक के डिब्बे पर पड़ी। मैंने पूछा, 'यह क्या है?'
‘मैं तुम्हारे लिए केक ला सकता था,’ उसने
कहा। ‘सच में? ये तो बहुत ही बेकार बात है।’
'मुझे पता है।'
मैंने उसका एक टुकड़ा लेते हुए कहा, 'अगर आपको वाकई मुझ पर प्रभाव डालना था, तो आपको मेरे लिए भी एक बनाना चाहिए था।'
‘लेकिन फिर, मैं तुमसे प्यार नहीं करता, इसलिए तुम्हें बस इतना ही
मिलेगा।’ ‘तुम्हारे लिए कुछ और भी है,’ उसने कहा और एक छोटी सी
चीज़ ले आया।
आयताकार बॉक्स। 'ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम हर समय अपनी डायरी में लिखते रहते हो।'
उन्होंने मेरे लिए डिब्बा खोला। उसमें एक फाउंटेन पेन था, महंगा वाला, मेरे पास मौजूद प्लास्टिक के पेनों जैसा नहीं। मैंने उसे अपने हाथों में महसूस किया। वह भारी और ठोस लगा।
‘यह तो बहुत प्यारा है!’
‘आगे बढ़ो, इसे आजमाओ,’ उसने कहा। ‘मैंने इसमें स्याही भर दी है।’
मैंने उसका और अपना नाम लिखा। कलम कागज पर आसानी से चल रही थी। यह अद्भुत था। मेरा मन कर रहा था कि उससे पूछ लूँ कि यह कितना महंगा है।
‘अगर मुझे बचपन में किसी ने ये पेन दिया होता, तो मैं पढ़ाई में कहीं बेहतर होता!’
मैंने उसे गले लगाया। 'धन्यवाद! मैं आपको धन्यवाद कहना चाहता हूँ।'सबसे अच्छा दोस्तलेकिन मैं ऐसा नहीं करूंगा।'
‘मुझे खुशी है कि आपको यह पसंद आया,’ उसने
अप्रत्याशित रूप से शर्माते हुए कहा। ‘वैसे, मेरे पास आपके
लिए भी कुछ है।’
आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं थी।

‘क्या? तुम्हें लगा कि सिर्फ तुम ही इतने विचारशील हो सकते हो? लो, इसे खोलो। और कृपया मुझे बताओ कि तुम्हें मेरा उपहार उतना ही पसंद आया जितना मुझे तुम्हारा।’
‘क्या यह... एक डायरी है?’ उसने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।

‘जी हाँ! बिलकुल मेरे पास जैसा है वैसा ही!’ मैंने कहा। ‘आपको अंदाज़ा भी नहीं है कि यह कितना फायदेमंद है। खासकर आपके लिए तो यह चमत्कारिक साबित

होगा।'

'अद्वैत—'

और हाँ, अगर कभी आपका मन करे कि आप मुझे अपने अतीत की सारी बातें बता दें, तो आप मुझे डायरी दे दीजिए और मैं उसे पढ़ लूँगी। आपको तो कुछ भी नहीं कहना पड़ेगा।

आपको मुझे बताना होगा और मुझे पता चल जाएगा।'

‘क्या आप मुझे अपनी डायरी पढ़ने के लिए देंगी?’ उसने पूछा। ‘कोशिश करके पूछिए,’ मैंने कहा।

‘फिर भी, मैं इसे नहीं ले सकता,’ उसने मुझे वापस देते हुए कहा।

मैंने कहा, 'क्यों?' 'अगर तुम मेरी डायरी नहीं लोगे, तो मैं तुम्हारा पेन नहीं लूंगा।'

‘मैं एक किताब लिखा करता था,’ उसने अचानक गंभीर स्वर में कहा। ‘पूरे एक साल तक लिखता रहा। लेकिन... मैं... अब उसे दोबारा नहीं लिख सकता।’

'तुम रुक क्यों गए?'

उन्हें जवाब देने की ज़रूरत नहीं थी। 'ब्राह्मी?'

इसमें वो सभी कारण थे जिनकी मुझे जीने के लिए ज़रूरत थी, वो लोग थे जिनसे मैं बहुत प्यार करती थी, लेकिन जब

...' उसकी आवाज धीमी पड़ गई। 'उसके जाने के बाद मैं रुक गया।'

शायद आपको अन्य कारण मिल जाएं? और फिर आप लिख सकते हैं...

“ठीक है, मैं इसे ले लूँगा,” उसने कहा और उसे एक तरफ रख दिया। उसने जबरदस्ती मुस्कुराते हुए कहा, “धन्यवाद।” मुझे पता था कि यह कुछ समय तक धूल खाएगा और बुरे उपहारों की तरह भुला दिया जाएगा।

लेकिन इसके अर्थ से मुझे तसल्ली मिली। वह मुझसे प्यार नहीं करेगा, मैं कभी भी उसके लिए अपनी जिंदगी बदलने का पर्याप्त कारण नहीं बनूँगी, ठीक वैसे ही जैसे वह मेरे लिए नहीं बनेगा। मेरे कहने का तरीका थोड़ा दुखद है।

लेकिन रघु, तुम्हें मानना पड़ेगा कि आज हमने एक-दूसरे के लिए जो किया, वो कोई और नहीं कर सकता था और यही बात हमें खास बनाती है...

'नहीं।'

'सबसे अच्छा दोस्त!'

31 दिसंबर 2002

मैं इतना गुस्से में था कि किसी को मार भी सकता था। करण भैया और अंशुमन भैया बीच-बीच में मेरे कमरे में झाँकते रहते थे, मानो किसी किले के रक्षक हों, और मुझे घर में रखने की अपनी ज़िम्मेदारी को बखूबी निभाते हों।

'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था? जरूरत पड़ने पर हम तुम्हें बेच देंगे,' अंशुमन भैया ने कहा।

और इसके लिए हमें दोष मत दो। अगर तुम्हारी बड़ी बहन वैसी न होती जैसी वह थी, तो उसकी जान खतरे में होती।

'तुम दोनों क्या बकवास कर रहे हो?' बुआजी ने उन्हें डांटते हुए कहा। 'और तुम, अद्वैत, तैयार हो जाओ और मेकअप कर लो। सुमित्रा भी अपना मेकअप तुम्हारे साथ शेयर करेगी।'

आज शाम एक लड़का मुझसे मिलने आ रहा था।

जब मैं कमरे से बाहर निकलकर हताशा में रोने लगी, तो दादाजी चिल्लाए, 'अपने कमरे में वापस जाओ, इससे पहले कि मैं यहां से उठ जाऊं!'

'कम से कम मुझे यह तो बता दो कि वह लड़का कौन है—'

दादाजी उठे और अपनी छड़ी हवा में उठा ली। इससे पहले कि बात और बढ़ जाए, पापा मुझे खींचकर हमारे कमरे में ले गए।

'पापा, ऐसा क्यों हो रहा है?' मैंने पूछा।

'मुझे नहीं पता, बेटा,' उसने हताश स्वर में कहा।

मम्मी असहाय होकर मुझे कपड़े चुनती रहीं। मैंने विरोध करते हुए कहा, 'अगर कुछ करना ही है तो दीदी की शादी पहले ही करवा देनी चाहिए! मेरी ही क्यों!'

'मैं यह सब नहीं करने वाला, तुम जानते हो। मैं भाग जाऊंगा।'

मम्मी और पापा ने मुझे घूरकर सख्ती से समझाया कि मुझे अपनी आवाज़ धीमी रखनी है, और मैंने वैसा ही किया। उन्होंने मुझसे सीधे तौर पर भागने से मना नहीं किया, जिसका मतलब था कि भागने की संभावना अभी भी बनी हुई थी।

पापा ने मेरे कानों में फुसफुसाते हुए कहा, 'बस आज का दिन किसी तरह गुजार लो। बाद में फैसला कर लेना।'

लेकिन मैं जितना शांत होता गया, उतना ही मुझे इसके परिणाम समझ में आने लगे। अगर मैं इस शादी और इस घर से भाग जाऊं, तो बुआजी चुपचाप नहीं बैठेंगी और

मम्मी-पापा का सहारा नहीं बनता। वे उन्हें घर से निकाल देंगे। उन्हें कहीं और जाकर रहना पड़ेगा।पर्याप्तया फिर वे उन्हें ऐसा करने से रोकेंगे? क्या वे दिव्या दी और मेरे गुनाहों की कीमत चुकाएंगे?

बुआजी ने मुझसे कहा कि मैं सबसे अच्छी दिखूं और अच्छा व्यवहार करूं। 'लड़की की तरह बर्ताव करो और उन्हें यह मत बताना कि तुम हर दिन कॉलेज जाती हो।'

'अगर वे मुझसे पूछें कि क्या मैं प्यार में हूँ तो क्या होगा—'

बुआजी आगे बढ़ीं और लगभग अपना हाथ उठा ही लिया था।

'देखो, अद्वैता, आज मुझे गुस्सा मत दिलाओ। तुम दोनों खुद को बहुत होशियार समझती हो, पर ऐसा नहीं है। तुम दोनों बेवकूफ हो। इतने सालों से हमने मेरे भाई और तुम्हारी माँ का सहारा दिया है। मुझे पता है कि तुम मुझे और अपने दादाजी को खलनायक समझती हो। लेकिन बस इतना जान लो कि हम तुम्हारा परिवार हैं और तुमसे प्यार करते हैं। हम जो कुछ भी करते हैं, वह तुम्हारी खुशी के लिए करते हैं—'

'बुआजी, क्या आप इसे खुशी कहती हैं?'

'यह और क्या है? औरतें और क्या उम्मीद कर सकती हैं? क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारी माँ की मेरे भाई से शादी के बाद यह तुम्हारे लिए काफी नहीं है? क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हारी माँ अपनी जाति, अपने लोगों में शादी करके ज़्यादा खुश होती? मेरे भाई को भी हमारे समाज में उतना ही सम्मान मिलता और वह चमार से शादी करने वाला लंगड़ा नहीं होता। यही होता है जब औरतें और ज़्यादा चाहती हैं। अपनी दीदी को देखो, सुमित्रा को देखो। हम सिर्फ़ कहने के लिए नहीं बोलते। हम इसलिए बोलते हैं क्योंकि हमारे पास ज्ञान है,' उन्होंने कहा और प्यार से अपनी उंगलियाँ मेरे चेहरे पर फेर दीं।

ऐसा नहीं है कि मैं तुमसे प्यार नहीं करती। तुम मेरे भाई की बेटी हो, लेकिन काश तुम्हारी परवरिश अलग तरह से हुई होती। काश तुम्हें अपनी हद में रहना सिखाया गया होता। इस लड़के से शादी कर लो। यही तुम्हारे लिए सबसे अच्छा होगा। और मैं वादा करती हूँ, मैं अपने भाई और तुम्हारी माँ का ख्याल रखूँगी। ये मेरा तुम्हें वचन है। उनका जीवन सुखमय होगा। अगर तुम्हारी बहन वापस आकर हमसे माफी मांगती है, तो हम उसका भी ख्याल रखेंगे। हमें पता है कि तुम उससे बात करती हो। वो वहाँ क्या कर रही है, हाँ?

उस शहर में उसके जैसी लड़कियां बहुत हैं। उसे वापस बुलाओ और उससे माफी मांगने को कहो, इससे पहले कि उसे भीख मांगने या वेश्यावृत्ति करने की नौबत आए।

जाने से पहले उसने मेरा हाथ पकड़कर कहा, 'तुम्हारे पापा ने इस परिवार को जिस तरह बर्बाद किया, उस पर अब हमें कोई गुस्सा नहीं है। हमने उन्हें माफ कर दिया है। मैं वादा करती हूँ, बेटा, सब ठीक कर दूंगी। हम नहीं चाहते किपोपअद्वैत, जिस दिन तुम्हारी शादी होगी, दादाजी एक शपथपत्र पर हस्ताक्षर करेंगे जिसमें इस राशि का एक चौथाई हिस्सा दिया जाएगा।

मैं अपना घर अपने भाई को दे रहा हूँ। मैं खुद अपने भाई और आपकी माँ के संयुक्त खाते में पैसे जमा करूँगा, जिससे कुछ वर्षों तक उनका गुजारा हो जाएगा। कम से कम। हम सब तुम्हारे बारे में

सोच रहे हैं।' जाने से पहले उसने

मुझे गले लगाया।

सुमित्रा जब मेरे चारों ओर साड़ी लपेट रही थी, तब बुआजी के शब्द बार-बार मेरे दिमाग में गूंज रहे थे, और इससे धीरे-धीरे मेरा हौसला टूट रहा था। वे मम्मी और पापा का ख्याल रखेंगे... शायद यह खोखला वादा नहीं था; घर का एक चौथाई हिस्सा पापा के नाम करने का हलफनामा और कुछ पैसे एक संयुक्त खाते में जमा करना।

जिस व्यक्ति से मेरी शादी होने वाली थी, वह एक घंटे देर से आया, और वह मेघनाद मोहयाल थे।

उन्होंने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा, मुस्कुराए और फिर ऐसे अपना परिचय दिया जैसे हम एक-दूसरे को जानते ही न हों। वे अपने माता-पिता, बड़े भाई और भाभी के साथ आए थे। वे कुर्सी पर पीछे की ओर झुककर, पैर फैलाकर बैठे थे और मुझे घूर रहे थे, जबकि उनके माता-पिता मेरे दोनों भाइयों की मेहनत और लगन के बारे में बता रहे थे और यह भी कि वे देहरादून और दिल्ली में भी अपना कारोबार फैला रहे हैं। मम्मी और पापा मुस्कुराते हुए सब कुछ सुन रहे थे और मेरी तरह ही अपनी भावनाओं को छिपाने की पूरी कोशिश कर रहे थे।
मेघनाद की मां मेरे पास आईं, मेरा चेहरा गौर से देखा और फिर मुझ पर से बुराई की छाया को हटा दिया।

'वह बहुत खूबसूरत है,' उसने मम्मी और बुआजी से कहा।

उनके पिता ने कहा, '*Dekhiye ji*सुनो, हमें लगता है कि जो अतीत में हुआ वो अतीत में ही रहना चाहिए, है ना?' चौड़ी मुस्कान के साथ उसने मेघनाद की ओर देखा और कहा, 'तुम इतनी चुप क्यों हो? क्या तुम इससे खुश नहीं हो?'
गठबंधन? हमारा मेघनाद तो शर्मीला लड़का है।

मेघनाद, वह कमीना, उठ बैठा और एक घबराए हुए स्कूली बच्चे की तरह मुस्कुराया। उसने कहा, 'अगर उसे कोई आपत्ति नहीं है, तो मुझे भी कोई आपत्ति नहीं है। क्या मैं

उससे अकेले में बात कर सकती हूँ?' बुआजी ने किसी और के कुछ कहने से पहले

ही जवाब दिया, 'बिल्कुल!'

मेघनाद आंगन के एक कोने में चला गया जहाँ हमारा बाथरूम था। मैं उसके पीछे-पीछे गया।

उन्होंने शेखावत परिवार के साथ हमारी साझा दीवार की ओर इशारा करते हुए कहा, 'यहीं पर वो चाचा रहते हैं, है ना? वही आदमी जो तुम और तुम्हारी बहन को बुरी नजर से देखता था। है ना?'

'कैसे करें-'

‘मैं बाद में देखूंगा कि उसके बारे में क्या करना है। मैं आपके लिए यह कर दूंगा।’ वह मुस्कुराया। ‘यहाँ जो काम चल रहा है, वह आपको कैसा लग रहा है? अच्छा है? मैंने मजदूरों को निर्देश भी दिए हैं कि वे छत पर एक और बाथरूम बनाएं। बढ़िया टाइलें, बड़ा दर्पण, नल में गर्म पानी, सब कुछ।’

'आपको ऐसा क्यों करना होगा?'

मैं अपनी पत्नी के परिवार की देखभाल करना चाहता हूं। मैं बस इसी तरह का आदमी हूं। बहुत बुरा हुआ कि तुम्हारी बहन ने इसे कभी नहीं देखा।

‘आप बुआजी को और क्या दे रहे हैं?’

मेघनाद हल्के से हंसने लगा। उसने कहा, 'एक और सवाल?' 'आप कुछ दे रहे हैं, है ना?'

‘मैंने इस घर की मरम्मत करवाकर इसे ऊँची कीमत पर खरीदने का प्रस्ताव दिया था। इस खस्ताहाल घर के लिए कोई इतनी कीमत नहीं देगा। लेकिन तुम्हें पता है, मेरे पिताजी बड़े उदार हैं। वो तुम्हारे दादाजी, बुआजी, तुम्हारे उन दो शरारती भाइयों और यहाँ तक कि तुम्हारी माँ-पापा को भी जब तक चाहें, बिना किराए के रहने देंगे। इसे शादी का तोहफा समझो। या नए साल का तोहफा।’ उनकी आँखों में पागलपन की चमक थी। ‘बस इतना जान लो कि मैं तुम्हारे परिवार का ख्याल रखूँगा। तुम्हारे पिताजी को अपनी पीठ की समस्या की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। मैंने सुना है कि उन्हें सर्जरी करवानी पड़ेगी,’ उन्होंने कहा और मेरे करीब आ गए। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और उसे अपने होठों के पास ले आए। ‘अद्वैता? मुझे हम दोनों साथ-साथ दिखते हैं। तुम्हें भी इसे ऐसे ही देखना शुरू कर देना चाहिए, जानू। हम एक-दूसरे के लिए बने हैं। क्या हम अंदर चलें? वे इंतज़ार कर रहे हैं... कि हम इस शादी के लिए राजी हो जाएँ।’

मैंने उसका पीछा किया।

घर के अंदर हम सब एक-दूसरे के बगल में बैठ गए। हमारी चुप्पी को सहमति मान लिया गया। सभी बड़े लोग उठकर एक-दूसरे को गले लगाने लगे। मेघनाद ने मेरे माता-पिता के पैर छुए।

मेघनाद की मां ने कहा, 'नए साल की कितनी शुभ शुरुआत है!' और उन्होंने मेरे हाथ को चूमा। फिर उन्होंने मेरी कलाई पर एक अलंकृत सोने का कंगन पहना दिया। मम्मी और पापा समेत मेरे परिवार के सभी सदस्यों ने मेरा हाथ रोशनी में उठाकर देखा और कंगन के भारीपन पर आश्चर्य जताया।

मेघनाद मेरी ओर झुककर बोला, 'जानू, तुम्हें थोड़ा वजन कम करना चाहिए। अपनी दीदी से पूछो कि वह अपना फिगर कैसे बनाए रखती हैं।'

मेघनाद के माता-पिता ने जाने से पहले बुआजी को एक मोटा लिफाफा सौंप दिया। हमें अंदर क्या था, यह देखने का मौका नहीं मिला।

मां मुझे खींचकर कमरे के अंदर ले गई, उसकी आंखों में आखिरकार आंसू आ गए, और उसने मुझसे पूछा, 'उसने क्या कहा? तुमने कुछ क्यों नहीं कहा?'

पापा अंदर आए और दरवाजा बंद कर दिया, 'तुम समय मांग सकती थी।'

मैं रो पड़ी।

और रोते हुए मैं सोचने लगी कि अगर मैं इसका कोई हल निकाल सकती हूँ तो क्या यह इतनी बुरी बात है? मैं धीरे-धीरे मेघनाद की नज़रों से गिर सकती हूँ, शायद उससे नज़दीकी कम कर सकती हूँ, नीरस और पहुँच से बाहर हो सकती हूँ, और उसके किसी और पर मोहित होने का इंतज़ार कर सकती हूँ, ताकि वह किसी और भोली-भाली, बेबस लड़की पर अपना मोह ललचाए।

आखिरकार वो मुझसे ऊब जाएगा और मुझे छोड़कर चला जाएगा, और मुझे मेरे माता-पिता के पास छोड़ देगा, अच्छा हुआ छुटकारा मिल गया। इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

मैं मेघनाद के साथ रह सकता हूँ।

ये आंसू बहाना बेकार है। यही तो मैं हमेशा से चाहती थी—पैसा पाना। यही तो मेरी ज़रूरत है। मेरे हाथ कांप रहे हैं। क्या यही मेरा भाग्य है?

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

2 जनवरी 2003

ठंड बहुत थी। पिछली दो रातें मैं कंबल ओढ़कर मम्मी को गले लगाकर सोई रही, फिर भी ठंड लग रही थी। आज सुबह खबर मिली कि उत्तर भारत शीत लहर की चपेट में है, जिससे कई लोगों की मौत हो चुकी है। आधी रात को कई बार ये ख्याल मेरे मन में आया। क्या होगा अगर... क्या होगा अगर अगली सुबह मैं मरी हुई पाई जाऊं, ठंड से कांपती हुई, मुरझाई हुई, मेरा दिल किशमिश जितना छोटा हो गया हो, और फिर मैंने मम्मी-पापा के बारे में सोचकर ये ख्याल अपने दिमाग से निकाल दिया हो।

रघु ने ध्यान से मेरी बात सुनी जब मैंने उसे बताया कि मैं मेघनाद से शादी कर लूंगी, अपने माता-पिता को उनकी ज़रूरत का पैसा दिला दूंगी और अंततः मेघनाद को मुझसे दूर कर दूंगी। तब तक दिव्या दी भी अपनी ज़िंदगी में कुछ अच्छा कर चुकी होंगी।

'उसे हां कहना कोई योजना नहीं है,' उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। 'यह तो आत्महत्या है।' 'ऐसा नहीं है—'

'क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?' रघु चिल्लाया। 'सुनो, रघु, यही एकमात्र तरीका है—'

'इस तरफ आओ। तुम्हें क्या लगता है, उसे तुमसे ऊबने में कितना समय लगेगा?'

मैंने कहा, 'मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं है।'

'अगर वो हिंसक हो तो? अगर वो तुम्हें मारे तो? क्या तुमने इस बारे में सोचा है?'

'रघु, शांत हो जाओ और समझदारी से सोचो। मैं अपने परिवार के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकती, ठीक है?' मैंने थोड़ा गुस्से में कहा। उसे इन सब बातों का क्या पता? वो जब तक चाहे अपनी बेकार की जिंदगी जी सकता है, अपने कर्मों के परिणामों की परवाह किए बिना। इसके बाद बात करने के लिए कुछ खास नहीं बचा। मैंने उससे कहा कि मुझे दीदी से बात करनी है और मैं वहां से चली गई।

मैंने मम्मी और पापा से कहा था कि वे दीदी को मेरी शादी के बारे में न बताएं। मैंने उनसे सिर्फ उनकी कमाई के बारे में पूछा था।

'क्यों-'

‘बस मुझे बता दो, क्या तुम बताओगी?’ मैंने उससे गुस्से में न भड़कने की पूरी कोशिश करते हुए पूछा। ‘लेकिन इसमें समय लगेगा। मैंने सुपर एलीट मॉडलिंग के साथ साइन अप कर लिया है।’

एजेंसी। चूंकि पोर्टफोलियो और बाकी सब चीज़ों का खर्च वही उठा रहे हैं, इसलिए पहले साल मुझे ज़्यादा कुछ नहीं मिलेगा। ज़्यादातर हिस्सा वे ही रखेंगे, लेकिन एक साल का अनुबंध खत्म होने के बाद मैं फ्रीलांस आधार पर जितना चाहूँ उतना काम कर सकती हूँ और वह सारा काम मेरा होगा। सभी बड़े मॉडल इसी एजेंसी से हैं। आप किसी का भी नाम लीजिए, वो यहीं से होगा। वे आपको सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए तैयार करते हैं,’ उसने कहा।

'अच्छा।'

'कुछ गड़बड़ है क्या?'

‘नहीं,’ मैंने कहा। ‘बस अंशुमन भैया से झगड़ा हो गया था। उन्होंने मुझसे कहा था कि तुम फेल हो जाओगे... और मैंने उनसे झगड़ा कर लिया।’

‘क्या आप वाकई ठीक हैं?’

‘हाँ,’ मैंने कहा। ‘मुझे जाना है।’ मैंने फोन काट दिया।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

5 जनवरी 2003

आज सुबह मुझे अपनी इस बुरी हालत में उम्मीद की एक किरण दिखी। हालात उतने बुरे नहीं थे जितने दिख रहे थे। मैं जानना चाहती थी कि शादी कब होगी। और आज करण भैया के मुंह से पता चला कि घर में काम चल रहा है इसलिए शादी नवंबर से पहले नहीं होगी।
मरम्मत करवा ली है। लगता है मेघनाद का परिवार हमारे घर से शर्मिंदा है।

अंशुमन भैया ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा, 'लगता है तुम शादी को लेकर बहुत उत्साहित हो!' फिर उन्होंने आगे कहा, 'वैसे, अगर मैं लड़की होती तो मैं भी होती। क्या तुमने उसकी गाड़ियाँ देखी हैं? उसके पास दो पजेरो हैं, दो! उसके पिता मर्सिडीज़ चलाते हैं। तुम तो बहुत भाग्यशाली हो, तुम्हें इसका अंदाज़ा भी नहीं है।'
मैंने कहा, 'काश तुम तब लड़की होतीं।'

'उन्होंने हमें घड़ियाँ भी दीं,' उन्होंने कहा और अपनी कलाई मेरी तरफ दिखाते हुए बोला। 'जल्दी करो। अंशुमन भैया ने शोरूम में कीमत पता की थी। हर एक की कीमत तीन हजार रुपये!'
मैंने कहा, 'तुम्हें इन्हें बेचकर कुछ बेहतर खरीद लेना चाहिए,' और मैंने उस ओर इशारा किया। देखो। 'लेकिन क्या तुम्हें सच में लगता है कि वे मरम्मत पूरी होने तक इंतज़ार करेंगे?' 'बिल्कुल नहीं, माँ पागल नहीं हैं। सुमित्रा चाची के साथ जो हुआ उसके बाद,'
वह किसी की बात पर यकीन नहीं करेगी, और मेघनाद के पिता पक्के धोखेबाज हैं।यह वर्जित है (हरामखोर)। सबको पता है। आपको क्या लगता है कि वह इसे बाज़ार भाव से लगभग दोगुने दाम पर क्यों बेच रही है? अगर वे हमें निकाल भी दें, तो भी हमारे पास एक छोटा घर खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे होंगे।'

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

6 जनवरी 2003

‘अभी इसी वक्त दिल्ली आओ!’ दिव्या दी चिल्लाई। ‘मेरी बात
सुनो, दी—’
‘मैं नहीं चाहती। तुम उससे शादी नहीं करोगी। बिलकुल नहीं!’ ‘क्या मम्मी-पापा ने तुम्हें बताया कि वह क्या पेशकश कर रहा है?’
क्या तुम वेश्या हो?
‘Well, Buaji thinks आप हैं।'
‘जो भी हो! अद्वैत, चाहे वह कुछ भी प्रस्ताव दे, तुम यह सब नहीं करने वाले।’
‘मैं उससे शादी कर रही हूँ, उसके साथ सो नहीं रही हूँ। एक मिनट सोचो, दीदी, मुझ पर चिल्लाना बंद करो। मम्मी और पापा आखिरकार घर खरीद पाएंगे, उनके पास कुछ पैसे होंगे। क्या तुम जानती हो कि इसका उनके लिए क्या मतलब है?’
‘इससे कमाया गया धन राख के समान है, अद्वैत!’

‘हो सकता है तुम्हें पैसा मिल जाए, हो सकता है न मिले, कौन जाने, दीदी? उन्हें क्या करना चाहिए? दिल्ली भाग जाएं और कहां रहें? क्या करें? हम नई सिलाई मशीन कैसे खरीदेंगे? और किसके लिए?’
‘तो तुम खुद को वेश्यावृत्ति के लिए पेश करोगी? हमें इसके लिए पाला-पोसा नहीं गया था!’ डाय ने फोन पर गुस्से से कहा।
आपको ऐसा कहना बंद करना होगा।

'मेरी लाश पर से गुजरना होगा! तुम नवंबर तक दिल्ली में होगे। मैं तुम्हें बता रहा हूँ, मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगा।'
'चुप रहो और मेरी बात सुनो! अभी तुम्हारे लिए सबसे अच्छा यही है कि तुम मॉडलिंग में अपना करियर बनाओ। अगर एक साल बाद तुम कुछ बन जाओ, तो मैं भाग जाऊंगी, है ना? तुमने मुझे ये नहीं बताया था कि दिल्ली की आधी बड़ी मॉडल तुम्हारी एजेंसी से हैं?'
अब दी रो रही थी। मुझे यह बात समझ आ गई क्योंकि वह अपनी सिसकियों को दबा नहीं पा रही थी।
मैंने आपको कुछ अच्छी खबर देने के लिए फोन किया था...

मैंने कहा, 'और मैंने तुम्हें एक दिया था, है ना?' 'लेकिन तुम्हारा कौन सा है?'

‘मैं अपना पासपोर्ट बनवा रही हूँ। मुझे दुबई में काम मिल गया है,’ उसने धीरे से कहा। ‘मम्मी और पापा को बता देना कि चिंता न करें। मैं स्विमसूट नहीं पहनूँगी, सिर्फ साड़ियाँ पहनूँगी।’

‘वाह! यह तो कमाल है!’ मैं खुशी से चिल्लाई। ‘यह तो बहुत ही बढ़िया है! यह तो अद्भुत है!’ ये तो कमाल है! आपको हवाई जहाज में बैठने का मौका मिलेगा। कितना बढ़िया होगा! क्या आस-पास कोई कैमरा वाला होगा? खूब सारी तस्वीरें खींचो, ठीक है!’ मैं बहुत उत्साहित थी।

लेकिन इस बार वे ज्यादा पैसे नहीं दे रहे हैं... और अब इसका कोई मतलब नहीं है।’ ‘दी? अरे? अरे? ऐसे बात मत करो। रोने वाली मत बनो, ठीक है? मैं रोने वाली बच्ची, तुम तो मजबूत हो। क्या तुमने नहीं कहा था कि सब कुछ ऐसे ही शुरू होता है? तो देखो, सब कुछ शुरू हो गया है। मुझे अब जाना होगा, बुआजी चाहती थीं कि मैं चार बजे तक घर वापस आ जाऊं।

‘मत जाओ।’

‘प्लीज, दी। मेरे लिए इसे और मुश्किल मत बनाओ,’ मैंने कहा और फोन काट दिया।

मेघनाद घर पर मेरा इंतजार कर रहा था। मेरे आते ही बुआजी मुझे अपने कमरे में ले गईं और मेरे पहनावे को लेकर मुझे डांटने लगीं।

‘तुम कहाँ थे? वो तुम्हें बाहर ले जाने आया है। क्या तुम्हें पता है कि वो कब से तुम्हारा इंतजार कर रहा है?’ उसने पूछा।

‘मुझे बाहर ले जाओगे? मुझे कहाँ ले जाओगे?’

‘लंच के लिए चलते हैं। तुम्हें खुद को भाग्यशाली समझना चाहिए कि वो इतना प्यार जताता है। दूसरे मर्द तो परवाह ही नहीं करते। जल्दी से नहा लो और तैयार हो जाओ,’ उसने कहा और मुझे उस बाथरूम की तरफ इशारा भी किया जिसका वो इस्तेमाल करती थी।

अंदर आए हुए मुझे अभी दस मिनट भी नहीं हुए थे कि उसने मेरा दरवाजा जोर से खटखटाया और विनम्रता से पूछा कि क्या मुझे और देर लगेगी। जब मैं बाहर आया, तो उसने वह परफ्यूम लगाया जो वह खुद मुझ पर बहुत कम लगाती है।

फिर उसने बनावटी, सख्त मुस्कान बिखेरी और मेघनाद को सूर्यास्त से पहले मुझे वापस छोड़ने को कहा। मेरी नज़र घड़ी पर पड़ी। इस आदमी के साथ दो घंटे!

जैसे ही हम उसकी मॉडिफाइड, टेढ़ी-मेढ़ी और बुरी तरह से क्षतिग्रस्त सिएलो कार में बैठे, जिसमें बड़े-बड़े फेंडर, टिंटेड ग्लास और नीली बत्तियाँ लगी थीं, उसने मुझसे पूछा कि क्या हम साथ में फिल्म देख सकते हैं। जब मैंने उसे बताया कि हमारे पास इतना समय नहीं है, तो उसने कहा कि वह फिल्म नहीं, बल्कि मुझे देखना चाहता है। मैं सहम गई, मेरा गला सूख गया और मैं सोचने लगी कि अगर मैं कूद जाऊं तो मुझे कितना दर्द होगा।

गाड़ी से बाहर निकलते ही, मेरे मन में ये ख्याल आया कि उसके हाथ पहले से ही मेरी जांघों पर हैं, मुट्ठी कस रहे हैं, फिर ढीली कर रहे हैं। सिनेमा हॉल में वो जो करेगा, वो कहीं ज़्यादा बुरा होगा।

मैंने कहा, 'मैं तुम्हारे साथ फिल्म देखने नहीं जा सकती। मुझे इन चीजों की इजाजत नहीं है।' बुआज काफी सख्त हैं, खासकर दी ने तुम्हारे साथ जो किया उसके कारण।'

'इसे दिल पर मत लो।'हरामज़ादी'मेरे सामने उसका नाम है,' उसने बड़बड़ाते हुए कहा।

मैंने जितना हो सके शर्माते हुए कहा, 'मैं नहीं चाहती कि लोग मेरे बारे में वैसे ही बात करें जैसे आप दीदी के बारे में करते हैं। मुझे यकीन है कि आप भी ऐसा नहीं चाहेंगे।' 'हमारी अभी शादी नहीं हुई है। आपके साथ इस तरह दिखना भी दादाजी को अच्छा नहीं लगेगा। बुआजी ने आपको शायद इसलिए इजाज़त दी होगी क्योंकि वह आपको निराश नहीं करना चाहती थीं, लेकिन मुझे यकीन है कि उन्हें यह पसंद नहीं आया।'

अरे, शांत हो जाओ। मैंने तो बस सोचा था कि हम थोड़ा समय साथ बिताएंगे, जानू। अरे, चलो भी! अब रोना बंद करो। ठीक है, ठीक है, आज हम फिल्म नहीं देखेंगे।

मैंने सिर हिलाया।

'तो फिर तुम कहाँ जाना चाहते हो? लंच के लिए उलटी गिनती? ठीक है, अब रोना मत।' अरे भगवान! तुम और तुम्हारी बहनें बिल्कुल अलग हो। तुम्हारी बहन तो इस अवसर को तुरंत लपक लेती,' उसने चिड़चिड़ाते हुए कहा।

मेरी आँखों में जितना ज़्यादा आँसू देखकर वो परेशान होता, उतना ही ज़्यादा आँसू बहने लगते। जब तक मैंने रोना बंद किया, दुपट्टे में नाक पोंछना बंद किया और ये दुआ की कि कोई ट्रक गाड़ी के ड्राइवर वाले हिस्से को कुचल दे, तब तक हम काउंटडाउन पहुँच चुके थे।

शर्माते हुए और उसके बार-बार पूछने पर, मैंने अमेरिकन चॉप सुए और चीज़ पिज़्ज़ा ऑर्डर किया। मैंने खुद को रोने से बस थोड़ा ही रोका, कहीं वह कुछ करने की कोशिश न कर ले।

मैं ज़्यादातर चुपचाप खाना खाता रहा। वह देहरादून में अपने और अपने दोस्तों (करण भैया और अंशुमन भैया अब उसी गिरोह का हिस्सा हैं जिन्होंने छह महीने पहले हमारी बस पर बोतलें फेंकी थीं) के कथित तौर पर किए जाने वाले मज़ेदार कामों के बारे में बड़बड़ाता रहा। मैंने दिलचस्पी दिखाने का नाटक किया। इसे प्रोत्साहन मानते हुए, उसने अपनी नई कार के बारे में बात करना शुरू किया जिसे वह खरीदने की सोच रहा था, और पंद्रह मिनट तक बिना थके कारों के बारे में बात करने के बाद, उसने कहा, 'तुम्हें इनमें से कुछ भी समझ नहीं आता, है ना?'

मैंने ऐसे मुस्कुराया जैसे मुझे कुछ पता ही नहीं था, और वह ज़ोर से हँस पड़ा।

'तुम लड़कियाँ कितनी बेवकूफ हो!' बाद में जाकर मैंने उसे देखा।

वह वहीं कोने पर था, मानो वॉलपेपर में घुलमिल गया हो—रघु।

मैंने उसकी तरफ न देखने की कोशिश की, लेकिन जब मैंने उसकी तरफ देखा तब भी वह अखबार में झाँक रहा था और अपने मग से घूंट ले रहा था, खोया हुआ, बेखबर।क्या यह एक संयोग था?हमारी नज़रें दो बार मिलीं, और दोनों बार उसने ऐसे नज़रें फेर लीं जैसे कुछ हुआ ही न हो। मैंने धीरे-धीरे खाना खाया, इसलिए जब हम निकले तब तक अंधेरा हो चुका था।

'अच्छा लगा, जानू,' उसने मुझे घर छोड़ते समय कहा।

मैंने कहा, 'अगर हम दिन के समय मिलें तो मुझे अच्छा लगेगा। मम्मी और पापा को यह ठीक नहीं लग रहा है।'

'तुम बहुत ज्यादा चिंता करते हो,' उसने कहा। 'अगर कुछ भी हो जाए, तो उनसे मुझे फोन करने के लिए कहना, ठीक है?'

जब मैं कमरे में दाखिल हुआ तो मम्मी और पापा इधर-उधर टहल रहे थे। मुझे मुस्कुराते हुए देखकर उन्हें राहत मिली।

मम्मी ने मुझे पूरी रात गोद में पकड़े रखा।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

7 जनवरी 2003

जब मैं घर से निकल रही थी तो सुमित्रा ने मुझे रोककर पूछा कि क्या रघु ने जानबूझकर काउंटडाउन में हिस्सा लिया था।

घर से निकलने का मेरा बहाना वही पुराना था। मेरे पास मम्मी के कुछ कपड़े थे जिन्हें शायद कुछ ग्राहकों के पास छोड़ना था।

सुमित्रा ने चेतावनी भरे लहजे में कहा, 'तुम्हें वहां नहीं जाना चाहिए जहां तुम जा रहे हो। मुझे रघु से मिलना है।'

'मेरी बात सुनो।' उसने मुझे पकड़ लिया।

मैं उसके पीछे-पीछे घर के अंदर गई और फ्रिज में सब्जियां रखने में उसकी मदद की। किराने के थैले भारी थे। बुआजी के इस सौदे से हमारे खान-पान में भी काफी बदलाव आ रहा था।

'अद्वैता, तुम रघु से हर रोज़ नहीं मिल सकती, तुम जानती हो ना?' उसने धीमी आवाज़ में कहा। 'तुम क्या सोचती हो?'वे अगर उन्हें पता चल जाए तो क्या होगा?

उन्हें कैसे पता चलेगा?

'लेकिन अगर उन्होंने ऐसा कर दिया तो? ऐसा तो है नहीं कि तुम इस बारे में चुप रहोगी। घर पर ही रहो। उस लड़के से मत मिलना, अद्वैता। इसका अंजाम अच्छा नहीं होगा,' उसने कहा। 'अगर बुआजी को पता चल गया, तो उन्हें लगेगा कि तुम उनके बच्चों के भविष्य को खतरे में डाल रही हो... तुम जानती हो कि वो कितनी प्रतिशोधी हो सकती हैं।'

'अरे नहीं, मैं घर पर यूं ही नहीं रह सकती।'

इससे कुछ भी हासिल नहीं होने वाला है।

'सिर्फ इसलिए कि तुमने अपने जीने का तरीका स्वीकार कर लिया है, इसका मतलब यह नहीं कि मुझे भी ऐसा ही करना होगा। वह मेरा दोस्त है और मैं उससे मिलूंगी,' मैंने कहा और गुस्से में बाहर निकल गई।

मुझे एहसास हुआ कि मैंने उस पर अनुचित रूप से गुस्सा किया था, इसलिए मैं वापस गया और माफी मांगी।

सुमित्रा तो बस मेरी भलाई के लिए ही सोच रही थी। जब हम खुद की तकलीफों में फंस जाते हैं, तो दूसरों की तकलीफों को भूल जाना कितना आसान हो जाता है?

सुमित्रा ने अपने लिए यह जीवन नहीं चुना था। बल्कि, उसने प्यार के लिए भागने का रास्ता चुना था, और कितनी लड़कियां ऐसा करने का साहस जुटा पाती हैं?

एक घंटे बाद, सुमित्रा की तमाम मिन्नतों के बावजूद, मैं रघु के घर जाने वाली बस में थी। जैसे-जैसे मैं उसके घर के करीब पहुँचती गई, मेरे कदम भारी होते गए। मैंने दुपट्टे से अपना चेहरा ढक लिया और हर साँस पर पीछे मुड़कर देखती रही। सुमित्रा के शब्दों ने मुझ पर गहरा असर डाला था। बुआजी अपने उत्पाद—यानी मुझे—को बर्बाद होने से बचाने के लिए कुछ भी कर सकती थीं।

चूल्हे पर मेरे लिए चाय तैयार थी। वह नहा चुका था और दाढ़ी बना चुका था। रेज़र अभी भी सिंक पर उल्टा पड़ा था, तौलिया कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर सूख रहा था। उसके चेहरे पर खून के थक्के जम गए थे।

मैंने कहा, 'आप बिलकुल अलग लग रहे हैं। कृपया दाढ़ी मत बनाइए।'

उन्होंने कहा, 'ठीक है,' और मुझे गरमागरम चाय का एक कप दिया।

‘तुम्हारे घर में तो और भी ज्यादा ठंड है, है
ना?’ उसने हीटर चालू कर दिया।

‘क्या आपको पता है कि बिहार में शीत लहर से तेईस लोगों की मौत हो चुकी है? हम ऐसे लोग हैं जो दूसरों को मरने देते हैं क्योंकि हम अपने कंबल साझा नहीं करेंगे।’

मुझे इसमें संशयवाद की भावना नजर आ रही है।

‘यह निराशावाद नहीं, गुस्सा है। मुझे बहुत खुशी है कि दी दुबई जा रही है। मैं आशा करती हूं कि वह हमेशा के लिए वहीं रहे!’

‘वह कहाँ जा रही है?’

‘मैंने तुम्हें बताया नहीं?’

उसने अपना सिर हिलाया। मैंने रघु को दुबई में मॉडलिंग असाइनमेंट के बारे में, भारत की एलीट मॉडल्स की श्रेणी में उसकी संभावित तेज़ी से बढ़ती लोकप्रियता के बारे में और उसे मिलने वाली धीमी, कष्टदायक रकम के बारे में बताया, और खुश रहने की पूरी कोशिश की।

'मेघनाद की इस समस्या से निकलने का अभी भी एक रास्ता है,' रघु ने कहा, जब उसने देखा कि दी की आसन्न सफलता के बारे में मेरी आवाज में उत्साह की कमी थी।

‘कोई उम्मीद नहीं है, रघु,’ मैंने जवाब
दिया। ‘मैं मूल रूप से उम्मीद के
खिलाफ हूं।’

मैंने कहा, 'मेघनाद मम्मी और पापा को जो दे रही है, उसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। यह सचमुच वह सब कुछ है जिसकी उन्हें कभी जरूरत थी।'

‘यह सचमुच सब कुछ नहीं है। उन्होंने ऐसा नहीं किया।ज़रूरत उनकी बेटी को

जीवन भर दुख भोगना पड़े, या आपके हिसाब से एक साल का दुख। अगर उन्होंने ऐसा किया, तो वे

वे खुश होते, लेकिन क्या वे वाकई खुश हैं?

मैंने कहा, 'अभी तो नहीं, लेकिन जब सब लोग नई व्यवस्था के अभ्यस्त हो जाएंगे, तो उन्हें एहसास होगा कि यही सबसे अच्छा है।' 'क्या मम्मी ने ऐसा नहीं कहा था? हम औरतें यही तो करती हैं। तालमेल बिठा लेती हैं, एक कोना ढूंढ लेती हैं और खुद को अदृश्य कर लेती हैं।'

'या फिर आप कोने से लड़ सकते हैं। यह एक ऐसी चीज है जिसमें आप माहिर हैं। आप लोग मुश्किलों से पार पाने वाले हैं,' उन्होंने कहा।

मैंने कहा, 'आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'

उन्होंने कहा, 'कुछ ऐसा करो जो तुम महीनों से करना चाहते हो। रघु, यह पहेलियों का समय नहीं है।'

'मजाक में कहिए। आप मेरे छात्रों से तब बात क्यों करते हैं जब वे मेरी कक्षा से जा रहे होते हैं?'

'वे प्यारे बच्चे हैं, इसलिए।'

'आपको कैसे पता चलता है कि हर कोई किस स्कूल में जाता है, या वे कहीं और ट्यूशन जाते हैं या नहीं, और अगर जाते हैं तो कहाँ जाते हैं?'

'जिज्ञासा?'

'और जब से आप मुझे जानते हैं, छात्रों की संख्या दोगुनी क्यों हो गई है, और वे समय पर भुगतान क्यों कर रहे हैं?'

'क्योंकि तुम अच्छे हो, इसलिए तुम्हें तुम्हारा पैसा मिलना चाहिए। मुफ्त में कौन काम करता है?'

'बस इतना

ही?' 'हाँ।'

'क्या आपको यकीन है कि आपने अपनी डायरी में एक बार भी यह नहीं सोचा कि रघु एक निकम्मा आदमी है जिसे इसे एक व्यवसाय में बदल देना चाहिए? और अधिक छात्रों को दाखिला दिलाएं, शायद कुछ विषय और जोड़ दें?'

'नहीं।'

'और आपने मुझे यह सुझाव देने के बारे में कभी नहीं सोचा?'

मैंने आंखें घुमाईं और कहा, 'हम इस बारे में बात ही क्यों कर रहे हैं? रघु, तुम्हें अपनी जगह चाहिए और मैं यह समझती हूं। मैंने इसके बारे में सोचा तो होगा लेकिन...'

मुझे पता था कि तुम कभी सहमत नहीं होगे।'

'अगर मैं मान भी जाऊं तो?'

फिल्मों में अक्सर एक ऐसा भावुक दृश्य होता है जिसमें एक मृत व्यक्ति को डॉक्टर द्वारा डिफिब्रिलेटर नामक उपकरण का उपयोग करके जबरदस्ती पुनर्जीवित किया जाता है। मैं हमेशा से इस शब्द और अवधारणा से मोहित रहा हूँ।

दो धातु के पैड तेज़ी से एक-दूसरे से रगड़े जा रहे थे, कोई '1000, 2000 क्लियर' चिल्ला रहा था, और फिर मृत व्यक्ति हर बार जब उसे उसकी छाती पर रखा जाता तो छटपटाता और अंत में फिर से जीवित हो उठता। कुछ ऐसा ही महसूस हुआ। पुनर्जीवन।

मैंने कहा, 'मैं तुम्हारी दया का पात्र नहीं बनना चाहता।'

मैं सारी कमाई का 60 प्रतिशत हिस्सा लूंगा। क्लास का समय मेरी सुविधा के अनुसार होगा। मैं उन बच्चों से ज्यादा फीस नहीं लूंगा जो इसे वहन नहीं कर सकते, और मैं सभी लेन-देन नकद में चाहता हूं।

'यह तो बहुत कठोर है।'

उन्होंने कहा, 'यह पूरी तरह से

व्यावसायिक मामला है।' मैंने कहा, 'यह

पूरी तरह से व्यावसायिक मामला है।'

‘ऐसा नहीं है। मैं ये सब सिर्फ अपनी... सबसे अच्छी

दोस्त के लिए कर रही हूँ।’ मैंने अपनी पूरी कोशिश की

कि मैं रो न पड़ूँ।

'क्या आप गंभीर हैं?'

‘क्या तुम देहरादून के सबसे अच्छे चोर नहीं हो?’ उसने कहा और मैं आंसू बहाते हुए भी हंस पड़ी।

जब मैं उसके घर से निकली, तो मेरे पूरे शरीर में झुनझुनी हो रही थी। हम इससे बहुत कुछ कर सकते हैं। पूरा शहर इसी कारोबार पर चलता है, तो अगर एक और व्यक्ति इसे अपना ले तो क्या नुकसान? इससे सब कुछ बदल सकता है! मुझे बस इतना करना है कि जब तक सब कुछ ठीक न हो जाए, तब तक इसे सबसे छुपा कर रखूँ। मुझे बस कुछ महीनों की ज़रूरत है।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

10 जनवरी 2003

मेघनाद अपने पुराने तौर-तरीकों पर लौट आया है, बस फर्क इतना है कि अब वो पहले से ज़्यादा अमीर, ज़्यादा ताकतवर, मेरे बुरे भाइयों का सबसे अच्छा दोस्त और मेरे और उसके परिवार का समर्थन हासिल कर चुका है। पिछले हफ्ते उसने दो बार मेरे परिवार से मुझे बाहर ले जाने की इजाज़त मांगी, और दोनों बार मुझे उसे मना करना पड़ा।

वह कल मेरे कॉलेज आए थे और तीन घंटे तक मेरा इंतजार करते रहे। सौभाग्य से, मैंने बुआजी से कॉलेज जाने के बारे में झूठ नहीं बोला था और वास्तव में मैं वहां परीक्षा के फॉर्म भर रही थी।

जब मैंने कॉलेज छोड़ा, तो मेघनाद अपनी कार के पास खड़ा था। इससे पहले कि वह मुझे फिल्म दिखाने ले जाने का सुझाव देता, मैं खुशी से झूम उठी और बोली, 'यह तो बहुत बड़ा सरप्राइज है! मैं तो आज मम्मी से आपको घर बुलाने के लिए कहने वाली थी ताकि वह आपको अपना स्वादिष्ट खाना खिला सकें। आप मम्मी से कभी मिलते ही नहीं!'

मेघनाद भी मुझे देखकर मेरी खुशी देखकर थोड़ा हैरान रह गया। शायद मैंने थोड़ी ज्यादा ही प्रतिक्रिया दे दी थी।

‘किसी और दिन? चलो चलते हैं—’

मैंने उसे बीच में ही रोक दिया। ‘वह हमेशा मुझसे पूछती रहती है कि तुम घर क्यों नहीं आते और उसके साथ समय क्यों नहीं बिताते। तुम्हें पता है मुझे कितना शर्म आती है जब वह पूछती है कि मैं अपनी जानू से सिर्फ बाहर ही क्यों मिलता हूँ? मैं नहीं चाहता कि वह सोचे कि...’

'तुम्हारे बारे में भी यही बात है, जानू,' मैंने अत्यधिक मीठे लहजे में कहा।

मेघनाद, जो खुद को अपनी बुद्धिमत्ता पर गर्व करता है, ने एक आज्ञाकारी दामाद की तरह बिना सोचे-समझे मुझे घर ले आया और मेरी माँ के साथ खाना खाया।

मम्मी उसकी थाली में और खाना भरती जा रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो वो उसे इतना खिला रही हों कि उसकी जान ही निकल जाए, इस उम्मीद में कि सहजन की कोई डंडी उसके गले में फंस जाए और वो हमारे बैठक कक्ष के फर्श पर दम घुटकर मर जाए।

वह जानवर की तरह चबा रहा था, मेरा समय बर्बाद कर रहा था, लेकिन वह जो भी करे, मेरा उत्साह कम नहीं होगा। उसे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि हमने बाईपास पर एक कमरा किराए पर लिया है, रघु और मैं उसे किन रंगों से रंगने की सोच रहे थे, और हमने कुर्सियाँ, मेज़ें और एक ब्लैकबोर्ड चुराकर उसे सजाने की

योजना कैसे बनाई थी।

एक उचित कक्षा की तरह। छात्र अभी आने बाकी थे, लेकिन कहते हैं ना, 'बनावटी माहौल बनाओ, छात्र अपने आप आ जाएँगे'। बेशक, ऐसा मानना मूर्खता होगी। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। रघु ने हाथ मिलाने के दिन ही पाठ्यक्रम सामग्री पर काम शुरू कर दिया था। हम सामग्री को अपने ट्यूशन सेंटर के लोगो के साथ छपवाएँगे। यह सोचकर ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मेघनाद के जाने के बाद, मम्मी मुझे अपने कमरे में ले गईं और पूछा, 'अद्वैत, तुम क्या कर रही हो? क्या चल रहा है?'

'आपका क्या मतलब है?'

'तुम वहाँ बैठी उसे देखकर मुस्कुरा रही थी, अपने विचारों में खोई हुई। तुम्हारे मन में कुछ तो चल रहा है, है ना?' और फिर आशा और डर से भरी आवाज़ में उसने पूछा, 'क्या तुम दिल्ली में अपनी बहन के पास जाने की योजना बना रही हो?'

नहीं, बल्कि इससे भी बेहतर।

मैंने मुस्कुराते हुए कोचिंग क्लास के बारे में सब कुछ बता दिया और मम्मी के खुशी से चिल्लाने और मुझे कसकर गले लगाने का इंतजार करने लगी।

'अगर किसी को पता चल गया तो क्या होगा?' उसने पूछा। 'यह एक छोटा सा शहर है, अद्वैता। छात्रों को कौन लाएगा? कमरे में बैठे-बैठे ग्राहक तो नहीं मिलते। और तुम रघु को छात्रों को लाने के लिए बाहर नहीं भेज सकतीं। तब तक वह पढ़ाने के लिए बहुत थक चुका होगा।'

'बेशक मैं जाऊँगा—'

'आपको क्या लगता है कि दादाजी के मरीजों में से कोई उन्हें यह बताने में कितना समय लगेगा कि उनकी पोती एक कोचिंग संस्थान में प्रस्ताव लेकर आई थी?'

मैं इसे सावधानी से करूँगा, माँ—'

'क्या मैंने इसे बड़ी सावधानी से सिला था?' उसने कहा, उस समय को याद करते हुए जब उसने पुरुषों के कपड़े सिलने का काम भी शुरू करने का फैसला किया था। हालाँकि उसने नाप-जोख, कटाई या सिलाई का कोई काम नहीं किया था, फिर भी जब बुआजी को पता चला, तो उन्होंने दादाजी की छड़ी लेकर मम्मी की सिलाई मशीन पर वार किया और छड़ी और मशीन दोनों तोड़ दीं। उन्होंने पैंट और कमीज के कपड़े को भी नहीं छोड़ा और उन्हें जलाकर राख कर दिया। इससे हमारा छह महीने का काम रुक गया।

'क्या आपको लगता है कि इसमें पर्याप्त पैसा है? क्या आपने हिसाब लगाया है कि आप इससे कितनी बचत कर सकते हैं?'

'बहुत।'

'क्या आपने सबसे खराब स्थिति का आकलन किया है?' उसने पूछा।

वह कलम और कागज लेकर बैठ गई।

उसने अपने छोटे से नोटबुक में, अपनी टेढ़ी-मेढ़ी देवनागरी लिपि में, जो पापा ने उसे सिखाई थी, हमारे यहाँ छात्रों की संख्या, औसत शुल्क और अपेक्षित लागतों का अनुमान लगाया।

शादी के बाद। वह काफी देर तक चुप रही। उसने अपने हिसाब-किताब से नज़रें भी नहीं हटाईं। लगभग वैसा ही जैसा मैंने रघु के साथ तब किया था जब हम सबसे बुरे हालात में अपनी कमाई पर चर्चा कर रहे थे। उसने पूछा, 'क्या तुम्हें उस पर भरोसा है?'

'मैं करता हूं।'

'कोचिंग संस्थान उनके नाम पर ही रहने दो। अगर तुम पकड़े गए तो हम तुम्हारी बुआजी को बता देंगे कि तुम उनके लिए काम करते थे,' उसने कहा।

मैंने पूछा, 'क्या आपको यकीन है कि यह काम करेगा?'

उसने सिर हिलाया, वह उत्साहित, भयभीत और खुश थी।

उसने मुझे गले लगाया और मुझे उसकी छाती का मेरे सीने से

टकराना महसूस हुआ। 'मम्मा?'

'हाँ?'

'एक और बात है जो आपको जाननी चाहिए। दीदी ने मुझसे कहा था कि जब तक उनका पासपोर्ट नहीं आ जाता, मैं आपको इसके बारे में न बताऊं।'

जब मैंने उसे दी के मॉडलिंग असाइनमेंट के बारे में बताया तो वह फूट-फूटकर रोने लगी। न तो मम्मी और न ही पापा ने कभी सोचा था कि उनकी बेटी, जो एक अपंग और अछूत की बेटी है, विमान में बैठकर देश छोड़ देगी।

हमने पूरी रात अपनी आवाज़ धीमी रखी। हमारी खुशी अक्सर हमारी उंगलियों से फिसल जाती है।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

17 जनवरी 2003

मैं बहुत उत्साहित हूँ!

तीन महीने का कमरा किराया रघु ने पूरा चुका दिया है; पेंट मैंने करवाया है और पेंट का खर्च भी मैंने ही दिया है, और कुर्सियाँ और मेजें (चोरी की हुई) अपनी जगह पर हैं, जिन पर प्लास्टिक की चादरें (हम दोनों ने चुराई हैं) ढकी हुई हैं। नोटबुक पर 'बीसीसी कोचिंग इंस्टीट्यूट' का लेबल लगा दिया गया है और उन्हें प्रिंट करके बाइंड भी कर दिया गया है। हमने कमरे को दो हिस्सों में बाँट दिया है—एक बेहद छोटा ऑफिस जिसमें एक लंबी मेज और चार कुर्सियाँ हैं, और एक पंद्रह कुर्सियों वाला क्लासरूम।

अगर दीदी और मैं लड़के होते, तो घर का माहौल बिल्कुल अलग होता। ऐसा लगता जैसे दिवाली जल्दी आ गई हो। वे पूरे शहर को दीदी की दुबई यात्रा और मेरी योजनाओं के बारे में बता देते, मिठाइयाँ बाँटते, हँसते-नाचते। वे बातचीत में अपने बेटों की सफलताओं का ज़िक्र करते; हमारी हर खुशी का कोई ठिकाना नहीं होता। लेकिन अब मम्मी-पापा उदास, अनिश्चित और डरे हुए हैं। उनके शब्द सूख गए हैं, और सालों से हमें वही करने के लिए कहना जो हमें अपने लिए सही लगता है, उन्हें सता रहा है। हर कुछ मिनट में वे एक-दूसरे को देखते हैं, और एक-दूसरे के डर की पुष्टि करते हैं। फिलहाल, उनकी दोनों बेटियाँ एक अनिश्चित जीवन में कदम रख रही हैं, ऐसे लोगों से मिल रही हैं जिन्हें वे जानती भी नहीं हैं। एक आम भारतीय लड़की के माता-पिता के लिए इससे बुरा और क्या हो सकता है? उनका उत्साह डर में बदल गया है, और यह साफ दिखता है, चाहे वे इसे कितना भी छिपाने की कोशिश करें।

उन्होंने मुझमें और डाय में आत्मविश्वास जगाने और हमारे लिए खुशी जताने की पूरी कोशिश की, लेकिन वे ऐसा कर नहीं पाए। यह ठीक वैसा ही है जैसे पक्षी अपना घोंसला छोड़कर शिकारगाह में निकल पड़ते हैं।

मम्मी उठीं और मेरे पास बैठ गईं। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और मेरे बालों में उंगलियां फेरते हुए वही कहा जो मुझे लगता है कि सभी माता-पिता अपने बच्चों से कहते हैं। 'समय कितनी जल्दी बीत जाता है। तुम बहुत जल्दी बड़े हो गए, है ना?'

पापा ने कहा, 'हमें पीसीओ के लिए निकलना चाहिए। उसे वहां ज्यादा देर इंतजार नहीं करना चाहिए।'

जब दी का फोन आया तो वे अपने आँसू नहीं रोक पाए। वे फूट-फूटकर रोए और उससे कसम खिलवाई कि वह कुछ भी गलत नहीं करेगी। फिर उन्होंने यह आश्वासन चाहा कि वह दुबई में सुरक्षित रहेगी।

पीसीओ में अपनी बारी का इंतजार कर रहे कुछ ग्राहक एक वयस्क पुरुष और महिला को रोते हुए देखकर मुंह फेर लिया।

'हमें वादा करो कि तुम सुरक्षित रहोगे। हमें
वादा करो!' डी भी फूट-फूटकर रोई।

वापस लौटते समय हम बन-टिक्की वाले की दुकान पर रुके और मैंने दीदी का हिस्सा खा लिया। ऐसा लग रहा था कि सबसे बुरा समय बीत चुका है। मम्मी और पापा हमेशा से ज़्यादा प्यार जता रहे थे। हमें अब भी यकीन नहीं हो रहा था कि वो दूसरे देश जा रही हैं।

घर वापस आते ही पापा ने पूछा, 'हम उनसे कब मिल सकते हैं? इस रघु गांगुली से?'

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

20 जनवरी 2003

मैं खिड़की पर अखबार चिपका रही थी (रघु ने बताया कि कमरे में पेंट की दूसरी परत की ज़रूरत है) तभी मैंने समाचार देखा। कश्मीर के एक आतंकवादी संगठन, हरकत-उल-जेहादी-इस्लामिया ने मुस्लिम महिलाओं से पंद्रह साल की उम्र में नौकरी छोड़ने और शादी करने को कहा था। इस संगठन की इस घोषणा को लश्कर-ए-जबार का समर्थन मिला था, जिसने कुछ समय पहले इसी तरह का फरमान जारी किया था और इसका पालन न करने वाली महिलाओं पर तेजाब फेंका था।

मैंने कहा, 'यह पूरा देश ऐसा ही है। अगर दादाजी को छूट मिल जाती, तो वे हमें बहुत पहले ही मार डालते।'

'तो फिर आप वाकई बेहद बहादुर हैं, है ना?' हम

वापस काम पर लग गए।

हमारे जाने से ठीक पहले, मैंने उनसे पूछा कि क्या वे मेरे माता-पिता से

मिल सकते हैं। रघु ने बिना रुके कहा, 'जब भी उन्हें उचित लगे।'

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

21 जनवरी 2003

सौभाग्यवश, मेघनाद अपने किराये के मकानों में से एक से किसी को बाहर निकालने और नए किरायेदारों की तलाश करने में व्यस्त था।

अब वो मुझे कम से कम दो बार फोन करता है, एक बार कॉलेज जाने से पहले और एक बार जाने के बाद। हर फोन कॉल ऐसा लगता है जैसे फोन का मुड़ा हुआ तार मेरे गले में कसकर लिपट रहा हो।

दिव्या दी इस समय विमान में होंगी। यह लिखते हुए मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं। क्या यह डरावना है? क्या इससे पेट में वैसी ही गड़गड़ाहट होती है जैसी फेरिस पर होती है?

पहिए पर? क्या वो ठीक रहेंगी? बुआजी को नहीं पता, वरना वो हमें तकलीफ देने का कोई न कोई तरीका ज़रूर निकाल लेतीं। हमारे परिवार में किसी ने भी सात मंज़िल से ज़्यादा ऊँचाई से दुनिया नहीं देखी है। हमने हवाई अड्डा भी नहीं देखा, और ऊपर मंडराते हवाई जहाज़ हमें रुककर देखने पर मजबूर कर देते हैं। और वो वहाँ बैठी हैं, मुंबई या बेंगलुरु नहीं, बल्कि दुबई! वो खिड़की वाली सीट पर बैठी होंगी (कौन दूसरी सीट चाहेगा?) और बाहर देखती रहेंगी।

मुस्कुराते हुए, मुट्ठी हवा में लहराते हुए, 'विदेशी' होने की अपनी नई स्थिति का आनंद मनाते हुए।

वापसी। मैं भला उसकी बराबरी कैसे कर पाऊँगी? एक अंतरराष्ट्रीय उड़ान, होटल में ठहरना, विदेशी मुद्रा में संभावित पारिश्रमिक—वह उन सभी चीज़ों के करीब है जिनके बारे में हम कल्पना करते हैं। मैं इतनी खुश हूँ कि रो सकती हूँ। वास्तव में, मैं रो भी चुकी हूँ। यह सब

अब यह बात विश्वसनीय लगती है। अब जब वह इस भयानक शहर, इस भयानक देश और इसके भयानक लोगों से दूर है। आज मुझे बेहद देशद्रोही महसूस हो रहा है, और इसका कारण भी है।

हरकत-उल-जेहादी-इस्लामिया खुद बकवास कर सकता है!

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:*techiestax.blogspot.in*

22 जनवरी 2003

इसमें असहज महसूस करने जैसी कोई बात नहीं है, फिर भी मुझे असहजता हो रही है। मानो उनके बारे में लोगों की राय से यह पता चल जाएगा कि मैं किस तरह की इंसान हूँ। मानो वह मेरे जीवन के सभी फैसलों का निचोड़ हो, उन सभी बातों का जो मैंने अपने माता-पिता से सीखी हैं।
मुझे सिखाओ। मैं झूठ नहीं बोलूंगी। ऐसा लग रहा था जैसे मम्मी और पापा मेरे बॉयफ्रेंड, मेरे मंगेतर, मेरे जीवन के प्यार से मिलने जा रहे हों। मम्मी और पापा भी बिल्कुल वैसे ही व्यवहार कर रहे थे; वे घबराए हुए थे। अच्छे कपड़े बाहर निकाले गए थे और ऐसा लग रहा था जैसे हम उन्हें यह दिखाने की कोशिश कर रहे हों कि हम अमीर हैं। यह सब थोड़ा बचकाना और प्यारा था।

उसका कमरा एकदम साफ-सुथरा था, किताबें और अखबार करीने से रखे हुए थे, और बरामदा भी अच्छी तरह से साफ किया हुआ था। वहाँ पहले से मौजूद दो कुर्सियों के अलावा दो और स्टूल रखे हुए थे। गद्दा मोड़कर एक तरफ रखा हुआ था। उसने दो बार इशारा किया कि मैं बेचैन हो रही थी और मेरा घुटना किसी वाद्य यंत्र की तरह कांप रहा था।

हम अनंत काल तक इंतजार करते रहे। मैंने

कहा, 'तुम घबराए हुए नहीं लग रहे हो।'

क्या मुझे घबराया हुआ दिखना चाहिए?

इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, दरवाजे पर दस्तक हुई और वह उठ गया। उसने झुककर उनके पैर छुए। उसने स्टूल को धकेल दिया।
आगे बढ़कर उसने उनसे बैठने का अनुरोध किया। उसने पूछा, 'चाय?'

मम्मी और पापा ने कमरे में चारों ओर देखा, उनके मन में चाय के साथ-साथ कई सवाल उठ रहे थे। उन्होंने चाय की चुस्की ली और पहले तो बिस्कुट लेने से मना कर दिया, लेकिन वे जिम जैम बिस्कुट थे, जो हमारे परिवार के पसंदीदा थे, इसलिए उन्होंने एक-एक बिस्कुट ले लिया।

‘उसने हमें तुम्हारे और तुम्हारे चलाए जा रहे कारोबार के बारे में बताया,’ पापा ने अपनी आवाज़ में कहा।

सामान्य से अधिक सख्त लहजे में। 'हम इससे बिल्कुल भी खुश नहीं थे। लेकिन मैं क्या कहूँ? आजकल बच्चे जो करते हैं, वही करते हैं।'

‘पापा, आप क्या कह रहे हैं?’

मम्मी ने मुझे बीच में ही रोक दिया ताकि पापा अपना सख्त मिजाज वाला भाषण जारी रख सकें।

‘उसे बोलने दो,’ माँ ने कहा।

पापा ने कहा, 'अच्छा होगा अगर तुम दोनों ऐसा करने से पहले अपने माता-पिता से बात कर लो।'

‘मम्मा, मैंने आपसे कहा था कि इन सब बातों के बारे में बात मत करो।’

रघु ने मेरी तरफ देखा। मैंने उससे वादा किया था कि मम्मी और पापा ऐसे सवाल नहीं पूछेंगे, और उन्होंने भी वादा किया था।

'चाचा जी, मैंने उन्हें महीनों से नहीं देखा है और न ही देखने का मेरा कोई इरादा है। अगर कोचिंग संस्थान शुरू करने के लिए यह एक शर्त है तो मैं क्षमा चाहता हूं।'

मम्मी और पापा ने एक-दूसरे को देखा, फिर मुझे देखा और फिर सिर हिलाया।

मम्मी ने अपनी आवाज़ में कहा, 'बेटा, हमें सब कुछ बताओ कि क्या हो रहा है।' नरम और मक्खन जैसा। 'आप जानते हैं, एक बेटी के माता-पिता होने के नाते, हम उसके लिए लगातार चिंतित रहते हैं।'

और कमजोरी के एक दुर्लभ क्षण में, या कहें कि मानवीय स्वभाव के एक क्षण में, उन्होंने कहा, 'वह भाग्यशाली है कि उसे आप मिले हैं। ऐसे माता-पिता बहुत कम लोगों को मिलते हैं।'

एक छोटी सी दरार। मैं हाथ बढ़ाकर उसे चीरकर उसके अंदर छिपी हुई चीज़ को देखना चाहता था, लेकिन वह फिर से बंद हो गया।

कुछ देर बाद, माँ बोलीं, ‘हम तुम्हारे लिए खाना भेज देंगे। बस हमें बता दो कि तुम आमतौर पर क्या खाते हो,’ उन्होंने कहा।

अगले आधे घंटे तक हमने हर बात पर और कुछ न होने पर भी बात की। घर

लौटते समय बस में मम्मी ने कहा, 'वह एक अच्छा लड़का है।'

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

24 जनवरी 2003

हम सब बहुत परेशान थे। उसे कल दिल्ली पहुँच जाना चाहिए था, लेकिन उसकी कोई खबर नहीं थी। हमने बारी-बारी से पीसीओ के बाहर घंटों बिताए, फिर भी कोई फोन नहीं आया, कोई खबर नहीं कि दीदी अभी भी दुबई में है या दिल्ली पहुँच गई है। मम्मी और पापा ज्यादातर समय रोते रहते थे, दीदी पर और खुद पर गुस्सा थे कि उन्होंने उसे अकेले दुबई जाने का इतना मूर्खतापूर्ण कदम उठाने दिया। हमने मध्य पूर्व में फंसे लोगों की भयानक कहानियाँ सुनी थीं, जिनके पासपोर्ट जब्त कर लिए जाते हैं, महिलाओं को गुलामी में धकेल दिया जाता है, या इससे भी बदतर, वेश्यावृत्ति में धकेल दिया जाता है। मम्मी इतनी डरी हुई थीं कि एक बार तो वे चिल्ला उठीं, 'कोचिंग का काम नहीं! बस घर पर रहो!'

तो जब दी ने आखिरकार आज फोन किया, तो उसके कुछ बोलने से पहले ही उन्होंने उसे खूब खरी-खोटी सुना दी। लेकिन चिल्लाते-चिल्लाते, मम्मी और पापा दोनों फूट-फूटकर रोने लगे और माफी मांगते हुए उससे पूछा कि क्या वह ठीक है।

उसने हमें बताया कि वीजा को लेकर कुछ गलतफहमी के कारण वह फंस गई थी, और लापता होने के लिए माफी मांगी।

उन्होंने मुझे छह हजार रुपये दिए।

‘किसी बेहतर पीजी में शिफ्ट हो जाओ,’ इससे पहले कि वो उसे पैसे दे पाती, मम्मी ने कहा। ‘समय पर खाना खाओ और खाने में कंजूसी मत करो। तुम्हें पता है कि जब तुम नहीं खाती हो तो तुम्हारी त्वचा का क्या हाल होता है।’

‘मम्मी, मेरी बात सुनो।’

‘हमें यहाँ किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है,’ माँ ने कहा। ‘तुम्हारी बहन के कोचिंग संस्थान में पहले से ही तीन और छात्र दाखिला ले चुके हैं! कक्षाएं भी शुरू हो चुकी हैं।’

'मुझे घर कुछ भेजना ही होगा,' दिव्या दी ने जोर देकर कहा।

मां उसे नजरअंदाज करती रही। 'मैं तीन लहंगे बना रही हूं! इसलिए ज्यादा होशियारी मत दिखाओ, और अपने पैसे अपने पास रखो।'

उसके बाद उसके पैसों का क्या किया जाए, इस बारे में कोई चर्चा नहीं हुई।

मैंने और दी ने औपचारिक और असहज तरीके से बात की क्योंकि हमारे मन में जो सवाल थे, उन्हें हम अपने माता-पिता के सामने साझा नहीं कर सकते थे। उसने मुझे बताया कि वह मेरे लिए चॉकलेट और परफ्यूम लाई है।

27 जनवरी 2003

मुझे चक्कर आने लगे और लगा कि तनाव के मारे मैं बेहोश हो जाऊंगी। क्या वह मुझे चूमने की कोशिश करेगा? क्या वह पहला आदमी होगा जिसके हाथ मैं थामूंगी? क्या वह पहला आदमी होगा जो मुझे उस तरह से छुएगा? पिछले कुछ दिनों से ये परेशान करने वाले विचार मेरा पीछा नहीं छोड़ रहे थे। अगर सब कुछ विफल हो गया और मेरी शादी उससे हो गई, मेरी सहमति के बिना, या कठिन परिस्थितियों में जबरदस्ती सहमति लेने के बाद, तो क्या हर बार जब वह... मेरे साथ सोएगा, वह बलात्कार होगा?

समय बहुत तेज़ी से बीत रहा था। मेरे टालमटोल, बहाने और चालबाज़ियों से तंग आकर मेघनाद ने बुआजी और मम्मी से मुझे फिल्म दिखाने ले जाने की इजाज़त मांग ली थी। उसने बड़ी अजीब तरह से उन्हें यकीन दिलाया कि वह मुझे हाथ नहीं लगाएगा, जो मुझे पता था कि झूठ था। उसने बुआजी और मम्मी को यह नहीं बताया था कि वह मुझे कौन सी फिल्म दिखाने ले जा रहा है, लेकिन जाने से पहले उसने मेरे कान में धीरे से बता दिया था।

'शरीर' उसने कहा था, उसकी आवाज थोड़ी देर तक गूंजती रही।एसअगर हम लिविंग रूम में न होते, तो वह उसी समय अपना हाथ मेरी टी-शर्ट के नीचे डाल देता।

मैंने मम्मी और पापा को फिल्म के चुनाव या उसके छिपे हुए इरादे के बारे में नहीं बताया था।

कल रात, मम्मी ने मुझे इस सब से बचने के कई तरीके सुझाए। 'अगर तुम नहीं जाना चाहती तो तुम्हें जाने की ज़रूरत नहीं है। रात भर अपने पैरों को ठंडे पानी में भिगोकर रखो, तुम्हें सर्दी लग जाएगी।'

मैंने कहा था, 'मुझे जाना होगा।'

'लेकिन वो मेघनाद है, बेटा। तुम जानती हो वो कैसा है।' 'वो बस एक लड़का है। ऐसा कुछ नहीं जिसे मैं संभाल न सकूँ,' मैंने कहा।

मम्मी सुबह से ही मेरे आस-पास मंडराती रहीं, यह देखने के लिए कि मैं कैसी हूँ। मम्मी ने पूछा, 'वह कब आ रहा है?'

बुआजी ने कहा, 'चार बजे,' और मुझसे चाय बनाने को कहा। जब मम्मी चली गईं, तो बुआजी आकर मेरे पास बैठ गईं। उन्होंने मेरे हाथों में जो कुछ थमा दिया, वो ये था...

मुझे लगा कि ये पैसे हैं, लेकिन असल में दो मूवी टिकट निकले। प्रभात सिनेमा। शाम 4 बजे।

बुआज ने कहा, 'उसने मुझे टिकट लेने के लिए फोन किया था,' और फिर थोड़ी देर रुकने के बाद बोली, 'अब तुम बड़ी हो गई हो। तो...'

'इसलिए?'

'उसे कुछ चीजें चाहिए होंगी, वो चीजें जो लड़कों को चाहिए होती हैं। इतना मासूम बनने का नाटक मत करो,' उसने रहस्यमयी लहजे में कहा।

बुआज के इस कृत्य से मुझे भयभीत होने का कोई कारण नहीं था।

लेकिन मैं उसे स्तब्ध होकर देखता रहा।

बुआजी ने चमकती आँखों से कहा, 'उसे सब कुछ मत करने दो। उसे लगेगा कि हमने तुम्हें कुछ सिखाया ही नहीं। और हर बात के लिए मना कर दो और फिर... थोड़ा-थोड़ा करके...'

बस थोड़ा सा... आप नहीं चाहते कि वह सोचे कि आप...

मैंने उसे थप्पड़ नहीं मारा, हालाँकि वह इसकी पूरी हकदार थी। एस्कॉर्ट के तौर पर मुझे दी जा रही उसकी ट्रेनिंग फोन की घंटी बजने से अचानक रुक गई।

उसने रिसीवर उठाया और पहले तो मुस्कुराते हुए बात की, फिर खेद व्यक्त किया और फिर बोली, 'अरे कोई बात नहीं। कोई और दिन चलेगा। नहीं, नहीं, टिकटों की बिल्कुल भी चिंता मत करो! अरे, कोई बात नहीं, बेटा। चिंता मत करो।'

उसने फोन काट दिया।

अपने कमरे में जाने से पहले, उसने ऐसे कहा जैसे यह मेरी गलती हो, 'वह नहीं आ रहा है। किसी बदमाश ने चाकू से उसकी कार के सभी टायर काट दिए हैं।'

सब कुछ सुन रही मां मुस्कुराते हुए बाहर आई और बोली, 'मुझे लगता है कि आखिरकार भगवान है ही।'

मैंने भी उसे देखकर मुस्कुरा दिया, क्योंकि मुझे अच्छी तरह पता था कि यह बस थोड़ी देर की देरी है जिसके बाद वह फिर से अपने घिनौने रूप में लौट आएगा।

'आप घर पर नहीं बैठ सकते। जाइए, फिल्म देखिए। यह बुआजी के खर्चे पर बनी है।'

ऐसा अक्सर नहीं होता, है ना?' 'आओ!' मैं चीख

पड़ी।

मम्मी और मैंने वो शर्मनाक फिल्म साथ में देखी। फिल्म के उत्तेजक दृश्यों ने हम दोनों को अपनी सीटों पर असहज कर दिया। फिल्म खत्म होने पर हमने राहत की सांस ली।

'क्या तुम घर नहीं आ रहे हो?' माँ ने पूछा।

मैंने कहा, 'मुझे तुरंत संस्थान जाना होगा।'

जब मैं पहुंचा तो रघु अपने नोट्स पर काम कर रहा था। मैंने उससे पूछा, 'रघु? क्या तुमने मेघनाद के टायर पंचर किए?'

रघु ने थोड़ी देर मेरी तरफ देखा और मुस्कुराया।

'मैं ऐसा करना चाहती थी, लेकिन तुम्हारे पापा ने मुझे इसकी इजाज़त नहीं दी। यह सब उनका ही विचार था। उन्होंने खुद ही किया था।'

30 जनवरी 2003

मैं अपशगुन नहीं करना चाहता... मैं अपशगुन नहीं करना चाहता... मैं अपशगुन नहीं करना चाहता।

कल से आज के बीच, बीसीसी में तीन और छात्रों ने दाखिला लिया और तीन महीने की फीस अग्रिम जमा कर दी, जिससे कुल छात्रों की संख्या नौ हो गई। मैंने पैसों के बंडल को कसकर पकड़ा और धीरे-धीरे रोने लगी।

‘यह तो सिर्फ पैसा है,’ रघु ने कहा और फिर जब मैंने उसे गुस्से भरी नजरों से देखा तो वह चुप हो गया।

'ठीक है, ठीक है, मैं आपके लिए कॉफी बना देता हूँ। मुझे इंटरनेट के बाहर कॉफी बनाने का एक नया तरीका मिल गया है।'

‘नहीं, नहीं, मेरे वापस आने के बाद। हमें और भी बहुत से छात्रों का नामांकन कराना होगा,’ मैंने कहा। ‘मैं अंग्रेजी भाषा के स्कूल में पर्चे बांटने जा रहा हूँ। पैसे बॉक्स में डाल दीजिए।’

‘तुम थोड़ा सा अपने साथ ले जा सकते हो। अपने मम्मी-पापा के लिए भी कुछ ले आना।’

‘बिल्कुल नहीं। हमें क्लास के लिए दो और हीटर चाहिए, शायद एक...’ पानी का डिस्पेंसर भी। मम्मी-पापा वैसे भी कुछ नहीं लेंगे,’ मैंने कहा। ‘जब मैं वापस आऊँगी तो क्या तुम यहाँ रहोगी?’

उन्होंने कहा, 'मुझे ऐसा लगता है।'

जब मैं वापस लौटा, तो रघु किताबों के ढेर पर झुका हुआ था, तीन किताबों को ध्यान से पढ़ रहा था और दो अलग-अलग नोटबुक में कुछ लिख रहा था। ये वो किताबें थीं जो हमने पुस्तकालयों और किताबों की दुकानों से चुराई थीं, ऐसी किताबें जिन पर हमारे पास आने वाले किसी भी छात्र के पैसे खर्च करने या उन्हें समझने का कोई चांस नहीं था।

जब उन्होंने मुझे देखा तो उन्होंने कहा, 'इन किताबों में बहुत सी बेकार की बातें हैं, मैं छात्रों के लिए उनमें से कुछ को छांट रहा हूं।'

लेकिन वे नोट्स तो लेते ही हैं, है ना?

रघु ने सिर हिलाया। 'लेकिन सब कुछ लिखना ध्यान भटकाने वाला होता है। हर कोई बोर्ड पर जो कुछ भी लिखा होता है उसे नोट करने पर ही ध्यान केंद्रित करने लगता है। इसके बजाय, हम उन्हें यह दे सकते हैं और वे इसे समझने में अधिक समय लगा सकते हैं।'

मैंने उनके सावधानीपूर्वक व्यवस्थित और खूबसूरती से लिखे गए नोट्स के पन्ने पलटे।

उन्होंने उपन्यासकार की तरह कहा, 'यह पहला मसौदा है। मैं इसमें से और भी अनावश्यक चीजें हटाऊंगा।'

‘यह तो कमाल है! इस तरह मैं अभिभावकों को बता सकती हूँ कि उन्हें ये महंगी किताबें खरीदने की ज़रूरत नहीं है! इसके बजाय, वे हमें नोट्स के लिए भुगतान कर सकते हैं। यह एक पत्राचार पाठ्यक्रम की तरह होगा।’

मैं इसे शुल्क के हिस्से के रूप में शामिल करने के बारे में सोच रहा था—

‘नहीं!’ मैंने झल्लाकर कहा। ‘हम कुछ भी मुफ्त में नहीं करेंगे। उन्हें पहले से ही बहुत कम कीमत पर एक शानदार शिक्षक मिल रहा है, और कुछ नहीं।’

'कठोर।'

क्या इन लोगों का भविष्य आपके हाथों में बेहतर होगा?

उसने कंधे उचका दिए, अपनी तारीफ खुद नहीं करना चाहता था, लेकिन मुझे पता था कि यह सच था। अभी मुश्किल से दस दिन ही बीते थे, लेकिन माता-पिता बेहद खुश थे। उन्होंने अपने बच्चों को कभी खुद से किताबें उठाते नहीं देखा था।

मैंने कहा, 'चुप रहो और बताओ मैं तुम्हारी कैसे मदद कर सकता हूँ। मतलब, अगर तुम्हें किसी मदद की ज़रूरत हो तो।' उसने कहा, 'हाँ, बहुत सारी ज़रूरत है,' और किताबों के ढेर की ओर इशारा करते हुए बोला, 'खोलो।'

वह एक । । ।'

अगले तीन घंटे तक हमने बिना ब्रेक लिए काम किया, और जब काम खत्म हुआ तो हम पूरी तरह थक चुके थे, फिर भी हम मुस्कुरा रहे थे।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

1 फरवरी 2003

घर पहुँचने में देर हो गई, यह मेरी ही गलती थी। घर में कदम रखते ही करण भैया ने मेरा हाथ पकड़ लिया। कुछ समझ आने से पहले ही मुझे खींचकर लिविंग रूम में ले जाया गया, जहाँ सब मेरा इंतज़ार कर रहे थे। कमरे की नकारात्मक ऊर्जा ने तुरंत मुझे घेर लिया। मैं वहीं खड़ा रह गया, मानो कुछ बहुत बड़ा बदलाव हो गया हो।

दादाजी उठे और बिना कुछ कहे मेरे पिताजी को ऐसे थप्पड़ मारा जैसे वो छह साल के बच्चे हों। पापा लड़खड़ाकर पीछे गिर पड़े।

'साला, लंगड़ा!' दादाजी चिल्लाये।

दादाजी वापस वहीं बैठ गए जहाँ वे पहले बैठे थे। उन्होंने माँ को घूरकर देखा, एक नीची जाति की महिला पर हाथ उठाने की जहमत भी नहीं उठाई।

‘तुम दोनों को पता था ना? तुम्हारी बेटी तुम्हारी जानकारी के बिना कारोबार में उतर रही है? तुम चाहते हो कि मैं इस पर विश्वास कर लूँ? रिसेप्शनिस्ट, बिलकुल नहीं!’ बुआजी पापा पर गुर्राईं। ‘यही तो उसकी माँ ने मुझे बताने की कोशिश की थी! कि वह रिसेप्शनिस्ट है। भला कौन सी रिसेप्शनिस्ट घूम-घूमकर माता-पिता से अपने कोचिंग संस्थान में दाखिला लेने के लिए भीख माँगती है!’

अब मेरी बारी थी। बुआजी आईं और मेरे बाल पकड़ लिए। मम्मी-पापा थोड़ा सा हिले, लेकिन दादाजी ने गुस्से भरी नज़र से उन्हें रोक दिया।

बुआजी ने मुझे थप्पड़ मारा। ‘उसे देखो! कितनी बेशर्मी है। देखो वो मुझे कैसे घूर रही है!’ फिर उन्होंने मुझ पर थूका। ‘यह हमारी गलती है। नहीं, नहीं, यह हमारी गलती है। तुम्हारी दूसरी बहन पैसों के लिए सो रही है, है ना? वहीं से तुम्हें पैसे भेज रही है! वो हमेशा से ऐसी ही थी! तुम सब औरतें एक जैसी हो।’*RANDIYAN*!’

‘BUAJI!’

बुआजी ने ताना मारते हुए कहा, 'मुझ पर चिल्ला रही हो?' मेरे जवाब ने उसके दिल पर गहरा असर किया था। 'तुम्हारे पिता को ज़िंदा रखने और तुम्हें बेहतर भविष्य देने की कोशिश करने का यही नतीजा है। हमें तुम पर बहुत गर्व है!'

फिर उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे घसीटते हुए अपने कमरे की ओर ले जाने लगी। 'तुम अपने कमरे में क्यों हो? हमारे कमरे में आओ! हमें बाहर निकालो!'

आप यही तो चाहते हैं, है ना?

फुफाजी ने बीच में कहा, 'उससे पूछो कि वह उसके फ्लैट में उसके साथ क्या कर रही थी।'

करण भैया ने झूठ बोलते हुए कहा, 'पापा, उसकी वजह से मैं अब कॉलेज नहीं जा सकता। आपको देखना चाहिए कि वे मुझे कैसे देखते हैं।'

अंशुमन भैया भी बोल पड़े, 'हमें उस लड़के को सबक सिखाना चाहिए।' बुआजी ने सख्ती से कहा, 'कोई कहीं नहीं जा रहा है। वह जा रही है...'

मेघनाद से शादी कर लो, बस बात खत्म। मैं ये जोखिम नहीं उठाऊंगा, समझ रहे हो?

Karan Bhaiya and Anshuman Bhaiya nodded like puppies.

बुआजी ने मेरे बाल फिर से पकड़कर कहा, 'तुम्हारा क्या होगा? जब तक मेघनाद आकर तुम्हें ले नहीं जाता, तब तक तुम इसी कमरे में रहोगी। समझ रही हो? तुम यहीं सोओगी, यहीं शौच करोगी, यहीं नहाओगी! कमरे से बाहर मत निकलना... और फिर तुम उस मेघनाद के पास जाओगी जो तुम्हें सिखाएगी कि औरतों को कैसा व्यवहार करना चाहिए।'

उसने मेरी तरफ देखा, उसके होंठ गुस्से भरी, शैतानी मुस्कान में बदल गए। 'अब जाओ—'

सुमित्रा की आवाज ने उनकी बात काट दी, जिसकी आवाज हम लगभग भूल चुके थे। 'वह काम करेगी, दीदी।'

'क्या?' बुआजी ने हैरानी से कहा।

सुमित्रा ने थोड़ी दृढ़ता से फिर कहा, 'वह काम पर जा रही है।'

बुआजी ने कहा, 'अंदर जाओ। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इसमें दखल देने की, तुम झूठे हो।' —'

'बुआजी, मैं अकेली नहीं हूँ जो झूठ बोलती हूँ। हम सबने कभी न कभी किसी न किसी बात पर झूठ बोला है, है ना?' सुमित्रा ने पूछा।

'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?'

सुमित्रा ने कहा, 'तुम्हें पता है,' और मनीष चाचा की तरफ देखा।

कुछ तनावपूर्ण क्षण बीत गए। सन्नाटा छा गया। निगाहें एक-दूसरे से मिलीं, मुट्ठियां खुल गईं।

जैसे-जैसे सन्नाटा गहराता गया, यह स्पष्ट होता गया कि मनीष चाचा का रहस्य केवल उनका ही नहीं था। मेरी नज़रें कमरे में चारों ओर दौड़ीं और मुझे एहसास हुआ कि केवल मंदबुद्धि करण भैया और अंशुमन भैया ही थे जिन्हें यह बात समझ नहीं आई थी। मनीष चाचा अविचलित खड़े थे, किसी की ओर नहीं देख रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो सुमित्रा और मनीष चाचा ने इस बारे में बात की हो।

एक दिन ऐसा आएगा जब सुमित्रा चुप नहीं रहेगी और न ही

मनीष चाचा को पता चला कि वे इस कार्ड का इस्तेमाल परिवार के खिलाफ करेंगे। यह सुनकर मुझे बहुत हैरानी हुई क्योंकि वे इस कार्ड का इस्तेमाल मेरे खिलाफ कर रहे थे।

'तुम्हारा क्या मतलब है?' बुआजी ने डर और गुस्से के अजीबोगरीब मिश्रण भरी आवाज में पूछा।

'आप जानती हैं, दीदी, मेरा मतलब क्या है। जो बात सिर्फ हमें पता है, वो कल सबको पता चल जाएगी और मनीष सच्चाई के साथ खड़ा रहेगा।'

बुआजी ने मनीष चाचा की ओर देखा और उनके द्वारा उनकी ओर देखने का इंतजार किया, लेकिन मनीष चाचा वहीं अडिग और स्थिर खड़े रहे।

करण भैया ने पूछा, 'ये क्या कह रही है?'

बुआजी ने दांत पीसते हुए करण भैया और अंशुमन भैया को घूरकर देखा। करण भैया और अंशुमन भैया ने मनीष चाचा की ओर देखा। अंशुमन भैया को सबसे पहले इसका एहसास हुआ। उन्होंने अपने भाई को कोहनी मारी और अपना हाथ नर्मी से नीचे गिरा दिया। अंशुमन भैया ने सब कुछ समझ लिया, उनके चेहरे पर घृणा और अविश्वास साफ झलक रहा था।

सुमित्रा ने फिर कहा, 'अगर हम अपनी-अपनी जिंदगी में आगे बढ़ते रहे तो मैं इस बारे में बात नहीं करूंगी। आप उसे अभी जो कर रही है, करने दीजिए। वह मेघनाद को बता देगी कि वह उस बिजनेस में रिसेप्शनिस्ट के तौर पर काम कर रही है, और बात वहीं खत्म हो जाएगी।'

बुआजी ने झल्लाकर कहा, 'पापा उस जगह को चलने नहीं देंगे। तुम्हें पता है उन्होंने भाई के साथ क्या किया था जब उसने वहां से अलग होने की हिम्मत की थी—'

सुमित्रा ने बुआजी की बात काटते हुए दृढ़ता से लेकिन विनम्रतापूर्वक कहा, 'रघु गांगुली एक ब्राह्मण नाम है। अगर ऐसा नहीं भी होता, तो मुझे नहीं लगता कि जो माता-पिता अपने बच्चों को आईआईटी में दाखिला दिलाना चाहते हैं, उन्हें इसकी परवाह होती है। दीदी, पिछले बीस सालों में हालात बदल गए हैं।'

मैं सही थी, एक अभूतपूर्व बदलाव आया था। समझौता होने पर मम्मी, पापा और मैं अपनी जगह पर जम गए।

बुआजी गुस्से में चली गईं और बोलीं, 'उसे जो चाहे करने दो। कुछ महीनों में वो किसी और की समस्या बन जाएगी।' जाहिर है, उन्हें ट्यूशन सेंटर से बचने की उम्मीद नहीं थी। यह बात उनके दिमाग में आई ही नहीं थी। उनके लिए यह बात हास्यास्पद थी कि मम्मी-पापा अपनी सारी संपत्ति और एक नई जिंदगी शुरू करने का मौका एक छोटे से नवोदित व्यवसाय के लिए छोड़ दें।

हम सब अविश्वास से भरे हुए अपने-अपने कमरों में
वापस चले गए। हम सब अभी भी जाग रहे हैं।

वहाँ सन्नाटा पसरा हुआ है। हम दरवाजों के खुलने और बंद होने की आवाज सुनने के लिए बहुत उत्सुक हैं।

सुमित्रा द्वारा रहस्य उजागर करते ही दादाजी की जलती हुई आँखों के अलावा मेरे दिमाग में और कुछ नहीं आ रहा है।

क्या वे सचमुच... क्या वे... मैं लिख लेता हूँ। क्या वे उसे मार डालेंगे? वे घिनौने, नीच और घटिया लोग हैं, उन्होंने इसके बारे में सोचा होगा, लेकिन क्या वे इतने चालाक हैं कि ऐसा कुछ कर सकें?

नहीं, वे नहीं हैं।

यह बहुत बड़ा जोखिम है। वे ऐसा करने की हिम्मत नहीं करेंगे।

बाद में रात को माँ ने फुसफुसाते हुए कहा, 'यह शांति क्षणिक होगी। अगर...' अगर कुछ हो जाए... तो अपनी बहन को फोन करो, उसके पास दौड़कर जाओ।' उसने प्यार से मेरे चेहरे पर उंगलियां फेरते हुए कहा, 'तुम्हारी दीदी तुम दोनों के लिए काफी कमा रही हैं। मुझे कोई और विकल्प नहीं दिख रहा।'

'मैं नहीं भागूंगा। या तो मैं तुम्हें तुम्हारी जरूरत की चीज दूंगा या मेघनाद देगा।'

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

2 फरवरी 2003

मैं अभी अपनी लेन में दाखिल ही हुई थी कि मुझे उसकी कार दिखाई दी। पास से देखने पर पता चला कि उसने स्टीयरिंग व्हील को मुट्ठी में कसकर पकड़ रखा था, उसकी आँखें लाल थीं और मुँह गुस्से से टेढ़ा हो गया था। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसे बीसीसी के बारे में पहले से ही पता था। और क्यों न पता हो, उसके दो सबसे अच्छे दोस्त और चमचे मेरे साथ एक ही छत के नीचे रहते थे। 'मेघनाद जीजू, मेघनाद जीजू', यही मैंने इन दिनों उनके मुँह से सुना है। उसने मेरे लिए कार का दरवाज़ा खोला।

‘तुम्हारी बुआ ने मुझे पहले ही इजाज़त दे दी है,’ उसने उपहास उड़ाते हुए कहा। मैं अपना बैग मजबूती से अपने सामने रखते हुए कार के अंदर बैठ गई।

‘क्या उसने तुम्हें छुआ है?’ उसने पूछा।

‘तुम क्या कह रही हो?’

‘मैं पूछ रहा हूँ, क्या उसने तुम्हें छुआ है?!’ उसने इस बार चीखते हुए कहा।

'मैं आपको समझ नहीं पा रहा हूँ।'

उसने स्टीयरिंग व्हील पर मुक्का मारा और चिल्लाया, 'क्या तुम मुझे बेवकूफ समझते हो! वह आदमी जिसके लिए तुम काम करते हो! वह ट्यूशन वाला आदमी जिसने तुम्हारे साथ फिल्म देखी!'

वह मेरी ओर मुड़ा, अपनी हथेलियों पर उंगलियां रगड़ते हुए, उसकी गर्दन की मांसपेशियां फड़क रही थीं। मुझे पता था कि आज मुझे मुक्का पड़ने वाला है। मर्द यही तो करते हैं। हमें चाहते हैं और फिर इतना बुरी तरह घायल कर देते हैं कि हर कोई हमसे नफरत करने लगे। उसे घूरते हुए मैं सोच रही थी कि वह मुझे क्या देगा। कुछ टूटे दांत? टूटी नाक? या फिर मेरी आत्मा को पूरी तरह से चकनाचूर कर देगा।

‘तुम्हें क्या लगता है कि मुझे पता नहीं होगा? हैं? तुम्हें नहीं पता कि यहाँ कितने लोग मुझे जानते हैं!’ सलाम*tokte hain* (वे मुझे सलाम करते हैं) यहाँ की आधी दुकानों के लोग। जब उन्होंने कहा कि उन्होंने तुम्हें थिएटर के बाहर एक आदमी के साथ देखा था, तो मैं उन लोगों की बात पर विश्वास नहीं करना चाहता था। अब बताओगी या नहीं—’

उसका बायां हाथ हवा में था, और मेरा चेहरा ठीक उसके रास्ते के बीचोंबीच था।

उसका दाहिना हाथ भी नहीं। बाएं हाथ से मारा गया थप्पड़ सिर्फ गुस्से की बात नहीं है, बल्कि यह गुस्से का प्रतीक है।

और स्वामित्व का भाव। हमलावर को इस बात की भी परवाह नहीं होती कि पहली बार में वह सही हुआ या नहीं, वह दोबारा कोशिश कर सकता है। मैं वहां से हट जाना चाहता था, लेकिन मेरी निगाहें बार-बार उसके हाथ पर टिकी थीं। ज़्यादातर समय, मैं उसके जैसा बनना चाहता था। शक्तिशाली और निडर। कैसा महसूस होता होगा!

उसने हाथ नहीं हटाया। मेरे दयालु मंगेतर ने मुझे अपनी बात समझाने का मौका देने का फैसला किया।

मैंने घबराकर सफाई देने की कोशिश की। मैंने कहा, 'जब वो सिनेमा हॉल के बाहर मुझसे टकराया, तो मैं मना नहीं कर सकी।' मेरी आँखों में आंसू आ गए। 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि तुम मेरी जासूसी करोगे या सोचोगे कि मैं...'

'मैं तुम्हारी जासूसी क्यों नहीं करूँगा? हैं? मेरी बात सुने बिना नौकरी करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! तुम्हें क्या लगता है कि तुम्हारे भाई मुझे तुम्हारी नौकरी के बारे में नहीं बताएंगे!'

वे कमीने।

जब मैं पूरी तरह से घिर गई, तो मैंने वही किया जो मेघनाद जैसे पुरुषों के साथ कारगर होता है—उनके सामने झुक जाना। मैं रोने लगी। चीख-चीख कर, मेरा पूरा शरीर ऐसे कांप रहा था जैसे मुझे दौरा पड़ रहा हो। आंसू बहाना कोई मुश्किल काम नहीं है।

जब आप उस व्यक्ति के सामने हों जो हिंसा करने से बस एक कदम दूर है।

'OYE! RONA BAND KAR KUTTIYA! (रोना बंद करो, कुतिया!),' वह चिल्लाया। मैंने भी उसकी आवाज़ के बराबर चीख-चीख कर जवाब दिया।

'रोना बंद करो, क्या समस्या है!'

सिसकते हुए मैंने कहा, 'मैं तुम्हें... तुम्हें... गर्व महसूस कराना चाहती थी। तुम्हारे लिए कुछ पैसे कमाना चाहती थी, जानू।'

'क्या? तुम क्या बकवास कर रहे हो?'

'तुम... तुम मेरे परिवार के लिए इतना कुछ कर रही हो, जानू, और मैं तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं कर सकती...' मैं हकलाते हुए, हथेलियों में चेहरा छिपाकर रोने लगी।

'ठीक है, अद्वैत, रोना बंद करो। बस करो।'

मैंने उसके दिए हुए रुमाल में फूंक मारी और हकलाते हुए बोलना बंद कर दिया।

मेघनाद ने कहा, 'तुम्हें ये सब बकवास करने की ज़रूरत नहीं है, ठीक है?' 'तुम्हें क्या लगता है मेरे परिवार को इससे क्या फर्क पड़ेगा? क्या मैं अपनी जानू को काम पर लगा रहा हूँ? क्या मैं तुम्हें पैसे नहीं दे सकता?'

'यह पैसों की बात नहीं है। बात यह है कि मैं तुम्हारे लिए कुछ खास कर रहा हूँ।'

उसने आँखें घुमाईं।

मैंने उसकी आँखों से फिर से आँसू बहा दिए और उसका हाथ थाम लिया। ‘प्लीज, जानू। मैं भी तुम्हारी देखभाल करना चाहती हूँ। मैं तुम्हारी अच्छी जानू बनना चाहती हूँ।’शोनापत्नी।'

उसके चेहरे पर दया भाव उभर आया। जैसे मैंने उम्मीद ही की थी, उसे यह प्यारा लगा। 'तुम सब लड़कियाँ बस नादान हो। ठीक है, जानू, तुम काम कर सकती हो,' उसने कहा, और फिर थोड़ी देर रुककर बोला, 'लेकिन मैं उससे पहले मिलना चाहता हूँ। और जितनी जल्दी हो सके।'

7 फरवरी 2003

रघु और मैं काउंटडाउन में उसका इंतजार कर रहे थे।

रघु ने पूछा, 'क्या हमें कुछ ऑर्डर करना चाहिए? बॉस अपने कर्मचारी की मंगेतर से मिलने के लिए मंगेतर के ऑर्डर देने का इंतजार नहीं करेगा।'

‘तुम मेरे बॉस नहीं हो।’

‘आज के लिए मैं तैयार हूँ,’ उसने कहा और दो कोक ऑर्डर किए।

मेघनाद ठीक उसी समय आया जब आदेश दिया गया था, और उसने बड़े ही धूमधाम से प्रवेश किया। उसने कैशियर से हाथ मिलाया, मालिक से हाथ मिलाया, फिर यह सुनिश्चित किया कि सभी लोग उसे देखें और उसका अभिवादन करें, उसके बाद ही वह हमारे साथ बैठा।

‘तो आप ही हैं वो,’ उन्होंने कहा। ‘रघु गांगुली।’

रघु पल भर में बदल गया। उसकी आँखों में जो बेपरवाह, खोई हुई सी नज़र थी, वह तुरंत ठंडी घूरती निगाहों और ऊब में बदल गई। उसके चेहरे से साफ झलक रहा था कि यह सब समय की बर्बादी है।

‘और तुम उससे शादी कर रहे हो। मैं तुम्हारा नाम भूल गया था,’ उसने एक समाचार वाचक के लहजे में, भावहीन और तथ्यात्मक ढंग से कहा।

'अगर आप इस शहर से होते तो आपको पता होता, लेकिन आप नहीं हैं। मैं मेघनाद हूं। मैंने सुना है कि आप दिल्ली से हैं।'

रघु उसे घूरता रहा और काफी देर तक चुप रहा। वह बातचीत को अपने नियंत्रण में रखना चाहता था और मेघनाद को अपने जवाबों के लिए इंतजार करवाना ही उसका तरीका था।

'सही।'

‘तुम यहाँ क्यों आए? उस जैसे बड़े शहर से? तुम कहीं और थे।’झीलमेघनाद ने कहा, 'मुझे यकीन है, कोई मुसीबत है,' और फिर उसने मुझसे वो सवाल पूछा जिसका जवाब उसे कभी नहीं मिलेगा। 'तुमने क्या किया? कोई हादसा? किसी को पीटा? तुम किससे भाग रहे हो?'

रघु फिर चुप हो गया और आगे झुकते हुए बोला, 'मृत्यु।'

मेघनाद की आँखें चौड़ी हो गईं, और फिर उसने खुशी से मेज पर हाथ पटक दिया। 'मुझे पता था! तुम्हारी आँखों में दिख रहा है। क्या? क्या हुआ? किसी पैदल यात्री को कुचल दिया?'

या कोई मोटरसाइकिल
सवार?' 'भूल जाइए
मैंने ऐसा कहा था।'
मेघनाद ने कहा, 'ठीक है, कोई बात नहीं। हम इस बारे में बात नहीं करेंगे। चलिए मुद्दे पर आते हैं।' वह आगे झुका और भावहीन रघु को धमकी भरे अंदाज़ में देखा।
'हमें चाहिए।'
तो, वो आपके लिए काम कर रही है, लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, वो मेरी है। उसे पैसे नहीं चाहिए। आप जितना दे रहे हैं, मैं उसे उसका दुगुना दे सकता हूँ। मैं आपका पूरा कारोबार खरीद सकता हूँ। मेरे पास ज़्यादा पैसा है। वो जो कर रही है वो बस गुज़ारा कर रही है।
समय, ठीक है। ठीक है?
'हम्म । । ।'
इसलिए बेहतर होगा कि आप उससे ज्यादा काम न करवाएं। क्या यह बात स्पष्ट है?*Warna ladke bahut hai mere paas*(अन्यथा, मेरे इशारों पर चलने वाले बहुत सारे आदमी होंगे।)
रघु ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने अपनी कोक की चुस्की ली।
मेघनाद मुस्कुराते हुए आगे बोली, 'और वैसे भी, मैं तुम पर नजर रखूंगी।'
रघु ने लोहे की तरह ठंडी आवाज में जवाब दिया, "अगर आप मुझ पर इतना समय खर्च करने वाले हैं, तो कुछ छात्रों को मेरे पास भेज दीजिए। वे नहीं होंगे।" निराश। हम शहर में सबसे अच्छे हैं।' उसने शोर मचाते हुए अपनी कोक का आखिरी घूंट पिया। 'मुझे अब जाना चाहिए। मेरे छात्र मेरा इंतजार कर रहे हैं,' उसने कहा और उठ गया। 'क्या आप बिल का भुगतान कर सकते हैं?'
मेघनाद हैरान तो हुआ, लेकिन उसने बात मान ली। शायद उसे अच्छा लगा कि रघु ने उसकी श्रेष्ठता स्वीकार कर ली थी।
मेघनाद ने कहा, 'वह ठीक लग रहा है। लेकिन अगर उसने तुम्हें जरा भी अलग नजर से देखा, तो मुझे बता देना। मैं उसकी आंखें निकाल दूंगा।'
जब मैं वहाँ पहुँचा तो रघु अभी भी ट्यूशन सेंटर पर ही था। उसकी क्लास एक घंटे से बढ़कर दो घंटे की हो गई थी, और छात्रों के माता-पिता बाहर इंतज़ार कर रहे थे। वे चुपचाप देख रहे थे कि उनके बेटे सिर हिला रहे थे और सवाल पूछ रहे थे। मैंने माता-पिता से कहा कि वे अपने आस-पास के अन्य माता-पिता को हमारे कोचिंग संस्थान के बारे में बताएं। हालाँकि, यह व्यर्थ है। IIT की तैयारी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हर कोई जीतता है और कोई भी माता-पिता किसी और के बच्चों की मदद नहीं करेगा।
क्लास खत्म होने के बाद, हम बैठ गए और नए सिरे से नोट्स बनाना शुरू कर दिया।

11 फरवरी 2003

करण भैया और अंशुमन भैया के लिए अभी उठना बहुत जल्दी था। इसलिए जब मैंने उन्हें स्कूटर पर चुपके से कोने से मुड़ते हुए, दबी आवाज़ में बातें करते हुए और फटे-पुराने कपड़ों में देखा तो मैं हैरान रह गया। मैं पिछले कुछ दिनों की तरह ही छिप गया। वैद्य परिवार में मनीष चाचा की समलैंगिकता के आधार पर हुई सुलह नाजुक लग रही थी और मैं बुआजी, दादाजी या किसी के लिए भी अपना अस्तित्व खोना चाहता था।

हर कोई संभलकर चल रहा है, एक-दूसरे को ठेस न पहुँचाने की कोशिश कर रहा है और एक-दूसरे को उस नाजुक समझौते की याद दिला रहा है। इन सब में सबसे ज़्यादा आहत करण भैया हैं, जो मर्दानगी के प्रतीक माने जाते हैं। मानो समलैंगिक होना नीची जाति का होने से भी बदतर हो। वो मनीष चाचा के साथ मेरी माँ से भी बदतर बर्ताव कर रहे हैं। जहाँ भी चाचा होते हैं, वो वहाँ से निकल जाते हैं, चाचा की छुई किसी भी चीज़ को छूने से मना कर देते हैं, मानो वो कोई कोढ़ी हों, और यहाँ तक कि उन्हें उनके पहले नाम से पुकारते हैं। कल तो उन्होंने सुमित्रा से यहाँ तक कह दिया, 'चाची, आपको कुछ साल और इंतज़ार करना चाहिए था। मैं आपका ख्याल रखता।' बुआजी ने करण भैया को थप्पड़ मारा, लेकिन वो पीछे नहीं हटे। ऐसा लगता है मानो मनीष चाचा का समलैंगिक होना उनकी अपनी मर्दानगी को ठेस पहुँचा रहा हो।

मैं गेट के ऊपर से चढ़कर बिजली के बोर्ड के पीछे छिप गया और उन्हें स्कूटर के साथ अंदर आते हुए देखता रहा।

‘वो कमीना! तुमने कहा था कि बंगाली लोग बिल्कुल भी लड़ नहीं सकते,’ करण भैया ने कहा।

अंशुमन भैया ने लंगड़ाते हुए कहा, 'हम उसे अगली बार देखेंगे।'

जैसे-जैसे वे करीब आते गए, उनकी खून से सनी नाकें और फटे होंठ साफ दिखाई देने लगे। 'मैंने तुमसे कहा था कि हमें लाठी ले जानी चाहिए थी। एक ही वार में—'

अंशुमन भैया ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'और क्या? उस कमीने को मार डालेंगे? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?'

करण भैया ने कहा, 'हम उसे डरा सकते थे, उसे शहर छोड़ने पर मजबूर कर सकते थे।'

अंशुमन भैया ने कहा, 'इसके बारे में किसी को मत बताना।'

फिर वे फटी हुई, गंदी कमीजों से अपना चेहरा पोंछते हुए घर के अंदर चले गए। मैं तुरंत मुड़ा और भाग गया।

मेरे दिल की धड़कन तब रुकी जब मैंने रघु को कोचिंग संस्थान में देखा, जिसमें मेरे भाइयों के साथ हुई भीषण लड़ाई का कोई निशान नहीं था। उसने मुझे दरवाजे पर देखकर बेपरवाही से ऊपर देखा और कहा, 'मैं ठीक हूँ।'

वह बिल्कुल ठीक दिख रहा था, करण भैया और अंशुमन भैया जिन चोटिल चेहरों और अहंकार के साथ लौटे थे, उनसे बिलकुल अलग।

‘मेरे पास एक क्रिकेट बैट था। एक छात्र उसे यहीं छोड़ आया था,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। ‘अपना चेहरा दिखाओ,’ मैंने कहा।

चोटें और खरोंचें थीं, लेकिन उसने उन्हें बड़े करीने से पट्टी से बांध दिया था।

'मुझे माफ करना,' मैंने कहा।

‘यह आपके हाथ में नहीं था, है ना? आप भाई, वाकई शानदार हैं।’

‘भगवान ही जाने वे क्या हासिल करने की कोशिश कर रहे थे।’

“इस बारे में अपने भाइयों से बहस मत करो। हमारा रिश्ता अच्छा चल रहा है। इसे खराब मत करो। हमें बस आगे के काम पर ध्यान देना है। बस कुछ और अच्छे महीने बाकी हैं और हम अपना लक्ष्य हासिल कर लेंगे।”

जो कुछ हुआ उस पर मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई और मैं सब कुछ ठीक करना चाहता था। रघु ने बिल्कुल भी नाराज़ न होकर मामले को और भी जटिल बना दिया।

उन्होंने आगे कहा, ‘हमारे पास इसके लिए समय और ऊर्जा नहीं है। बहुत काम करना बाकी है। मैं हिंदी को भी जोड़ने के बारे में सोच रहा हूँ। क्या आप इसमें मदद कर पाएंगे?’

क्या मैं उसे पढ़ा सकता हूँ? आठवीं से

दसवीं कक्षा तक?’ ‘बिना किसी परेशानी

के।’

हम काम पर वापस लौट आए।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

17 फरवरी 2003

सुबह ऐसा लग रहा था मानो मेरे जीवन की नई शुरुआत हो रही हो। धूप खिली थी, बढ़िया चाय थी, गर्मजोशी से गले मिलना था, आरामदायक माहौल था, प्यार था, वो सब कुछ था जिसका मैंने कभी सपना देखा था। जब मैं सुबह कोचिंग संस्थान पहुंची, तो वहां पांच माता-पिता धैर्यपूर्वक मेरा इंतजार कर रहे थे। पांच! मुझे तब गुस्सा आया जब उन्होंने किसी लड़की से बात करने के बजाय शिक्षक या कोचिंग संस्थान के मालिक से बात करने की ज़िद की। मेरा मन तो उन्हें वापस भेजने का कर रहा था, लेकिन वे पैसे खर्च करने के लिए बेताब लग रहे थे, और पैसा ही सब कुछ है।

मैंने उनसे कहा, 'मैं इस जगह का मालिक और संचालक हूँ,' और यह देखकर उनके चेहरे तुरंत उतर गए। वे चौंक गए और शायद सोचने लगे कि कहीं उन्होंने शिक्षक या संस्थान के बारे में गलत तो नहीं सुना, या कहीं यह सब कोई धोखा तो नहीं है। उनमें से कुछ तो पीछे हट गए, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे सही कोचिंग संस्थान में आए हैं या नहीं। मैं उन्हें देखता रहा, उनके संदेह को देखकर मैंने कहा, 'आप प्रवेश के लिए आए हैं, है ना? मैं आपको फीस के बारे में बता सकता हूँ।' अगर आप संरचना और कक्षा का कार्यक्रम देखना चाहते हैं तो

देख सकते हैं।' 'बीटा, तुम—'

'मेरे पास कभी अच्छे कॉलेज में जाने की तैयारी करने के लिए संसाधन नहीं थे, लेकिन आपके पास होते हैं।'

मैं आपको बताता हूं कि हम इसे कैसे कर सकते हैं।

अब काफी बेहतर महसूस कर रहे माता-पिता आगे बढ़े और कुर्सियों पर बैठ गए। बाकी सब कुछ अपने आप हो गया। आदत के चलते, कुछ लोग मोलभाव करना चाहते थे, लेकिन यह उनकी गलती थी कि उन्होंने पहले मुझे चिढ़ा दिया था। जैसे ही वे फॉर्म भर रहे थे, मेरा मन कर रहा था कि मैं हाथ उठाऊं, उंगलियां चटकाऊं और छोटू से कहूं कि वह माता-पिता को चाय पिलाए। मैं अभी इस विचार में ही उलझा हुआ था कि रघु गर्म चाय से भरी प्लास्टिक की प्यालियों वाली ट्रे लेकर अंदर आया।

उन्होंने अभिभावकों से कहा, 'हम बच्चों का अच्छे से ख्याल रखेंगे।'

मैंने कहा, 'वह तुम्हारे बच्चों को पढ़ाएगा,' और मैंने वे नोट्स निकाले जो हमने तैयार किए थे, अब साइक्लोस्टाइल प्रिंटिंग से सुंदर ढंग से बंधे हुए थे। 'ये हैं

ये व्यक्तिगत नोट्स सिर्फ हमारे छात्रों के लिए हैं। ये आपको बाजार में नहीं मिलेंगे और न ही आप इन्हें अलग से खरीद सकते हैं। इससे हमारे छात्रों को एक अलग ही फायदा मिलता है।'

माता-पिता ने आज्ञाकारी भाव से सिर हिलाया।

मैंने कहा, 'हम चाहते हैं कि माता-पिता इसमें अधिक सक्रिय भूमिका निभाएं। हम नहीं चाहते कि आप बच्चों पर दबाव डालें, बल्कि उनके बोझ को साझा करें। आईआईटी की तैयारी के लिए शांत मन की आवश्यकता होती है, इसलिए हमें आपसे अनुरोध है कि आप अपने बच्चे के साथ बैठें, उसकी पढ़ाई पर चर्चा करें और उसे प्रोत्साहित करें।'

रघु ने अपनी आँखें घुमाईं।

अभिभावक मन ही मन सब कुछ नोट कर रहे थे। उनकी पहले की घबराहट धीरे-धीरे इस प्रक्रिया की समझ और इस एक कमरे-एक शिक्षक वाले संस्थान के प्रति सम्मान में बदल गई थी।

तभी एक बेहद समझदार अभिभावक ने रघु से पूछा, 'क्या आपने किसी ऐसे व्यक्ति को पढ़ाया है जिसने आईआईटी परीक्षा उत्तीर्ण की हो?'

रघु ने बड़ी चतुराई से झूठ बोला, जिससे मैं भी हैरान रह गया। 'मैंने दिल्ली में पढ़ाया है। लेकिन वहाँ का माहौल सिर्फ पैसे का है, आत्मा का नहीं। मैं उस ढर्रे पर नहीं फंसना चाहता था, इसलिए मैं यहाँ आया ताकि मैं सचमुच लोगों की मदद कर सकूँ। आप समझ सकते हैं कि हमारी फीस इतनी उदार क्यों है।'

अभिभावक ने सिर हिलाया।

मैंने उनसे कहा, 'मेरे पास सारी जानकारी है और उनका टाइम टेबल बनाते ही मैं आपको फोन कर दूंगी। आपको अपने बच्चों को यह बताना होगा कि अब से उन्हें अपनी सारी ऊर्जा यहाँ पढ़ाई पर लगानी है, न कि स्कूल में होने वाली गतिविधियों पर। क्या आप ऐसा कर सकते हैं?'

उन्होंने सिर हिलाया।

जब वे चले गए, तो मैं खुशी से झूम उठा और मेजों के ऊपर से उछलते हुए थोड़ा सा खुशी से नाचने लगा, जबकि रघु चुपचाप बैठा देखता और मुस्कुराता रहा।

मैंने कहा, 'मुझे माफ करना। मुझे लगा कि मैं मन ही मन नाच

रही थी।' उन्होंने कहा, 'यह बहुत खूबसूरत था।'

क्लास खत्म होते ही मैं सीधे पीसीओ (प्राइवेट ऑफिस) भागी और दिव्या दीदी को फोन किया। मैंने करीब एक घंटा इंतजार किया और जब आखिरकार फोन की घंटी बजी और मुझे बुलाया गया, तो खुशी से मेरे घुटने कांप रहे थे और उंगलियां फड़क रही थीं।

'तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि अभी क्या हुआ!' मैंने चीख कर कहा।

फ़ोन।

‘बिल्कुल! तुम पहले जाओ!’

और मैंने उसे हांफते हुए उन पांच नए छात्रों के बारे में बताया, उस नई फीस संरचना के बारे में बताया जो मैंने उन्हें बेची थी, और यह भी बताया कि इससे हमें कितना पैसा मिलेगा।

मैंने उससे पूछा, 'तुम मुझे क्या बताना चाहती थी?' मैं अभी भी उत्साह से झूम रही थी।

दिव्या दी की आवाज थोड़ी लड़खड़ा गई।

उन्होंने कहा, 'आपको मेरी बात पूरी तरह से सुननी होगी और खुले दिमाग से सोचना होगा।'

'साफ-साफ बता दो, दी।'

'अद्वैता, तुम जानती हो कि मेघनाद तुम्हें चैन से नहीं रहने देगा,' उसने कहा। 'मतलब तुम जो कर रही हो... वो बहुत अच्छा है। लेकिन मैं जानती हूँ कि वो कैसा है। वो तुम्हें अपनी मनमर्जी से जीने नहीं देगा।'

'आपका क्या मतलब है?'

क्या तुम्हें लगता है कि जब तुम घर और शादी छोड़कर जाओगी तो बुआजी तुम्हारे सिर्फ रिसेप्शनिस्ट होने की बात को चुपचाप सह लेंगे? उनके लिए कुछ लड़कों को बहला-फुसलाकर संस्थान को बर्बाद करना कितना मुश्किल है? बच्चों और अभिभावकों को डराकर भगा देना? क्या तुमने इस बारे में सोचा है? वहाँ तुम्हारे लिए सुरक्षित नहीं है।

'प्लीज, दी, तुम जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया दे रही हो।'

'अद्वैत, अगर तुम उसे ठुकरा दोगी तो तुम देहरादून में नहीं रह पाओगी। तुम दिल्ली में भी नहीं रह पाओगी!' दी ने कहा।

'प्लीज़, दीदी। बिल्कुल कर सकती हूँ!' मैंने लड़खड़ाती आवाज़ में विरोध किया। 'मूर्ख मत बनो, अद्वैत। शांत हो जाओ और मेरी बात सुनो!'

वह ज़्यादा से ज़्यादा क्या कर सकता है?

'वह तुम्हें सांस भी नहीं लेने देगा। मुझे नहीं पता कि मम्मी और पापा तुम्हें इसमें क्यों बढ़ावा दे रहे हैं,' दिव्या दी ने कहा।

'मैं कॉल काट रहा हूँ। मेरे पास इस बकवास के लिए समय नहीं है।' 'अद्वैत, मेरी बात सुनो—'

'क्या!' मैंने चिल्लाकर कहा।

'ध्यान से सुनो,' उसने कहा। 'मैं अमीरात के पहले दौर में सफल हो गई हूँ—'

'मुझे परवाह नहीं है!'

'क्या आप मेरी बात सुनेंगे!?' उसने झल्लाकर कहा। 'यह दुबई स्थित एक एयरलाइन है। मुझे दो और दौर और एक मेडिकल टेस्ट पास करना होगा, और उसके बाद ही वे मुझे नौकरी देंगे।'

एयर होस्टेस की नौकरी। इसमें अच्छी कमाई होगी और रहने के लिए जगह भी मिल जाएगी। तो मम्मी और पापा, अब आप ये करें।'

हम कुछ नहीं करेंगे!

मम्मी और पापा के पासपोर्ट मुझे भेज दो। दिल्ली आओ और अपना पासपोर्ट बनवा लो।*tatkal*. मैं आपके वीजा का इंतजाम करवा दूंगा, और जैसे ही सारी प्रक्रियाएं पूरी हो जाएंगी, आप सब मेरे साथ आ जाएंगे।'

'मैं नहीं हूँ!'

'तुम वही करोगे जो मैं तुमसे करने को कहूंगा!'

मैं सब कुछ छोड़कर वहां क्यों आऊँगी! पहली बार मेरी ज़िंदगी में कुछ अच्छा हो रहा है! तुम जो चाहो करो, लेकिन मैं नहीं जा रही और न ही मम्मी-पापा जाएँगे!

'आप वास्तव में कर रहे हैं वह क्या तुम बेवकूफ हो?

मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। 'अगर तुम सफल नहीं हुए तो क्या होगा? क्या अभी दो और राउंड नहीं हैं?'

'मैं इसे कर दिखाऊंगा, अद्वैत, तुम यह जानते हो।'

'क्या पता! तुम भी उतने अच्छे नहीं हो!'

जब मैं घर वापस आई, तो मम्मी ने पूछा कि क्या मैंने आज दीदी से बात की थी, और मैंने उन्हें बताया कि नहीं। मैं वो रास्ता नहीं अपनाऊँगी जो उन्होंने चुना था। मैंने अपना रास्ता खुद बना लिया था, और मम्मी और पापा मेरे साथ ही रहने वाले थे।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

20 फरवरी 2003

उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वे बस मुझे घूरते रहे, ऐसे शब्द ढूंढने की कोशिश कर रहे थे जिनसे मुझे ठेस न पहुंचे।

‘मम्मा,’ मैंने कहा। ‘मैं इसे छोड़ना नहीं चाहती। पहली बार मैं कुछ हासिल कर रही हूँ और... मैं इससे भागना नहीं चाहती।’

मम्मी और पापा ने एक-दूसरे को देखा और आह भरी।

मम्मी ने कहा, 'अद्वैत बेटा, हम जानते हैं। मैं समझती हूँ, लेकिन तुम्हें इस बारे में अच्छे से सोचना होगा। तुम दोनों जो भी फैसला करोगे, हम उसका साथ देंगे।'

पापा ने कांपती आवाज में कहा, 'मम्मा सही कह रही हैं। और अभी फैसला लेने की जरूरत नहीं है। अभी दो राउंड बाकी हैं, है ना?'

मैंने धीरे से कहा, 'मेरा पासपोर्ट अभी बनवाना होगा। अगर वह पहुँच जाती है, तो वीजा पर मुहर लगवानी होगी।'

मम्मी और पापा ने एक-दूसरे को पलक झपकते ही देखा और फिर मम्मी बोलीं, 'देखो, इसे बनवाने में कोई बुराई नहीं है। अगर हमें इसकी ज़रूरत नहीं होगी तो हम इसका इस्तेमाल नहीं करेंगे।'

काश उन्होंने मुझे थप्पड़ मारा होता और कहा होता कि उन्होंने मेरे लिए फैसला ले लिया है, तो मैं उन पर सही मायनों में गुस्सा हो जाता और यहां से गुस्से में बाहर निकल जाता।

‘मम्मा, आप दी का साथ दे रही हैं।’

‘अद्वैता, ऐसा नहीं है।’

मैंने कहा, ‘डरने की कोई बात नहीं! ज़्यादा से ज़्यादा क्या होगा? दादाजी हमें घर से निकाल देंगे, मेघनाद और उसका परिवार थोड़ा नखरे दिखाएगा, लेकिन देर-सवेर वे हमें छोड़ ही देंगे! मैं सब संभाल लूंगी।’

‘क्या तुम सच में यही सोचती हो?’ मम्मी ने पूछा।

‘हाँ,’ मैंने झूठ बोला।

‘अगर तुम्हें यही लगता है, तो तुम्हें यही करना चाहिए,’ मम्मी ने कहा। ‘मैं दिव्या को बता दूंगी कि हम नहीं आएंगे।’ उन्होंने मेरे चेहरे पर उंगलियां फेरते हुए मुझे गले लगा लिया।

अब जब मैं यह लिख रही हूँ, तो धीरे-धीरे यह बात समझ में आने लगी है। दी दुबई में ही रहने वाली है। एक दिन, एक हफ़्ते या एक महीने के लिए नहीं, बल्कि जब तक उसकी नौकरी रहेगी। वह एक गैर-भारतीय प्रवासी (एनआरआई) बनने वाली है। एक एनआरआई?! और अगर हम उसके साथ चले गए, तो हम भी एनआरआई बन जाएँगे। हम वहीं रह जाएँगे। यह एक अलग ही ज़िंदगी होगी, हमारे अतीत से दूर, इस शहर से दूर जिसने हमें सिर्फ़ असहनीय दर्द और अपमान ही दिया है।

क्या मैं स्वार्थी हो रही हूँ? अगर मैं दी की जगह होती, तो क्या मैं उससे मेरी बात मानने की उम्मीद करती? हाँ, ज़रूर करती, लेकिन दी शायद मान नहीं जाती। या शायद मान भी जाती। वो इसके लिए मॉडलिंग का अपना सपना छोड़ने को तैयार है। वो बहुत करीब थी। अगर वो कोशिश करती, तो मिस इंडिया बन सकती थी।

लेकिन बीसीसी को छोड़ने के बारे में सोचना भी बहुत मुश्किल है। आखिरकार, यह मुझे घर जैसा लगने लगा है। क्या यही वजह है कि मम्मी-पापा कभी भागने की कोशिश नहीं करते थे? क्या यह डर था या पुरानी यादों का एक विकृत रूप? अगर मुझे मौका मिले, तो क्या मैं अपने गृहनगर, अपने बचपन के घर वापस आना चाहूँगी, चाहे हालात कितने भी बुरे क्यों न हों?

और रघु का क्या? मैं उसका क्या करूँ? क्या उसे देहरादून में मेघनाद और अपने भाइयों के भरोसे छोड़ दूँ? जब से मैं उससे मिली हूँ, पहली बार वो खोया हुआ या टूटा हुआ नहीं लग रहा। वो खुश दिख रहा है। उसे उस दलदल से बाहर निकालने के बाद, मैं अपने सबसे अच्छे दोस्त को कैसे छोड़ सकती हूँ?

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

21 फरवरी 2003

दी ने इस खबर को हल्के में नहीं लिया। वह फोन पर चीखी-चिल्लाई और रोई, और धमकी दी कि अगर मैं स्वेच्छा से उसके साथ नहीं गया तो वह मेरा सिर दीवार पर पटक देगी और मुझे अपने साथ दुबई ले जाएगी।

मैंने उससे पूछा, 'क्या तुम भी ऐसा ही करती?'

'बेशक, बेवकूफ! मैं भी यही करती,' वह चिल्लाई। 'मैं उसी पल अपना सामान पैक करके निकल जाती। मेरी बात सुनो, मूर्ख, मैं मम्मी और पापा को यहाँ से ले जा रही हूँ। अगर तुमने मुझे रोकने की कोशिश की, तो तुम्हें इसका अंजाम भुगतना पड़ेगा। अगर तुम उस घटिया शहर में, उन घटिया लोगों के साथ रहना चाहते हो, तो यह तुम्हारी मर्जी है। तुम अपनी जिंदगी बर्बाद करने के लिए स्वतंत्र हो, लेकिन मैं मम्मी और पापा को अपने साथ ले जा रही हूँ। अब तुम घर जाओ और मम्मी-पापा से कहो कि वे अपने पासपोर्ट मुझे भेज दें, ठीक है? और तुम भी अपना पासपोर्ट बनवा लोगी। समझी?'

मैंने कहा, 'मैं ऐसा कुछ नहीं कर रहा हूँ!'

'मैं तुम्हें ज़ोर से थप्पड़ मारूंगी!' उसने कहा। 'देखो, अद्वैत, मेरे पास इसके लिए समय नहीं है, ठीक है—'

मैंने झल्लाकर कहा, 'मैं भी नहीं।' 'और तुम्हारे विपरीत, मैं यहाँ एक व्यवसाय चलाता हूँ!'

'तुम्हें क्या हो गया है? क्या तुम बिल्कुल पागल हो गई हो? रुको। रुको! मुझे पता है क्या बात है। तुम उस लड़के से प्यार करती हो, है ना?' उसने कहा।

'नहीं!'

'बेशक तुम उससे प्यार करती हो!' उसने कहा। 'मैं नहीं

करती, दी, और तुम्हें यह बात समझनी होगी—'

'अद्वैत, मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना,' उसने कहा। 'मेरे पास इसके लिए समय नहीं है। तुम वो आखिरी व्यक्ति हो जिससे मैं झगड़ा करना चाहती हूँ। अगर तुम यह नहीं समझ पा रहे हो कि हमारे पिछले जीवन से भागने का यही सबसे अच्छा मौका है, तो मैं तुम्हें समझाने में समय बर्बाद नहीं करूँगी क्योंकि साफ है कि तुम्हें अपनी बहन से ज्यादा एक लड़के पर भरोसा है।'

'मैं नहीं!'

‘हाँ, तुम्हें पता चल गया होगा। क्या तुमने यह नहीं कहा था कि तुम्हें तब पता चलेगा कि तुम प्यार में हो जब तुम किसी लड़के के लिए अपने परिवार को छोड़ दोगी? खैर, वह समय आ गया है और तुमने एक पक्ष चुन लिया है!’

‘बकवास। अगर तुम्हारी नौकरी चली गई तो—’

उसने गुस्से में फोन पटक दिया।

जब मैं घर वापस आई, तो मैंने मम्मी और पापा को बिठाकर अपने फैसले के बारे में बताया। उन्हें मेरी वजह से कष्ट सहने की ज़रूरत नहीं थी।

मैंने उनसे कहा, ‘तुम्हें यहाँ रुकने की कोई ज़रूरत नहीं है। जब तुम दिव्या दीदी के साथ चली जाओगी, तो मैं तुम्हारे लिए रहने की जगह ढूंढ लूंगी। तुम एक बेहतर ज़िंदगी की हकदार हो।’

माँ ने मुझे अजीब नज़रों से देखा। ‘अरे!’ उन्होंने मेरा मज़ाक उड़ाते हुए कहा। ‘बेहतर ज़िंदगी की हकदार हो क्या? देखो तुम्हारी बेटी कैसे बातें कर रही है।’

पापा भी हंसने लगे और उन्माद में अपनी जांघों पर थपथपाने लगे।

‘तुम इस तरह बोलना कहाँ से सीखे?’ वह हँसते हुए बोली। ‘हम कहीं नहीं जा रहे। अगर तुम यहीं रुकोगे, तो हम भी यहीं रहेंगे।’

मम्मी ने पापा से कहा, ‘आजकल के बच्चे खुद को बहुत होशियार समझते हैं।’

पापा हँसे और मेरी ही बात दोहराते हुए मुझे क्यूट कहने लगे।

मैंने गुस्से में माँ से पूछा, ‘मैंने जो कहा उसमें गलत क्या है?’ पापा ने

कहा, ‘जब तुम्हारे अपने बच्चे होंगे तब तुम्हें पता चल जाएगा।’

‘मैं सालों से ये बकवास सुन रही हूँ। मुझे तब पता चलेगा जब मेरे बच्चे होंगे! अगर बच्चे होने पर दिमाग सुन्न हो जाता है, तो मुझे बच्चे नहीं चाहिए!’ मैंने कहा और गुस्से में घर से बाहर निकल गई।

जब मैं अंदर आया तो रघु ने अभी-अभी आखिरी क्लास खत्म की थी। उसने ऊपर देखा और कहा, 'देखो कौन आया है। मुझे लगा था कि तुम मुझे छोड़कर चले गए थे।'

मैं एक पल के लिए सहम गई। ऐसा लगा जैसे उसे सब कुछ पता हो। 'मैं ऐसा कभी

नहीं करूंगी,' मैंने कहा। 'मुझे आपसे कुछ बात करनी है।'

के बारे में।'

‘बताओ। हमारे पास समय है, और मैंने अभी-अभी बर्तन गैस पर रखा है।’ वह मुस्कुराया। हे भगवान!

वो मुस्कान। मैं उससे वो मुस्कान कभी नहीं छीन सकता।

मैंने दिव्या दी के पूरे मामले पर यथासंभव तटस्थ रहने की कोशिश की ताकि उस पर कोई प्रभाव न पड़े। लेकिन जब मैं बोल ही रही थी, मैंने देखा कि उसकी आँखों की चमक फीकी पड़ गई, मानो वह पहले से ही संस्थान के बंद होने या हमारे बीच दोस्ती टूटने और मीलों दूर ज़मीन, पानी और रेगिस्तान के अलग होने की कल्पना कर रहा हो।

उसने इन सब बातों को अपने चेहरे पर न दिखाने की कोशिश की, लेकिन ये सब दिख ही गया। वह निराश था, दुखी था, लेकिन सबसे ज़्यादा उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसे छोड़ दिया गया हो।

मेरी बात सुनने के बाद उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है तुम्हें भी जाना चाहिए।' उनकी निराशा साफ झलक रही थी, लेकिन उनकी बातों से लग रहा था कि वे सच में ऐसा कह रहे हैं।

'यह सब कुछ वैसा ही होगा जैसा तुम हमेशा से चाहते थे,' उसने कहा। 'तुम वहाँ कुछ कर सकते हो। मैंने सुना है कि दुबई में बहुत काम है।' उसने बनावटी मुस्कान दी और मैंने उसे ऐसा करते पहली बार देखा था। यह बहुत दयनीय था।

'मैं तुम्हें बीच में ही नहीं छोड़ूंगा।' उसने मेरी बात
काट दी।

'सुनो, अद्वैत। मैं यहीं रुककर इसे संभालूंगा। शायद तुम्हारे सहयोग के बिना उतना अच्छा न हो पाए, लेकिन मैं छात्रों को बीच में नहीं छोड़ूंगा। और तुम्हें पता है, जब हालात सामान्य हो जाएंगे तो तुम वापस आ सकती हो, है ना?'

'मैं चाहती थी कि तुम मुझे रोक लो। मैं जाना नहीं
चाहती।' 'लेकिन तुम जानती हो कि तुम्हें जाना ही होगा,
है ना?'
मैंने पूछा, 'क्या आप ऐसा सोच सकते हैं?'

'यह आपके लिए सबसे अच्छा विकल्प है। यह एक सुरक्षित विकल्प है, और आपको इसे अपनाना चाहिए,' उसने कहा। 'मैं अपने सबसे अच्छे दोस्त को नहीं छोड़ सकती,' मैंने कहा।

'अगर मैं यह न देखूं कि यह तुम्हारे लिए सबसे अच्छा फैसला है, तो मैं किस तरह का सच्चा दोस्त कहलाऊंगा? यह तुम्हारे लिए मैं कम से कम कर सकता हूं।'

'यह गलत लगता है।'

'तुम मेरे जीवन के सबसे निराशावादी दौर में मेरे दोस्त बने, जब मैं हर किसी में केवल बुराई ही देखता था, जब मुझे पक्का यकीन था कि लोगों से मुझे केवल दुख ही मिलेगा। उस समय जब मुझे लगता था कि मैं पल-पल, दिन-रात, बस अस्तित्व बनाए रखूंगा, जीता रहूंगा। मैं पूरी तरह टूट चुका था।'

'और मैंने तुम्हें ठीक कर दिया?' मैंने उदास मुस्कान के साथ पूछा।

'मान लीजिए कि आपने उस समस्या पर पट्टी लगा दी है। खुद को इतना श्रेय मत दीजिए।'

हम दोनों दयनीय ढंग से हँसे।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

23 फरवरी 2003

रघु पूरी कोशिश कर रहा है कि ऐसा लगे कि हमारे बीच कुछ भी नहीं बदला है। वो जितना सामान्य व्यवहार करता है, मैं उतनी ही बेचैन हो जाती हूँ।

उसने मान लिया है कि फैसला हो चुका है। बातचीत खोखली हो गई है। बस समय बिताने के लिए हो रही है। ऐसा लगता है जैसे हम रेलवे स्टेशन पर पहुँच गए हैं, ट्रेन छूटने वाली है, और अब कुछ भी ऐसा नहीं बचा जो पहले न कहा गया हो। मुझे रघु की वह झलकियाँ फिर से दिखाई दे रही हैं जो मुझे उससे पहली बार मिलने पर दिखी थीं। कई बार मैं उसे किताबों को खाली निगाहों से घूरते हुए देखता हूँ, और जब मैं इस ओर ध्यान दिलाता हूँ, तो वह इसे नज़रअंदाज़ कर देता है। मैं उसे दोष नहीं देता, अगर मैं उसकी जगह होता तो मेरा हाल और भी बुरा होता।

जब भी मैंने बातचीत शुरू करने की कोशिश की है, उसने मुझे चुप करा दिया है और कहा है कि मुझे अपने फैसले से पीछे नहीं हटना चाहिए।

लेकिन मैंने क्या फैसला किया है?

मम्मी और पापा की सोच बिल्कुल अलग है। उनका मानना है कि मैंने यहीं रहने का फैसला कर लिया है। हम बीसीसी के बारे में बात करते हैं, लेकिन दी की नई नौकरी, दूसरे देश में उसके जीवन को बदल देने वाले इस कदम के बारे में नहीं।

मैंने दीदी को फोन नहीं किया है, और जहाँ तक मुझे समझ आ रहा है, मम्मी और पापा ने भी उनसे बात नहीं की है।

आज रात मैं मेघनाद को देखना बिल्कुल नहीं चाहती थी, लेकिन वो वहीं था, और क्यों न देखता, उसने मेरे लिए पूरा खर्च उठा लिया था। मैंने अभी-अभी फर्श साफ किया था और थोड़ी देर सोना चाहती थी, तभी उसने घंटी बजाई और किसी के दरवाजा खोलने से पहले ही अंदर आ गया। रात के ग्यारह बज रहे थे।

उसके पैर लड़खड़ा रहे थे और वह दो बार ठोकर खाकर गिर पड़ा, जिससे एक फूलदान गिर गया। बुआजी और फुफाजी तुरंत मुस्कुरा उठे, मानो हज़ार वाट के बल्ब चमक रहे हों। 'बेटा, संभल कर,' बुआजी ने कहा।

लेकिन जैसे-जैसे वह हमारे करीब आता गया, हमें यकीन होता गया कि वह नशे में है। उसकी आँखें लाल थीं और होठों से लार टपक रही थी। वह अपनी आँखें खुली रखने के लिए संघर्ष कर रहा था। उसकी जेब से एक छोटी बोतल झाँक रही थी। उससे पसीने की बदबू आ रही थी।

शराब। उसकी कमीज़ के तीन बटन खुले थे, और वह अपने जूतों से कीचड़ में घिसटता हुआ आया था।

‘हम फिल्म देखेंगे। मैं और मेरी मंगेतर! अभी!’ उसने नशे में होने की बात छुपाने की पूरी कोशिश करते हुए ऐलान किया। वह दुनिया को चकरा देने की कोशिश में कमरे में इधर-उधर लड़खड़ाता रहा।

मम्मी और पापा दौड़ते हुए बाहर आए और उन्होंने मेघनाद को लड़खड़ाते हुए और बेकार में सीधे खड़े होने और होश में होने का नाटक करते हुए देखा।

‘हेलो! हेलो! मेरे ससुराल वाले! मुझे मेरे ससुराल वाले बहुत प्यारे हैं, प्रणाम, प्रणाम,’ उसने कहा और मम्मी और पापा के पैर छुए, लगभग गिरते-गिरते बचा।

‘हाय,’ उसने कहा और मेरी तरफ देखकर आँख मारी। ‘चलें? मेरे कुछ बड़े प्लान हैं।’ वह हँसा। ‘बहुत मज़ा आएगा!’

जैसे ही वह मुड़ा, पापा ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया। पापा ने कहा, 'तुम्हें हमारे साथ बैठकर खाना खाना चाहिए।'

मेघनाद ने अपने पेट पर हाथ मारते हुए कहा, 'पापा! मुझे पता था आप यही कहेंगे, लेकिन मेरा पेट भरा हुआ है। मैं अपनी होने वाली पत्नी को लेने आया हूँ। क्या मैं ऐसा कर सकता हूँ? मुझे उसे बताना है कि मैं उससे प्यार करता हूँ! मुझे उससे प्यार करना है! क्या मैं इसी के लिए पैसे नहीं दे रहा हूँ!' वह फिर से खिलखिलाकर हँसा। उसके लिए यह सब एक मज़ाक था। मुझे आश्चर्य हुआ कि अगले दिन उसे इनमें से कितना याद रहेगा।

पापा ने कठोर और सख्त आवाज में कहा, 'तुम्हें हमारे साथ बैठना चाहिए।'

मेघनाद को अब समझ आ गया था कि पापा गंभीर थे, और उनकी पकड़ इतनी मज़बूत थी कि कोई भी आदमी उसे इतनी मज़बूती से पकड़ने की हिम्मत नहीं करता। उसने अपना हाथ छुड़ाया और कहा, 'मैंने सोचा था कि मेरी शादी एक अच्छे परिवार में हो रही है। लेकिन ऐसे परिवार में शादी करने का क्या फायदा?'
'परिवार के लोग शिष्टाचार नहीं निभा सकते। वह मेरी मंगेतर है!' उसने पापा को घूरकर देखा।

‘वह नहीं जा सकती,’ पापा ने कहा।

पापा, *par vo to parayi ho gayi hai* (अब वह तुम्हारी नहीं रही),’ मेघनाद ने शरारती अंदाज में कहा।

फिर वह मेरी तरफ मुड़ा और मुस्कुराया। बुआजी और फूफाजी भी इस सब को लेकर असमंजस में थे। करण भैया और अंशुमन भैया वहीं खड़े रह गए, मानो पैर ज़मीन पर जमा लिए हों, असमंजस में। करण भैया मेघनाद को रोकने के लिए आगे बढ़े भी, लेकिन अंशुमन भैया ने उनका हाथ थाम लिया, दुर्भावना से नहीं, बल्कि यह जानते हुए कि उनके शब्दों से मेघनाद नहीं रुकेगा। यहाँ तक कि उन्हें भी मेघनाद का यह कृत्य निंदनीय लगा।

मेघनाद मेरी तरफ कुछ कदम बढ़ा ही रही थी कि मेरे मुंह से ये शब्द निकल गए। ‘मुझे मासिक धर्म हो रहा है। आज पहला दिन है।’

'आपका क्या मतलब है?'

मैंने देखा कि उसका चेहरा उतर गया, उसके होंठ सिकुड़ गए, उसकी भौहें तन गईं और उसके चेहरे पर घृणा के भाव छा गए। वह वहीं खड़ा मुझे देखता रहा और बोला, 'अरे, फिर से!' और मुझसे मुंह फेर लिया। 'अच्छी शराब की ऐसी बर्बादी!'

बिना कुछ कहे, वह जाने के लिए मुड़ गया। हम सब उसे स्तब्ध होकर देखते रहे, जब तक कि वह दरवाजे तक नहीं पहुँच गया, तब तक वह कई बार लड़खड़ाया। हमने उसकी कार के स्टार्ट होने का इंतज़ार किया। लेकिन वह बहुत ज़्यादा नशे में था। गाड़ी चलाते-चलाते ही उसे नींद आ गई। माँ मुझे गोद में लिए रोते-रोते सो गई। पापा आँगन में इधर-उधर लड़खड़ाते रहे, कहीं मेघनाद नींद से जाग न जाए और मुझे फिर से ले जाने की कोशिश न करे।

जब मैं यह लिख रही हूँ, तब सुबह के शुरुआती घंटे हैं। मेरे हाथ अभी भी काँप रहे हैं, और ऐसा लग रहा है जैसे मुझे हल्का बुखार हो रहा है। वह दस मिनट पहले उठा और बिना देखे हमारी घर की तरफ गाड़ी चलाकर निकल गया। मैं यह लिखना नहीं चाहती, लेकिन पूरी रात मेरे दिमाग में बस एक ही बात घूमती रही... कल रात मेरे मंगेतर ने मेरा बलात्कार कर दिया होता। और यह तो बस शुरुआत होती। मैं इस बात को अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रही हूँ।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

24 फरवरी 2003

दोपहर के समय, हैंगओवर से ग्रस्त मेघनाद और मैं काउंटडाउन में थे।

वह बेशर्मी से मुझे घर से लेने आया था। मैंने उसके लिए चाय बनाई, जबकि वह बेशर्मी से बैठक में बैठा था और बुआजी से अपने नशे में किए गए व्यवहार के लिए आधे मन से माफी मांग रहा था, जिसे बुआजी ने खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया। वह मम्मी और पापा के लिए फूल लाया और उनके पैर छुए। मम्मी और पापा ने उसकी लंबी उम्र की कामना की।

बुआज ने कहा था, 'अगर युवा लड़के ऐसा नहीं करेंगे तो कौन करेगा?'

वह मुझसे बात करने के लिए मुझे परेशान करता रहा, और मेरी चुप्पी ने उसे क्रोधित कर दिया, मानो यह मेरी गलती हो, उसकी नहीं।

मैंने कहा, 'मुझे भूख नहीं है।'

'अरे, ऐसा मत करो। ये कोई बड़ी बात नहीं थी।'

'अगर तुम ऐसा कहते हो तो ठीक है।'

'तुम अब भी इस बात पर गुस्सा क्यों हो? तुम्हारे मम्मी-पापा को भी इससे कोई दिक्कत नहीं थी। तुम अब भी गुस्सा नहीं हो सकते,' उसने झुंझलाहट में आंखें घुमाते हुए कहा।

मैंने कहा, 'क्या आप मुझे शाम से पहले घर छोड़ सकते हैं? अगर मैं तब तक घर नहीं पहुंची तो मम्मी और पापा बहुत नाराज हो जाएंगे।'

'अरे, छोड़ो भी! मैं नशे में थी। क्या तुम्हें ये दिख नहीं रहा था,

जानू?' 'हाँ, मुझे पता है। ये तो सबको पता है।'

मैं अब ऐसा दोबारा नहीं करूँगा। आप मुझसे और क्या चाहते हैं? मैंने माफी मांग ली, इसमें बड़ी बात क्या है! क्या अब मुझे आपके पैरों पर गिरना चाहिए?

मैंने कहा, 'मैंने तुम्हें ऐसा करने के लिए नहीं कहा था।'

उन्होंने कहा, 'अगर तुम खाना नहीं खा रहे हो तो हमें चले जाना चाहिए।'

मेरे जवाब देने से पहले ही उसने बिल मांगा और फिर मुझे अपनी कार में ले गया। उसने चिड़चिड़ाते हुए पूछा, 'तो तुम मुझसे बात नहीं करोगे?'

'मुझे दिल्ली जाना है।' ये शब्द मेरे मुंह से बेधड़क निकल गए। 'ये ख्याल कहां से आया? तुम कहीं नहीं जा रही हो।'

मैंने रूखेपन से कहा, 'मुझे वहां काम है।'

'*Dimaag fir gaya hai kya*(क्या तुम पागल हो गए हो?) तुम देहरादून से एक कदम भी बाहर नहीं रखोगे।'

हम चुपचाप गाड़ी चलाते रहे। हर कुछ सेकंड में वह मेरी तरफ देखता, उसका हर पल मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा था। आज तो मैं रो भी नहीं पा रही थी। मेरे मन में उसके लिए बस शुद्ध, गहरी नफरत भरी थी। चाहे वह मुझसे कोई प्रतिक्रिया निकलवाने की कितनी भी कोशिश करे, मैं एकदम शांत रही। मैंने एक शब्द भी नहीं कहा, एक इंच भी नहीं झुकी। हर पल उसका गुस्सा और गुस्सा बढ़ता जा रहा था। वह मुझे थप्पड़ मार सकता था, लेकिन मैं इसके लिए तैयार थी। चोट लगने के लिए भी तैयार थी। उसे बेसब्री से मेरी चुप्पी तोड़ने की कोशिश करते देखना मेरे लिए एक छोटी सी जीत थी।

'*KYA BAKWAS HAI*ठीक है, तुम दिल्ली जा सकती हो। लेकिन इसके लिए तुम्हें कल के लिए मुझे माफ करना होगा और मुस्कुराना होगा। ठीक है? ठीक है? मुस्कुराओ और मुझे माफ कर दो!' उसने कहा।

'मैं तुम्हें माफ़ करता हूं।'

'इसे ऐसे कहो जैसे तुम सच में ऐसा कहना चाहते हो,' उसने गुर्राते हुए कहा।

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं तुम्हें माफ करती हूँ!'

वह मुस्कुराया और थोड़ा सहज हो गया। 'तुम तो बड़ी शरारती हो, जानू। मुझे तो प्यार नज़र नहीं आता।'

शोना, तुम सिर्फ शब्द बोल रही हो, उन्हें महसूस नहीं कर रही हो। उन्हें महसूस करो और फिर मुझसे कहो।

मैं तुम्हें सचमुच माफ कर देता हूँ।

'नहीं, अभी भी नहीं हुआ है, ऐसा लग रहा है जैसे मैं तुमसे जबरदस्ती करवा रही हूँ।' 'मैं तुम्हें माफ करती हूँ, जानू,' मैंने जितना हो सके शर्माते हुए कहा।

"वाह, अब तो कमाल है। फिर से कहो। तुम बेहतर हो रहे हो," उसने कहा और अपना हाथ मेरे हाथ पर रख दिया।

'मैं तुम्हें माफ करती हूँ, जानू,' मैंने ये शब्द कहते हुए भी थोड़ा असहज महसूस किया। 'कोई बात नहीं, लेकिन अभी भी वो बात नहीं है,' उसने कहा और मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया।

और कसना।

अब वह मुस्कुरा रहा था, और मेरे सवालों के बावजूद उसने मुझे यह नहीं बताया कि हम कहाँ जा रहे हैं। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था जब उसने राजपुर रोड पर गाड़ी को गोल-गोल घुमाया और फिर एक अपेक्षाकृत सुनसान जगह पर पार्क कर दिया।

'हम यहाँ क्यों रुक गए?'

‘ताकि तुम दिखा सको कि तुमने मुझे सचमुच माफ कर दिया है।’ उसने मेरी तरफ देखा और अपने चेहरे पर उंगलियां फेरते हुए मुस्कुराते हुए कहा, ‘जानते हो क्या? मैं तो बस इंतज़ार ही नहीं कर सकता।’

मैं तुमसे शादी कर लूंगा। फिर मुझे तुम्हारे घर नशे में धुत होकर नहीं आना पड़ेगा। फिर मैं जब चाहूं तब तुमसे प्यार कर सकूंगा,' उसने चमकती आंखों से कहा।

'जानू।' मैं मुस्कुराई और उसने मेरा हाथ और कसकर पकड़ लिया। वो होने ही वाला था। मुझे पता था, उसकी आँखों में दिख रहा था। मुस्कुराने की कोशिश करते हुए भी मेरे गले में थूक और पित्त उमड़ आया। उसका शरीर मेरे शरीर से सट गया, उसकी दुर्गंधयुक्त साँस हवा में फैली हुई थी। मैं अपने शरीर से लड़ रही थी, अपने अंदर उमड़ रही घृणा और क्रोध के आगे न झुकने की कोशिश कर रही थी। और फिर उसके होंठ छू गए, पहले धीरे से, लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती या कर पाती, उसने अपनी जीभ मेरे मुँह में गहराई तक डाल दी। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह मेरी घृणा का स्वाद चख सकता था; मैं उसकी नग्न वासना का स्वाद चख सकती थी। मेरी आँखें खुली थीं और उसकी भी। पहले कुछ पलों के बाद, मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और सब कुछ भूल गई, दीदी के बारे में सोच रही थी, दिल्ली के बारे में, पासपोर्ट के बारे में, उड़ते हुए हवाई जहाज से देहरादून को छोटा होते देखने के बारे में, दुबई में एक घर के बारे में। जब वह हो गया, तो वह पीछे झुका और अपने होंठ पोंछे, उसके चेहरे पर एक घिनौनी मुस्कान थी।

'मैं तुमसे प्यार करता हूँ, जानू,' उसने कहा।

उसने मेरा हाथ पकड़ा, मेरी तरफ देखा और मुस्कुराया, फिर धीरे से उसे अपने गुप्तांग पर ले जाकर वहीं रोक दिया। वह मुझे देखता रहा, मानो मुझे इसमें आनंद लेने के लिए उकसा रहा हो, और मैंने नज़रें हटाने की कोशिश की, लेकिन उसने मेरा चेहरा पकड़ लिया और हवस भरी निगाहों से मुझे देखता रहा, मुझ पर अपनी शक्ति का आनंद ले रहा था। मेरे हाथ मुट्ठी बन गए, लेकिन वह उसे अपनी जींस पर रगड़ता रहा। मेरा शरीर धीरे-धीरे सुन्न पड़ गया। आंसू बहने लगे। पहले तो बूंद-बूंद करके। उसने पहले हैरानी से, फिर गुस्से और उलझन से मेरी तरफ देखा। फिर भी, वह रुका नहीं, मानो मेरी घृणा और आंसू उसे उत्तेजित कर रहे हों। मैंने नज़रें हटा लीं और वह मेरी मुट्ठी को अपने गुप्तांग पर रगड़ता रहा। कुछ मिनट बीत गए और उसका शरीर मरते हुए जानवर की तरह कांपने लगा, उसकी आंखें ऊपर-नीचे होने लगीं और उसके पैर फैल गए। फिर उसने मेरा हाथ छोड़ दिया।

मैंने रोना बंद कर दिया।

'क्या हुआ?' 'कुछ नहीं,' मैंने
कहा।

उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'हम शादी कर रहे हैं। हमें ये सब करने की इजाज़त है! खासकर अब जब मैं तुम्हें दिल्ली जाने दे रहा हूँ।'*itnato banta hai* (इतना तो तुम्हें मुझे देना है)। और इतनी संकोची मत बनो। तुम जानती हो कि तुम्हें यह पसंद आया था।'

कुछ देर बाद मैंने उनसे मुझे घर छोड़ने के लिए कहा, और उन्होंने मुझे छोड़ दिया।

उसने मुझे शाम को तीन बार और रात में दो बार फोन किया, कभी पश्चाताप करते हुए तो ज्यादातर गुस्से में, जबकि मैं उसे धीमी, कोमल और झूठी आवाज में बतातीं रही कि मैं ठीक हूँ और उसे मेरे साथ जो किया उसके बारे में परेशान होने की जरूरत नहीं है।

'तुम तो बिलकुल देहाती हो! ये तो 2003 है!' उसने फोन पर चिल्लाते हुए कहा। आखिरी कॉल सुबह पांच बजे की थी।

25 फरवरी 2003

वह मुझे खौफ भरी निगाहों से घूर रहा था। मेघनाद ने कल कार में मेरे साथ जो किया, उसे रघु को बताने की हिम्मत मुझमें नहीं हुई। मैंने बस इतना बताया कि मेघनाद ने दो रात पहले हमारे घर के बाहर अपनी कार में रात बिताई थी।

'क्या?' उसने स्तब्ध होकर कहा।

मैंने उसे यह नहीं बताया कि मैं पिछली दो रातों से यही सोचती आ रही थी कि अगर मेघनाद फिर से नशे में धुत होकर घर आ गया तो क्या होगा। वह कहाँ जाकर रुकेगा? मेघनाद मेरे साथ क्या करेगा?

'यह यौन संबंध नहीं होता, अद्वैत। यह बलात्कार होता,' उसने कहा। 'मैं खुद को यह बात समझाने की कोशिश नहीं कर रही थी,' मैंने कहा।

'तुम्हें पता है इसका क्या मतलब है, है ना?' 'मुझे नहीं पता,' मैंने झूठ बोला।

रघु ने कहा, 'समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है। आपको सोच-समझकर कदम उठाने होंगे। अगर आपकी बहन इस परीक्षा में पास नहीं होती है—भगवान न करे—तो हमें इस आदमी से लड़ना पड़ेगा, लेकिन अगर वह पास हो जाती है, तो आपको शहर छोड़ देना चाहिए। यही आपके और आपके परिवार के लिए सबसे अच्छा होगा।'

मैं ये सब सुनकर थक गई हूँ। मम्मी-पापा की ये उम्मीद कि मैं ये बात समझ जाऊँगी। उन्होंने मुझे ये क्यों नहीं बताया कि उन्हें डर था कि मेघनाद मेरी ज़िंदगी नरक बना देगी, भले ही बीसीसी काम कर जाए!? मैं तो कोशिश भी नहीं करती!

'अद्वैत के अनुसार, आशा एक प्रबल भावना है।'

हमेशा की तरह, मेरी बदकिस्मती मुझसे एक कदम आगे थी, मुझे हरा रही थी, मेरा मज़ाक उड़ा रही थी। उस कमरे में बैठे-बैठे मैं खुद को मूर्ख महसूस कर रहा था, ताज़ा पेंट की गंध अभी भी वहीं थी... मेजें, कुर्सियाँ, नोट... सब व्यर्थ।

रघु ने कहा, 'तुमने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। सच कहूँ तो, अगर तुम न होते तो मुझे पता ही नहीं होता कि मैं कहाँ होता।'

मैंने कहा, 'तुम बस यूं ही कह रहे हो।'

मुझे पता है कि आपको यह व्यर्थ लग रहा होगा कि आपने जो कुछ भी किया वह सब व्यर्थ था, लेकिन मेरे लिए वह सब कुछ था। मुझे आपके यहां आने का इंतजार रहेगा।

'लेकिन-'

‘तुम्हारे जाने के बाद सब कुछ पहले जैसा नहीं रहेगा।’ ‘रघु।’

'मैं तुम्हें तुम्हारे भाग्य से नहीं बचा सका, लेकिन तुमने मुझे बचा लिया और यह मायने रखता है।'

‘बिल्कुल है,’ मैंने कहा। ‘लेकिन—’

उसने मेरा हाथ पकड़कर कहा, 'मैंने तुम्हें मेरी मदद करने दी। अब समय आ गया है कि तुम अपनी बहन को अपनी मदद करने दो। तुम्हें जानते हुए, मुझे लगता है कि यह ज्यादा देर तक नहीं चलेगा।'

'आपको ऐसा लगता है?'

‘बिल्कुल। तुम्हें अपनी बहन को फोन करना चाहिए,’ उसने कहा।

मैंने कहा, 'क्या वह इसी का इंतजार नहीं कर रही होगी? वह सालों तक मुझे इस बात का ताना मारती रहेगी।'

पुरुष हमेशा क्यों जीतते हैं? वे हर चीज से कैसे बच निकलते हैं?

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

27 फरवरी 2003

दी ने मुझे ताना नहीं मारा। इसके बजाय, वह जी भर कर रोई और मुझे बताया कि वह मुझे कितना याद करती है और यह हम सबके लिए एक नई शुरुआत होगी।

मैंने कहा, 'अब ध्यान रखना कि तुम कोई गलती न करो।'

'हा! मैं ऐसा नहीं करूंगी,' उसने अपने जाने-माने घमंड भरे अंदाज में कहा।

मम्मी और पापा को भी इस बात की जानकारी है। लेकिन वे दीदी के सफल होने को लेकर बहुत चिंतित हैं।

'जब हम विमान में बैठे होंगे तभी मैं इस पर विश्वास करूंगी,' मम्मी दिन में दो बार यह बात कहती हैं।

मम्मी और पापा के पासपोर्ट तैयार हैं, उन्हें दीदी के पास वीजा लगवाने के लिए भेजा जा रहा है। हम सबको देश में आने के लिए टूरिस्ट वीजा लेना है और बाद में हम सबको परमानेंट वीजा मिल जाएगा। सिर्फ मेरे पास पासपोर्ट नहीं है। हम सबको पता है कि देहरादून में पासपोर्ट बनवाना बहुत जोखिम भरा है। और मेरे लिए दिल्ली जाकर पासपोर्ट बनवाना तब तक नामुमकिन है जब तक मेघनाद मुझे साफ तौर पर इजाज़त न दे और बुआजी से इस बारे में बात न कर ले।

'अगर हमें भागना ही पड़े, तो चलो सब अभी निकल चलते हैं!' मैंने कल कहा था।

'और अगर तुम्हारी बहन का फोन न लगा तो—'

मम्मी ने पापा की बात बीच में ही रोक दी, कहीं ऐसा न हो कि वह बात सच हो जाए।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

2 मार्च 2003

जब मैं बीसीसी से निकला तो वह कमीना नीचे मेरा इंतज़ार कर रहा था। मैंने उसकी कार न देखने का नाटक किया और सीधे आगे बढ़ गया। वह मेरे पीछे-पीछे पागलों की तरह हॉर्न बजाता हुआ आया। मैं चलता रहा। वह नीचे उतरा, दरवाज़ा ज़ोर से बंद किया और मेरी तरफ दौड़ा।

'अरे? क्या तुम्हें सुनाई नहीं दे रहा? मैं हॉर्न बजा रहा हूँ! क्या मैं पागल हो गया हूँ?' उसने बड़बड़ाते हुए कहा।

मैंने उसकी ओर देखा, मेरी आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं, फिर मैंने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, 'मम्मी ने मुझे बताया है कि अगर कोई कार हॉर्न बजाए तो मुझे उसकी तरफ नहीं देखना चाहिए।'

'तुम रो रही हो?'

'मैं नहीं रो रही हूँ।'

मैंने अपने आंसू पोंछे। उसने मुझे गले लगाया और अपने

करीब खींच लिया। 'तुम्हें किसने रुलाया?' वह गरज उठा।

मैंने कहा, 'कुछ नहीं है।'

'मेरी बच्ची बेवजह नहीं रो रही है। बस मुझे बता दो! कोई मेरी जानू को नहीं रुला सकता।'

मैंने धीमी आवाज़ में कहा, 'मुझे नौकरी छोड़ने के लिए कहा गया था।'

'क्या? वो कमीना। वो तुम्हारे साथ ऐसा कैसे कर सकता है, जानू?'

'मैं इस झंझट में नहीं पड़ना चाहती। चलिए, चलते हैं। वह फिर से मुझ पर चिल्लाएगा,' मैंने शरमाते हुए कहा।

'क्या उस कमीने ने तुम पर चिल्लाया?' उसने अपनी आस्तीन ऊपर चढ़ाते हुए कहा।

मैंने उससे कहा कि तुम बुआजी से बात करके मुझे दिल्ली जाने की इजाजत दिलवा दो। मुझे पता है तुम व्यस्त हो, जानू, और तुम उन्हें यह नहीं बता सकते कि तुमने मुझे जाने की इजाजत दे दी है। इसलिए मैंने रघु से एक-दो दिन इंतजार करने की विनती की, लेकिन उसने मुझ पर चिल्लाकर मुझे कमरे से बाहर जाने को कहा। उसने कहा कि उसने मेरे जैसी दर्जनों खूबसूरत लड़कियों को देखा है जिनके गुंडे बॉयफ्रेंड होते हैं।

उसे बात समझने में कुछ सेकंड लगे। 'उसने मुझे क्या कहा?' 'कुछ

नहीं—'

वह पहले ही इमारत की ओर तेजी से बढ़ रहा था।

‘मेघनाद! रुको!’

वह रुका और मेरी ओर मुड़ा, 'मैं उसे दिखाऊंगा कि गुंडा होने का क्या मतलब होता है।'*CHAL MERE SAATH* (मेरे साथ आइए)।'

उसने मेरा हाथ थाम लिया और कमरे में प्रवेश करते ही छोड़ा। रघु ने ऊपर देखा और पलक झपकते ही मेघनाद ने उसकी गर्दन पकड़ ली और पूरी ताकत से उसे मरोड़ दिया।

रघु को खांसी और छींक आने लगी।

‘*KYA BOL RAHA THA BHE, BETICHOD*(तुम क्या कह रहे थे, कमीने!) इसे दोहराओ। बोलो। फिर से कहो,’ उसने कहा और अपनी पकड़ ढीली कर दी।

लेकिन... मुझे जरूरत है...

सुनो, तुम निकम्मे। मैं तुम्हारी ये दुकान एक दिन में बंद कर सकता हूँ।*SAMJHA*?’

‘क्या... तुम्हें क्या चाहिए?’

मेघनाद ने कहा, 'वह दिल्ली जाएगी,' और उसने मेरी गर्दन छोड़ दी। फिर वह मेरी ओर मुड़ा। 'तुम मेरी पसंद के गेस्ट हाउस में ठहरोगे। मैं यहाँ से तुम दोनों के साथ एक ड्राइवर भेजूँगा।'

'सुनना-'

उसने रघु पर हमला किया और सीधे उसके चेहरे पर वार किया। रघु लड़खड़ाकर पीछे गिर पड़ा, उसके होंठ फट गए और मुंह से खून बह रहा था।

'छड़ *PADEGI AGLI BAAR SAALE* (अगली बार तुम्हें लाठी से मारा जाएगा।)

और यहीं पर चर्चा समाप्त हो गई। मेघनाद गुस्से में मुझे अपने पीछे लेकर चली गई।

कार में उसने दोनों हाथों से मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा, 'अगर वह तुम्हें फिर कभी परेशान करे, तो मुझे बता देना। किसी को पता नहीं चलेगा कि उसे गोली किसने मारी।' वह खिलखिलाकर हँसा, उसकी आँखों में चमक थी।

मुझे पूरा यकीन है कि अब वो कोई हद पार

नहीं करेगा। 'अब खुश हो ना, जानू?'

मैंने सिर हिलाया।

उसने मेरा चेहरा पकड़ा और अपने अंगूठे से मेरे होंठों को सहलाया। ‘मैं बुरा इंसान नहीं हूँ, लोग ही मुझे बुरे काम करने पर मजबूर करते हैं। देखो उस लड़के ने मुझे कितना गुस्सा दिलाया। लेकिन तुम वैसी नहीं हो, तुम मुझे खुश करती हो, जानू। जब तुम दिल्ली में होगी तो मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी।’

मुझे भी तुम्हारी बहुत याद आएगी।

उसका अंगूठा अब मेरे मुंह के अंदर था। मुझे धातु और मिट्टी का स्वाद आ रहा था।

उन्होंने कहा, 'हमने उस दिन कार में जो किया था? जब तुम वापस आओगे, तो मैं तुम्हें सिखाऊंगा कि इसे मुंह से कैसे करना है।'

4 मार्च 2003

मेघनाद के रघु के खिलाफ अपेक्षित लेकिन आश्चर्यजनक रूप से आक्रामक outburst के बाद, सब कुछ आसानी से सुलझ गया। वह हमारे घर आया और हमें बताया कि उन्हें मुझे दिल्ली भेजना होगा, उसने वचन दिया है और उसका वचन उसके लिए सर्वोपरि है, मानो वह कोई राजपूत राजकुमार हो, न कि लोगों को लूटकर दौलत कमाने वाला कोई मामूली अपराधी। बुआजी हंसते हुए मान गईं और उनसे कहा कि गठबंधन होते ही, शासन करने का अधिकार मेरा है। लेकिन, उसके जाने के कुछ घंटों बाद, बुआजी घर में एक ज़ॉम्बी की तरह घूमती रहीं। कौन जाने उनके दिमाग में क्या चल रहा था?

एक समय मैंने उसे अंशुमन भैया से शिकायत करते हुए सुना, 'क्या आपने देखा कि उसने अपनी चालाकी से मेघनाद को कैसे फंसा लिया है?'

अंशुमन भैया ने कहा, 'जब तक हमारा समझौता कायम है, मां, वह उस आदमी को अपनी मर्जी से खुद को बेच सकती है।'

जब मैं घर से निकला, तो बुआजी, करण भैया और अंशुमन भैया गेट से हाथ हिला रहे थे, मानो भूतों जैसे लग रहे हों, उनकी आँखों की चमक कहीं खो गई हो। मैं मेघनाद की कार में था, और रास्ते में मैंने रघु को साथ ले लिया। ड्राइवर मोंटी को रघु पर कड़ी नज़र रखने के लिए कहा गया था।

वैसे तो यह बहुत लंबी यात्रा नहीं होनी थी, लेकिन ड्राइवर मोंटी हर एक घंटे बाद रुकता और जहाँ भी उसे कोई पीसीओ (प्राइवेट ऑफिसर ऑफिसर) मिलता, मेघनाद को जानकारी देता। वह इस बारे में बिल्कुल भी संकोच नहीं करता था।

'हां, सर। सब ठीक है सर। नहीं सर। वे सिर्फ कोचिंग संस्थान के बारे में बात कर रहे हैं।'

ड्राइवर, जो अब तक का सबसे विशालकाय आदमी था जिसे मैंने देखा था, निर्देशानुसार रघु और मेरी हर बात ध्यान से सुन रहा था। कहने की जरूरत नहीं, हम जो कुछ भी कह रहे थे वह सब बकवास था, शिक्षा सम्मेलन, भारत में कोचिंग संस्थानों की स्थिति और न जाने क्या-क्या मनगढ़ंत बातें थीं, और सच कहूँ तो, इसमें बहुत मज़ा आ रहा था। थोड़ी देर में मुझे नींद आ गई।

जब मैं जागा, तो मैंने रघु को खिड़की से बाहर देखते हुए पाया, उसकी आँखों में आँसू थे। तभी मुझे एहसास हुआ कि मैंने रघु से एक बार भी नहीं पूछा था कि क्या वह दिल्ली जाने के लिए तैयार होगा, उस शहर से जिसने उसका दिल तोड़ा था, उस शहर से जहाँ से वह भाग गया था। मुझे उसे यहाँ घसीट लाने का पछतावा हुआ। मैं उससे बात करना चाहता था, लेकिन मोंटी रियर-व्यू मिरर से मुझे घूरता रहा।

मैंने पूछा, 'दिल्ली एक मुश्किल शहर है, है ना?'

'हं?' वह अपनी तल्लीनता से बाहर आया और मेरी ओर मुड़ा। उसने धीरे से सिर हिलाया। 'क्या सब ठीक रहेगा? सम्मेलन के साथ?'

उसने आह भरी और कहा, 'सब ठीक हो जाएगा। बशर्ते हम अपना उद्देश्य पूरा कर लें।'

बाकी के सफर में, जब मैं नींद में डूबती-उठती रही, रघु बाहर देखता रहा, दर्द धीरे-धीरे उसे जकड़ रहा था, साफ दिखाई दे रहा था, महसूस किया जा सकता था, उसके अंदर ऐसे दौड़ रहा था जैसे सोख्ता कागज पर स्याही। गेस्ट हाउस पहुँचते ही उसने मुझे जगा दिया। मुझे अपनी बहन से मिलने और भागने की योजना बनाने की उम्मीद से बहुत खुश होना चाहिए था, लेकिन रघु को इस तरह बेबस देखकर मुझे कोई खुशी नहीं मिली, मानो कोई उससे उसकी सारी खुशी निचोड़ रहा हो।

ड्राइवर और मेरे कमरे अगल-बगल थे।

'सुबह मिलते हैं,' रघु ने कहा और एक बॉस की तरह मेरा हाथ मिलाया।

फिर वह चला गया। मेघनाद ने यह सुनिश्चित कर लिया था कि हम अलग-अलग गेस्ट हाउस में ठहरें।

तीन घंटे बाद, मेरे दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। मैंने दरवाजा खोला और वहाँ वो खड़ी थीं। वैद्यों की रक्षक—दिव्या वैद्य। वो अंदर दौड़ीं और झट से दरवाजा बंद कर लिया। उन्होंने मुझे गले लगाया, मानो उतने समय से भी ज़्यादा देर तक, जितने समय तक वो हमसे दूर रही थीं, और तब तक, जब तक उनके आँसू सूख नहीं गए।

'मैं आपके बगल वाले कमरे में रह रही हूँ,' दिव्या दी ने कहा।

वह पहले से ज़्यादा तरोताज़ा और खुश लग रही थी। या क्या वह हमेशा से इतनी खूबसूरत थी? हमने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और एक-दूसरे को ऐसे देखा जैसे बिछड़े प्रेमी हों।

'तुम्हारे पास मम्मी और पापा के पासपोर्ट और तुम्हारे सारे दस्तावेज़ हैं?' मैंने सिर हिलाकर हाँ कहा।

दिव्या दी ने कहा, 'मैं यहां एक ऐसे व्यक्ति को जानती हूं जो तीन दिनों में आपका पासपोर्ट बनवा सकता है।'

'आप दिल्ली में लोगों को कैसे जानते हैं?'

वह मुस्कुराई। 'सेक्स की उम्मीद मर्दों से कुछ भी करवा लेती है। लेकिन उस कमीने ने तुम्हें आने कैसे दिया?'

मैंने कहा, 'लंबी कहानी है,' मैं विस्तार में नहीं जाना चाहता था, न ही मेघनाद ने जो वादा किया था, उसके बारे में बताना चाहता था।पढ़ाना इस यात्रा के समाप्त होने के बाद मैं ऐसा महसूस करूंगा।

'मम्मी और पापा कैसे हैं?'

मैंने कहा, 'आशा है। और डर भी, ज़ाहिर है। वे खुलकर नहीं बोलते। आप जानते ही हैं कि वे कैसे होते हैं।'

'सब ठीक हो जाएगा,' डी ने कहा। 'हम आखिरकार आज़ाद हो जाएंगे, सब कुछ पीछे छोड़ देंगे, और हमारा एक नया घर होगा।'

वह मुस्कुराई और मैंने उसे गले लगा लिया, हम दोनों के भीतर आशा की एक नई किरण जगी। उसके लिए अब और रुकना सुरक्षित नहीं था, इसलिए वह जाने के लिए उठ खड़ी हुई।

'कल आपसे कैसे मिलूँ?' उसने पूछा।

'रघु और मैं प्रगति मैदान चलेंगे। गेट नंबर 5 के बाहर मिलते हैं।' 'ठीक है। आज

हमें बहुत कुछ करना है। कुछ समय निकाल लेना।'

नींद।'

वह कमरे से चली गई। पूरी रात हम अपने कमरों के हेडबोर्ड पर दस्तक देते रहे ताकि एक-दूसरे को याद दिला सकें कि हम अभी भी यहीं हैं और यह कोई सपना नहीं है। हम सचमुच भागने वाले थे।

मैं खुश थी, लेकिन रघु के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रही थी...

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

5 मार्च 2003

मोंटी मुझे ठीक नौ बजे लेने आ गया। रघु पहले से ही पिछली सीट पर बैठा था, और कल से भी ज़्यादा खराब हालत में था। ऐसा लग रहा था जैसे उसने नहाया ही न हो, और न ही सोया हो।

मैंने उससे पूछा, 'क्या तुम तैयार
हो?' उसने सिर हिलाया।

‘Bhaiya, take us to Pragati Maidan,’ I said to Monty.

मोंटी ने हमें गेट नंबर 1 पर छोड़ दिया। जब हम परिसर में दाखिल हुए, जहाँ कई सम्मेलन और व्यावसायिक गतिविधियाँ चल रही थीं, तो उसे ज़रा भी शक नहीं हुआ। कोई भी हमारे झूठ पर विश्वास कर लेता। हम एक हॉल से दूसरे हॉल की ओर भागे, तेज़ी से मुड़े, खंभों के पीछे छिपे और दुकानों में घुस गए, यह पता लगाने के लिए कि कहीं कोई हमारा पीछा तो नहीं कर रहा। जब हमें यकीन हो गया कि कोई हमारा पीछा नहीं कर रहा है, तो मैंने उससे कहा कि मुझे जाना है। 'तुम क्या करोगे?'

रघु ने चारों ओर देखा और कहा, 'मैं यहीं रहूंगा।' 'क्या
आप निश्चित हैं?'

'जाओ, जो करना है करो।'

मैंने कहा, 'अगर आपके पास करने के लिए कुछ नहीं है तो आप मेरे साथ आ सकते हैं।'

‘अद्वैता, मेरे बारे में चिंता करना बंद करो,’ उसने कहा। ‘मैं कैंटीन जाकर कुछ खा लूँगा। तुम्हारा दिन अच्छा रहे। गेट नंबर 5 पर मिलते हैं।’

मैंने सिर हिलाया और वह मुझसे दूर चला गया। लेकिन मैं मुड़कर जा नहीं सकी। मैंने उसका पीछा किया यह देखने के लिए कि वह ठीक है या नहीं।

वह कैंटीन नहीं गया। वह थोड़ी देर इधर-उधर भटकता रहा, लोगों से टकराता और माफी मांगता रहा, और फिर परिसर से बाहर निकल गया। बाहर आकर उसने कुछ ऑटो चालकों से मोलभाव किया, एक से बात तय की और चला गया।

‘इतनी देर क्यों लगा दी? मुझे लगा तुम पकड़े गए हो,’ दी ने डांटते हुए
कहा। ‘बस... कुछ नहीं। क्या अब हम जा सकते हैं?’ मैंने पूछा।

दिन के बाकी समय में, हम एक गंदे से दफ्तर से दूसरे दफ्तर भटकते रहे, हलफनामे बनवाते और उन पर मुहर लगवाते रहे, फॉर्म भरते रहे और कतारों में खड़े होते रहे।

कभी-कभार दलाल की भौंहें तन जातीं, सिर हिलाने का इशारा मुझे चिंतित कर देता, मुझे लगता कि सब कुछ बिखर रहा है, और फिर कोई न कोई खामी मिल जाती जिसका फायदा उठाया जा सकता था, लोगों को रिश्वत दी जा सकती थी, और हमारी पटरी से उतरी भागने की योजना फिर से पटरी पर आ जाती। माहौल तनावपूर्ण था, और मुझे खुद को याद दिलाना पड़ता था कि सांस लेते रहो। यह बहुत ही तनावपूर्ण था।

डी कई लोगों को उनके पहले नाम से जानती थी, जो अजीब था क्योंकि उसे शहर में आए हुए ज्यादा समय नहीं हुआ था, और वह बहुत मुस्कुराती थी, ऐसी मुस्कान जो मैंने पहले कभी उसके चेहरे पर नहीं देखी थी।

जिस आखिरी आदमी से हम मिले थे, उसने डी के हाथ को छुआ और कहा, 'यह दो दिनों में हो जाएगा। चिंता मत करो।'

उसने बनावटी मुस्कान के साथ कहा, 'तो मैं तुम्हें रात के खाने पर ले जाऊंगी।'

मैं उसे काफी समय से जानती हूँ, उससे इतने झूठ सुन चुकी हूँ कि मुझे पता था कि यह भी एक झूठ है। उस आदमी ने उसकी बातों पर विश्वास कर लिया, उसकी आँखें चमक उठीं और वह थोड़ा शरमा भी गया।

हम उसके पीजी में गए जहाँ उसने खाना बनाया, मुझे लगता है कि उसने सौ पैकेट मैगी बनाई थी। मैं झूठ नहीं बोलूंगी, उसका स्वाद लाजवाब था। उसने मुझे दुबई के बारे में कई कहानियां सुनाईं और बताया कि हमें साथ में क्या-क्या करना चाहिए।

उन्होंने कहा, 'बस उन्हें टिकट भेजने दीजिए और फिर हम कभी वापस नहीं आएंगे।'

अगले एक घंटे तक हम इन काल्पनिक भविष्य की कल्पनाओं में खोए रहे, और खूब खाया-पिया और चाय पी। सब कुछ कुछ अवास्तविक सा था। रघु हमेशा मुझसे कहता था कि वैद्य लोग उम्मीद पर जीते हैं, और यही बात हमें दूसरों से अलग करती है, लेकिन मैंने कभी सच में यह नहीं सोचा था कि एक दिन ऐसा भी आएगा जब हमारे सारे काल्पनिक भविष्य सच हो जाएंगे। देहरादून में नहीं, बल्कि दुबई जैसी दूर जगह में! यह किसी सपने जैसा था और दिव्या दीदी को छोड़कर, जो दुबई जा चुकी हैं, बाकी सबके लिए यह सब पचाना थोड़ा मुश्किल लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे धरती हिल जाएगी और सब कुछ बिखर जाएगा। यह खुशी कुछ ज़्यादा ही अच्छी लग रही थी, और इसीलिए बहुत नाजुक भी।

जब मैं प्रगति मैदान वापस लौटा, तो कैंटीन में रघु मेरा इंतजार कर रहा था। वह मुझसे कहीं ज्यादा थका हुआ लग रहा था, जो मेरे बिल्कुल विपरीत था।

मुझे आजादी का अनुभव हुआ था, और सच कहूँ तो, इस आजादी का स्वाद रघु की चाय जैसा था। बाद में, दीदी मेरे कमरे में आईं, और पिछले दो दिनों की सफलताओं से उत्साहित होकर उन्होंने मेरे बगल में सोने का फैसला किया।

मैंने उससे कहा, 'मैं कल रघु के साथ कुछ समय बिताना चाहती हूं।'

'बिल्कुल। लगता है वो लड़का तुमसे प्यार करता है। तुम उसके लिए कम से कम इतना तो कर ही सकती हो।'

मैंने उसका जवाब नहीं दिया।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

6 मार्च 2003

हमने फिर वही नाटक दोहराया। सच कहें तो, रघु पहले से भी ज्यादा बेजान लग रहा था, मानो अंदर से सड़ रहा हो। हर बार जब मैं उसे देखता, तो वह और भी मुरझाया हुआ सा लगता।

ड्राइवर ने हमें गेट पर उतार दिया और हम अंदर चले गए। रघु ने मुझसे कहा कि वह कैंटीन में मेरा इंतजार करेगा, और फिर कल की तरह, मैं मैदान से निकल गया। बस इस बार मैं दूसरे रिक्शा में उसके पीछे-पीछे गया। प्रगति मैदान से यह लंबा सफर था, और जब भी मेरा रिक्शा उसके रिक्शा के पास से गुजरता, मुझे उसकी उदास, मायूस आँखें दिखाई देतीं। वह एक आलीशान रिहायशी इलाके के बाहर उतरा। वह फुटपाथ पर बैठ गया और सिगरेट जलाई। दो बार मेरा मन हुआ कि जाकर उससे पूछूँ कि वह यहाँ क्या कर रहा है, लेकिन समझदारी से काम लिया और इंतजार किया। एक घंटा बीत गया, फिर दो घंटे, उसने सिगरेट के दो पैकेट खत्म कर दिए, बस वहीं बैठे-बैठे, पहली मंजिल के एक अपार्टमेंट को देखते हुए। क्या वह यहीं रहता था? या ब्राह्मी?

फिर एक खूबसूरत सांवली लड़की चलकर उसके पास आई और बिना कुछ कहे उसके बगल में बैठ गई। उन्होंने एक-दूसरे की तरफ देखा भी नहीं, अभिवादन भी नहीं किया, यहाँ तक कि एक-दूसरे की मौजूदगी का एहसास भी नहीं किया। वे बस ऐसे ही बैठे रहे जैसे बस स्टॉप पर दो यात्री बैठे हों।

वह लड़की रघु की ही उम्र की लग रही थी और काफी देर तक दोनों ने एक-दूसरे से कुछ नहीं कहा। वे दोनों अपार्टमेंट को घूरते हुए वहीं बैठे रहे। अगर उसने रघु से सिगरेट लेकर जलाई न होती, तो मुझे यकीन हो जाता कि वे अजनबी हैं। थोड़ी देर बाद, लड़की उठी और चली गई। और लगभग आधे घंटे बाद, रघु उठा और मुड़ा। मैं बाल-बाल बचा, लेकिन इससे पहले कि मैं झुक पाता, मैंने उसका उदास, आंसुओं से भीगा चेहरा देख लिया। उसने रुमाल से अपना चेहरा पोंछा, एक ऑटो रोका और चला गया।

मेरी अनुभवहीन छानबीन से मुझे रघु के जीवन की खंडित समयरेखा में समाहित उस अपार्टमेंट की छवि के अलावा कुछ भी नहीं मिला। मैं ऑटो का इंतजार कर रहा था तभी किसी ने मेरा कंधा थपथपाया। मैं मुड़ा।

'तुम कौन हो?' लड़की ने पूछा।

मुझे यह समझने में देर नहीं लगी कि यह वही लड़की थी जिसने रघु से सिगरेट मांगी थी। वह मुझसे लंबी थी, उसकी त्वचा गहरे चॉकलेट रंग की थी, और उसकी आँखें मैंने अब तक देखी सबसे उदास थीं।

‘मैं... मैं... उसे मत बताना,’ मैंने झट से कह दिया।

‘क्या तुम उससे प्यार करती हो? क्या तुम्हारी वजह से वह देहरादून में है? वह कभी किसी शहर में इतने लंबे समय तक नहीं रहता,’ लड़की ने कहा।

‘मैं? नहीं। आप सब कुछ गलत समझ रहे हैं।’

उस लड़की ने मुझे शक की निगाहों से देखा, मानो मैं किसी ऐसी जगह पर घुस आया हूँ जहाँ मुझे नहीं घुसना चाहिए था। वह बेहद क्रूर लग रही थी।

‘तुम रघु के दोस्त हो?’ उसने लगभग व्यंग्य भरे लहजे में पूछा। ‘हाँ, क्यों?’

‘तुम उससे बिलकुल भी मिलती-जुलती नहीं हो,

दूर-दूर तक नहीं।’ ‘ब्राह्मी?’

उसने कोई जवाब नहीं दिया और इसके बजाय मुझसे सवालों की बौछार कर दी। 'वह तुमसे कैसे मिला? क्या वह तुमसे बात करता है? तुम कहाँ से हो? तुमने ऐसा क्या किया?'

उसे?'

मैंने मुड़ते हुए कहा, 'मुझे अब जाना

चाहिए।' उसने मेरा हाथ पकड़ लिया।

‘तुम्हें मुझे सब कुछ बताना होगा,’ लड़की ने जलती हुई आँखों से कहा। और फिर अचानक, वह नरम पड़ गई। ‘हाय। मैं ऋचा हूँ।’

‘कहने के लिए कुछ नहीं है!’ मैंने कहा, उस थोड़ी सनकी लड़की से दूर जाना चाहता था।

उसने कहा, 'आपने मेरे किसी भी सवाल का जवाब नहीं दिया। मुझे

आपसे बात करने की जरूरत नहीं है।'

मैं उससे दूर जाने लगी, लेकिन वह मेरे पीछे-पीछे आई। उसने पूछा, 'क्या उसने तुम्हें अपने बारे में कुछ बताया?' मैं चलती रही। उसने कहा, 'मेरे पास उसकी डायरी है। मुझे सब पता है! उसके बारे में वह सब कुछ जो तुम जानना चाहती हो!'

मैं वहीं रुक गया।

‘तो तुम उसके बारे में जानना चाहते हो, है ना?’ उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा। ‘पार्क में इंतज़ार करो। मैं डायरी ले आती हूँ। तुम मुझे उसके और अपने बारे में सब कुछ बताओ, और मैं तुम्हें उसके बारे में बता दूँगी।’

मैंने अपनी आवाज में दृढ़ता भरकर कहा, 'ठीक है।'

मैं पार्क में उसका इंतज़ार कर रहा था, मेरे घुटने काँप रहे थे, पसीना आ रहा था, हालाँकि हवा में हल्की ठंडक थी। जैसे ही वह सुनहरे अक्षरों में '1999' अंकित चमड़े की जिल्द वाली डायरी लिए मेरी ओर बढ़ी, मुझे चक्कर आने लगा।

'मुझे वह सब कुछ बताओ जो मुझे जानना चाहिए,' ऋचा ने कहा।

'मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम किसी और की डायरी नहीं ले जा रही हो?' 'तुम जितनी बेवकूफ दिखती हो उतनी नहीं हो,' उसने कहा। 'क्या तुम उसकी पहचान कर सकती हो?'

हस्तलेख?

मैंने रघु के सैकड़ों पन्नों के नोट्स में टाइपिंग की गलतियों और अन्य त्रुटियों को ढूंढकर देखा था, और फिर कहा, 'मैं कर सकता हूँ।'

'लो।' उसने डायरी को छुआ। 'इसमें उसने सबसे पहले यही लिखा था। इसे यहीं से पढ़ो। डायरी को मत छुओ।'

मैंने लिखावट देखी, यह स्पष्ट रूप से उन्हीं की थी। मैंने पढ़ना शुरू किया।

अरे रघु गांगुली *(*यानी मैं*)*, आखिरकार मैंने कलम उठा ही ली। नुकीली निब से कागज़ों की सरसराहट, स्याही का धीरे-धीरे सोखना...

इन अजीबोगरीब घुमावदार अक्षरों को देखकर वाकई सुकून मिलता है; मुझे नहीं पता कि किसी सिज़ोफ्रेनिक की तरह खुद के लिए डायरी लिखना ही वो जवाब है जिसकी मुझे तलाश है। लेकिन कोशिश तो करनी ही होगी। पिछले दो सालों से मेरी ज़िंदगी एक लहर की तरह चल रही है, जिससे मेरा सिर चकरा रहा है। ज़्यादातर दिन मैं मरने के तरीके ढूंढता रहता हूँ—घर के आसपास की सबसे ऊंची इमारत, रसोई का सबसे तेज़ चाकू, नज़दीकी रेलवे स्टेशन, कोई ऐसी दवा की दुकान जो सोलह साल के बच्चे को बिना सोचे समझे बीस या उससे ज़्यादा नींद की गोलियां बेच दे, चूहे मारने की दवा का पैकेट—और कभी-कभी तो बस माँ-बाप से गणित के एग्जाम में अच्छे नंबर न लाने पर डांट सुनना चाहता हूँ, दादाजी को बताना चाहता हूँ कि मैं उनके *IIT* के स्कोर को मीलों पीछे छोड़ दूँगा, या बनिया की दुकान से खुले पैसे लेना भूल जाने पर हँसी का पात्र बनना चाहता हूँ। मैं रघु हूँ और मैं पिछले दो सालों से खुद से और अपने आस-पास के सभी लोगों से झूठ बोल रहा हूँ। मेरे चार साल के सबसे अच्छे दोस्त की मौत को दो साल हो गए हैं, जिसकी दोस्ती के बारे में मैंने सोचा था कि हम दोनों से भी ज़्यादा समय तक कायम रहेगी, अंतरिक्ष-समय निरंतरता में हमेशा के लिए अंकित हो जाएगी। लेकिन, जैसा कि मैंने महसूस किया है, कुछ भी हमेशा के लिए नहीं रहता। अब, दूसरों से झूठ बोलना ठीक है, हर कोई ऐसा करता है और यह स्वस्थ और सलाह देने योग्य है - इस क्रूर, निर्दयी दुनिया में आप कैसे जीवित रहेंगे? लेकिन खुद से झूठ बोलना? यह बहुत मुश्किल है, यह आपको बदल देगा, और इसीलिए मैंने इस महीने की पहली तारीख से डायरी लिखना शुरू करने का संकल्प लिया है, नए साल की शुरुआत के साथ, इस सहस्राब्दी के आखिरी साल के साथ।

मुझे मानना पड़ेगा कि मैं काफी समय से टालमटोल कर रहा हूँ और इसका कारण भी है। इस घर में चीजें छुपाना मुश्किल है, क्योंकि माँ की तेज़ नाक दादा, बाबा या मैंने जो भी उनसे छिपाने की कोशिश की है, उसे सूंघने में कभी नहीं चूकती। अगर मैं उन बच्चों में से होता जो आलीशान घरों में रहते हैं, जिनमें सीढ़ियाँ और बरामदे होते हैं, तो मेरे पास इस डायरी को छुपाने के लिए बहुत सारी जगहें होतीं, लेकिन चूंकि मैं उनमें से नहीं हूँ, इसलिए इसे टूटे हुए टोस्टर, खराब सिंगर सिलाई मशीन और खाली सूटकेसों के पीछे अटारी में ही रखना पड़ेगा। तो रघु, चलो अब खुद से झूठ बोलना बंद करते हैं, ठीक है? चलो सच बोलते हैं, कड़वा सच, और कुछ नहीं, और देखते हैं कि क्या इससे हमें अंधेरे से बाहर निकलने में मदद मिलती है। अगर यह काम नहीं करता और मैं हार जाता हूँ, तो इस जीवन से बाहर निकलना मुश्किल नहीं है। यह बस छत से सात मंज़िल नीचे गिरना है, कलाई पर एक झटपट कट लगना है, रेलवे ट्रैक पर फिसलना है, या फिर एक शरारती
गोलियों का सेवन या गलती से चूहे मारने की दवा का सेवन। लेकिन चलिए अच्छी बातों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करते हैं। दुर्गा। दुर्गा...

मेरे हाथ ठंडे पड़ गए। मेरा गला सूख गया। मैं पन्ने पलट-पलट कर उन्हें तेज़ी से पढ़ना चाहती थी, लेकिन उसने किताब का दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया।

'तुमने कभी नहीं सोचा था कि वह आत्महत्या करना चाहता था, है ना?' उसने मेरी अज्ञानता का आनंद लेते हुए पूछा।

मैंने अपना सिर हिलाया। और कोमलता के एक और क्षण में, उसने मेरा हाथ छुआ और कहा, 'मैंने भी नहीं। वरना मैं कुछ भी होने नहीं देती।'

‘क्यों…’ मैंने धीरे से कहा, शब्द अभी भी मेरे मुंह से नहीं निकल रहे थे।

मेरे दोस्त की रहस्यमय तरीके से मौत हो गई थी, उसका शव स्कूल के स्विमिंग पूल के शांत पानी में तैर रहा था। उसे आखिरी बार मेरे साथ देखा गया था। कम से कम मेरे सहपाठी तो यही मानते और कहते हैं। सच तो सिर्फ मुझे पता है...

धीरे-धीरे सब कुछ सुलझ रहा था। एक पल के लिए मैंने अपनी आँखें बंद कीं और कल्पना की कि अगर रघु मर जाए तो क्या होगा, और यह अकल्पनीय था, दर्द इतना तीव्र, इतना गहरा। असलियत में ऐसा होना किसी को भी तोड़ सकता है। लेकिन इन सबमें ब्राह्मी की क्या भूमिका है? 'तुम कौन हो?'

‘क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको बताऊं? या आप पढ़ना चाहते हैं कि उसने मेरे बारे में क्या कहा? इसके लिए आपको मुझे बताना होगा कि आप दोनों पहली बार कैसे मिले थे,’ उसने कहा।

मैंने तुरंत उसे बताया कि मैंने उसे पुस्तकालय से वह किताब चुराते हुए कैसे पकड़ा था जिसे मैं चुराना चाहता था।

‘यहाँ,’ उसने कहा। ‘पढ़ो…’

पिछले साल, ऋचा ने मुझे अपने जीवन का प्यार मान लिया था, जब मैं गलती से बाथरूम में चला गया था, जब वह नहा रही थी। वह पहली महिला थी जिसे मैंने नग्न देखा था, और मैं पहला पुरुष था जिसने उसे उस रूप में देखा था। उस दिन के बाद से, जब भी मैं कमरे में होता हूँ, वह मुझसे दूर रहती है, जब मैं अतिरिक्त टमाटर या एक कप दही मांगता हूँ तो वह बहुत शर्मा जाती है, और तब तक मेरी तरफ देखती रहती है जब तक मैं मुस्कुराकर उस रहस्य को स्वीकार नहीं कर लेता।
हमारे बीच। उसके घने, काले बाल उसकी त्वचा में घुलते हुए बेहद खूबसूरत हैं और उसका शरीर भी एक स्त्री जैसा है, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन मुझे उसके लिए कोई भावना नहीं है। यह अन्याय है...

इससे पहले कि मैं आगे पढ़ पाता, उसने डायरी को झट से बंद कर दिया।

'मैं सोलह साल तक उसकी पड़ोसी रही। उसे मुझसे प्यार हो जाना चाहिए था लेकिन... नहीं... उसे उससे प्यार हो गया। एक आत्मघाती, मूर्ख, बेवकूफ लड़की से।' ब्राह्मी।

'क्या-'

‘बस करो,’ उसने कहा। ‘मुझे बताओ कि तुम दोनों कैसे मिलते रहे। तुमने क्या किया?’ तुमने उसे कैसे फंसाया?

मुझे उस इशारे से ठेस पहुंची, लेकिन मैं रघु के बारे में और जानना चाहता था, इसलिए मैंने उसे हमारी पहली कुछ मुलाकातों के बारे में बताया, रघु की लाजवाब चाय के बारे में बताया, और भी कई बातें कहीं। वह बिना पलक झपकाए सुनती रही, लेकिन उसके चेहरे पर एक तरह का संदेह था, मानो मैं झूठ बोल रहा हूँ।

थोड़ी देर बाद जब मुझे लगा कि मैंने उसे काफी कुछ बता दिया है, तो मैं रुक गया। 'वह ब्राह्मी से कहाँ मिला था?'

‘तुम उसके बारे में क्या जानते हो?’ उसने पूछा।

मैंने कहा, ‘बस इतना ही कि उसने उसका दिल तोड़ दिया। और शायद उसने आत्महत्या कर ली। मैंने उससे नहीं पूछा, मैं दखलंदाजी नहीं करना चाहता था।’

उसने गुस्से से ज़मीन पर थूका। ‘उसने इससे कहीं ज़्यादा किया। और तुम किस तरह की दोस्त हो? ताक-झांक नहीं करना चाहती थी? इसका क्या मतलब है? किस तरह के दोस्त एक-दूसरे के बारे में सब कुछ नहीं जानते?’ और तिरस्कार से उसने डायरी का एक पन्ना खोला। ‘पढ़ो,’ उसने लगभग आदेश दिया।

...मैं हर नाम को जल्द से जल्द भूलने के लिए तैयार थी, लेकिन एक नाम मेरे दिमाग में अटक गया, मेरे विचारों में इस तरह उलझ गया जैसे कोई च्युइंग गम मेरे लंबे बालों में बुरी तरह चिपक गया हो और उसे जलाकर निकालना पड़े। वह नाम है ब्राह्मी शर्मा, कक्षा निरीक्षक...

उसने कुछ पन्ने छोड़ दिए और दूसरे पैराग्राफ की ओर इशारा किया। ऋचा को पन्ने देखने के लिए रुकने की भी ज़रूरत नहीं पड़ी। उसने डायरी का हर पन्ना याद कर लिया था, ठीक वैसे ही जैसे मैं अभी कर रहा था।

...मैं उसमें नफरत करने लायक कुछ ढूंढ रही थी। उसके बाल लंबे और चमकदार हैं। आमतौर पर वे एक बेतरतीब, उलझी हुई पोनीटेल में बंधे रहते हैं, और बिल्कुल भी नफरत करने लायक नहीं हैं। उसका चेहरा सौम्य है, जिस पर इक्का-दुक्का फुंसी हैं। उसका शरीर सुडौल और एथलेटिक है, उसके स्तन एकदम गोल और आकर्षक हैं, जैसे यौवन से भरे हों; वह एक युवती बनने की कगार पर है। उसकी यूनिफॉर्म कक्षा के अच्छे बच्चों जितनी व्यवस्थित नहीं है, इसलिए बिल्कुल भी परेशान करने वाली नहीं है। लेकिन फिर, आज, बिजली कटौती के दौरान टॉर्च की तरह मेरी नज़र किसी चीज़ पर पड़ी - उसकी हड्डियों वाली कलाइयाँ। किसी बच्चे की चित्रकारी की तरह, उसकी पूरी कलाई पर टेढ़े-मेढ़े कट के निशान हैं। फिर जब भी मैं उसे दिन में देखती, मेरी नज़र उसकी कलाइयों पर टिक जाती। ये छोटी-छोटी धारियाँ इस बात का स्पष्ट संकेत हैं कि किसी ने उन हाथों पर चाकू या पेपर कटर का इस्तेमाल किया है...

'तो क्या ब्राह्मी आत्महत्या करने की सोच रहा था—'

'तुम पढ़ क्यों नहीं सकते?' ऋचा झल्लाकर बोली और डायरी का दूसरा पन्ना पलट दिया। जैसे ही मैंने पढ़ना शुरू किया, उसने डायरी पर ज़ोर से हाथ पटक दिया।

'रुको! मुझे बताओ कि उसे पहली बार देखने के बाद क्या हुआ। क्या तुमने उससे संपर्क किया? क्या उसने तुमसे संपर्क किया?'

मैंने कहा, 'बस की छत पर मैंने उसे संयोग से देखा था।' मैंने उसे दुर्घटनास्थल और उस समय के बारे में बताया जब मैंने उसे अस्पताल में देखा था, जब उसका एक दोस्त भर्ती था।

'ये बहुत ज़्यादा संयोग हैं, मुझे आपकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा।' 'मेरे पास आपसे झूठ बोलने का कोई कारण नहीं है,' मैंने कहा। 'क्या मैं पढ़ सकता हूँ?'

...पिछले सप्ताह से मैं बाबा के सातों देवताओं—गणेश, सरस्वती, दुर्गा, काली, कार्तिकेय, राम, लक्ष्मी—से प्रार्थना कर रहा हूँ कि ब्राह्मी के चेहरे पर नए दाने निकल आएं ताकि मैं बाबा के इत्र में भीगे हुए रूमाल के साथ हीरो बन सकूँ...

...जब ब्रह्मी शर्मा क्रॉसवर्ड हल करने में मशगूल थीं, तब मैंने उनकी कलाई पर बनी छोटी-छोटी लकीरों को गिना। कुछ गहरी, सीधी और लंबी थीं, तो कुछ हल्की और बेढंगी। वे चित्रलिपि जैसी लग रही थीं, जैसे बहादुरों के टैटू हों...

उसने डायरी को फिर से बंद कर दिया। अब मुझे समझ आ गया था कि उसने मुझसे डायरी क्यों पढ़वाई थी। मेरा मन कर रहा था कि मैं उससे डायरी छीन लूँ और

भाग जाओ।

'लेकिन हुआ क्या?'

‘यह सब तब शुरू हुआ जब उनके दादा को एक मुस्लिम लड़की से प्यार हो गया,’ ऋचा। 'पढ़ो... और जल्दी करो, प्लीज़। क्या तुम उसके लिए बहुत बेवकूफ नहीं हो? तुम बहुत धीरे पढ़ती हो।'

...दादाजी कितने मूर्ख हैं जो सोचते हैं कि जिस लड़की से वे प्यार करते हैं उसके साथ एक रात होटल के कमरे में बिताकर उससे शादी नहीं करेंगे? बेशक, वे उससे शादी करेंगे। मैं इतनी मूर्ख नहीं हूँ कि यह सोचूँ कि एक रात साथ बिताने से गर्भधारण हो सकता है, लेकिन जब आप कहते हैं कि आप प्यार में हैं तो कुछ नैतिक दायित्व भी आते हैं। माँ और बाबा ने 'प्यार' शब्द का इस्तेमाल इतनी आसानी से नहीं किया और न ही उन्होंने हमें ऐसा सिखाया। माँ और बाबा ने कभी नहीं कहा कि प्यार का इज़हार करने के बाद हम यह तय करें कि हमें क्या करना है। दादा से बिलकुल अलग, जो उससे कहता है कि वह उससे प्यार करता है, उसके कमरे में रहता है, और फिर ऐसा व्यवहार करता है जैसे वह शादी करने वाला ही नहीं है...

...क्या अब कुछ भी पवित्र नहीं रह गया है?

ऋचा ने मेरी तरफ देखा और कहा, 'उसका भाई आग से खेल रहा था। रघु के माता-पिता कट्टर और रूढ़िवादी हिंदू होने के बावजूद एक मुस्लिम लड़की से प्यार करने की हिम्मत कर रहा था। लेकिन हमारा रघु? वह तो ब्रह्मी के प्यार में इतना अंधा था कि दखल देने या अपने भाई को समझाने की हिम्मत ही नहीं कर पाया। ब्रह्मी उसके जीवन की रोशनी थी।'

'बकवास!' उसने दूसरा पन्ना पलटा। 'तो तुम उससे लगातार मिलती रहीं? क्यों?' उसने सवाल किया।

'हाँ।'

‘क्यों? वह आपसे क्यों मिलना चाहेगा?’

‘क्योंकि हम दोस्त बन गए। दोस्त यही करते हैं। वे मिलते हैं और बातें करते हैं,’ मैंने अधीरता से कहा।

‘और कितने लोग?’दोस्त क्या वो देहरादून में है?’

‘सिर्फ मैं।’

‘ओह! तो ब्राह्मी उसकी प्रेमिका बनेगी, और तुम उसकी सबसे अच्छी दोस्त?’

बेहद शानदार! और मैं—’

‘हमारा एक समझौता हुआ था, क्या मैं पढ़ सकती हूँ, ऋचा?’

उसने गुस्से से आंखें घुमाईं। 'पढ़ो...'मेरा सबसे अच्छा दोस्त।'

...बहुत समय बाद मैं जीना चाहती थी, इसलिए नहीं कि मैं किसी को निराश नहीं करना चाहती थी, बल्कि इसलिए कि मैं अपने लिए जीवित रहना चाहती थी/ उन कुछ पलों में

कुछ पल—जो मानो एक जीवनकाल के बराबर लगे—मैंने माँ, बाबा या दादा को नहीं देखा, मैंने उसे देखा। मैंने अपना भविष्य दिन के उजाले की तरह स्पष्ट रूप से देखा। भविष्य मेरी आँखों के सामने किसी ग्राफिक उपन्यास की तरह पलट गया, मैंने खुद को *IIT* की परीक्षा उत्तीर्ण करते हुए, दादा से कहीं अधिक अंक प्राप्त करते हुए देखा, फिर मैंने खुद को *IIT* से स्नातक होते हुए, ब्राह्मी की माँ को फोन करते हुए और उन्हें अपने अस्तित्व के बारे में बताते हुए देखा। मैंने उन्हें मुझे पसंद करते हुए देखा, और फिर दो साल बाद, मैंने ब्राह्मी के साथ बातचीत में अचानक ही हमारी शादी की संभावना का जिक्र करते हुए देखा, और फिर मैंने उसे यह बात अपने परिवार को बताते हुए और मेरी वफादारी और सफलता के आधार पर उनके इस रिश्ते के लिए राजी होते हुए देखा...

'फिर क्या हुआ?' मैंने पूछा।

उन्होंने कहा, 'हालात बिगड़ने लगे। उनके माता-पिता अपने बेटे के एक मुस्लिम लड़की के साथ संबंध से बेहद नाराज़ थे। उन्होंने दादा को घर से निकाल दिया। उन्होंने उससे रिश्ता तोड़ दिया।'
रघु से बात कर रही थी क्योंकि उसने उनसे अपना रिश्ता छिपा रखा था।' 'फिर?'

'क्या आप दोनों सिर्फ सबसे अच्छे दोस्त बनकर रह गए? या आपको प्यार हो गया?' उसने पूछा। 'हम अब साथ मिलकर एक बिजनेस चलाते हैं।'

'वाह!' ऋचा ने ताना मारा। 'एक धंधा! इसीलिए तो वो अब दिल्ली नहीं आता। तुम्हें अचानक धंधा चलाने की क्या ज़रूरत पड़ गई?'

मैंने कहा, 'मुझे पैसों की जरूरत थी।'

'और तुम दोनों प्यार में नहीं हो? सिर्फ दोस्त हो, है ना? बकवास लगता है,' उसने गुस्से से बड़बड़ाते हुए कहा।

मैंने अधीरता से पूछा, 'आगे क्या हुआ?'

...माँ और बाबा, जिन्होंने दादा का राज़ छुपाने की वजह से मुझसे बात करना बंद कर दिया था, उन्हें लगा कि मेरा ध्यान भटकाने के लिए मुझे दोबारा स्कूल भेजना ही सबसे अच्छा रहेगा। मुझे पता है उन्होंने मुझे इसलिए भेजा ताकि वे शांति से शोक मना सकें। हमारे घर की पतली दीवारें माँ के विलाप को मुश्किल से ही रोक पाती हैं...

'रघु जितना टूटा हुआ था, उतना ही वह प्यार में डूबा हुआ था, और इसी वजह से उसके लिए सब कुछ ठीक था,' ऋचा ने कहा। 'यहां तक कि जब दादा और जुबैदा, जिसे वह बौदी कहकर बुलाते थे, की शादी हुई, तब भी। कुछ ही समय बाद जुबैदा गर्भवती हो गई। वह ब्रह्मी के प्रति जुनूनी था, उसके लिए कुछ भी कर सकता था, वह बेवकूफ लड़का।'

पलटना।

...मैं फुटपाथ पर उसकी खिड़की के सामने बैठा था। खिड़की में मुझे एक परछाई दिखी, मुझे यकीन नहीं था कि वह वही थी। मैंने जो किया वह मूर्खतापूर्ण था और मुझे वहाँ बैठे-बैठे यह पता था, लेकिन मैं उठकर जा नहीं सका। मैंने खुद को ठीक होते हुए महसूस किया, कान और पेट के अंदरूनी हिस्से अपनी जगह पर वापस आ गए, नसें टूट गईं।
वापस आते ही, मेरी नसों में खून फिर से दौड़ने लगा। फिर मैं उठा और घर वापस आ गया...

'वह उस लड़की के पीछे पागल था। वह बेवकूफ लड़की उसके लिए सब कुछ थी!' ऋचा ने ताना मारते हुए कहा। फ्लिप। उसने आगे कहा, 'कम से कम उसने उसे बचा तो लिया।'

मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उसने मुझसे और कोई प्रश्न नहीं पूछा और डायरी के दूसरे पृष्ठ पर चली गई।

...पिछले कुछ हफ्तों में जो कुछ भी हुआ है, उसके बावजूद मैं आज तक कोई बेवकूफी भरा काम करने से इतना दूर हूँ जितना पहले कभी नहीं था। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं एक प्यार में डूबी बेवकूफ बकरी की तरह ब्रह्मी से बंधा हुआ हूँ। मैं उसके चारों ओर चक्कर लगा सकता हूँ, पास जाऊँ या दूर जाऊँ, लेकिन उससे खुद को अलग नहीं कर सकता। मैं उसे फिर से देखना चाहता हूँ, उससे बात करना चाहता हूँ, अगर वह मुझे अपनी कहानियाँ सुनाए तो उन्हें जानना चाहता हूँ, और बस उसके आसपास रहना चाहता हूँ। इसलिए, बकरी की तरह, मैं आशियाना अपार्टमेंट्स छोड़कर ब्रह्मी के घर चला गया। अगर यह कोई फिल्म होती, तो मैं जबरदस्ती घुस जाता, उसका पता कैसे मिला, इसका कोई विश्वसनीय कारण बताता, और फिर घुटनों पर बैठकर उसे बताता कि वह मेरे लिए कितनी मायने रखती है। लेकिन चूंकि यह फिल्म नहीं है, मैं अजीब तरह से इधर-उधर घूमता रहा, घर वापस आया और माँ से खूब डांट खाई, जिन्होंने मुझसे वही घिसा-पिटा सवाल पूछा, 'क्या यह घर तुम्हारे लिए मेहमानघर है!'...

पन्ने पलटने के साथ-साथ ऋचा का गुस्सा बढ़ता ही गया और आखिरकार वह आपा खो बैठी। उसने मुझसे कुछ पूछना ही भूल गई। पन्ने पलटे।

बाद में हमने 'मैं', 'प्यार' और 'तुम' शब्दों को अलग-अलग संयोजनों में बोलने का फैसला किया और सोचा कि सही क्रम में बोले जाने पर ये सीधे-सादे शब्द कितने शक्तिशाली और दिल को छू लेने वाले बन जाते हैं। हमने इसका शारीरिक प्रमाण भी देखा जब उसने अपना हाथ मेरे सीने पर रखा और उसकी धड़कन महसूस की। हमने तय किया कि हम शाम को एक-दूसरे को तीन छोटी मिस्ड कॉल करेंगे, ताकि अगर हम एक-दूसरे से ये बातें सुनने से चूक जाएं तो हमें याद रहे...

ऋचा ने गुस्से से गहरी सांस ली। फ्लिप।

...मैंने अभी माँ और बाबा को बौदी की गर्भावस्था के बारे में न बताने का फैसला

किया है। आज मैं उस नन्हे बच्चे के बारे में सोच-सोचकर खुश हो रहा हूँ जो मुझे काकू कहकर पुकारेगा और मुझे अपना हीरो समझेगा। और चूंकि हम इसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं,

वो ब्रह्मी को काकी कहकर बुलाएगा/बुलाएगी, और अपने उन बेवकूफ, घमंडी माता-पिता के बजाय हमारे साथ समय बिताना पसंद करेगा/करेगी। मेरे कल्पना किए हुए भविष्य में, दादा और बोध जैसे-तैसे अपना गुजारा कर रहे होंगे, जबकि ब्रह्मी और मैं एक पावर कपल होंगे, लेकिन हमारे पास एक खुशहाल जीवन जीने के लिए बहुत समय होगा...

ऋचा ने खुद को संभाला।

मैंने उसे उसमें खोते हुए देखा। हर रात वह चुपके से बिना किसी को पता चले बाहर निकल जाता था।

लेकिन मैं वहीं होती,' उसने दूसरी मंजिल की बालकनी की ओर इशारा करते हुए कहा। 'मैं उसे हर दिन देखती थी, जब वह धीरे-धीरे मुझसे दूर होता जाता और उसकी दुबली-पतली बाहों में समा जाता।'

...मैंने बाबा के बटुए से पैसे चुराए, चुपके से बाहर निकला, ऑटो लेकर ब्राह्मी के घर गया और उसकी खिड़की के नीचे स्ट्रीटलाइट के नीचे खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद, उसके कमरे की बत्तियाँ बुझ गईं। धुंधले शीशे वाली खिड़की के पीछे एक मोमबत्ती टिमटिमा रही थी। खिड़की चरमराहट और चटकने की आवाज़ के साथ खुली। उसने जलती हुई मोमबत्ती का मोम खिड़की के किनारे पर डाला और दो और मोमबत्तियाँ जला दीं। लपटें पीली और नीली जल रही थीं, और उसने उनकी हल्की रोशनी में मेरी तरफ मुस्कुराया। उसने कुछ बुदबुदाया, उसकी आँखें शर्म और संकोच से झुकी हुई थीं, ऐसी बातें जो मैंने कभी नहीं सुनीं।

उससे जुड़ी हुई, 'अब क्या?' फुटपाथ पर, मैंने स्कूल से लाई हुई चाक से बड़े अक्षरों में लिखा, 'मैं तुम्हें देख रही हूँ।' उसने अपनी उंगलियों को लौ के पास थोड़ी देर रखा और मुस्कुराई। उसने हवा में कुछ लिखा—मैं तुम्हें देख रही हूँ। हमने बिताया अगले एक घंटे तक हम फुटपाथ पर और हवा में एक-दूसरे को संदेश लिखते रहे। फिर उसने अपनी ठुड्डी किनारे पर टिका दी और मैं फुटपाथ पर बैठ गया और हम एक-दूसरे को देखते रहे। मोमबत्तियाँ बुझने ही वाली थीं कि उसने कहा—कल। लौ बुझ गई और फिर से अंधेरा छा गया। खिड़की बंद हो गई। मैं कल का इंतज़ार करते हुए घर लौट आया...

ऋचा ने कहा, 'वह लड़की हमेशा से ही अजीब थी। वह उसके लिए बिलकुल गलत थी।'

भगवान जाने उसने उसमें क्या देखा। बताओ? क्या तुम उस जैसी लड़की से प्यार करोगे? उसमें कुछ भी नहीं है, बिलकुल कुछ भी नहीं!

'शायद-'

'देखो! इसे देखो! वह इस बात पर कितनी खुश हो रही है कि वह ज्यादातर लोगों से बेहतर पतंग उड़ा सकती है!' उसने उपहास उड़ाते हुए कहा।

'वह क्या सोच रहा था!'

'...क्या वह पतंग उड़ाती

थी?’
‘जी! तुम मुझे ऐसे क्यों देख रही हो? इसे पढ़ो,’ ऋचा ने कहा।

...ब्रह्मी ने ज़िद की थी कि हम स्वतंत्रता दिवस उसी तरह मनाएँ जैसे मनाया जाना चाहिए—पतंग उड़ाकर। जल्द ही हमें इसका कारण समझ आ गया। अगर कोई पतंगबाज़ होता है तो वह ब्रह्मी थी। उसने बड़ी आसानी से साहिल, ऋषभ, अरुंधति और मुझे हरा दिया, उसका मांजा हम सबको ऐसे चीर रहा था जैसे गर्म चाकू मक्खन को। साहिल और ऋषभ ने अरुंधति को प्रभावित करने के लिए नारंगी, सफेद और हरे रंग के सबसे अच्छे कपड़े पहने थे, जिनसे वे पहली बार मिल रहे थे और जहाँ तक मुझे समझ आया, उन्हें वह आकर्षक लगी। शुरुआती कुछ हार को हमने संयोग मान लिया, अगली कुछ हार को ब्रह्मी के अच्छे दिन का नतीजा मान लिया, और आखिरी कुछ हार गुस्से में बड़बड़ाते हुए बीतीं। ब्रह्मी की श्रेष्ठता को स्वीकार करने में हमें दो घंटे और सोलह पतंगें लगीं...

मैं अभी भी पढ़ ही रही थी कि उसने झट से
दरवाजा बंद कर दिया। 'मैं पढ़ रही थी!' मैंने
कहा।

'उसके पतंग उड़ाने में इतनी दिलचस्प बात क्या है! कोई भी उड़ा सकता है! मैंने भी अब सीख लिया है,' उसने कहा। 'जानती हो मुझे सबसे ज्यादा चिढ़ किस बात से होती है?'

'...'

'उसने उस लड़की के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी। क्या उसने ऐसा करने से पहले किसी और के बारे में नहीं सोचा?'

'उसने क्या किया?'

'उसने निर्माण कार्य की छड़ों पर फंसने का जोखिम उठाया। किसलिए? सिर्फ उससे बात करने के लिए?'

...मैंने प्रार्थना की और मचान पर चढ़ गई, हर कदम पर भगवान हनुमान का नाम लेती हुई—उनकी तरह, मैं भी प्रेम के लिए छलांग लगाऊंगी। यह जितना दिखता था उससे कहीं ज़्यादा मुश्किल था और कूदने का समय आते-आते मेरी सांस फूल गई थी। उसने मुझे पाँच फुट की छलांग न लगाने के लिए कहा, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। वह भी जानती थी। साँस लेते हुए, मैंने छलांग लगाई, लेकिन चूक गई, और मैं मुंडेर से लटक गई, मेरे पैर बेसुध लटक रहे थे। ब्राह्मी हांफने लगी और उसने अपना हाथ बिल्कुल बेकार में बढ़ाया। मुझे अपनी पूरी ताकत और उससे भी ज़्यादा बल लगाकर खुद को किनारे तक खींचना पड़ा। मैं उसके कमरे में घुस गई, मेरी टी-शर्ट फटी हुई थी। मामूली चोटों से निकला खून जमना शुरू हो गया था। उसके चिंता भरे कुछ शब्द फुसफुसाने और इशारों में यह समझाने के बाद कि इस तरह चुपके से अंदर आना कितना खतरनाक था, हमें कमरे की खामोशी और अंधेरे का एहसास हुआ। उसने एक मोमबत्ती जलाई और मुझे बिल्कुल चुप रहने को कहा। मुझे घड़ी की टिक-टिक सुनाई दे रही थी।

बैठक कक्ष में, मैं उसके चेहरे पर भय देख सकती थी। उसके जर्जर कमरे में ज़्यादा कुछ नहीं था, बस एक पलंग और एक छोटी सी अलमारी, लेकिन काश मैं उसके साथ यहाँ होती, काश यह हमारी छोटी सी दुनिया होती। अगर कोई निर्जीव वस्तुओं से ईर्ष्या कर सकता है, तो मैं कर रही थी, इस कमरे से, जिसमें ऐसी कहानियाँ थीं जो शायद अब उसे भी याद न हों। यह कमरा जानता था कि उसे किस बात पर हंसी आती थी, किस बात पर रोना आता था, किन लड़कों से वह प्यार करती थी, किन लड़कों से नफरत करती थी, और किन लड़कों के लिए उसके मन में दोनों भावनाएँ थीं; यह जानता था कि दिन कितने छोटे होते हैं और रातें कितनी लंबी, उसकी इच्छाओं और उसके डर को, उसकी नापसंद और उसकी पसंद को। हम जानते थे कि यह कितना खतरनाक था, इसलिए हमने शोकपूर्ण चुप्पी बनाए रखी। थोड़ी देर बाद, उसने अपना सिर मेरे कंधे पर रखा और मेरा हाथ थाम लिया। हम धीरे-धीरे सांस ले रहे थे। हमारी छाती एक साथ ऊपर-नीचे हो रही थी। वह धीरे-धीरे रो रही थी और मैं भी जवाब में रोने लगी...

"हालात बदतर होते जा रहे थे," ऋचा ने कांपती उंगलियों से पन्ने पलटते हुए कहा।

...हम निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर रुके, जहाँ हमने एक स्टॉल से फ्राइड राइस खाया। हर रात अंतहीन सी लगती थी जब तक कि जाने का समय नहीं आ जाता। और अगली रात, मानो युगों दूर। समय प्लास्टिक की तरह लचीला है; जब प्यार बीच में आ जाता है, तो यह उतना ही सापेक्ष हो जाता है जितना कि आइंस्टीन ने सिद्धांत दिया था...

ऋचा ने डायरी झट से बंद कर दी। 'यह मत सोचो कि मैं रघु और तुम्हारे बारे में तुमसे सवाल पूछना भूल गई थी। मैं बातचीत का सिलसिला तोड़ना नहीं चाहती थी। यह हिस्सा मुझे बहुत परेशान करता है। मुझे भले ही उस लड़की के साथ उसका रिश्ता कितना भी बुरा लगता हो, वह उसके साथ बहुत खुश था। यह घिनौना था।'

'हम्म...' मुझे और पढ़ने की तीव्र इच्छा हो रही थी।

मुझे बताइए, वह एक महीने में अपने भतीजे से मिलने यहां क्यों नहीं आएगा? कृपया मुझे यह बात स्पष्ट कर दीजिए? आप कहती हैं कि आप प्यार में नहीं हैं, आप सबसे अच्छे दोस्त हैं, इसका जो भी मतलब हो, और इससे ज्यादा कुछ नहीं। तो फिर वह क्यों नहीं आता?

मैंने पूछा, 'बौदी का एक बेटा था?'

'चलिए, सीधे मुद्दे पर आते हैं। आप दोनों एक-दूसरे से क्या हासिल करते हैं? मुझे इसका जवाब दीजिए, मैं आपको बताऊंगी,' उसने कहा।

मुझे नहीं पता, ऋचा!

'अरे, अरे! मुझसे इस लहजे में बात मत करो। मैं चली जाऊंगी,' उसने डायरी बंद करते हुए कहा।

‘रिचा, मुझे नहीं पता कि मैं तुम्हें क्या बताऊं,’ मैंने झुंझलाहट में कहा।

‘मुझे अपने बारे में बताओ। अपने बारे में सब कुछ बताओ। चूंकि तुम इतने मूर्ख और नासमझ हो कि खुद यह नहीं जान सकते कि उसने तुममें क्या देखा, तो चलो मैं तुम्हारे लिए यह कर देती हूं,’ ऋचा ने तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा।

मैंने गुस्सा न करने की कोशिश की।

मैंने उसे अपने परिवार की कहानी का संक्षिप्त और निष्पक्ष विवरण दिया, और बताया कि रघु किस तरह मुझे भागने में मदद कर रहा था। जब मैं अपनी बात खत्म कर रही थी, तभी पहली बार मैंने ऋचा को मुस्कुराते देखा। उसने मुझे बीच में ही रोक दिया।

‘मैंने बहुत सुन लिया।’

‘क्या—’

‘इसे पढ़ो,’ उसने कहा। ‘यह तब की बात है जब रघु के माता-पिता ने उसके भाई की पत्नी को स्वीकार कर लिया और उसकी अच्छी देखभाल की। यह सब एक चाल थी। उनका पोता एक मुस्लिम लड़की के गर्भ में था, इसलिए उन्होंने उस लड़की को भी स्वीकार कर लिया।’

शाम को हम बूदी के घर गए। उसका पेट अब काफी बड़ा हो गया है। कल ही माँ ने ज़ुबैदा बूदी के बुर्के की सिलाई दोबारा करने में मदद की थी। माँ को उसके पेट के आकार को देखकर लग रहा है कि लड़का होगा। अपनी शिक्षा के बावजूद उसका इतना अतार्किक हो जाना आश्चर्यजनक है। शाम के अधिकांश समय माँ बूदी के बगल में बैठी रही, एक हाथ मजबूती से उसके पेट पर रखे हुए, मानो उसे अपने भीतर पल रहे जीवन को उसके भरोसे छोड़ने का डर हो...

ऋचा मुझसे कुछ छुपा रही थी। जब मैंने उसे अपनी कहानी सुनाई तो वह मुस्कुराई थी, लेकिन वह मुस्कान न तो खुशी वाली थी और न ही समझदारी भरी। उसमें उदासी साफ झलक रही थी।

उसने मुझसे आगे कुछ नहीं पूछा। ‘इसे पढ़ो। उसे तब पता चला कि लड़की के माता-पिता बहुत पहले मर चुके थे।’

'क्या?'

वह उसे बार-बार यही कहती रही कि वे शहर से बाहर गए हुए हैं। कि वह अपने पिता के भाई के साथ रहती है।

'वह ऐसा क्यों करेगी?'

‘वह पागल थी। और क्या! उससे और क्या उम्मीद की जा सकती है?’

... उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे गले लगा लिया। हम थोड़ी देर रोए, जिससे मुझे राहत मिली। फिर वह बिना यह बताए चली गई कि वह मुझसे दोबारा कब मिलेगी। मैं खुद से वह सवाल नहीं पूछ पाई जो मेरे दिल को कचोट रहा था—वह अपने माता-पिता के बारे में लोगों से झूठ क्यों बोलती है?

उसने कुछ पन्ने छोड़ दिए।

‘उसने उसके लिए इतना सब कुछ किया, उसने क्या किया? उसने उसे धोखा दिया!’ ऋचा ने आक्रोश से भरी, गुस्से से कांपती हुई आवाज़ में कहा।

'कैसे?'

‘वह स्कूल छोड़ना चाहती थी, अपनी चचेरी बहन के साथ रहना चाहती थी और एक कॉल सेंटर में काम करना चाहती थी। क्या आप कल्पना कर सकते हैं?’

‘उसके पास अपने कारण जरूर होंगे! आपको कैसे पता कि उसके साथ वहां अच्छा व्यवहार किया जा रहा था? उसके माता-पिता भी उसके साथ नहीं थे—’

'मैं उसके जैसे लड़के के लिए अपनी जान भी दे देती,' ऋचा ने कहा।

...मैंने *11:59* तक उसका इंतज़ार किया और फिर *12* बजे मैंने ठान लिया कि ब्राह्मी की लंबे समय तक अनुपस्थिति पर उदास होना बंद कर दूँ, उसे अपने दिल से निकाल दूँ, उसके बारे में लगातार सोचना बंद कर दूँ, लेकिन *12:01* बजे मेरे दिमाग में बस यही चल रहा था कि फोन उठाऊँ और उसे कॉल करूँ, उसकी आवाज़ सुनूँ। मैं रोना-धोना चाहता था और दौड़कर ब्राह्मी के पास जाना चाहता था, उसका रक्षक बनना चाहता था, कॉल सेंटर में नौकरी पाना चाहता था, घर और टीवी चाहता था, और वो सब कुछ जो वेदांत के पास है। काश मैं एक बार भी हीरो बन पाता*!*

उसने कुछ और पन्ने पलटे।

‘फिर वो अचानक चली गई,’ ऋचा ने कहा। ‘उसे अकेला छोड़कर। यकीन मानिए? और वो कई दिनों तक गायब रही। न कोई फोन, न कुछ। ऐसा कौन करता है? आपको देखना चाहिए था कि उस दौरान रघु की क्या हालत थी, एकदम टूट चुका था। ये सब पढ़िए! उस लड़की ने रघु को ऐसा महसूस कराया जैसे उनका रिश्ता खत्म हो गया हो!’

'वह ऐसा क्यों करेगी?'

ऋचा ने नज़रें फेर लीं और कोई जवाब नहीं दिया।

उसने कहा, 'सब कुछ बिखर गया।' 'किसकी ज़िंदगी
में?'

'दोनों।'

‘ब्रह्मी को क्या हुआ? उसने संपर्क क्यों नहीं रखा?’

कुछ देर चुप रहने के बाद उसने कहा, ‘वह फिर से आत्महत्या करने की सोच रही थी, मैं उसे इस झंझट में नहीं घसीटना चाहती थी। उसका चचेरा भाई... एक विकृत मानसिकता वाला व्यक्ति था।’

...आज मैंने ब्राह्मी को देखा। अगर मैं इसे इस तरह कहूँ तो यह मामूली बात लगती है। मैं तीन सुबह से उसके दफ्तर के बाहर इंतज़ार कर रहा था। यह कोई तर्कसंगत फैसला नहीं था। यह वो था जिसके लिए मेरा शरीर, मेरा दिल और मेरा दिमाग तरस रहा था। उस अनुभव को शब्दों में बयान करना मुश्किल है। शायद थोड़ा जलने जैसा, जैसे सब कुछ ठिठुर रहा हो।

आग लगी थी, और उसे सिर्फ वही बुझा सकती थी। मुझे पता है यह सुनने में अजीब लगता है, लेकिन मेरे मन में यही भावना थी...

... मुझे उसकी आवाज़ की याद नहीं आती, मुझे उसके स्पर्श की याद नहीं आती, मुझे उसकी उपस्थिति की याद नहीं आती।

हां, मुझे उसकी बिल्कुल भी याद नहीं आती। और मुझे उसकी याद क्यों आएगी? ऐसा नहीं है कि मैं उसे अपना हिस्सा मानती हूं। ऐसा नहीं है कि मेरे जीवन के आखिरी कुछ दिन घोर निराशा में बीते हों, या ऐसा न हो कि मैंने जागते हुए हर पल को उन सभी पलों को याद करने में बिताया हो जो हमने साथ बिताए थे, जो मुझे वास्तविक, सच्चे और शाश्वत लगते थे, या ऐसा न हो कि मैंने उसके साथ देखे गए हर संभव भविष्य के खोने का शोक मनाया हो, या ऐसा न हो कि कभी-कभी दर्द इतना असहनीय हो जाता है कि मैं कागज काटने वाली मशीन से खेलने लगती हूं...

मैं चौंक गई। 'लेकिन...लेकिन...क्या उसने...क्या उसने आत्महत्या करने की कोशिश की?' 'नहीं, जब तक उसका भाई...अनिर्बन उस भयानक आग में नहीं मर गया।'

'क्या!'

'उनके बेटे के जन्म से महीनों पहले।'

जैसे ही उसने पन्ना पलटा, मेरे मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे। जगह-जगह पर आँसुओं के धब्बे थे। मैं उसे पढ़ नहीं पा रही थी।

... दादा को नीली चिंगारी का एहसास होने और उनके दिल की धड़कन रुकने के बीच, उन्होंने सब कुछ महसूस किया होगा। जिस क्षण दादा ने एलपीजी से भरे उस बैठक कक्ष में बत्ती जलाई होगी और उस चिंगारी को किसी बड़ी चीज में बदलते देखा होगा, वे भय से भर गए होंगे।

दादा सोच रहे होंगे कि कैसा होगा, आग, धमाके की गड़गड़ाहट, और फिर वो बल जो उनके शरीर को कुचल देगा। पहले कुछ माइक्रोसेकंड में, दादा ने इसे हल्के में लिया होगा, सोचा होगा कि आग छोटी और क्षणिक होगी, लेकिन अगले ही पल उनका विचार बदल गया होगा, उनका शरीर तैर रहा होगा, सुनहरी लपटें उनके हर हिस्से को चाट रही होंगी। उन्होंने झुलसा देने वाली गर्मी महसूस की होगी, उन्होंने महसूस किया होगा कि उनकी त्वचा पिघल रही है, उनके अंग झुलस गए होंगे, माँ ने नौ महीने तक अपने गर्भ में दादा को जो भी ऊतक दिए थे, वे सब सिकुड़कर जल रहे होंगे। दादा ने अपने शरीर के बिखरने का असहनीय शारीरिक दर्द महसूस किया होगा। मुट्ठियाँ भींची हुई, जबड़े जकड़े हुए, गले में तनाव लिए, वे चीखे होंगे। और फिर दर्द असहनीय हो गया होगा...

ऋचा और मैंने दोनों ने अपने आँसू छुपा लिए। मैं सोच रही थी कि इसे पढ़ते हुए वह कितनी बार रोई होगी, और क्या पन्ने पर गिरे ये आँसू उसके भी थे। 'रघु के माता-पिता'

इसका सारा दोष जुबैदा पर डाल दिया। उसका बच्चा उससे छीन लिया और

उसे धर्म परिवर्तन करने को कहा।' 'क्या उसने ऐसा किया?' मैंने चौंककर पूछा।

उसने सिर हिलाया। ‘बस, हद हो गई। रघु के माता-पिता ने जुबैदा का बुर्का, उसका नाम, उसकी धार्मिक पुस्तकें छीन लीं, उसे मंदिर ले गए और जबरन धर्म परिवर्तन करवाया। यह बहुत भयानक था। उन्होंने उसे शादी की चूड़ियाँ भी पहनाईं और फिर तोड़ दीं। पूरी बस्ती ने यह घिनौना मंजर देखा। सोचो, जीवन भर अपने माता-पिता को आदर्श मानना और फिर यह जानना कि वे दरिंदे हैं! यह बहुत भयानक था, रघु के लिए असहनीय। उसने घर छोड़ दिया और कसम खाई कि वह कभी वापस नहीं आएगा।’
उन्होंने... उन्होंने एक बेतुका समझौता किया, एक साथ अपनी जिंदगी खत्म करने का। उन्हें लगा कि यही एकमात्र रास्ता है। वे उस घर में चले गए जहाँ उनका भाई रहता था... और वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

रसोई और बैठक कक्ष पूरी तरह से तहस-नहस हो चुके हैं, कालिख से काले पड़ गए हैं, दीवारें आधी टूटी हुई हैं, खून के दाग धो दिए गए हैं, लेकिन शयनकक्ष आश्चर्यजनक रूप से सही-सलामत है। फ्लैट में पानी या बिजली नहीं है, लेकिन फिर भी यह एक घर है।
ब्राह्मी ने कहा कि वह कल अपना बैग तैयार रखेगी...

उन शब्दों ने मेरे मुंह को चीर दिया और खून बहने लगा। मैंने पूछा, 'उस रात क्या हुआ था?'

‘ब्रह्मी ने रघु को बचाया,’ ऋचा ने कहा। ‘कम से कम उसे तो यही लग रहा था कि वह ऐसा कर रही है। उसने डायरी के आखिरी पन्ने पर रघु के लिए लिखा था ताकि वो उसे पढ़ सके इससे पहले कि... वे दोनों एक साथ कूद पड़ें...’

मैंने डायरी छीन ली और आखिरी कुछ पन्ने पलट दिए।

अरे रघु,

मैं कगार पर खड़ी हूँ और आपको लगता है कि आप जो लिख रहे हैं, वही आपका आखिरी लेखन है। आप सोच रहे हैं कि मैं इसे पढ़ूँगी और मुस्कुराऊँगी, और मुझे यकीन है कि अगर मैं पढ़ूँगी तो मुस्कुराऊँगी, लेकिन मेरे पास समय नहीं बचा है। रघु, आप एक प्यारे इंसान हैं, आपमें खुश रहने और दूसरों को खुश करने की शक्ति है, और आपको अक्सर ऐसा ही रहना चाहिए। आपमें प्यार करने की शक्ति है, बदलाव लाने की शक्ति है, और आप मेरे विपरीत एक जुझारू इंसान हैं। आप बहादुर हैं, लेकिन मैं नहीं। क्या हमने हमेशा मरने की बहादुरी के बारे में बात नहीं की थी? नहीं, ऐसा नहीं है। बहादुरी तो जीवित रहने में है, ईश्वर द्वारा दिए गए वर्षों को जीने में है, दुख के समय में अपनी खुशी को थामे रखने में है और आगे बढ़ते रहने में है। आप यह कर सकते हैं, मैं नहीं। आपमें दूसरों के लिए जीने की क्षमता है। जैसे आज सुबह, जब मैंने आपसे पूछा कि क्या आप अपने भतीजे से मिलना चाहते हैं, तो क्या आपने एक पल में हाँ नहीं कह दी थी? आपने हाँ कह दी, क्योंकि आपमें प्यार करने, देने और दूसरों के लिए जीने की असीम क्षमता है। और अगर मैं तुम्हारे जैसे किसी

को इस दुनिया से छीन लूँ तो मैं किस तरह का इंसान कहलाऊँगा? खुद से पूछो, तुम्हारा जवाब क्या होगा?

अगर मैंने तुम्हें तुम्हारे दादा के फ्लैट में रहने का विकल्प दिया होता, सिर्फ तुम और मैं, जैसे-तैसे गुज़ारा करते, तो क्या होता। तुम मुझे और अपनी ज़िंदगी को चुनते। मुझे खुश रखने के लिए तुम कुछ भी करते। ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम एक अच्छे इंसान हो, रघु। तुम मानते हो कि प्यार हर चीज़ पर, गहरे से गहरे दर्द पर, मुश्किल से मुश्किल समय पर विजय पा लेता है। तुमने मुझे मेरी ज़िंदगी के सबसे अच्छे कुछ महीने दिए और मैं इसके लिए आभारी हूँ। तुम ही मेरी ज़िंदगी का वो हिस्सा थे जिसके लिए जीना सार्थक था। मेरे जाने के बाद खुद को दोष मत देना क्योंकि इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं होगी। मैं हमेशा से ही मरने वाली थी। थोड़ी पागल, दिमागी रूप से कमज़ोर, जैसा कि मेरे रिश्तेदार हमेशा मुझे समझते थे। जिस दिन मेरे माता-पिता की मृत्यु हुई, उसी दिन मैं मर गई थी। उसके बाद तो बस समय की बात थी। अब मुझे लगता है कि मैं बस तुम्हारा ही इंतज़ार कर रही थी, तुमसे प्यार करने का, किसी ऐसे व्यक्ति का जो मुझे तुम्हारे जितना निस्वार्थ भाव से प्यार करे; तुम मेरी ज़िंदगी की हार के लिए भगवान का सांत्वना पुरस्कार थे।
आपने मुझे अलग नजरिए से देखा, और इसके लिए मैं आपका जितना भी धन्यवाद करूं कम है।

लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता।

रघु, मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ। मैं तुम्हें अपने दुख में नहीं घसीटना चाहती। इसलिए मुझे जाने दो। ऊपर देखो और मेरी तरफ मुस्कुराओ। इस किनारे से कूदने से पहले, मैं तुम्हें आखिरी बार देखना चाहती हूँ।
भागने या बात करने की कोशिश मत करो। बहुत देर हो चुकी है। बस मेरी तरफ देखो, मुस्कुराओ और घबराओ मत। ये हमारा आखिरी पल है। मैं चाहती हूँ कि हम मुस्कुराएँ। शायद तुम अभी रो रहे होगे। कोई बात नहीं। तुम कुछ दिन रोओगे, मेरी गैरमौजूदगी का गम मनाओगे, लेकिन तुम इससे उबर जाओगे, रघु। तुम दुनिया की सारी खुशियों के हकदार हो।
तुम्हारे पास बहुत समय है। तुम्हारे पास जीने के लिए एक लंबा, सुखमय जीवन है। तुम्हें जीना ही होगा। मेरे लिए। और एक दिन, तुम्हें कोई ऐसा मिलेगा जो तुमसे मुझसे भी ज़्यादा प्यार करेगा, और उस दिन तुम मुझे धन्यवाद दोगे। अब मेरे जाने का समय हो गया है।
जब मैं छलांग लगाऊं, तो मेरे पीछे मत आना, मुझे बचाने की कोशिश मत करना। बल्कि खुद को बचा लेना। अगर तुमने कभी मुझसे प्यार किया है, तो मेरे पीछे मत आना। अब मेरी तरफ देखो और मुस्कुराओ। रोना मत, मुस्कुराओ। हां, वही मुस्कान। वही धूप। वही रोशनी, मेरे प्यार। अब मेरा जाने का समय आ गया है। अलविदा, रघु। मैं तुमसे प्यार करती हूं। मैं हमेशा तुमसे प्यार करती रहूंगी।

वह उछल पड़ी।

जब धीरे-धीरे मुझे यह बात समझ में आई—और इसमें बहुत समय लगा—मैं बेकाबू होकर रोने लगी और ऋचा को मुझे पार्क से खींचकर ले जाना पड़ा, जो बच्चों

और बूढ़े लोगों से भर चुका था। देखते ही देखते हम उस इमारत की सीढ़ियों पर थे जहाँ रघु कभी रहता था। मुझे अपने चारों ओर सब कुछ जीवंत महसूस हो रहा था। रघु और उसकी प्रेमिका, जिसकी मृत्यु हो गई और जो उसे अपराधबोध के भंवर में धकेलती चली गई; उसका मृत भाई, जिसने प्रेम करने का साहस किया और उनकी दुनिया को तहस-नहस कर दिया; और उसकी बुर्का पहने पत्नी, जिसने अपनी पहचान त्याग दी।

उसके बच्चे को संभालो; उसके कुटिल माता-पिता जो अपने बेटों से बहुत प्यार करते थे, लेकिन अपने धर्म से उससे भी कहीं ज़्यादा, और उसकी प्रेमिका, वह मूर्ख, झूठी ब्राह्मी। मुझे ऐसा दुख हुआ जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया था। ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरा दिल कुचल दिया हो। घुटन सी हो रही थी।

ऋचा मुझे घर ले गई और सीधे अपने कमरे में ले गई।

उसने कहा, 'घर थोड़ा गंदा है।'

मैं अब भी रो रही थी।

'तुम्हें रुकना होगा, वरना जब मेरी मां आएंगी तो उन्हें लगेगा कि कुछ बहुत गलत हो गया है,' उसने कहा और अपने तौलिये से मेरा चेहरा पोंछ दिया।

फिर उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। 'तुम तो बिल्कुल नन्हे बच्चे हो, है ना? तुम्हारी

उम्र कितनी है?' 'अठारह,' मैंने कहा, मुझे पता नहीं था कि इससे क्या फर्क पड़ता है।

'उस बेवकूफ लड़की के छत से कूदने के बाद, मुझे लगा था कि वह लड़का सुधर जाएगा,' ऋचा ने कहा। 'लेकिन नहीं। वह लड़का उसके पीछे भागता रहा।'

'कैसे-'

'उस रात उसकी मौत नहीं हुई थी। एक महीने बाद तक तो पता ही नहीं चला था कि...' उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई। लंबे विराम के बाद उसने आगे कहा, 'किसी को नहीं पता था कि रघु भी छत पर था, कि वह भी... जब मुझे अस्पताल में उसकी डायरी मिली, तब मुझे पता चला कि रघु और ब्रह्मी ने क्या योजना बनाई थी। मुझे पता है कि मैंने ब्रह्मी के आईसीयू में घुसकर उसे अपने हाथों से गला घोंटकर मारने से खुद को कैसे रोका। ब्रह्मी ने मेरे रघु को लगभग मार ही डाला था। तुम्हें पता है रघु ने वहाँ जो एक महीना बिताया, उसमें सबसे बुरा क्या था? उसे यह मूर्खतापूर्ण उम्मीद थी...'

दोनों—डॉक्टरों के बचने की रत्ती भर भी उम्मीद न होने के बावजूद—जीते रहे। कोई भी मूर्ख समझ सकता था कि वह नहीं बचेगी, इतनी भयानक चोट के बाद तो कोई भी नहीं बच सकता था। उसे हर पल उसके बिस्तर के पास बैठे, ब्राह्मी को ऐसे देखते हुए देखना घिनौना था, मानो वह कोई चमत्कार हो। उसके झूठ और छल के बावजूद, वह वहाँ था, उससे प्यार करता और उसके लिए प्रार्थना करता। उसने एक भी आँसू नहीं गिरने दिया, कहीं ब्राह्मी उसे देख न ले। जब ब्राह्मी बेहोशी की हालत में थी, मुश्किल से एक शब्द बोल पाती थी, रघु उससे अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद की योजनाओं के बारे में घंटों बातें करता रहता था। उसने उसके जीवन समाप्त करने के फैसले पर एक बार भी सवाल नहीं उठाया! वह बस दिन-रात उसे पागलों की तरह घूरता रहता था। मैं स्कूल छोड़कर बैठ कर उसे उस लड़की से प्यार करते देखती थी जो इसके लायक बिल्कुल नहीं थी। ब्राह्मी उस रात क्यों नहीं मर गई? कभी-कभी मुझे लगता था कि यह भगवान का मुझे दुखी करने का तरीका है। मैं सबसे आगे की पंक्ति में नहीं बैठना चाहती थी।

मैंने अपने जीवन के प्यार को किसी और के लिए खुद को बर्बाद करते हुए देखा। लेकिन यह पहली बार था जब उसने मुझसे बात की... एक दोस्त की तरह। उस पल मुझे इस बात से तसल्ली मिली कि वह सिर्फ मुझसे ही बात करता था।

मैं आशा कर रही थी कि वह जल्द ही मर जाएगी, और रघु और मैं हाथ में हाथ डालकर इस गहरे दुख से उबरेंगे। मैंने सोचा था कि आखिरकार वह मुझसे प्यार करने लगेगा। देर-सवेर वह ब्राह्मी को भूल जाएगा। वह उसके मन में बस एक धुंधली सी याद बनकर रह जाएगी, इससे पहले कि उसे वह लड़की मिल जाए जिससे वह सचमुच प्यार करता है।

'मैंने उसे दो बार अपने माता-पिता और यहाँ तक कि अपने भाई की पत्नी को भी डांटते हुए देखा। कुछ दिनों बाद, ब्रह्मी के ताऊजी, जिन्हें रघु ब्रह्मी के कृत्यों के लिए जिम्मेदार मानता था, को पार्किंग स्थल पर बुरी तरह पीटा गया, जिससे वे लगभग मरणासन्न हो गए। हमलावर कौन था, यह किसी को नहीं पता था, लेकिन अगले दिन रघु की उंगलियों पर चोट के निशान थे।'

'ब्रह्मी के इलाज का खर्च उठाने के बावजूद वह अपने दोस्तों या भाभी से भी बात नहीं करता था। उसे सिर्फ ब्रह्मी का दर्द दिखता था, हम बाकी लोगों की उसे कोई परवाह नहीं थी। यह बहुत गुस्सा दिलाने वाला था। मैंने कई बार पुलिस को बताने का सोचा कि उसने छत से कूदने की कोशिश भी की थी। मुझे यह सोचकर अच्छा लगता था कि लोग रघु को ब्रह्मी से अलग कर दें। यही बात मुझे उन दिनों हिम्मत देती थी। यह भयावह था, लेकिन शायद प्यार ऐसा ही कर देता है। मैं उम्मीद करती रही कि रघु हिम्मत हार जाएगा, घर लौट आएगा, लेकिन वह नहीं लौटा। तब भी नहीं जब ब्रह्मी को वेंटिलेटर पर रखा गया था और डॉक्टर से लेकर नर्स तक सभी जानते थे कि वह बच नहीं पाएगी।'

जब उसकी हालत बिगड़ने लगी, उसके हाथ ठंडे पड़ गए और वह मरने की कगार पर थी, तब भी वह उम्मीद की एक किरण ढूंढ लेता था। "देखो, ऑक्सीजन का स्तर बढ़ गया है! देखो, उसकी हृदय गति ठीक है। देखो, मैंने उसकी एक उंगली हिलते हुए देखी," वह कहता और जबरदस्ती सांस लेता।
मुस्कुराहट। यह दयनीय था। लेकिन यही वह प्यार था जिसकी मुझे चाह थी। चाहे यह मूर्खतापूर्ण लगे, मैं उस बिस्तर पर होना चाहती थी, वह बनना चाहती थी जिसके साथ रघु घंटों बातें करता रहे। इसका कोई मतलब नहीं था। लेकिन आईसीयू के दरवाजे पर लगे उस छोटे से गोल शीशे से देखते हुए, मैं उस बिस्तर पर, अधमरी हालत में होने के लिए सब कुछ त्याग देती। कम से कम मैं उस पल को संजो कर रखती। कहते हैं कि हमें मरे हुए के बारे में बुरा नहीं बोलना चाहिए, लेकिन क्यों न बोलें? उसने उसे बर्बाद कर दिया।

कुछ पलों में तो मैं भी ब्रह्मी का साथ देती थी। इसलिए नहीं कि मुझे उनके प्यार में कोई समझदारी दिखती थी, बल्कि इसलिए कि ब्रह्मी की मृत्यु के बाद रघु का क्या होगा, इसका मुझे डर था। यह सवाल 'होगा या नहीं' का नहीं, बल्कि 'कब होगा'

का था, और मैं अंदर तक डरी हुई थी। मैं खुद को यही समझाती रहती थी कि सब ठीक हो जाएगा, वह एक दिन रोएगा,

एक हफ़्ता, ज़्यादा से ज़्यादा एक महीना, उसके आँसू पोंछकर उसके दुख को छुपाकर, फिर उसे अपनी ज़िंदगी में आगे बढ़ने का समय मिल जाता। मैं इससे ज़्यादा गलत नहीं हो सकती थी। मुझे अभी भी उसकी चीखें सुनाई देती हैं, मुझे यकीन है कि अस्पताल में मौजूद हर किसी को सुनाई देती होंगी, जब ब्राह्मी की हालत एक बार बहुत खराब हो गई थी। उसे अस्पताल से जबरदस्ती ले जाना पड़ा, क्योंकि उसने एक
डॉक्टर का सिर दीवार से लगा हुआ था। मेरी मुसीबतें अभी भी खत्म नहीं हुई थीं। ब्राह्मी, जो मरने की इतनी बेताब इच्छा रखती थी, उसे फिर से जीवित कर दिया गया।

'वह दो सप्ताह तक पार्किंग में बैठा रहा। वह बस वहीं बैठा रहता और घूरता रहता, मानो किसी मृत व्यक्ति को सीधा खड़ा कर दिया गया हो। उसने एक बार भी खाने, पानी या किसी और चीज़ के लिए हिल-डुल नहीं किया। अस्पताल के अधिकारियों ने ताऊजी से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने
रघु आने से इनकार कर दिया। रघु के दोस्त साहिल, ऋषभ और अरुंधति आए और बिलों का भुगतान किया, जिसके बिना ब्राह्मी को वेंटिलेटर पर नहीं रखा जा सकता था। और कुछ दिनों बाद, उन्हीं दोस्तों ने उसे यह दुखद खबर दी। ब्राह्मी की नींद में ही मृत्यु हो गई थी। रघु ब्राह्मी को आखिरी बार देखने के लिए अस्पताल के दरवाजे पर जा गिरा। अस्पताल अधिकारियों ने उसे इसकी अनुमति नहीं दी।

बिना अनुमति के बिजली के श्मशान में घुसने की कोशिश करने पर पहरेदारों ने उसकी पिटाई कर दी। वह वहीं खून से लथपथ खड़ा रहा, जब उसकी प्रेमिका का शव हड्डियों, राख और धूल में तब्दील हो गया। सब कुछ खत्म हो गया। मैं वहीं खड़ी उसे टूटते हुए देख रही थी, मेरा दिल धड़क रहा था, मैं बहुत डरी हुई थी। जब उसके दोस्त उसकी राख लेकर बाहर आए, तो वह उनके चरणों में गिर पड़ा। राख मिलते ही वह गायब हो गया। मैंने उसे एक महीने तक नहीं देखा। मैंने सोचा... मैंने सबसे बुरा सोचा। मैंने उसकी डायरी पढ़ी थी, उसके पास अपनी जान लेने के कई तरीके थे। उसे शुरू से ही मरने की इच्छा थी।

उसके माता-पिता ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी जिसे खारिज कर दिया गया क्योंकि वह

पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट दर्ज कराई गई। फिर भी वह घर नहीं लौटा। मैं घंटों बालकनी में उसका इंतज़ार करती रही। आखिरकार वह अपने भतीजे के पहले जन्मदिन पर मेरे पास आया। वह अपने भतीजे को उपहार देना चाहता था। हम दोनों फुटपाथ पर बैठकर उसका जन्मदिन मनाया। उस दिन वह मुस्कुरा रहा था। मुझे लगा कि वह अपने माता-पिता के पास घर लौट जाएगा। क्योंकि न केवल उसके भतीजे का जन्मदिन था, बल्कि उसकी माँ और बाबा ने उसकी भाभी के बुर्के, पट्टियाँ और किताबें जला दी थीं। दो बेटों को खोने का दर्द बहुत गहरा था।

मैंने पूछा, ‘वह घर नहीं गया?’

‘नहीं,’ उसने कहा। ‘वह हर दो महीने में आता था और उन्हें देखता था। वह मेरे किसी भी सवाल का जवाब नहीं देता था। और फिर तुम आए। उसके पहले दोस्त?’

मुझे समझ नहीं आया कि इसका जवाब कैसे दूं।

लेकिन मुझे पता है कि वह फिर से खुश क्यों है। तुम मुझे उसकी

याद दिलाती हो।’ ‘मैं बिल्कुल भी उसके जैसी नहीं दिखती।’

नहीं, तुम नहीं हो। तुम उससे कहीं ज़्यादा सुंदर हो, जिससे मुझे और गुस्सा आता है। लेकिन कई मायनों में, वह वही कर रहा है जो वह उसके लिए नहीं कर सका। वह तुम्हें जाने में मदद कर रहा है, है ना? तुम्हारी ज़िंदगी बेहतर बनाने की कोशिश कर रहा है?

'लेकिन-'

‘ऐसा लग सकता है कि तुमने उससे संपर्क किया, लेकिन क्या ऐसा हो सकता है कि वह तुम्हें पहले से जानता हो? उसने तुम्हारे बारे में किसी से तो सुना ही होगा?’ उसने मुझसे सवाल की तरह पूछा, लेकिन उसे पूरा यकीन था। मेरे मन में अल्ताफ का नाम गूंज रहा था, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। मैं सोच रही थी कि उसने ‘डॉक्टर वैद्य की पोतियां’ कहा था, कि वह मुझसे मिलने से पहले ही मेरे बारे में सब कुछ जानता था। क्या वह मुझसे अचानक मिला था? या यह सब पहले से तय था? क्या उसका इरादा हमेशा से मेरी जिंदगी में दखल देने का था? क्या यह सब संयोग नहीं था?

ऋचा ने आगे कहा, 'वह तुमसे प्यार करता है।'

'नहीं, हम... बस दोस्त हैं।'

‘हाँ, तुम्हें ऐसा लगता है। लेकिन वो ऐसा नहीं सोचता। तुम्हें क्या लगता है कि जब मैं यहाँ बैठी हूँ, तो वो मुझसे दोस्ती करने की जहमत उठाएगा? मैं उसे इससे कहीं बेहतर जानती हूँ। वो हमेशा से हीरो बनना चाहता था। उसने तुम्हें ज़रूर ढूँढा होगा और तुम्हें अपना उद्धार समझा होगा। वो तुम्हारे लिए वो करेगा जो वो ब्रह्मी के लिए नहीं कर पाया। तुम्हें बचाएगा। सिर्फ़ इसलिए कि तुम खुद को उसकी सबसे अच्छी दोस्त कहती हो, इसका मतलब ये नहीं कि तुम वो सब जानती हो जो मैं जानती हूँ,’ उसने कहा। ‘मैं उसे जानती हूँ। वो तुमसे प्यार करता है। बस यही एक बात है जो इसे समझाती है—’

आप निश्चित रूप से नहीं कह सकते।

‘क्या मैं नहीं लिख सकती?’ उसने द्वेष और क्रोध से भरे चेहरे के साथ हँसते हुए कहा। ‘तो फिर वो दोबारा ऐसी बेवकूफी भरी डायरी क्यों लिख रहा है? मैंने उसे उसके हाथों में देखा था, कुछ पन्ने भरे हुए थे।’

मैंने सब कुछ समझने की कोशिश करते हुए कहा, 'आप निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते।'

‘अब तुम्हें जाना चाहिए, मम्मी जल्दी घर आ जाएँगी,’ ऋचा ने कहा और मुझे

दरवाजे तक ले गई। फिर उसने धीमी आवाज़ में कहा, ‘तुम्हारे जाने के बाद, वह...’

मेरे साथ। शायद इस बार वह सही व्यक्ति को चुनेगा।'

मैं सीढ़ियों से नीचे उतरी, मेरी नज़र धुंधली हो गई थी और दुनिया घूम रही थी। रघु के साथ बिताया सारा समय अब उसके अतीत और ब्राह्मी के साथ उलझ गया था। बाहर निकलते समय मैंने एक बुर्का पहनी महिला को देखा, जिसके साथ एक छोटा बच्चा चिपका हुआ था, खिलखिला रहा था और 'माँ, माँ, माँ' पुकार रहा था। वे दोनों मुस्कुरा रहे थे, उनकी मुस्कान बहुत चौड़ी थी।

मुस्कुराहट। लड़के ने पीछे मुड़कर अपने दादा-दादी, रघु के माता-पिता को पुकारा, जो धीरे-धीरे चल रहे थे। वे डायरी में पढ़ी उम्र से कहीं अधिक उम्र के लग रहे थे, पिता के बाल लगभग सफेद थे और माँ की आँखें धँसी हुई थीं।

9 मार्च 2003

हमारे पासपोर्ट आ गए हैं।

तीनों पासपोर्टों के एक-एक पन्ने पर हमारी आज़ादी की मुहर लगी है। मम्मी और पापा ने उन्हें बड़ी सावधानी से छुपा रखा है। हम दोनों को ही ठीक से नींद नहीं आ रही है। मेरी तरह, मुझे यकीन है कि वे भी उस पल का सपना देखते होंगे जब मम्मी हमें फोन करके टिकट और ऑफर लेटर के बारे में बताएंगी, कि कैसे हमें आधी रात को चुपके से निकलना होगा। कैसे वह बड़े उत्साह से हमें बताएंगी कि हमें सीधे एयरपोर्ट जाना है। एयरपोर्ट पर मैं कोशिश करूंगी कि कोई गलती करने पर शर्मिंदा न होऊं—जैसे टिकट किसी गार्ड को दिखाना, एयरलाइन कर्मचारी को नहीं, या ऐसी खिड़की खोलने की कोशिश करना जो खुलती ही नहीं। लेकिन इन सभी सपनों में, मैं मुड़कर देखती हूं तो रघु वहां खड़ा हाथ हिला रहा होता है, अपनी बेवकूफी भरी मुस्कान लिए होता है, और इशारों में कह रहा होता है कि वह मुझसे प्यार करता है।

हो सकता है मैं यह सब सोच रही हूँ, पर हम पहले जैसे नहीं रहे। क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि अब जब मैं रघु को देखती हूँ तो मुझे वो सब दिखाई देता है जो उसने झेला है, वो अंधेरा और वो दर्द? या फिर इसलिए कि अब मुझे उसके मेरे लिए प्यार का पता चल गया है? या फिर इसका संबंध मेरे उसे छोड़ने से है? पिछले दो दिनों में मैंने उसे चोरी-छिपे मेरी तरफ देखते हुए पकड़ा है, फिर वो एकदम शांत हो जाता है और ऐसे बर्ताव करता है जैसे कुछ हुआ ही न हो। और अब जब मैं जा रही हूँ, तो वो मुझे सच का बोझ नहीं डालेगा। उसे तो अपने सच खुद ढोने की आदत है, है ना?

मैंने अपनी दोस्ती के पूरे इतिहास को खंगाला ताकि समझ सकूँ कि यह सब कब हुआ होगा। नाकाम रहने पर, मैं सोचने लगी कि क्या कोई ऐसा समय था जो मुझसे छूट गया और कब मुझे उससे प्यार हो जाना चाहिए था। तब तो सब कुछ आसान होता। दो लोग एक-दूसरे से प्यार करते, कुछ ऐसी परिस्थितियों में अलग हो जाते जिन पर उनका कोई बस नहीं चलता, लेकिन फिर भी बाद में साथ आने का वादा करते। यह बात मुझे सहने को तैयार थी। लेकिन यह... यह सब देखकर मुझे गुस्सा आ रहा है।

यह एक नए अध्याय की अशुभ और दिल दहला देने वाली शुरुआत है और हम दोनों में से कोई भी इसके लायक नहीं है। यह मुझे बार-बार उसकी डायरी में लिखी बातें याद दिलाता रहता है।

अगर हमारा जीवन जोड़ों में ही बीतने के लिए बना है, तो हमारे दिलों में हमारे जीवनसाथी के नाम अंकित क्यों नहीं हैं? हम सही या गलत चुनाव करने तक एक नाम से दूसरे नाम की ओर क्यों भटकते रहते हैं?
वो मुझसे प्यार क्यों करेगी जब मैं उसे कभी प्यार नहीं करूंगा? दुनिया में प्यार के नियम कभी स्थिर नहीं होंगे। ये हमेशा एक कपल के लिए बुरे सपने जैसा रहेगा।

रघु ने जो डायरी लिखना शुरू किया था, उसके बारे में ऋचा सही थी। वो मेरे पास है। मैंने आज सुबह उसे चुरा लिया। उसमें एक को छोड़कर बाकी सब लिखा हुआ है। उस पर कोई तारीख नहीं है। मैंने उसे पढ़ा नहीं है, मुझे डर लग रहा है। कहीं उसमें रघु के प्यार का इज़हार तो नहीं है? यह जानकर बहुत बुरा लगेगा कि वहप्यार करता हैमुझे तब बुरा लगता है जब मैं उससे उतना प्यार नहीं करती। लेकिन मुझे दोषी महसूस नहीं करना चाहिए, है ना? बेशक, मैं उसे एक दोस्त के रूप में बहुत प्यार करती हूँ। मेरे परिवार के बाद, वही एकमात्र व्यक्ति है जिसकी मुझे परवाह है और जिसके लिए मैं कुछ भी कर सकती हूँ। मुझे बुरा क्यों लगता है, जबकि यह कहना असंभव है कि मेरा प्यार उसके प्यार से कम है या नहीं? सिर्फ इसलिए कि उसका प्यार रोमांटिक है और मेरा नहीं? क्या सच्ची दोस्ती दुनिया का सबसे शक्तिशाली रिश्ता नहीं है? जितना मैंने देखा है, जीवन में अनगिनत बार प्यार में पड़ना स्वाभाविक है, और एक प्रेम कहानी अक्सर दूसरी पर हावी हो जाती है, और एक बार प्यार का रिश्ता खत्म हो जाने पर, आप वही प्यार दोबारा नहीं चाहते। लेकिन आपकी सभी दोस्तियाँ एक जैसी नहीं होतीं। आप स्कूल में बने दोस्तों को हमेशा याद करते हैं, और काम पर बने दोस्तों से अलग तरह से। और चाहे कितनी भी बुरी तरह से अनबन हो जाए, सालों बाद भी आप उन्हें वापस पाना चाहेंगे।
क्या आप ऐसा नहीं करेंगे?

मुझे बिना किसी अपराधबोध के उसकी डायरी पढ़नी चाहिए (सिवाय, बेशक, उसे चुराने के अपराधबोध के)। अब मैं यही कर रहा हूँ।

मुझे ऐसा लग रहा है कि मेरा अभ्यास छूट गया है।

इस कलम को दोबारा पकड़ना अजीब सा लगता है, कुछ-कुछ विश्वासघात जैसा, और मैं विश्वासघातों से अनजान नहीं हूं।

यह सब मेरे स्कूल के सबसे अच्छे दोस्त, सामी के साथ किए गए विश्वासघात से शुरू हुआ, है ना? उसकी मौत मेरी निगरानी में हुई। मैं उसे बचा सकता था, लेकिन नहीं बचा पाया। मैंने उसे उस पूल में डूबते हुए देखा; मैं इतना डरा हुआ था कि कूदकर उसे बचा नहीं पाया। मैंने उसे आखिरी सांस लेते हुए देखा, वह मुझे इल्ज़ाम भरी निगाहों से देख रहा था।
वो जीवन के लिए तड़पना क्या था जिसने सब कुछ शुरू कर दिया? मैं दादा द्वारा माँ और बाबा के प्यार के साथ किए गए विश्वासघात को कैसे भूल सकता हूँ? या माँ और बाबा के प्यार को?

अपने पोते के साथ विश्वासघात? दादाजी का उस गम से जल्दबाज़ी में निकल जाना भी नहीं भूलना चाहिए, मानो वे उस दुख से दूर भागना चाहते हों। और फिर थी ब्राह्मी, जिसने सबसे बड़ा विश्वासघात किया। झूठी। मायावी। वो लड़की जिसने मेरा दिल लाखों टुकड़ों में तोड़ दिया।

उसके जाने के बाद हर रात मैं खुद से कहता कि मैं सूख चुका हूँ, आँसू नहीं बहेंगे, लेकिन फिर भी आ जाते थे। उसने मुझसे उम्मीद की वो भावना छीन ली। हमें तब तक एहसास नहीं होता कि उम्मीद हमारे जीवन में कितनी महत्वपूर्ण है, जब तक कि वह बेरहमी से हमसे छीन न ली जाए। काश दोपहर के खाने में चिकन मिले। काश मेरे अच्छे नंबर आएँ। काश वो लड़की मुझे पसंद करे। काश मुझे नौकरी मिल जाए। जब आपके पास उम्मीद ही न हो तो आप क्या करते हैं?
आप अपना जीवन कैसे जीते रहते हैं? आप जी नहीं सकते।

मैं ज़िंदा रही। इसलिए नहीं कि ब्रह्मी के अंतिम शब्द मेरे लिए मायने रखते थे, बल्कि इसलिए कि यह मेरा उससे छोटा सा बदला था। जब बुढ़ापे में उससे दोबारा मिलूँगी, तो उसे बताऊँगी कि बिना उम्मीद के जीना इतना मुश्किल नहीं है; कि मैंने जी लिया और उसने जो किया वह मूर्खता थी। या शायद मैं उसे ठीक इसका उल्टा कहती। मैं उसे कहती कि उसे अपने किए पर पछतावा हो, मुझे एक दुख भरी ज़िंदगी जीने के लिए छोड़कर, जिसे मैंने सुधारने के लिए कुछ नहीं किया, सिर्फ़ उसे चिढ़ाने के लिए। मेरे जीवन के रूप में जिया गया बदला।

लेकिन उन योजनाओं में से किसी में भी उस लड़की का जिक्र नहीं था जिससे मुझे प्यार हो गया है।

क्या मुझे इसे आगे पढ़ना चाहिए? क्या मुझे पढ़ना चाहिए? हाँ, मुझे पढ़ना चाहिए।

मेरी किसी भी योजना में उस लड़की का जिक्र नहीं था जिससे मुझे प्यार हो गया है।

मुझे इसे लिखने में कोई बुरा नहीं लग रहा है। मैं बंधा हुआ महसूस नहीं कर रहा हूँ। मुझे आलोचना का डर नहीं है। मैंने इस बारे में सोचा है।

मैंने उसे पहली बार एक साल पहले देखा था, मुझे वह बात आज भी साफ-साफ याद है।

बारहवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा के नतीजे घोषित हो चुके थे। मैं अपनी एक छात्रा का हाल जानने के लिए वहाँ गया था। वह बोर्ड के सामने भीड़ लगाए छात्रों से दूर, चुपचाप बैठी अपनी माँ का हाथ थामे मन ही मन प्रार्थना कर रही थी। और जब उसे पता चला कि उसका रिजल्ट आ गया है, तो वह सबके सामने नाचने लगी, जब तक कि उसकी माँ ने उसे रोका नहीं।

एक पल के लिए, मुझे इस बात पर घृणा महसूस हुई कि वह कितनी खुश थी जबकि उसके आसपास के अन्य लोग अपने भविष्य को लेकर चिंतित थे।

उस समय उसके पास वह चीज थी जो अधिकांश लोगों के पास नहीं थी: आशा।

अगले कुछ दिनों तक, मैंने उस प्यारी लड़की का सपना देखा जो बेफिक्र होकर नाच रही थी, खुद को और अपनी माँ को शर्मिंदा कर रही थी। जितना ज़्यादा मैं उसे देखती,

उसके आसपास की चीज़ें धुंधली होती गईं और वह साफ़ दिखाई देने लगी; उसके चेहरे पर निर्मल आनंद, उसकी चमकती, झिलमिलाती आँखें। वह वैसी ही थी जैसा लोग अक्सर उसे 'प्यारी' कहते हैं। मेरे मन में 'प्यारी' की एकमात्र परिभाषा यह है कि बड़े होने पर भी लोग अपना बचपना बरकरार रखते हैं। अद्वैत में वह बात ज़रूर थी, उसके छोटे से गोल चेहरे के मुकाबले उसकी आँखें कुछ ज़्यादा ही बड़ी थीं, उसकी नाक थोड़ी दबी हुई थी और उसके होंठ ऐसे चमक रहे थे जैसे उसने अभी-अभी दूध पिया हो। वह एक छोटी बत्तख की तरह इधर-उधर घूमती थी, उसकी आँखें जिज्ञासा से चौड़ी थीं। वह धीरे-धीरे मेरे दिन की छोटी सी खुशी बन गई थी। मैं उस पल को बार-बार अपने मन में संजो कर रखता था।

कुछ दिनों बाद, मैंने उसे बाज़ार में इक़बाल और अल्ताफ़ से बात करते देखा। इक़बाल को मेरी चाय की लत लग गई थी और मुझे उस लड़की की कहानियों की, जिसे उसने बचपन से देखा था। हर शाम वह वहाँ बैठकर मुझे उस छोटी बच्ची के किस्से सुनाता, जिसे वह अपनी बहन मानता था। मैं सब कुछ ध्यान से सुनता, उसके जीवन भर के सुख, दुख और प्रेम को एक साथ जोड़ता। उस समय मुझे पता नहीं था, लेकिन मैं उससे प्यार करने लगा था। मैं इस अपराधबोध से इतना ग्रस्त था कि मैं ब्राह्मी के अलावा किसी और लड़की के लिए कुछ महसूस कर रहा था—भले ही उसका कोई नाम न हो। यह एक स्पष्ट अपराधबोध जैसा लग रहा था।
विश्वासघात। क्या मैंने उससे इतना प्यार नहीं किया था कि कुछ साल और फिर उसकी मौत ही हमें आगे बढ़ने के लिए काफी थी? हमेशा एक-दूसरे से प्यार करने के उन सारे वादों ने हमें मिट्टी में क्यों मिला दिया? अपराधबोध का बोझ पहले तो भारी लगा, लेकिन फिर धीरे-धीरे कम होता गया क्योंकि मुझे उसकी यादों के बोझ से दबने पर गुस्सा आ रहा था।

जैसे-जैसे मैं ब्राह्मी के बारे में सोचता गया, मेरा झुकाव अद्वैत की ओर बढ़ता गया। मुझे अपने आसपास अद्वैत का प्रभाव अधिक बार दिखने लगा। यह अजीब सा था। मुझे यह मानना अच्छा लगता था कि ब्रह्मांड ने ही हमें एक-दूसरे के कुछ ही गज के दायरे में ला खड़ा किया है।
बार-बार। लेकिन जब मैं काम के सिलसिले में लाइब्रेरी गया, तब तक उसने मुझे नोटिस नहीं किया था, और सौभाग्य से उसे मुझमें दिलचस्पी थी क्योंकि मैंने एक किताब चुराई थी जो वह चाहती थी।

मुझे इस लड़की के लिए जो भावनाएं महसूस होने लगी थीं, उन्हें स्वीकार करने में मुझे बहुत संघर्ष करना पड़ा। उसे मेरी चाय की चुस्की लेते, मेरे दिए नमकीन को बड़े चाव से खाते और लगातार उत्साह से बातें करते देखकर मुझे वो सब मिल गया जो मैंने पहले खो दिया था। उम्मीद। वो हर उस चीज़ से अलग थी जो मैं थी। उसे इस बात का पूरा यकीन था कि एक दिन वो न सिर्फ अपने लिए, बल्कि अपने परिवार के लिए भी खुशी पाएगी। मेरे विपरीत, वो एक जुझारू लड़की थी।

जब उसने मुझे अपनी सबसे अच्छी दोस्त, अपनी इकलौती दोस्त कहा, तो मुझे लगा जैसे मेरा दिल रुक गया हो।

उसी समय, मुझे निराश करने की शक्ति और निराश होने की असुरक्षा का गहरा भय सता रहा था, पर मैं बेबस थी। मैं खुश थी। उस पल मैं सचमुच बहुत खुश थी। और जब भी मैं उस पल के बारे में सोचती हूँ, मेरे चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। उसने मुझे बचाया, उसने मुझे आनंदहीन जीवन जीने से रोका; उसने मुझे बताया कि अगर कोई संघर्ष करता रहे तो खुश रहना संभव है, और ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है।

उस पल से, मैं उसकी सबसे अच्छी दोस्त बनना चाहती थी और उसे वह सब कुछ देना चाहती थी जिसकी उसे मुझसे ज़रूरत हो और उससे भी ज़्यादा। वैसे तो उसे कभी इसकी ज़रूरत नहीं पड़ी, लेकिन मैं उसकी रक्षा करना चाहती थी, उसके लिए लड़ना चाहती थी, उसके दुख दूर करना चाहती थी।

मुझे फिर से जीवन का अहसास हुआ। मुझे फिर से खुशी महसूस हुई।

पहली बार मैं दिनों को घंटों के हिसाब से नहीं देख रहा था। मैं सोच रहा था कि अगले हफ्ते या उसके अगले हफ्ते मैं क्या करूँगा। कि इस महीने के बाद भी एक महीना है, एक ऐसा महीना जो करने लायक कामों, मिलने लायक लोगों और घूमने लायक जगहों से भरा हो सकता है। उसने यह सब मुमकिन कर दिया। समय अब मेरा दुश्मन नहीं रहा, बल्कि दोस्त बन गया। समय तेज़ी से बीत रहा था, और जितनी तेज़ी से बीत रहा था, उतनी ही जल्दी मैं उससे मिल सकता था।

मुझे पता है कि बदले में वैसी ही भावनाएँ मिलने की उम्मीद रखना बेकार है। उसने मेरे लिए पहले ही नामुमकिन को मुमकिन कर दिया है। मुझे उससे और कुछ नहीं चाहिए। उसके जाने पर दुख होगा, लेकिन उसे वही करना है जो उसके और परिवार के लिए सबसे अच्छा हो। यही उसकी हमेशा से ख्वाहिश थी और मैं उसके लिए खुश हूँ।

मैं उससे प्यार करता हूँ।

मुझे बुरा नहीं लगना चाहिए। मुझे बुरा नहीं लगना चाहिए।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

10 मार्च 2003

वह फुटपाथ पर बैठा था, उसके कंधे झुके हुए थे, गाल किसी बूढ़े आदमी की तरह पिचके हुए थे, और वह सीधे आगे घूर रहा था, उसकी आँखें खाली थीं।

‘रघु?’ मैंने पुकारा।

वह उठा और बीसीसी की ओर चल पड़ा। मैं उसके पीछे भागा

और पूछा, 'क्या तुम मुझे बताओगे कि क्या हुआ?'

वह द्वार पर रुका और कमरे की ओर इशारा करते हुए बोला, 'मुझे लगता है उसे पता चल गया है। तुम्हें भागना होगा।'

मेजें जल चुकी थीं, कुर्सियाँ योजनाबद्ध तरीके से तोड़-फोड़ दी गई थीं, व्हाइटबोर्ड को हथौड़े से ठोककर टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया था, और कागज़ों को फाड़कर उन पर पैर रख दिए गए थे। मेरा पेट खराब हो गया। किसी ने मेरे सपनों पर हथौड़ा चला दिया था।

'घर जाओ।'

मैं घुटनों के बल गिर पड़ी, कागज़ समेटते हुए कुर्सियों को जोड़ने की कोशिश करने लगी, रोने लगी, धीरे-धीरे सच्चाई मेरे सामने आ रही थी, मेरे हाथ सुन्न पड़ रहे थे। मैंने नोटबुक, डायरी और कोर्स की सामग्री उठाई और उन्हें अपने बैग में भर लिया। रघु, वह लड़का जो मुझसे प्यार करता था, वह लड़का जिसका दिल मैं तोड़ने वाली थी, उसने मुझे तब तक थामे रखा जब तक मेरा रोना बंद नहीं हो गया, और मुझसे कहा कि मुझे घर जाना चाहिए।

उसने गुस्से से मुझे हिलाया। ‘रुको,’ उसने चिल्लाकर कहा। ‘अभी घर जाओ। क्या तुम मुझे सुन रहे हो? मेरी तरफ देखो। मेरी बात सुनो! बात खत्म! तुम्हें जाना होगा।’

वह मुझे कमरे से खींचकर ले गया। जब वह मुझे बस स्टॉप की ओर ले जा रहा था, तो रास्ते में हमें कुछ हैरान-परेशान माता-पिता और बच्चे मिले जो बीसीसी की ओर जा रहे थे।

हम बस में चढ़ गए। उसने मेरा हाथ पकड़ रखा था और बार-बार कह रहा था, 'सब ठीक हो जाएगा... सब ठीक हो जाएगा...'। लेकिन जब भी मैं उसे देखती, उसकी आँखों में डर साफ दिखाई देता था। मैंने देखा कि उसने मेरा हाथ कितनी मजबूती से पकड़ रखा था, मानो वह कभी छोड़ेगा ही नहीं, मानो वह मेरे और मुझे नुकसान पहुँचाने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति के बीच खड़ा हो जाएगा।

रघु की निगाहें मुझ पर तब तक टिकी रहीं जब तक मैं अपने घर की ओर मुड़ नहीं गई। मुख्य द्वार खोलने से पहले ही एक अजीब सी खामोशी छा गई। खिड़की से मैंने लोगों की परछाइयाँ देखीं, जो गोल-गोल घूम रही थीं, गुस्से और निराशा में अपने हाथ ऊपर उठा रही थीं। मैंने दरवाजा खोला और ऐसा लगा जैसे लाखों जोड़ी इल्जाम भरी निगाहें मेरी ओर मुड़ गईं, मुझे भेद रही थीं, मुझे जला रही थीं। अगले कुछ मिनटों तक, इल्जाम, अपमान और गालियाँ बेरोकटोक चलती रहीं। मुझे रंडी कहकर पुकारा गया।*najayaz*और उन्होंने मुझे मेरी माँ के गर्भ से बाहर आने के लिए कोसना शुरू कर दिया। बुआजी ने मुझे पकड़ा, थप्पड़ मारे और मुझ पर चिल्लाया, और मम्मी-पापा के साथ भी ऐसा ही किया। करण भैया और अंशुमन भैया पास ही खड़े थे, पैर फैलाए, हाथों में हॉकी स्टिक लिए, निर्देश सुनने के लिए तैयार। दादाजी सोफे पर बैठे सब कुछ देख रहे थे, मानो इस सब के सूत्रधार हों, पैर बांधे, हाथ जोड़े। उनके सामने मेज पर हमारे पासपोर्ट रखे थे जिन पर वीजा के हस्ताक्षर और मुहर लगी थी, हमारी आजादी के टिकट।

मनीष चाचा और सुमित्रा चुपचाप एक कोने में खड़े देखते रहे, इस बार उन्होंने कोई विरोध नहीं किया। कुछ देर बाद दादाजी ने करण भैया और अंशुमन भैया को हल्के से इशारा किया और वे झट से आगे बढ़े। उन्होंने मेरे बाल पकड़े और मुझे थप्पड़ मारा। मेरी सारी विनतियाँ अनसुनी कर दी गईं।

'चेहरा नहीं,' दादाजी ने कहा।

अंशुमन भैया, जो हमेशा डरपोक रहता है, वह लड़का जिसने कभी किसी से कोई लड़ाई नहीं जीती, उसने मेरे पेट पर मुक्कों की बौछार कर दी।

'बस करो,' दादाजी ने कहा और उठ खड़े हुए।

उसने पासपोर्ट उठाए, जो अब तेल से लथपथ थे।

'बाकी लोग,' उसने कहा और करण भैया ने उसे पुराने, पीले पड़ चुके कागजों का एक बंडल दे दिया।

दादाजी ने बड़ी सावधानी से, मानो अभ्यास से निपुण होकर, उन सभी को कमरे के बीचोंबीच ढेर कर रख दिया। जन्म प्रमाण पत्र, पहचान पत्र, स्कूल और कॉलेज के प्रमाण पत्र, बैंक खाता संख्या, चिकित्सा रिकॉर्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, कॉलेज आईडी कार्ड। हमारे अस्तित्व का हर एक प्रमाण।

'अगर तुम इस घर से बाहर निकलोगे तो तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं रहेगा,' उसने सभी दस्तावेजों को आग लगाते हुए कहा।

पहली लपटें भयंकर रूप से उठीं, उनकी पीली लपटों ने सबको चौंका दिया और हमारे भविष्य को तहस-नहस कर दिया। मम्मी और पापा अवाक खड़े रह गए।

बुआजी ने कहा, ‘मेघनाद बेवकूफ नहीं है। दिल्ली में उस लड़के के साथ घूमना ठीक नहीं है!’ अपनी बहन से मिलना! क्या तुम्हें लगता है कि उसने तुम्हारे पीछे सिर्फ एक ही
आदमी भेजा था?!’ करण भैया ने मेरी बांह पर अपनी पकड़ और कस ली।
बुआजी ने मम्मी-पापा की तरफ देखते हुए कहा, ‘तुम्हारी शादी मेघनाद से ही होगी। अब यहाँ से भागने का कोई रास्ता नहीं है। यहीं रहना है और यहीं मरना है।’ उन्होंने आगे कहा, ‘तुम्हें एक मौका मिला था और तुमने उसे गंवा दिया। तुम कितने नीच हो! वफादारी का तुम्हारे लिए कोई मतलब नहीं! एक उंगली दो तो पूरा हाथ मांगते हो! गंदे कीड़े! भैया, इस वेश्या को यहाँ लाने की बजाय उस नाले में चले जाना चाहिए था जहाँ से तुम्हारी पत्नी आई है!’
‘अद्वैता उससे शादी नहीं करेगी!’ मम्मी चिल्लाईं। ‘बिल्कुल नहीं करेगी!’
बुआजी ने मेरी तरफ देखा और कहा, ‘या तो ऐसा होगा या फिर हम तुम्हारे दोस्त
का ख्याल रखेंगे।’
रघु।
पृष्ठभूमि से दादाजी की आवाज गूंजी, 'उसका भी वही हश्र होगा जो अल्ताफ का हुआ था।'
‘आपका क्या मतलब है?’ मनीष चाचा हकलाते हुए बोले।
उस पल में, जो मानो युगों तक खिंच गया, सदमा सच्चाई में बदल गया—सब कुछ अचानक अपनी जगह पर आ गया, जैसे कोई पुर्जा दूसरे में फिट हो रहा हो, असहिष्णुता और नफरत की मशीनरी—कि दादाजी, बुआजी और फूफाजी हत्यारे थे, जी हाँ, यही शब्द सही है, यही उन्होंने किया था, उन्होंने ही साजिश रची थी, उन्होंने ही भीड़ को इकट्ठा किया था और अल्ताफ की लिंचिंग करवाई थी। अल्ताफ की मौत का किसी मुसलमान को आतंकवादी समझ लेने जैसी आम गलतफहमी से कोई लेना-देना नहीं था; इसका सीधा संबंध इस बात से था कि उसने मनीष चाचा से प्यार करने की हिम्मत की थी। उन्होंने ही अल्ताफ की हत्या करवाई थी।
बुआजी ने मेरी ओर मुड़कर चेतावनी भरे लहजे में कहा, 'हमारे पास कोई चारा नहीं था, था क्या? तुम्हारे चाचा बेपरवाह होते जा रहे थे और ऐसी बातें ज्यादा देर तक छिपी नहीं रहतीं।'
यह अहसास जल्द ही डर में बदल गया, और मैं बस यही कल्पना कर पा रहा था कि एक भीड़ टायर और केरोसिन लेकर रघु की ओर बढ़ रही है, वे उसे हॉकी स्टिक से पीट रहे हैं, उसे बांध रहे हैं, और फिर जलता हुआ टायर उसके ऊपर लटका रहे हैं।
‘उस कमीने की हिम्मत तो...’ दादाजी गुस्से से भरे स्वर में बोले। ‘उसे जो मिला, वो उसी का हकदार था।’ उन्होंने मनीष चाचा की ओर देखा, जो हमारी तरह अभी भी अवाक थे। ‘तुमने ही उसके साथ ऐसा किया।’

Buaji held Sumitra by her hair. Sumitra screamed. Buaji shouted, ‘Now? अब जाओ और बताओ कि मेरा भाई कौन है! जाओ!

उसने सुमित्रा को जाने दिया। सुमित्रा ने मनीष चाचा का हाथ पकड़ लिया; उनकी आँखों की चमक अचानक गायब सी हो गई।

‘आप घर से एक कदम भी बाहर निकलेंगे तो हम सबको बता देंगे कि आपके भीतर का बच्चा किसी और से आया है’प्रेम करनेवालाहम देखेंगे कि कौन किस पर विश्वास करता है! यह तुम्हारी बात बनाम हमारी बात होगी!

सुमित्रा का हाथ सहज ही उसके पेट पर चढ़ गया, मानो वह बुआजी के शब्दों से अजन्मे बच्चे के कानों को बचा रही हो। हम सब सुमित्रा की ओर देखने लगे। बुआजी को गर्भावस्था के बारे में पता चलने पर वह हैरान लग रही थी। बुआजी उसे कभी नहीं बताती।

मैंने कहा, 'मैं उससे शादी कर लूंगी।'

मेरी बातों को सीधे तौर पर नहीं लिया गया।

बुआजी गरजते हुए बोलीं, 'क्या हमने आपसे अनुमति मांगी थी?' दादाजी ने कहा, 'इन्हें जेल में डाल दो।'

मम्मी, पापा और मुझे अंदर बंद कर दिया गया, ताला लगा दिया गया और कहा गया कि करण भैया या अंशुमन भैया की अनुमति के बिना हमें वॉशरूम जाने की भी इजाजत नहीं होगी। हमें बताया गया कि हम जितना ज़्यादा चिल्लाएंगे, रघु को उतना ही बुरा बर्ताव सहना पड़ेगा।

बुआज ने घोषणा की, 'तुम्हारी शादी अगले महीने है।'

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

12 मार्च 2003

दो दिन बीत चुके हैं और मैं मुश्किल से ही कमरे से बाहर निकला हूँ।

मम्मी और पापा को भी पूरे दिन कमरे में बंद रहना पड़ा, लेकिन मम्मी को घर में खाना बनाने, सफाई करने और परोसने के लिए काम करना पड़ा, और पापा को मोहल्ले में इज़्ज़त बनाए रखने के लिए बाहर जाना पड़ा। मुझे तो सिर्फ़ बाथरूम जाने और नहाने के लिए ही बाहर जाने दिया गया। इसके अलावा, मैं अंदर ही बंद रहा और अपनी उदासी में डूबा रहा। रातों को करण भैया और अंशुमन भैया हमारे दरवाज़े पीटते हैं और हमें गालियाँ देते हैं, मानो हमारी सारी इज़्ज़त छीनने की पूरी कोशिश कर रहे हों।

'हमने गलती की,' मैंने कल मम्मी और पापा से कहा। 'हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए था—'

मम्मी ने बीच में टोकते हुए मुझसे कहा कि मैं फिर कभी इस तरह बात न करूं। वो मुझसे उम्मीद बनाए रखने के लिए कहती रहती हैं, जबकि वो जानती हैं कि इसका कोई फायदा नहीं है।

कल करण भैया ने हमारे कमरे में एक बेडपैन फेंका और मुझसे कहा कि मैं अगले महीने तक इसी का इस्तेमाल करने वाली थी। अब मुझे बाथरूम जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। लेकिन जब मैं गुस्से में आकर इसे तोड़ने लगी, तभी वह दौड़ा और मुझसे इसे छीन लिया।

'मैं तुम्हें इसकी कीमत चुकाने पर मजबूर कर दूंगा, पागल लड़की!' उसने कहा और कमरे से बाहर चला गया।

कुछ घंटों के अंतराल पर, या तो बुआजी या फुफाजी दरवाजे पर आती हैं और रघु के खिलाफ अपनी धमकी दोहराती हैं।

'केवल हम ही जानते हैं कि हमने मेघनाद को कुछ करने से कैसे रोका।'

"बेवकूफी है। हम इस शादी को टूटने नहीं दे सकते," बुआजी ने सुबह कहा। "लेकिन शादी के बाद हमें क्या फर्क पड़ता है कि वह तुम्हारे साथ क्या करता है? उस घर में, शादी के बाद महिलाओं को शायद ही कभी घर से बाहर निकलते देखा जाता है।"

दिव्या दीदी घर के नंबर पर फोन करती रहती हैं और हर बार फोन करने पर बुआजी कहती हैं कि हमने अपना इरादा बदल लिया है। बुआजी कहती हैं, 'वे तुमसे कोई वास्ता नहीं रखना चाहते।' मुझे लगता है कि दिव्या दीदी को उनकी बात पर यकीन नहीं हुआ; और आखिरी बार फोन करने पर बुआजी ने उन्हें खूब खरी-खोटी सुनाई।

मुझे दीदी के लिए डर लग रहा था। कहीं वो देहरादून आकर हमारे साथ क्या हो रहा है, ये देखने न आ जाएं? इसलिए आज सुबह जब उन्होंने फोन किया और करण भैया ने उठाया, तो मैंने पीछे से चिल्लाकर कहा, 'यहाँ मत आना! वो तुम्हें जाने नहीं देंगे! बस दूर रहो!'

करण भैया ने फोन पटक दिया और गुस्से में मेरे कमरे में घुस आए। उन्होंने मेरे बाल पकड़कर मुझे कमरे के एक कोने में दीवार की तरफ मुंह करके खड़े होने को कहा। फिर उन्होंने अपनी पैंट की ज़िप खोली और बिस्तर पर पेशाब कर दिया।

'तुम्हें यही मिलना चाहिए, वेश्या,' उसने कहा और कमरे से बाहर चला गया।

मैं रोई, लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं। कितनी बार आप हद पार कर सकते हैं और प्रतिक्रिया की उम्मीद कर सकते हैं? मैंने अपना ध्यान फिर से दी की तरफ़ मोड़ा। मैंने प्रार्थना की कि वह समझ जाए कि इस समय यह लड़ाई उसे नहीं लड़नी चाहिए। और जितना ज़्यादा मैं दी के बारे में सोचती, उतना ही मैं सोचने लगती कि अगर वह मेरी जगह होती तो क्या करती। वह चुपचाप हार नहीं मानती। मैं क्या कर सकती थी ताकि मैं सब कुछ पूरी तरह से न खो दूं, थोड़ी सी इज़्ज़त तो बचा सकूं?

कल रात मम्मी ने मुझे गले लगाया और मेरे कानों में फुसफुसाते हुए कहा, 'जब समय आएगा, तो लड़ना मत। वह तुम्हें और ज्यादा चोट पहुंचाएगा।'

मैं मम्मी की बात बिल्कुल नहीं सुनूंगी। अगर मेघनाद मेरा हौसला तोड़ना चाहता है, तो उसे खुद ही हर तरह की मेहनत करनी होगी और मुझे हार मानने पर मजबूर करना होगा। कार में जो हुआ, वो दोबारा नहीं होगा। हर बार जब वो मुझे बाहर ले जाएगा, तो उसे मुझसे लड़ना पड़ेगा। शायद एक दिन मैं जीत जाऊं। बेशक, मैंने मम्मी को ये नहीं बताया। मैं उन्हें बहुत सी बातें न बताने की तैयारी कर रही हूं क्योंकि उन्होंने भी मेरी और अपनी तकलीफें झेली हैं। मेघनाद के मुझे ले जाने के बाद, मैं अपनी मां से झूठ बोलूंगी कि मैं खुश हूं और वो मेरा झूठ तुरंत समझ जाएंगी और मुझसे आगे कुछ नहीं पूछेंगी।

मैंने रघु के बारे में उनसे पूछने की हिम्मत नहीं की है। मुझे लगता है कि अगर मैं उसके बारे में नहीं पूछूंगा, तो वे सोचेंगे कि वह कोई मायने नहीं रखता और फिर अपनी धमकी को भूल जाएंगे।

वो आखिर कर क्या रहा होगा? उसे जानते हुए तो यही लगता है कि मेघनाद की धमकियाँ कितनी भी खतरनाक क्यों न हों, वो शहर छोड़कर नहीं जाता। वो अपनी मूर्खता की तरह डटा रहता, सब कुछ सह लेता, लेकिन किसलिए? बेवकूफी भरा प्यार।

बेवकूफ, बेवकूफ सबसे अच्छे दोस्त?

सबसे डरावनी बात यह है कि मेघनाद उसे शहर छोड़ने नहीं दे रहा है। क्या उन्होंने उसे भी कैद कर लिया है? क्या वह ठीक है? क्या वह... ज़िंदा है? मैं उसे दोबारा कब देख पाऊँगी?

13 मार्च 2003

एक बल्ब टिमटिमाते-टिप बुझ गया।

मैं उसे उसके लूटे हुए कमरे के कोने में दुबका हुआ देख सकता था, उसके सिर से खून बह रहा था, वह लड़खड़ा रहा था, इतना थका हुआ था, इतना ज्यादा थका हुआ था कि कुछ भी करने की हालत में नहीं था।

मेघनाद मुझे घूर रहा था, मुस्कुरा रहा था, उसका हाथ मेरे घुटने पर मजबूती से टिका था, और वह धीरे-धीरे उसे सहला रहा था। मेरी आवाज़ गले में अटक गई थी, जैसे मेरा दम घुट रहा हो, जैसे मैं मर रही हूँ, प्रतिरोध और विद्रोह के मेरे विचार धीरे-धीरे तड़पते हुए मर रहे थे। मैंने कोशिश ही क्यों की? क्यों?

मेघनाद ने वीडियो कैमरा मेरे चेहरे के सामने करते हुए तीसरी बार वीडियो चलाते हुए पूछा, 'क्या तुम उसे देख रहे हो?' वह ज़ोर से हँसा। 'देखो उसे! देखो! अपनी आँखें खोलो और देखो, कुत्ते!'

वीडियो में दिख रहे चारों आदमियों ने अपने चेहरे पर रुमाल कसकर बांध रखे थे, लेकिन मेघनाद, उसके ड्राइवर मोंटी, करण भैया और अंशुमन भैया को पहचानना मुश्किल नहीं था। वे गुर्रा रहे थे, चिल्ला रहे थे और छड़ियों को तलवारों की तरह लहराते हुए रघु पर अंधाधुंध वार कर रहे थे। रघु ने कई बार उठने की कोशिश की, हाथ घुमाया और उनमें से कुछ के चेहरे पर जोरदार वार किए।

जोरदार मुक्के पड़ रहे थे, लेकिन वह जितना ज़ोर से वार करता, उनका हमला उतना ही तेज़ और बेरहम होता जाता। लातों और छड़ों की बारिश उस पर बेरहमी से हो रही थी। छड़ों के उसके पैरों और पसलियों से टकराने की आवाज़, मेघनाद की मुट्ठियों के उसके शरीर पर पड़ने की आवाज़।

उसका चेहरा अमानवीय लग रहा था। हर बार जब मैंने वीडियो देखा, मुझे लगा कि वह बच नहीं पाएगा। पिटाई के बीच-बीच में मैंने मेघनाद को कहते सुना, 'उस मादरचोद को जिंदा छोड़ दो।'

मैंने मोंटी को बार-बार चिल्लाते हुए सुना, '*TANG TOD SAALE KI!* (उस कमीने की टांग तोड़ दो!)

आखिरकार उसने कैमरा बंद किया, उसे एक तरफ रख दिया, मेरा हाथ पकड़ा और मम्मी-पापा की आंखों में देखते हुए कहा, 'आपका दामाद हमेशा उसकी रक्षा करेगा। जो भी उसे देखेगा उसे इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। आप दुनिया के सबसे भाग्यशाली माता-पिता हैं!'

उसने अपनी उंगलियों को मेरे चेहरे पर फेरा, मेरी भौहों से शुरू करते हुए धीरे-धीरे मेरे गालों तक आया, और उन्हें मेरे होठों पर थोड़ी देर तक रखा, उन्हें मेरी गाल की हड्डी तक ले गया और मेरे चेहरे को हल्के से थपथपाया जैसे कोई कुत्ते के साथ करता है।

एक बार, दो बार, जब तक कि वे हल्के थप्पड़ों की तरह न हो गए।

'मुझे लगा था कि तुम एक अच्छी लड़की हो,' उसने कहा। 'तुम्हारी बहन जैसी नहीं, वो वेश्या।' 'मेघनाद—'

'*Abbe chup*''चुप रहो!'' वह चिल्लाया। ''एक शब्द भी नहीं,'' उसने कहा और मेरा चेहरा पकड़ लिया। ''एक शब्द भी नहीं। देखो तुम मुझे क्या करवा देती हो? मैं तुम्हारे साथ सख्ती नहीं करना चाहता। मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम्हारी बहन से भी ज़्यादा।''

'तो फिर मेरे माता-पिता को जाने दो,' मैंने कहा।

'उन्हें जाने दूं? कहां भेजूं? अपनी वेश्या बहन के पास?' मेघनाद ने कहा। 'क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं उन्हें उसके पास भेजूंगा? उसे यहीं आने दो। अरे, कितना मजा आएगा!' उसकी आंखों में पागलपन की चमक थी।

'उसे इस मामले से दूर रखो! उसने कुछ नहीं किया है!'

'कुछ नहीं? सचमुच? मुझे नहीं लगता। सोचो, अगर कोई गलती से... मतलब... उसके चेहरे पर तेजाब गिरा दे तो उसका क्या हाल होगा? पलक झपकते ही सब कुछ हो जाएगा। किसी को पता नहीं चलेगा कि वो आदमी कहाँ से आया, कहाँ गया,' मेघनाद ने द्वेष और इरादे से भरी आँखों से कहा। 'आह, वो खूबसूरत चेहरा। पता नहीं उसके मालिक उसके बारे में क्या सोचेंगे।'

मम्मी और पापा रोने लगे, और वह मुस्कुराया और मुझे विस्तार से समझाने लगा कि वह इस काम को कितने अलग-अलग तरीकों से अंजाम दे सकता है।

'ज्यादा से ज्यादा क्या होगा, है ना?' उसने कहा। 'मान लो कि तुम्हें मुझे दोषी साबित करने के लिए कुछ मिल ही जाता है? तुम्हें क्या लगता है मुझे कितने दिन जेल में रहना पड़ेगा? मुझे यकीन है कि उम्रकैद तो नहीं होगी, लेकिन दूसरी तरफ... तुम्हारी बहन... वो तो बर्बाद हो जाएगी, है ना? छी... छी। सारी खूबसूरती पल भर में गायब हो गई। कितना दुखद है।'

'कृपया, कृपया, कृपया उसे अकेला छोड़ दें।'

'क्या तुम मुझे बताओगे कि मैं क्या कर सकता हूँ और क्या नहीं?' उसने कहा और मेरे हाथों को अपने गंदे, पसीने से तर, अपराधी जैसे हाथों में थाम लिया। 'तो अगली बार जब तुम उससे बात करो, तो उसे वही कहना जो मैंने तुम्हें बताया है। उसे बताना कि मैंने उसका दिल तोड़ने के लिए उसे माफ कर दिया है। वह देहरादून से बाहर रह सकती है और मैं उसे उसका खूबसूरत चेहरा रखने दूँगा। मुझे यह उचित लगता है। क्या कहती हो, मम्मी?'

मम्मी इतनी डरी हुई थीं कि कुछ प्रतिक्रिया ही नहीं दे पाईं। वह हँसे, उनके पैर छुए और बाहर से दरवाजा बंद करके चले गए। पापा ने मेरा हाथ पकड़कर रोना शुरू कर दिया। उन्होंने हर संभव कोशिश की।

वह ऐसा कुछ भी कर सकता था जिससे मैं रघु के साथ हुए अत्याचारों के बारे में न सोचूँ। उसका बायाँ पैर कितना बेजान लग रहा था, उसकी आँखों से खून बह रहा था, उसके होंठ बुरी तरह से फटे हुए थे।

अब हम दिव्या दीदी के फोन का इंतज़ार करते हुए दरवाज़े पर कान लगाए बैठे रहे। जब फोन की घंटी बजी, तो मम्मी और पापा चीखने-चिल्लाने, रोने और दरवाज़ा खोलने की गुहार लगाने लगे। जब मम्मी ने जानवर की तरह चीख-चीख कर अपनी और मेरी कलाई काटने की धमकी दी, तब जाकर बुआजी ने दरवाज़ा खोला। हमारी मौत बाकी वैद्यों के लिए बहुत असुविधाजनक होती।

चीख-पुकार से कांपती आवाज में मम्मा ने दीदी से कसम खिलवाई कि वह देहरादून नहीं आएगी, इसके बारे में सोचेगी भी नहीं। जब दीदी ने इस बात पर उनसे बहस की, तो मम्मा और पापा ने फिर से धमकी दी कि अगर उसने कोशिश भी की तो वे खुद को मार डालेंगे।

'हम ठीक रहेंगे। तुम अपना ख्याल रखना। अच्छे से खाना और खूब पानी पीना मत भूलना,' मां ने उससे कहा।

Buaji took the phone and slammed it down. Karan Bhaiya and Anshuman Bhaiya herded us back inside and bolted the door.

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

14 मार्च 2003

मैं खुद को यही समझाती रही कि मेघनाद मुझ पर जो अत्याचार करेगा, मैं उसे सह लूंगी, मैं मजबूत इरादों वाली हूं, आखिर मैं अपनी मां की बेटी हूं। आखिर, क्या मुझसे भी बदतर हालत में लोग नहीं हैं? कम से कम मैं भूख से तो नहीं मरूंगी, न ही मुझे यौन दासी के रूप में बेचा जाएगा।

कल रात आंगन में बड़ी आग लगी थी। बुआजी को करण भैया और अंशुमन भैया को इसके लिए डांटते हुए सुनकर मेरा ध्यान उस ओर गया। दादाजी के देखने से पहले ही उन्होंने जल्दी से आग बुझा दी, राख इकट्ठा की, उसे बोरी में भरा और मेरे दरवाजे पर रख दिया। बुआजी अभी भी पीछे से चिल्ला रही थीं।

करण भैया ने कहा, 'वह चला गया। हमने जाँच की और उसने बस यही सब पीछे छोड़ा है। किताबें, किताबें और ढेर सारी किताबें!'

दोनों भाई खिलखिलाकर हंस पड़े।

अंशुमन भैया ने कहा, 'वह एक छोटे चूहे की तरह भाग गया। एक छोटे चूहे की तरह! वह इतना छोटा था कि मोंटी उसे पकड़ नहीं पाया।'

करण भैया ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, 'चिंता मत करो। अगर वो कभी वापस आया तो—' उन्होंने अपनी उंगलियां चटकाईं।

वे अपनी उपलब्धि से बेहद खुश होकर चले गए और सुमित्रा को उनके लिए पकौड़े बनाने के लिए परेशान किया, क्योंकि भले लड़कों को शहर से भगाना थका देने वाला काम होता ही है। मैं सोच रही थी कि रघु कहाँ भागा होगा। दिल्ली? वह किसके साथ फुटपाथ पर बैठा होगा? ऋचा के साथ? काश मैं उससे एक बार मिल पाती, माफ़ी माँग पाती और उसे बता पाती कि वह मेरे लिए कितना मायने रखता है। मैं उसे बताना चाहती थी कि वह कितना खास है, कितना प्यार करने वाला है, और ब्राह्मी कितनी बदनसीब थी कि उसने उसके साथ पूरी ज़िंदगी नहीं बिताई, और मुझे कितना मूर्खता महसूस हो रही थी कि मैं उससे प्यार नहीं करती! मैं उसके सिर पर हाथ रखकर उसे डांटना चाहती थी कि वह मुझ पर फिदा क्यों हो गया! मैं उसे इस बात के लिए फटकारना चाहती थी कि उसने मुझे यह एहसास दिलाया कि मेरा प्यार किसी भी तरह से कमतर है। मैं उसे गले लगाना चाहती थी और चाहती थी कि वह मुझे धन्यवाद दे।

मैंने उसे बचाया और मुझे बचाने के लिए उसे धन्यवाद दिया। मैं उसके साथ एक और कप चाय पीना चाहती थी।

मैंने बोरी वापस उठाई और उसे अंदर ले आया, मैं इतना कमजोर था कि यह देख भी नहीं पा रहा था कि उसमें क्या बचा है, और मैंने माँ से उसे ठिकाने लगाने के लिए कहा, जो उन्होंने तुरंत कर दिया।

‘तुम उससे फिर मिलोगे,’ माँ ने कहा।

मैंने मम्मी से कहा, 'उसे इसमें घसीटने की कोई जरूरत नहीं थी।'

वह मुझे आगे आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार करने और मेरे गुस्से को शांत करने के लिए अथक प्रयास कर रही थी। और जितनी भी बातें वह मुझसे कहती रही, उनमें से सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि अपनी आँखें खुली रखो और दिमाग तेज रखो।

उसने कहा, ‘देर-सवेर तुम्हें सब कुछ पीछे छोड़ने का मौका जरूर मिलेगा। यह एक हफ्ते में, एक महीने में या एक साल में आ सकता है, लेकिन तुम्हें इसे पकड़ना ही होगा। यहाँ वापस मत आना, हमारी चिंता मत करना, बस भाग जाओ। मुझे नहीं पता तुम कहाँ जाओगे, क्या करोगे, लेकिन अपने लक्ष्य तक पहुँचने का रास्ता ढूंढो। बहन। कुछ भी करो, लेकिन इस घर में वापस मत आना। हमारी जैसी गलती मत दोहराना।

जब भी वह ऐसा कहती थी, तो वह इसे हताशा भरी कोशिश के रूप में नहीं कहती थी, बल्कि वह दिल से ऐसा चाहती थी, और वह चाहती थी कि मैं हर दिन का हर मिनट उस मुक्ति के रास्ते की तलाश में लगाऊं। यही उसकी मुझसे अपेक्षा थी, ताकि अंततः मुझे खुशी मिल सके, क्योंकि यह केवल मेरी ही नहीं, बल्कि उसकी भी जीत होगी।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

15 मार्च 2003

हर रात की तरह, आज भी उसने मुझे कसकर गले लगाया था, मानो वह चाहती हो कि मैं धीरे-धीरे उसकी कोख में वापस चला जाऊं, अपना लिंग बदल लूं और उसके बेटे के रूप में जन्म लूं।
क्या ज़िंदगी कहीं ज़्यादा आसान नहीं होती? करण भैया और अंशुमन भैया के विपरीत, मेरे पास वैद्य उपनाम होता, और इसके साथ मुझे कुछ विशेषाधिकार प्राप्त होते और इनमें से कुछ भी नहीं होता।

'सो जाओ,' मम्मी ने कहा और मुझे एक लोरी सुनाई जो मैंने सालों से नहीं सुनी थी। उन्होंने मेरे सिर पर तब तक थपथपाया जब तक मैं उनकी बाहों में सो नहीं गया।

बारह बज रहे होंगे, एक या चार—उस कमरे में बंद होने के कारण मुझे समय का पता ही नहीं चला—तभी दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। हम सब उठ बैठे।

"तुम सोते रहो," मम्मी ने डरते हुए कहा, कहीं मेघनाद फिर से नशे में तो नहीं आ गया।" "मैं ले आता हूँ," पापा ने धीरे से कहा।

दरवाजे पर फिर दस्तक हुई और इस बार हमें एक आवाज सुनाई दी। सुमित्रा ने कहा, 'मैं हूँ।'

हम दोनों एक-दूसरे को हैरानी से देखने लगे।

मम्मी उठीं और दरवाजा खोला। बिना कुछ कहे मनीष चाचा और सुमित्रा अंदर आए, हमारा हाथ पकड़ा और हमें बाहर ले गए। घर का दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था। बाहर अंधेरा था, पड़ोस के सभी लोग गहरी नींद में सो रहे थे।

हमारे हाथों पर उनकी पकड़ मजबूत और कसी हुई थी, उनके कदम दृढ़ थे। हम घर से निकले और जल्द ही गली के अंत की ओर नंगे पैर, उन्हीं कपड़ों में चल रहे थे जो हमने रात को सोते समय पहने थे। हमारे पास एक भी रुपया नहीं था, फिर भी हममें से कोई एक शब्द भी नहीं बोलना चाहता था, न ही मुड़कर घर की ओर देखना चाहता था, और न ही उस विचार को मन में आने देना चाहता था। बाहर काली खिड़कियों वाली एक सफेद ओमनी वैन खड़ी थी, और मनीष और सुमित्रा ने हमें इतने आत्मविश्वास से अंदर बिठाया कि एक दिन में ऐसा आत्मविश्वास जुटाना मुश्किल होता। उन्होंने इसकी योजना कई दिनों से बनाई होगी। वे आपस में भी बात नहीं कर रहे थे, बस सिर हिलाकर अभिवादन कर रहे थे, कभी बांह पर हल्का सा स्पर्श कर रहे थे। मनीष चाचा पागलों की तरह गाड़ी चला रहे थे, उनकी निगाहें सड़क पर गड़ी हुई थीं, और सुमित्रा पीछे बैठी हम पर नजर रख रही थीं।

हम शीशे में देख रहे थे मानो यह जांच रहे हों कि हम अभी भी वहीं हैं या नहीं। यह स्वाभाविक था, हमें भी यकीन नहीं हो रहा था कि ऐसा हो रहा है। सड़कें सुनसान थीं। अगर मेघनाद के आदमी वहां होते, तो वे हमें आसानी से पहचान लेते।

मम्मी ने मेरा हाथ और कसकर पकड़ लिया। सड़कें साफ़ थीं और हमें दस मिनट में वहाँ पहुँच जाना चाहिए था, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे बहुत ज़्यादा समय बीत गया हो। सड़क पर हर रोशनी, हर इंसान हमारा पीछा कर रहा था। किसी ने भी इस बारे में बात नहीं की कि क्या हो रहा है, लेकिन सब जानते थे। पार्किंग से प्लेटफार्म तक का रास्ता सबसे लंबा और सबसे मुश्किल था, और हम सिर झुकाए चल रहे थे, ताकि कोई हमें पहचान न ले। मुझे घुटन महसूस हो रही थी; मेरा शरीर मानो जवाब दे रहा था। तभी हमारी ट्रेन की घोषणा हुई—समय से पहले। ऐसा कितनी बार होता है? हम सब लोगों के उतरने का इंतज़ार किए बिना ही चढ़ गए। हमें गालियाँ दी गईं, हम पर चिल्लाया गया, धक्का दिया गया, लेकिन हम डटे रहे। अगर ज़रूरत पड़ती तो हम देहरादून तक दौड़ भी जाते। हम सब घुटने काँपते हुए, खिड़की की तरफ़ मुँह करके, रेलवे सीट को कसकर पकड़े बैठे थे, कहीं कोई हमें ट्रेन से बाहर न खींच ले। किसी ने एक-दूसरे से कुछ नहीं कहा। मुझे उम्मीद थी कि मनीष चाचा और सुमित्रा उठकर ट्रेन से उतर जाएँगे, लेकिन वे नहीं उतरे। सुमित्रा मेरा हाथ पकड़े मेरे बगल में बैठी थी, और मनीष चाचा ट्रेन के दरवाजे पर पहरा दे रहे थे। तीन बार मुझे लगा कि मेघनाद के आदमी दूसरे प्लेटफार्म से हमें घूर रहे हैं। मुझे ठंड लग रही थी, और मेरी सांस अटक गई थी, जब तक कि वे बिना एक पल भी देखे चले नहीं गए। ट्रेन रफ्तार पकड़ने लगी। मैंने सोचा कि क्या मनीष चाचा और सुमित्रा भी भाग रहे हैं? क्या वे भी तंग आ चुके थे? वे कहाँ जाएँगे?

लेकिन ट्रेन जितनी तेज़ चलती गई, मेरी साँसें उतनी ही आसान होती गईं। मैं अपने बचपन के शहर को पीछे छोड़ आई थी और मुझे बस खुशी ही खुशी महसूस हो रही थी। जैसे ही ट्रेन शहर की आखिरी कुछ बस्तियों को पार करती हुई आगे बढ़ी, मेरा दिल खुशी से ज़ोरों से धड़कने लगा। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और कसम खाई कि मैं कभी देहरादून वापस नहीं आऊँगी। हमने एक-दूसरे को देखा और अब हम मुस्कुरा सकते थे।

मनीष चाचा ने कहा, 'हम दो और लोगों के आने का इंतजार कर रहे हैं।' और मानो

इशारा मिलते ही, वह अचानक कहीं से प्रकट हो गए। वह हमारी बर्थ पर थे। खून से लथपथ और पट्टियों से लिपटा

हुआ, लेकिन मुस्कुराता हुआ। 'क्या!' मैं

लगभग चीख पड़ा।

और उनके ठीक पीछे दिव्या दी थीं।

मम्मी, पापा और मैं उन्हें देखते रहे, समझ नहीं आ रहा था कि कहीं हम ये सब कल्पना तो नहीं कर रहे हैं या पागल तो नहीं हो रहे हैं। तभी दीदी आईं और मुझे गले लगाकर चूमा, यहाँ तक कि मुझे डराने के लिए थप्पड़ भी मारा और डाँटा भी। रघु ने मम्मी और पापा के पैर छुए और उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसकी चोटों में दर्द हो रहा है।

‘उन्होंने मुझसे संपर्क किया,’ दिव्या दी
ने कहा। ‘और हमसे भी,’ सुमित्रा ने
कहा।

रघु ने बात को हल्के में लेते हुए कहा, 'कोई और रास्ता नहीं था।'

मैंने ऋचा के शब्दों के बारे में सोचा। उसके हीरो बनने की ज़रूरत के बारे में, खुद को साबित करने की ज़रूरत के बारे में, उस दर्द से उबरने के बारे में।

सुमित्रा ने कहा, 'मैं एक बच्ची को जन्म देने वाली हूं। हमने क्लिनिक से इसकी पुष्टि करवा ली है।'
मैं बिल्कुल नहीं चाहूंगी कि वह उस जगह पली-बढ़े।'

मनीष चाचा ने कहा, 'मैंने दुकान बेच दी। इससे कुछ महीनों का गुजारा हो जाएगा। वह काम शुरू कर देगी, हम दोनों को नौकरी मिल जाएगी, हमारा काम चल जाएगा।'

दिल्ली से भागने की तकनीकी बारीकियों पर चर्चा हुई, लेकिन ये सब मेरे लिए बेमानी थी। मैंने अपना ध्यान कहीं और लगा दिया था। मैंने अपनी बहन को गले लगाया और रघु की तरफ देखा, जिसने मेरे द्वारा झेली गई तमाम तकलीफों के बाद भी मेरे लिए वापस आने की हिम्मत दिखाई थी। वो लड़का जो मुझसे प्यार करता था, वो लड़का जिसका दिल टूटा हुआ था।

बाद में ट्रेन के शौचालय के बाहर, डि को मानो पता था कि मैं क्या सोच रहा था और उसने कहा, 'अब तुम क्या करोगे?'

मैंने सिर हिलाया। 'मुझे नहीं पता।'

‘तुम्हें उसके जैसा दूसरा कभी नहीं मिलेगा,’ डि ने कहा। ‘यह तो मुझे
पता है।’

ट्रेन की बाकी यात्रा के दौरान, रघु और मैं दरवाजे पर खड़े रहे, ठंडी हवा हमारे चेहरों पर इतनी तेज़ी से टकरा रही थी जिसकी हमें आदत नहीं थी, और हम बाहर देखते रहे।

कहने को कुछ नहीं था। उसे पता था कि मैंने उसकी डायरी पढ़ी है। उसकी आँखों में यह साफ़ दिख रहा था, और मुझे खुद पर थोड़ी मूर्खता महसूस हुई कि मैंने इसे अपने मन में इतना बड़ा मुद्दा क्यों बना लिया था। रघु को इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था कि मैं उससे प्यार नहीं करती। क्या यह उसके लिए और भी अच्छा था? क्योंकि अगर हम साथ नहीं रह सकते थे, तो रिश्ते में उसका कुछ भी नुकसान नहीं था, या मैं बस ऐसा सोचकर खुद को दिलासा दे रही थी? सुबह होने वाली थी जब हम

बैठे और उसने मेरा हाथ पकड़ा। मैंने इससे पहले कभी इतना अच्छा महसूस नहीं किया था।

‘तुम हमेशा मेरे सबसे अच्छे दोस्त रहोगे,’ उसने कहा। ‘मैं—’

‘तुम्हें मुझसे प्यार न करने के लिए माफी मांगने की जरूरत नहीं है,’ उसने बात काटते हुए कहा।

मैंने पूछा, ‘क्या तुम ठीक हो जाओगे?’

‘बेशक, मुश्किल दौर बीत चुका है। मुझे नहीं लगता कि अगर तुम मुझसे प्यार करतीं तो भी हमारी स्थिति इतनी बेहतर होती,’ उसने कहा। ‘मेरे लिए तुमने जो कुछ भी किया है, उसके लिए धन्यवाद।’

मैंने बिल्कुल कुछ नहीं किया।

'चलिए इस बात पर असहमत होने पर सहमत हो जाते हैं।'

लेकिन क्या आपको ऐसा महसूस नहीं होना चाहिए कि आपको धोखा दिया गया है या आपको निराशा हुई है कि मैं ऐसा नहीं करता—’

‘मैं ऐसा क्यों करूँ? आपने मुझे वो दिया जो कोई और नहीं दे सकता था—आशा। आपने पहले ही बहुत कुछ कर दिया है।’

‘मैं ब्राह्मी की तरह नहीं बनना चाहता, जो तुम्हें जरूरत के समय अकेला छोड़ दे। यह मुझे स्वीकार्य नहीं है।’

'तुमने मुझे दिखाया है कि तुम बहादुर बनना चुन सकते हो, तुम अपने अतीत के बजाय अपने भविष्य को चुन सकते हो, तुम दूसरों से प्यार करना चुन सकते हो, तुम अब और दुखी न होना चुन सकते हो।'

मैंने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'यह ठीक नहीं लग रहा। क्या कुछ सालों बाद तुम किसी और से प्यार करना चाहोगी? यह मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा।'

वह हँसा। 'अगर कुछ है तो, तुमने मुझे सभी संभावनाओं के लिए खुला रहना सिखाया है, है ना?'

अगर लड़की अच्छी नहीं निकली तो मैं
उसे मार डालूंगा। मुझे इससे कम की
उम्मीद नहीं है।

और उन पलों में मुझे उम्मीद थी कि यह प्यार है, लेकिन... ऐसा नहीं था।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

16 मार्च 2003

हमारा होटल पहाड़गंज में है, और यहाँ चारों तरफ़ चमकीली बत्तियाँ, शोर और गाड़ियों के हॉर्न की आवाज़ गूंज रही है। यहाँ पहले घंटे में ही मैंने इतने गोरे लोग देख लिए जितने मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में नहीं देखे। यह पहली बार है जब मैं किसी होटल के कमरे में रह रही हूँ (और यह काफ़ी अच्छा है, रूम सर्विस है, इलेक्ट्रिक केतली है और मुफ़्त अख़बार भी मिलते हैं, सोचो!), और मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा होगा। सच कहूँ तो, मैंने सोचा था कि पहली बार ऐसा या तो दीदी की शादी में होगा या मेरी, और हमारे पास अपने कपड़ों और मेकअप के लिए पूरा कमरा होगा। लेकिन मैं इसे हज़ार बार चुनूँगी। रघु, दिव्या दीदी और मैं ज़मीन पर बिछी चादरों पर सोए, और मम्मी, पापा, मनीष चाचा और सुमित्रा दो सिंगल बेड पर एडजस्ट हो गए।

इस छोटे से होटल के कमरे में पहली बार मुझे लगा कि चाचा और पापा के बीच किसी तरह का रिश्ता है; कि वे अब अजनबी नहीं रहे, जो सालों से एक ही घर में रह रहे थे। शुरुआत में शब्द आसानी से नहीं निकले। मनीष चाचा ने सालों से पापा को 'भैया' नहीं कहा था, लेकिन जैसे ही उन्होंने कहा, शब्दों की धीमी शुरुआत हुई और फिर शब्दों का सैलाब उमड़ पड़ा।

बचपन से ही मुझे लगता था कि मनीष चाचा पापा से शर्मिंदा रहते थे। वे उनसे घर में ही नहीं, बल्कि बाहर भी दूरी बनाए रखते थे। वे बिना सिर हिलाए एक-दूसरे के पास से गुजर जाते थे। मनीष चाचा एक आकर्षक व्यक्ति थे, वैद्य परिवार के गौरव थे, और पापा एक झुके-तुड़े, लंगड़ाते हुए अपाहिज थे, परिवार के लिए एक अफ़सोस, एक ऐसा व्यक्ति जिसने अपनी उम्र से कहीं अधिक जी लिया था।

दिल्ली पहुँचने के बाद से वे सिर्फ़ एक-दूसरे से ही बातें करते थे, बीते दिनों की यादें ताज़ा करते, हँसते और उस रिश्ते को याद करते जो कभी था ही नहीं। जब भी पापा मनीष चाचा को हमें बचाने के लिए धन्यवाद देने की कोशिश करते, चाचा रोने लगते और पापा से सालों की अपनी लापरवाही के लिए माफ़ी माँगते। ‘तुम्हारे पास वो है जो किसी और के पास नहीं था’

'परिवार,' मैंने मनीष चाचा को कहते सुना। 'तुममें प्यार करने और अपने प्रिय व्यक्ति के साथ रहने का साहस था। हम सब कायर हैं, लेकिन तुम नहीं।'

पापा ने बड़े ही साहसी अंदाज में कहा था, 'जब आपके पास कुछ और न हो, तो आप अपने पास मौजूद प्यार से ही चिपके रहते हैं।'

जहां पापा और मनीष चाचा ने धीरे-धीरे एक ऐसा रिश्ता बनाया जो उनके बीच पहले कभी नहीं था, वहीं सुमित्रा और दिव्या दी आसानी से दोस्तों की भूमिका में ढल गईं।

सुमित्रा के प्रति दिव्या दी की नफरत अब एक दूर का मजाक लग रही थी।

एक बार जब दी ने सुमित्रा को बताया कि कैसे उन्होंने दिल्ली के उपनगर रोहिणी के सबसे दूरदराज के कोने में विभोर गुप्ता को ढूंढा और लोहे की रॉड से उन पर हमला किया, तो उनके बीच की बर्फ पिघल गई। ऐसा लगा जैसे वे हमेशा से ही पक्की सहेलियाँ रही हों। यहाँ तक कि वे मुझसे कुछ देर के लिए अलग होकर ऐसी बातें भी करने लगीं जो मुझे नहीं सुननी चाहिए थीं। दिव्या दी सुमित्रा को चाची कहकर चिढ़ाती रहीं। अब पहली बार, इस होटल के कमरे में, हम चारों के अलावा, मुझे लगा कि हमारा एक परिवार है—एक प्यार भरा परिवार, जिसके सदस्य एक-दूसरे के दर्द को समझते हैं और उसे कम करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। यही वह सब कुछ था जो मैं हमेशा से चाहती थी।

इस पूरे समय रघु देखता रहा, अखबार पढ़ने का नाटक करता रहा, हम सबके लिए दिन में कई बार चाय बनाता रहा, टीवी पर खबरें म्यूट करके देखता रहा, खुद को सबसे दूर रखता रहा, लेकिन मैं उसे इतना तो जानता हूँ कि समझ सकता हूँ कि जब उसने हमें देखा तो उसके मन में क्या भाव था—एक तरह की तड़प। जब हम सब साथ बैठकर खाना खा रहे थे और जोर-जोर से बातें कर रहे थे, तब मैंने उसे कई बार उदास मुस्कान के साथ देखा।

आज सुबह मनीष चाचा और सुमित्रा दिल्ली से मुंबई के लिए ट्रेन से रवाना हुए, जहां वे तब तक रहेंगे जब तक मामला शांत नहीं हो जाता। सुमित्रा की बचपन की दोस्त वहीं रहती है और उसने सुमित्रा और मनीष चाचा को अपने घर में पनाह देने की सहमति दे दी है। उन्हें पूरा यकीन था कि वे दोबारा उस घर में नहीं लौटेंगे।

हम चाहते तो थे, लेकिन मनीष चाचा और सुमित्रा को रेलवे स्टेशन छोड़ने नहीं जा सके। यह बहुत जोखिम भरा था। आखिरकार ऋचा ने ही उन्हें छोड़ा। मुझे इस बात का पछतावा हुआ कि मैंने उसे थोड़ा सनकी समझा था। टिकट उसी ने बुक किए थे और होटल में हमारा कमरा भी उसी के नाम पर था।

कई बार मेरा मन हुआ कि मैं ऋचा को धन्यवाद दूं, लेकिन मुझे नहीं पता कि क्या करूं। इससे क्या फर्क पड़ेगा? वह रघु के लिए कर रही है, मेरे लिए नहीं। मैंने उसे रघु को बड़ी हसरत से देखते हुए देखा है, और यह देखकर मेरा दिल टूट जाता है। चाहे वह कितनी भी गर्मजोशी से पेश आए।

रघु ऋचा का ख्याल रखता है, लेकिन फिर भी वह काफी नहीं लगता, और रघु मुझे चाहे जो कुछ भी कहे कि हमें अपने रिश्ते से संतुष्ट रहना चाहिए, फिर भी मुझे अपराधबोध होता रहता है।

'क्या वे हमें ढूंढने आएंगे?' मैंने दी से पूछा।

'तुम्हें क्या लगता है?' उसने पूछा, उसके चेहरे पर डर के भाव साफ झलक रहे थे। 'लेकिन उसे कुछ नहीं मिलेगा। हम एक हफ्ते के अंदर चले जाएंगे।'

उनकी बातों से कोई तसल्ली नहीं मिली। रघु और दिव्या दीदी ने हमें बताया है कि इस इलाके में मौजूद सैकड़ों होटलों के बीच इस होटल का पता लगाना मुश्किल है, लेकिन फिर भी रघु रात भर जागता रहता है, खिड़की से बाहर देखता रहता है और गली में धीमी होती हर गाड़ी को घूरता रहता है। मम्मी-पापा ने देहरादून में अपने किसी भी परिचित को फोन नहीं किया, कहीं वे हमारी शिकायत न कर दें। और हमारे कहने पर ऋचा ने अलग-अलग पुलिस दफ्तरों से दादाजी से फोन पर बार-बार संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन सभी कॉल का जवाब नहीं मिला। इसका मतलब यह भी है कि करण भैया और अंशुमन भैया हमें ढूंढ रहे हैं।

मैं यह सोचना भी नहीं चाहता कि अगर उन्हें हम मिल गए तो वे क्या करेंगे। जब भी हमारे कमरे की खिड़की पर गाड़ियों की तेज़ रोशनी पड़ती है, हम सब जाग जाते हैं।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

19 मार्च 2003

ऋचा ने हमें बताया कि मनीष चाचा और सुमित्रा समय पर मुंबई पहुँच गए थे और चिंता की कोई बात नहीं थी। लेकिन हमारा हर पल चिंता से भरा रहता है।

कल, जिन आदमियों से दिव्या दी ने पासपोर्ट बनवाने के लिए मदद मांगी थी, उन्होंने वादा पूरा न करने पर उसकी मदद करने से इनकार कर दिया। 'वह कमीना मेरे साथ सोना चाहता है,' दी ने ज़ोर से कहा, उसे इस बात का एहसास नहीं था कि मम्मी और पापा वहीं मौजूद थे। 'मैं कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगी, बस मुझे एक दिन का समय दे दो।'

ऋचा, जो पूरी बातचीत को ध्यान से सुन रही थी, ने चुपचाप बैठे रघु को कोहनी मारी, जो ज्यादा कुछ नहीं बोल रहा था और जिसका ध्यान कहीं और था।

फिर रघु अपनी तल्लीनता से बाहर आकर बोला, 'मैं... मुझे लगता है मैं मदद कर सकता हूँ।' रघु ने हिचकिचाते हुए तीन लोगों को फोन किया—साहिल, अरुंधति और
ऋषभ। ये तीनों नाम मैंने पहले भी सुने थे। ऋचा ने मुझे इनके बारे में बताया था। रघु को अस्पताल से निकाले जाने के बाद, ये वही लोग थे जो ब्रह्मी के आखिरी दिनों में उसके साथ थे। ब्रह्मी के अंतिम संस्कार का प्रबंध भी इन्हीं लोगों ने किया था।

शाम को, साहिल आहूजा, एक हट्टा-कट्टा नौजवान, और रघु के दो और दोस्त, अरुंधति भट्टाचार्य और ऋषभ बत्रा, हमारे साथ कमरे में बैठे थे, उनकी निगाहें रघु पर टिकी थीं। वे रघु को सवालिया निगाहों से देख रहे थे, जो शर्म या असहजता के कारण उनसे नज़रें नहीं मिला रहा था। रघु को देखे हुए दो साल बीत चुके थे और वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे। उनमें से किसी ने भी ब्रह्मी या उसके लापता होने के बारे में बात नहीं की। यह पूरी तरह संभव था कि ऋचा ने उन्हें पहले ही सब कुछ बता दिया था और उन्हें ज्यादा सवाल न पूछने के लिए कहा था। वे हमारी परेशानी को समझते थे।

साहिल ने सबसे पहले बोलना शुरू किया। 'मैं कुछ ऐसे लोगों को जानता हूं जो यह काम करवा सकते हैं।'

मैंने उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले सॉफ़्टवेयर में कुछ बदलाव किए हैं, निश्चित रूप से यह काम हो जाएगा।

बाद में ऋचा ने मुझे बताया कि साहिल एक तरह का कंप्यूटर का धुरंधर था और उसने रघु द्वारा दिए गए लैपटॉप पर सब कुछ सीख लिया था। वह रघु का बहुत ऋणी था।

'तुम्हें मेरे घर पर ही रुकना चाहिए। अगर माँ को पता चला कि तुम होटल में रुक रहे हो तो वो बहुत गुस्सा होंगी,' करण ने रघु से कहा। 'यहाँ सबके लिए काफी जगह है। तुम यहाँ नहीं रुक सकते।'

'तुम्हें इतनी परेशानी उठाने की ज़रूरत नहीं है बेटा, हम यहाँ ठीक हैं,' माँ ने कहा, वो भी मेरी तरह ही हैरान थीं। अगर कोई दोस्त मुझे छोड़कर बिना किसी निशान के गायब हो जाता, तो मैं उसके पास दौड़कर नहीं जाता, अपने घर के दरवाजे खोलकर उसे गले नहीं लगाता।

'ये तुम्हारा पसंदीदा है, ये तुम सबके लिए है,' अरुंधति ने कहा, जो बेहद खूबसूरत बंगाली लड़की थी और पूरे समय ऋषभ का हाथ थामे रही। वह रघु की पड़ोसी थी और रघु के ज़रिए ही उसकी मुलाकात ऋषभ से हुई थी; दोनों एक-दूसरे के प्यार में डूबे हुए लग रहे थे, बिल्कुल ग्रीटिंग कार्ड वाले टेडी बियर वाले प्यार की तरह। उसने एक स्टील का टिफिन बॉक्स आगे बढ़ाया। फिर थोड़ी देर रुककर बोली, 'ये तुम्हारी माँ ने भेजा है, रघु।'

उसके दिल की गहराई में, नफरत और नापसंदगी के नीचे दबी हुई किसी चीज में कुछ बदलाव आया; उसे कुछ महसूस हुआ, एक तीखी पीड़ा, रघु के चेहरे पर उदासी की झलक दिखाई दी और वह थोड़ा मुस्कुराया।

'क्या तुम भी दुबई जा रहे हो?' साहिल ने पूछा। रघु ने

सिर हिलाकर कहा, 'नहीं।'

'हम हमेशा तुम्हारे साथ हैं,' ऋषभ ने कहा। 'माँ मुझसे कहती रहती है कि तुम्हें घर ले आऊं। तुम्हें कभी न कभी जरूर आना चाहिए।'

रघु ने ऋषभ की ओर देखा, फिर अरुंधति और साहिल की ओर देखा और काफी देर रुकने के बाद कहा, 'मैं करूँगा।'

असहजता को भांपते हुए, दिव्या दी ने बातचीत को अपने हाथ में ले लिया। उन्होंने हमें फॉर्म और हमारे सभी दस्तावेजों की फोटोकॉपी सौंप दीं, जिन्हें उन्होंने सौभाग्यवश अपने पास संभाल कर रखा था।

साहिल ने कहा, 'तीन दिन काफी हैं। मुझे शायद...'

ऋषभ ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'पैसों की चिंता मत करो। मैं पापा से बात कर लूंगा, वो हमारी मदद कर पाएंगे। साहिल, बस मुझे बता देना।'

रघु की बेचैनी देखकर साहिल ने कहा, 'हमें अब चलना चाहिए, बहुत काम करना है। मैं—'

चुपचाप बैठी माँ ने बीच में टोकते हुए कहा, 'तुम हमसे पहली बार मिल रहे हो और तुम जाओगे।'*aise hi*बिलकुल नहीं, तुम रघु के दोस्त हो और वो हमारे परिवार का हिस्सा है। खाओ और जाओ। मैं इस बारे में एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता।

अरुंधति और ऋषभ ने कमजोर विरोध किया, लेकिन अगर मम्मी चाहें तो काफी समझाने-बुझाने वाली हो सकती हैं।

मैंने कहा, 'मैं रूम सर्विस से ऑर्डर कर दूंगा।'

'कोई ज़रूरत नहीं है, क्या अरुंधति बेटा ने नहीं कहा था कि सबके लिए खाना है?' माँ ने कहा और झटपट टिफिन बॉक्स उठा लिया। 'आओ, अद्वैत, मेरी मदद करो।'

मैं उसके पीछे-पीछे गई। मैंने फुसफुसाते हुए कहा, 'मम्मा? आप क्या कर रही हैं? क्या आपने नहीं देखा कि कितनी अजीब तरह से—'

'ये उसकी मां का खाना है, उसे ये जरूर पसंद आएगा। भला उसे पसंद क्यों नहीं आएगा?' मां ने कहा।

'ये कोई फिल्म नहीं है, मम्मी। आपको अंदाजा भी नहीं है—'

'मुझे कुछ मत सिखाओ,' माँ ने बड़बड़ाते हुए कहा। 'जल्दी से मुझे वो प्लेटें दो, समय बर्बाद मत करो।'

दाल थी, चावल थे,*muri ghonto*दो तरह की मछलियाँ, बैंगन और न जाने क्या-क्या; ऐसा लग रहा था जैसे कोई दावत हो, और अगर रघु को इन सालों में इसी चीज़ की कमी खल रही थी, तो मुझे उसके लिए और भी बुरा लग रहा है। कमरा तुरंत ही उस मनमोहक खुशबू से भर गया।

थालियाँ बाँटी गईं और सबने भूख से खाना शुरू कर दिया। केवल रघु हिचकिचा रहा था। उसने कुछ देर खाने को देखा और धीरे-धीरे छोटे-छोटे निवाले लेकर खाना शुरू किया, मानो जल्दी खाने का मतलब अपने परिवार को माफ़ करना हो। मैंने मन ही मन एक खेल खेला। अगर वह हमसे पहले अपनी थाली साफ़ कर देता, तो यह भूख नहीं बल्कि पुरानी यादों, खोए हुए प्यार, तड़प, उदासी और उम्मीद का एहसास होता। और वह सबसे पहले खाना खत्म करके दूसरी बार उतनी ही बड़ी थाली में खाना ले आया। उसने पीछे मुड़कर देखा कि कोई उसे देख तो नहीं रहा। उसने मुझे घूरते हुए पकड़ लिया; मेरा अंदाज़ा सही निकला।

जब मैंने एक और बार खाना लिया तो अरुंधति मेरे पीछे-पीछे आई और मेरे कान में फुसफुसाते हुए बोली, 'उसे वापस लाने के लिए धन्यवाद, लेकिन उसके साथ कभी भी उस लड़की की तरह कुछ मत करना।'

जाने से पहले, साहिल ने दिव्या दी को आश्वस्त किया कि काम पूरा हो जाएगा।

करण ने आगे कहा, 'अगर यह कहीं अटक जाए तो मैं पापा को बता दूंगा।'

और बस इसी पल, अरुंधति भट्टाचार्य फूट-फूटकर रोने लगीं और रघु को गले लगा लिया। रघु ने उन्हें वापस थाम लिया और उनके कानों में फुसफुसाया, 'सब ठीक

है, सब ठीक है,'

मैं अब ठीक हूँ। मैं अब कहीं नहीं जा रहा हूँ।'

उसने उसे जाने दिया, उसके चेहरे पर आंसुओं की छोटी-छोटी धाराएँ अभी भी बह रही थीं, और फिर

उसने उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा। 'हम वहीं थे! मैं दीवार के दूसरी तरफ़ था! तुम मुझे बता सकते थे, उस बेवकूफ़ डायरी में लिखने की ज़रूरत नहीं थी! मरना चाहता था, बिलकुल नहीं!'

'Arundhati—'

चुप रहो! क्या तुम्हें अंदाज़ा है कि हम कितने मूर्ख दिख रहे थे? हम बच्चे थे, रघु, और तुमने हमारे साथ ऐसा किया! तुमने हमारे साथ वही किया जो ब्राह्मी ने किया था।

'मैंने तुम्हारे साथ ऐसा क्यों किया?' अरुंधति ने गुस्से से कहा,

उसकी आँखें चमक रही थीं। 'मैं—'

'माफी मांगकर हमारा अपमान मत करो, रघु। वह सही कह रही है,' साहिल ने कहा। 'ऋचा ने हमें डायरी दिखाई। मैंने पहले कभी इतना... अपर्याप्त महसूस नहीं किया था।'

'हमें इस बारे में बात करने की जरूरत नहीं है,' ऋषभ ने कहा।

'चुप रहो, तुम्हारे पास सिर्फ दिमाग नहीं है,' अरुंधति ने कहा। 'अगली बार अगर तुमने ऐसा कुछ करने की सोची भी तो...' उसने अपना हाथ ऐसे उठाया जैसे उसे फिर से थप्पड़ मारने वाली हो।

'बस करो,' साहिल ने कहा।

रघु आगे बढ़ा और अरुंधति को गले लगाकर उसे शांत किया। 'मैं ठीक हूँ।'

'मुझे तुम्हारी किताबें लौटानी हैं। घर आ जाओ, ठीक है?' उसने

कहा। 'मैं कोशिश करूंगा।'

उनके जाने के बाद रघु बिल्कुल बदल गया। वह खिड़की पर बैठ गया और सिगरेट के दो पैकेट खत्म कर दिए।

जब मैं उनके बगल में बैठा, तो उन्होंने कहा, 'मुझे कभी उनके प्रति जवाबदेह महसूस नहीं हुआ। उस समय उन्हें जानकारी न देने के लिए मुझे दोषी महसूस करने का कोई कारण नहीं था। मुझे नहीं लगता था कि वे मदद कर सकते हैं, मुझे लगता था कि उन्हें बताना समय की बर्बादी होगी।'

समय।'

'तो अब क्या बदल गया है? तुम तो प्रभावित लग रहे थे। क्या सच में?' 'स्कूल

खत्म हो गया, दो साल हो गए। क्या मैंने इस दौरान कुछ तोड़ दिया?'

यह ऐसी बात थी जिसे मैं स्वीकार नहीं करना चाहती थी। अब मुझे पता है कि मैं उनके लिए मायने रखती थी, और मैंने जो किया उससे उन्हें गहरा दुख पहुंचा। अरुंधति सही कह रही है, मैंने उनके साथ वैसा ही विश्वासघात किया जैसा ब्राह्मी

और मेरे माता-पिता ने मेरे साथ किया था।

'इसलिए-'

अब मैं ये सोचे बिना नहीं रह सकती कि अगर तुम एक दिन अचानक गायब हो जाओ, तो मुझे कैसा लगेगा? अगर मुझे पता चल जाए कि तुमने कई राज़ छिपा रखे हैं, तो शायद मैं फिर कभी दोस्त न बना पाऊं।

मैंने कहा, 'मैं कभी गायब नहीं होऊंगी,' और उसका हाथ पकड़ लिया। माहौल को हल्का करने के लिए मैंने पूछा, 'तुमने यह कैसे किया?'

वह उदास होकर हँसा, 'मैं तुम्हें अपने व्यापार के रहस्य नहीं बता रहा। अगर तुम उनका इस्तेमाल कर लो तो क्या होगा?'

लेकिन तुम्हें फिर कभी इस तरह गायब नहीं होना चाहिए।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

20 मार्च 2003

आज सुबह हमारी आशंकाएं सच साबित हो गईं। साहिल और ऋचा को पूरा यकीन था कि उन्होंने मेघनाद और उसके दोस्तों को पासपोर्ट दफ्तर में देखा था। वे कतारों में इधर-उधर घूम रहे थे, लोगों के कागजातों में झाँक रहे थे, उंगलियां चटका रहे थे और आपस में गुस्से में बातें कर रहे थे। तीन घंटे तक दफ्तर में रहने के बावजूद वे हिले तक नहीं।

‘वो कितनी दूर भागेगी? वो दुबई जाएगी ना? मैं उसे वहीं पकड़ लूंगी,’ ऋचा ने उन्हें कहते सुना था।

साहिल और ऋचा ने बिना किसी परेशानी के दस्तावेज जमा कर दिए थे, और कार्यालय में साहिल के संपर्क व्यक्ति ने उन्हें बताया था कि पासपोर्ट तीन दिनों में बन जाएगा और पुलिस सत्यापन की कोई आवश्यकता नहीं है।

मेघनाद और उसके साथियों ने सिर्फ यही एक जगह नहीं देखी थी। थोड़ी देर बाद, कांपती हुई, डरी हुई दिव्या दी दौड़कर होटल वापस आई और
उसने हांफते हुए हमें बताया कि वह एयरलाइंस कार्यालय में दस्तावेज जमा नहीं कर पाई क्योंकि उसने मेघनाद के दोस्त को मुख्य द्वार के पास घूमते हुए देखा था।

‘वह हमें यहाँ नहीं ढूँढ पाएगा,’ रघु ने मम्मी और पापा को भरोसा दिलाया, जो साहिल द्वारा उनकी मौजूदगी की पुष्टि करने के बाद से ही चिंतित थे। ‘हमें बस छुपकर रहना है। यह एक बड़ा शहर है, अगर हम उन जगहों से बचेंगे जहाँ उन्हें हमारी उम्मीद होगी, तो वे हमें नहीं ढूँढ पाएंगे।’

शाम को अरुंधति और ऋषभ फिर से खाना लेकर आए। रघु

उन्होंने मजाक में उनसे पूछा, 'क्या तुम्हारे पास करने के लिए और कुछ नहीं है?' यह पहली बार था जब मैंने रघु को मजाक में, हल्की-फुल्की बातचीत करते हुए कुछ कहते देखा था, और इससे मुझे मुस्कान आ गई।

'तुम्हारे विपरीत, हम कॉलेज जाते हैं, व्याख्यान में भाग लेते हैं और न जाने क्या-क्या करते हैं; और तुम्हारी एक प्रेमिका भी है जिससे तुम्हें भागने में मदद करनी पड़ती है,' अरुंधति ने तुरंत जवाब दिया।

रघु ने असहज होकर कहा, 'दोस्त, वह मेरी दोस्त है।'

‘हाँ, हाँ, वो तो सिर्फ़ दोस्त है,’ ऋषभ ने कहा। ‘बाकी हम सब तो...*chutiya*खाना पैक से निकालकर परोसा जा रहा था, तभी साहिल दिव्या दी को एक तरफ ले गया।

जब मैंने पूछा कि क्या बात है, तो उसने कहा कि यह दस्तावेजों के बारे में है। चिंता की कोई बात नहीं। रघु सोच में डूबा हुआ देख रहा था, जब अरुंधति ने रघु की माँ द्वारा लिखी गई व्यंजनों की गड्डी मम्मी को दे दी। मम्मी ने अरुंधति को धन्यवाद दिया और उनसे रघु की माँ को भी धन्यवाद देने को कहा। लिखावट मुझे रघु की याद दिला रही थी, घुमावदार अक्षर, अतिरंजित इटैलिक्स, ऐसा लग रहा था जैसे रघु ने खुद लिखा हो। जब मैंने मम्मी से पूछा कि क्या उन्हें सच में व्यंजनों की ज़रूरत है, तो उन्होंने मुझे कोई संतोषजनक जवाब नहीं दिया। उन्होंने बस इतना कहा, 'एक बच्चे को हमेशा अपनी माँ की ज़रूरत होती है।'

जब वे चले गए, तो परेशान दिव्या दी ने मुझसे कहा, 'मैंने साहिल को विभोर का हालचाल जानने के लिए कहा था।'

'आपका क्या मतलब है?'

‘मुझे पहले से ही अंदाजा था। मेघनाद ने उसे ढूंढ लिया और इतना पीटा कि उसे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। उसकी कई हड्डियां टूट गईं और एक आंख की रोशनी आंशिक रूप से चली गई,’ दी ने कहा। ‘लेकिन रघु सही कह रहा है, यह शहर बहुत बड़ा है, वे हमें कभी नहीं ढूंढ पाएंगे।’

बहुत देर रात तक हम सोए नहीं, और साहिल द्वारा लाए गए तालों से हमने अपने दरवाजों को डबल लॉक कर दिया। हमने एहतियात के तौर पर अपना कमरा होटल के निकास द्वार के सबसे पास वाले कमरे में बदल लिया।

हर रात की तरह, रघु और मैं बातें करते-करते सो गए। 'क्या
तुम्हें उनकी याद आती है?'
‘मुझे उन पर गुस्सा आता
है।’ ‘लेकिन क्या तुम्हें
उनकी याद आती है?’
‘अब मुझे उनकी तकलीफों में पहले जैसी खुशी
नहीं मिलती।’ ‘क्या आप उनसे बात करेंगे?’
मुझे नहीं लगता कि उनके पास माफी मांगने के लिए शब्द
होंगे। क्या आपने अपने दोस्तों से माफी मांगी?

रघु ने कठोर स्वर में कहा, उसके अंदर का दर्द साफ झलक रहा था, 'वे मेरे माता-पिता थे।'

और इसीलिए तुम्हें उन्हें माफ कर देना
चाहिए।
'वादा करो कि तुम कोशिश
करोगे?' 'मुझे उस घर की याद
आती है।'

क्या यह एक वादा है?

उसने कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर बाद हम दोनों सो गए।

अभी एक घंटा ही बीता था कि रघु ने हमें झटके से जगा दिया। 'हमें जाना होगा!'

किसी ने कोई सवाल नहीं पूछा। हम इस स्थिति के लिए तैयार थे। मम्मी, पापा, दिव्या दीदी और मैं सब उठे और कुछ ही मिनटों में अपने कपड़े पैक कर लिए। कमरे का किराया चुका दिया गया था, इसलिए हम भागे और पहली ऑटो पकड़ ली। रघु ऑटोवाले के साथ आगे बैठ गया और उसके कान में चिल्लाकर उसे तेज़ गाड़ी चलाने को कहा।

'कहाँ जाना है?' दिव्या डिड ने पूछा।

'ऋषभ के घर,' रघु ने कहा।

आगे कोई सवाल नहीं पूछा गया। मैंने देखा कि रात के तीन बज रहे थे, जब हमें ऋषभ के बैठक कक्ष में ले जाया गया। उनकी माँ, जो मिलनसार और तेज़ आवाज़ वाली महिला थीं, ने हमसे एक भी सवाल नहीं पूछा और हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया। मुझे लगा कि ऋषभ ने उन्हें सब कुछ बता दिया होगा। दो नौकर हमें लेकर आए।

चाय और बिस्कुट। ऋषभ के पिता आँखें मलते हुए कमरे में आए और हमें लेने के लिए गाड़ी न चलाने पर ऋषभ को डांटने लगे। केवल रघु से ही उनकी बातचीत में थोड़ी नरमी थी। मुझे नहीं पता कि रघु और ब्रह्मी ने उनके बेटे के साथ जो किया था, उससे वे डरे हुए थे या नाराज़ थे।

मेघनाद के नरम स्वभाव वाले ऋषभ के पिता ने धमकी भरे लहजे में कहा, 'इस घर में कोई नहीं आएगा। वे तुम्हें छू भी नहीं पाएंगे।'*Hamare bhi bahut contact hai* (हमारे भी बहुत सारे संपर्क हैं।)

'अगर तुम्हें किसी चीज की जरूरत हो तो हमें बताना,' ऋषभ की मां ने कहा। उन्होंने नौकरों को निर्देश दिया कि वे हमें सोने की जगह दिखाएं और रात के लिए कपड़े दें।

जब मम्मी और पापा, जिन्हें कभी ऐसी उदारता का अनुभव नहीं हुआ था, ने उन्हें धन्यवाद देने की कोशिश की, तो उनकी बात अनसुनी कर दी गई। रघु को ऋषभ के साथ रहना था और उन्होंने दिव्या दीदी, मम्मी, पापा और मेरे लिए एक बड़ा कमरा दिया, जिसमें मैंने अब तक का सबसे बड़ा बिस्तर देखा था।

'तुम्हें पहले ही आ जाना चाहिए था,' ऋषभ ने कहा। 'तुमने ऐसा क्यों तय किया—'

रघु ने कहा, 'अगर मेघनाद अद्वैत का पीछा करते हुए दिल्ली आया होता, तो उसे पता होता कि अद्वैत ऋचा से मिला था। वे ऋचा के रहने का पता लगाकर हम तक पहुँच सकते थे।'

मैं गलत हो सकता हूँ-'

‘तुमने जो किया वो सबसे अच्छा था। तुम यहाँ जब तक चाहो रह सकते हो,’ ऋषभ ने कहा।

माँ ने हिचकिचाते हुए उससे पूछा, 'तुम्हारी माँ... उन्हें पता है—'

‘रिचा ने हमें बताया। वे आपकी मदद करने के लिए तैयार हैं। वैसे भी, मुझे लगता है कि अब आप सभी को आराम करना चाहिए। अगर आपको किसी चीज की जरूरत हो, तो बस पूछ लेना,’ ऋषभ ने कहा।

ऋषभ और रघु कमरे से बाहर चले गए। मैं भी उनके पीछे जाने से खुद को रोक नहीं पाया। दोनों को कोई परेशानी नहीं लग रही थी। हम छत पर गए जहाँ लड़कों ने अपने लिए सिगरेट जलाईं।

‘मेरी मां की बातों पर ध्यान मत दो। वो अब भी तुमसे थोड़ी नाराज़ हैं। वो तुम्हारी मां से अक्सर मिलती हैं, तुम जानते हो औरतें कैसी होती हैं। उन्हें लगता है कि तुमने हद पार कर दी,’ ऋषभ ने कहा।

आप उसे दोष नहीं दे सकते।

‘अरुंधति हर शाम रोती थी और मेरी माँ को उससे काफी लगाव हो गया था, इसलिए...’

‘मैं समझ गया,’ रघु ने कहा।

वे दोनों बेतहाशा सिगरेट पीने

लगे।

कुछ देर बाद ऋषभ ने कहा, 'बोर्ड परीक्षा में मुझे अंग्रेजी में 83 नंबर मिले। साहिल को 93 नंबर मिले। सोचो हम जैसे बेवकूफों को इतने नंबर मिल गए। अंकल ने हमें पढ़ाया, उन्होंने इस पर जोर दिया, वे मना करने पर भी नहीं मानते थे।'

रघु ने एक शब्द भी नहीं कहा।

मैंने पूछा, 'क्या आप उनकी मां से भी मिले?'

‘तुम्हारी माँ ने हमें गणित पढ़ाया, यहाँ तक कि ऋचा ने भी। जब मेरा छोटा भाई हॉस्टल से वापस आता है तो वह उसे भी पढ़ाती है—’

मैं नहीं चाहता—

‘उन्होंने तुम्हारे और तुम्हारी भाभी के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया, मुझे पता है। अब वे अपनी गलती मान रहे हैं, यकीन मानो, वे मान रहे हैं। और मुझे पूरा यकीन है कि अगर तुम्हारी भाभी उन्हें माफ कर सकती हैं, तो तुम भी कर सकती हो, है ना?’

मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता।

‘*Abbe gadhe*‘कहीं और मत देखो, मेरी तरफ देखो।’

‘हम इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं,’ रघु ने

झल्लाकर कहा।

ऋषभ ने सिर हिलाते हुए कहा, 'दरअसल, हमें बात करनी ही होगी। क्योंकि

भगवान ही जाने तुम्हारे उस घटिया दिमाग में क्या-क्या चलता रहता है।'

‘ऋषभ—’

‘मुझे ऋषभ मत कहो,’ उसने कहा और बनावटी गुस्से में हाथ उठाया। फिर उसने रघु का कॉलर पकड़ा और उसे दीवार से धक्का दिया।*Maarunga*मैं तुम्हें मारूंगा। देखो, मुझे पता है... क्या हुआ था।'

रघु ने ऋषभ को धक्का देकर कहा, 'तुम्हें कुछ नहीं पता!'

'भाड़ में जाओ! हफ्ते में तीन दिन मैंने तुम्हारे माता-पिता को इस घर में, अरुंधति के घर में रोते देखा! वे हर किसी को बताते थे कि क्या हुआ था! वे बार-बार खुद को शर्मिंदा करते थे ताकि कोई तुम्हें ढूंढकर ले जाए।'
पीछे हटो। तुम्हें उन्हें थोड़ा आराम देना चाहिए।’

‘तुम्हें यहाँ से दफ़ा हो जाना चाहिए, ऋषभ—’

‘दफा हो जाओ! वे हमें फोन कर रहे हैं, दिन भर ऋचा से बात कर रहे हैं, तुमसे मिलने की अनुमति मांग रहे हैं। कम से कम तुम उनसे बात तो कर लो—’

रघु ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा, 'हम इस बारे में बाद में बात करेंगे।' उसने सिगरेट बुझाई और गुस्से में वहां से चला गया।

‘उसकी क्या समस्या है? तुम उसे कुछ क्यों नहीं बताते?’ ऋषभ ने मुझसे कहा। ‘सिगरेट?’

सुबह का समय था। कुछ देर पहले ऋचा ने फोन करके बताया कि तीन लड़कों ने घर के बाहर उसे रोक लिया और उससे पूछा कि क्या वह रघु नाम के किसी व्यक्ति को जानती है। रघु और ऋचा के माता-पिता के शोर मचाने पर ही वे लड़के वहां से भागे।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

21 मार्च 2003

अब मम्मी डिज्नीलैंड में एक बच्चे की तरह खुश हैं।

ऋषभ की मां के कड़े विरोध के बावजूद, उसने रसोई पर कब्ज़ा कर लिया है और ज़िद कर रही है कि खाना सिर्फ वही बनाएगी। ऋषभ की मां की मिन्नतें अनसुनी रह गईं।

हमारी उम्मीदें जल्द ही टूट गईं, जब मम्मी ने ऋषभ के नौकरों के मुकाबले आधे समय में हम सबके लिए शानदार नाश्ता बना दिया। मम्मी न तो हमारी मदद कर रही थीं और न ही हमारे साथ किए गए बर्ताव का बदला चुका रही थीं, बस बात ये थी कि चमचमाते संगमरमर के तख्तों, सुंदर दरवाज़ों और चिमनियों से सजी रसोई इतनी आकर्षक थी कि हम खुद को रोक नहीं पाए। ऋषभ के परिवार को, जो खुद को बेहतरीन मेज़बान मानते थे, ये बात बिल्कुल पसंद नहीं आई कि मम्मी अपना ज़्यादातर समय रसोई में ही बिताती थीं।

ऋषभ की बड़ी बहनें और उनके पति भी घर पर थे, इसलिए उन्हें हमारी मौजूदगी की जानकारी नहीं दी गई। लेकिन वे सभी मम्मी के बनाए खाने की तारीफ करते नहीं थक रहे थे।

रघु, साहिल, अरुंधति और ऋषभ ने लगभग पूरा दिन छत पर सिगरेट पीते हुए बिताया था। उनकी बातें सुनने का कोई फायदा नहीं था। ज़्यादातर समय वे चुपचाप बैठे सिगरेट पीते हुए अरुंधति द्वारा लाए गए टेप को सुनते रहते थे। कभी-कभी वे टेप बंद कर देते और अरुंधति गाना गाने लगती। मैंने शायद ही कभी किसी को बोलते सुना हो। और जब वे बोलते भी, तो बहुत कम बोलते, और बाकी तीनों सिर हिलाकर चुप हो जाते। रघु को यह सब सहज लग रहा था, उसके चेहरे पर एक अलग ही शांति छाई हुई थी। वह पहले की तरह जल्दी में नहीं था, पहले की तरह बेचैन नहीं था, और ज़्यादा मुस्कुरा रहा था। मैंने बाहर जाकर उनकी संगति में खलल न डालने का फैसला किया। मेरे जाने के बाद, वही लोग उसके आसपास होंगे, अगर वह चाहे तो उसे अपना जीवन फिर से संवारने में मदद करेंगे। उसे उनकी ज़रूरत थी, ताकि वे उसके जीवन के खालीपन को भर सकें। मैंने उसे देखा कि वह उस भूमिका में ढल रहा था जिसमें वह सहज लग रहा था—एक दोस्त, एक खुश रहने में सक्षम लड़का। मुझे उसके लिए अपनापन महसूस हुआ, जैसे मैं उसे थोड़ा खो रहा हूँ। यह वही था जिसके बारे में मैंने लोगों को बात करते सुना था, वह दर्द जो सुखद और दुखद दोनों होता है।

ऋचा, जिसे मेघनाद द्वारा पीछा किए जाने के डर से ऋषभ के घर न आने के लिए कहा गया था, मुझसे बात करने के लिए ऋषभ के घर आई।

'नमस्ते?'

‘तुम्हें तारीखें कितनी अच्छी तरह याद रहती हैं?’ उसने मुझसे

पूछा। ‘क्यों?’

‘चौबीस मार्च, यही तारीख है।’

‘हां, मुझे पता है कि हम उसी तारीख को दुबई के लिए रवाना हो रहे हैं,’

मैंने कहा। ‘उसी तारीख को ब्राह्मी की मृत्यु भी हुई थी।’

रघु की डायरी और उसमें 24 मार्च की प्रविष्टि को याद करने में मुझे एक पल का समय लगा।

‘आज उसी दिन तो तुम उसका दिल तोड़ने वाली हो, है ना? क्या तुमने इस बारे में सोचा है? या तुम अपनी आजादी का जश्न मनाने में इतनी व्यस्त हो?’

'यह पहले जैसा नहीं है, हम अब भी दोस्त रहेंगे, हम हमेशा दोस्त रहेंगे।'

अगर उनमें किसी चीज़ की महारत है, तो वो है दर्द छुपाना। अगर वो इतने सालों तक हम सबके साथ ऐसा कर सकते हैं, तो कोई वजह नहीं कि वो तुम्हारे साथ ऐसा न कर सकें। तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि उस चेहरे के पीछे क्या चल रहा है, मुझे तब भी नहीं पता था जब वो भद्दा दिखता था, और तुम्हें अब भी नहीं पता चलेगा जब वो...

'आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'

अगर तुम उसे वैसे प्यार नहीं कर सकतीं जैसे वो तुम्हें करता है, तो कम से कम उसके साथ रहो, उसका हाथ थामो, उसे बताओ कि सब ठीक हो जाएगा। उसे ये बताने की ज़रूरत है। वो सब लोग जिन्हें वो कभी प्यार करता था, उन्होंने उसे निराश किया है, और चाहे हम अभी उसके लिए कितना भी एकजुट हो जाएं, इसमें बहुत समय लगेगा। तुम अतीत को मिटा नहीं सकतीं। वही करो जो मैं करती अगर वो मुझे वैसे प्यार करता जैसे तुम्हें करता है।

कुछ कहने से पहले ही कॉल कट गई। बाकी की शाम मैं छत के दरवाजे के बाहर खड़ी रघु को उसके दोस्तों के साथ देखती रही और प्रार्थना करती रही कि उसकी सेहत में सुधार शुरू हो गया हो। ऋचा ने तो जैसे बवाल खड़ा कर दिया था। अब मुझे शक होने लगा कि क्या रघु दुबई जाने के मेरे फैसले को बिना किसी अपराधबोध के टालने के लिए बहादुरी का दिखावा कर रहा था। यह बात धीरे-धीरे मुझे अंदर ही अंदर खा रही थी। मैंने रघु के दोस्तों के जाने का इंतजार किया और उससे बात करने लगी।

जब मैंने रघु से इस बारे में पूछा तो वह हंस पड़ा। उसने कहा, 'अगर तुम मुझे वह दिन भुला नहीं सकते तो तुम्हारा क्या फायदा?'

'लेकिन-'

क्या आज का दिन दुख भरा होगा? क्या यह संयोग मात्र क्रूरता है? बिल्कुल। मुझे एक क्रूर ईश्वर की आदत हो गई है। मैंने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है। लेकिन मैं खुश हूँ, अद्वैत, जितना खुश हो सकता हूँ।

लेकिन तुम प्यार करते थे—

'उसके लिए मेरा प्यार मुझे नहीं बचा सका, बल्कि तुम्हारी दोस्ती ने मुझे बचा लिया। तुम्हें क्या लगता है, दोनों में से कौन ज्यादा शक्तिशाली है?' उसने कहा।

मुझे चिंता करने की कोई बात नहीं है? क्या तुम कुछ छिपा रहे हो? क्योंकि मुझे बताया गया है कि तुम छिपाने में माहिर हो। अगर कुछ छिपा रहे हो, तो मुझे अभी बताओ वरना मैं तुम्हें इतनी ज़ोर से थप्पड़ मारूंगा कि तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि दिन है या नहीं।

'मुझे इतना डर लग रहा है।'

मैंने कहा, 'आपको इसे गंभीरता से लेना होगा।'

'जब आप ऐसा करेंगे, तब मैं इसे गंभीरता से लूंगा,' रघु

ने कहा। 'इसका क्या मतलब है?'

'आप दुबई जाने को लेकर बहुत खुश लग रहे हैं, है ना?' उसने पूछा।

'हां, मैं हूं,' मैंने कहा और थोड़ी देर रुककर आगे कहा। 'मेरा मतलब है, मैं अपने कोचिंग संस्थान को चलाना चाहती थी, लेकिन हम सब कुछ तो हासिल नहीं कर सकते, है ना? क्या आपने भी यही नहीं कहा था कि अभी हम इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकते?'

'यह कोचिंग संस्थान के बारे में नहीं है। आपको मुझसे यह छिपाने की जरूरत नहीं है कि आप इस समय अपने माता-पिता को देखना भी बर्दाश्त नहीं कर सकते।'

'मैं-'

उन्होंने कहा, 'झूठ बोलने की

कोशिश भी मत करो।'

आपको इसे शब्दों में व्यक्त करना होगा।

और बस, मैं बच्चे की तरह रोने लगी। उन्होंने मुझे गले लगाया और मुझे बेवकूफ कहा। ये बात मुझे बुरी तरह चुभी। मैं इस बात को छुपा रही थी, और दिव्या दीदी भी।

'वे जीत गए, है ना? वे कमीने जीत गए। उन्होंने हमें घर से, शहर से बाहर निकाल दिया। उन्होंने हमें छोटे चूहे बना दिया,' मैं उनकी बाहों में सिसकते हुए बोली। 'मम्मी और पापा, उन्होंने देहरादून के अलावा कुछ और नहीं देखा है, और हम उन्हें एक समुद्र पार करके एक ऐसे देश में ला रहे हैं जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा। वे मुझे दिन भर यही कह सकते हैं कि वे अपनी बेटियों के साथ सबसे ज्यादा खुश रहेंगे,'

लेकिन मुझे पता है कि यह सच नहीं है। मुझे इस बात पर गुस्सा आता है कि जीत को भी हार की तरह सुना जाता है। मुझे उनके लिए डर लगता है।'

'अद्वैत—'

'वे वहाँ क्या करेंगे? घर में बैठे रहेंगे और क्या करेंगे? दीवारों को घूरते रहेंगे?' 'ऐसा कभी नहीं होगा। तुम अपनी माँ को पहले ही पल में नहीं जान पाओगे।'

इस हफ्ते, उसके कई दोस्त होंगे जो उससे अपने लिए सिलाई करवाना चाहेंगे! और तुम्हारे पिताजी? वो बुज़ुर्ग चाचाओं की सभाओं की जान होंगे, बेवकूफी भरे चुटकुलों पर सबसे ज़्यादा हंसते और मुस्कुराते रहेंगे—'

'मेघनाद? वो किसी और को सताने के लिए ढूंढ ही लेगा, है ना? दिव्या दी और मैं तो भाग जाएंगे, लेकिन वो किसी और को सताने के लिए ढूंढ ही लेगा, है ना?' मैंने पूछा।

'अद्वैत, जीवन निष्पक्ष नहीं है। यह बात मैंने बहुत पहले ही सीख ली थी। लोग स्वभाव से दयालु और मानवीय नहीं होते, उनमें बुराई की प्रवृत्ति होती है। बल्कि इसके विपरीत होता है।'

'क्या हमें मेघनाद को भूल जाना चाहिए और खुद को शक्तिहीन महसूस करना चाहिए?' 'हाँ।'

मैंने अपने आंसू पोंछे और उसकी बाहों में समा गई। यही मेरा एकमात्र विकल्प लग रहा था। खुशी को चुनना, सर्वव्यापी, विजयी खुशी नहीं, बल्कि फिर भी खुशी। शायद औरतें यही करती हैं।

ओह, मैं बताना भूल गया। पासपोर्ट आज आ गए हैं।

आज से तीन दिन बाद, रघु और मैं मीलों दूर होंगे, अकेले बैठकर चाय में बिस्कुट डुबो रहे होंगे। रघु चाहे जो भी कहे, जीत का एहसास ऐसा नहीं होता।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

23 मार्च 2003

मेरे पास नए कपड़े हैं, और दिव्या दीदी, मम्मी और पापा के पास भी। ऋषभ के माता-पिता ने हमारे परिवार के पास जितने कपड़े थे, उससे कहीं ज़्यादा कपड़े हमारे लिए खरीदे और उन्होंने मना करने पर भी नहीं माना। इस सारे प्यार से मेरी तबीयत खराब हो रही है।
पेट में अजीब सी बेचैनी हो रही है। क्या अजनबियों के लिए इतना प्यार सच में होता है? वे क्या छुपा रहे हैं? रघु के माता-पिता ने भी हमें कपड़े और गहने भेजे हैं, जबकि वे हमसे मिले तक नहीं हैं। यह सारा प्यार घिनौना है। यह जानकर कि अजनबियों के लिए भी इतना प्यार है,
इन जैसे प्यार करने वाले परिवार और दोस्तों के होते हुए भी, यह बेहद शर्मनाक है कि मेरा परिवार ऐसा है, जिसने हमें हमारे ही शहर से बाहर निकालने के बाद भी हमारे लिए मुश्किलें खड़ी कीं। मुझे इस बात पर बहुत गुस्सा आता है।
लेकिन अगर सोचें तो रघु का परिवार भी बहुत बुराई करने में सक्षम है; कम से कम मेरा तो यही मानना है।

परिवार ने अच्छा व्यवहार करने का दिखावा नहीं किया, उनकी दुष्टता हमेशा से ही सबके सामने थी। इसलिए शायद मुझे इस बारे में ज्यादा बुरा नहीं मानना चाहिए।
लेकिन मैं भारत छोड़ने का जोखिम नहीं उठा सकता।

रघु को छोड़ना मेरे दिल को तोड़ रहा है। अभी मेरी बस यही इच्छा है कि दिव्या दीदी मम्मी-पापा को लेकर दुबई चली जाएं और मुझे यहीं छोड़ दें। पिछली दो रातों से मैं रघु से प्यार करने के ख्यालों में उलझी हुई हूँ। मुझे यकीन है कि अगर कोई स्विच होता तो मैं उसे दबा देती, और अगर फिर भी काम नहीं बनता तो मैं तार खींच देती, सर्किट बॉक्स तोड़ देती ताकि किसी तरह काम बन जाए। उस लड़के से प्यार करने के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूँ।
दिव्या दीदी और मैंने हमेशा इस बारे में बात की है कि अगर मैं किसी लड़के या आदमी के लिए अपने परिवार को छोड़ने के लिए तैयार होती, तो मुझे उससे प्यार होना चाहिए था। अभी तो मैं चाहती हूँ कि वे मुझे इस आदमी के साथ छोड़कर चले जाएँ। लेकिन क्या यह सच में प्यार है? क्या यह वही है जिसके बारे में मैंने पढ़ा है या टीवी पर देखा है? मुझे नहीं पता। शायद मुझे बस इस बात का डर है कि मैं कभी किसी और के लिए इस तरह का प्यार महसूस नहीं कर पाऊँगी। क्या पता यही मेरी ज़िंदगी का सबसे बड़ा प्यार हो? लेकिन क्या उसे यह बताना सही होगा कि शायद मैं उससे प्यार नहीं करती, हालाँकि समय के साथ कौन जाने? या क्या मैं वही दोहरा

रही हूँ जो ब्रह्मी ने उसके साथ किया था?

शायद मुझे डर है कि मेरे बिना वह यहाँ खो जाएगा, हालाँकि शायद मैं खुद को कुछ ज़्यादा ही समझ रही हूँ। अब ऐसे और भी लोग हैं जो उसकी देखभाल मुझसे कहीं बेहतर कर सकते हैं। शायद यहीं हमारी यात्रा समाप्त होती है।

आज सुबह, बिना किसी चेतावनी या स्पष्टीकरण के, सबके विरोध के बावजूद, रघु मुझे चुपके से घर से बाहर ले गया। ऋषभ ने उसे द्वार पर ही पकड़ लिया, लेकिन उसने हमें जाने दिया और हमें अपनी रंगीन शीशों वाली कार की चाबी दे दी।

मैंने रघु से पूछा, 'हम कहाँ जा रहे हैं?' रघु ने

जवाब दिया, 'तुम्हें पता चल जाएगा।'

सफ़र में एक घंटा लग गया; सूरज अभी निकला नहीं था। रघु ने बताया कि सड़कें कितनी बदल गई हैं और ट्रैफ़िक तीन गुना बढ़ गया है, हालाँकि वह इस तरह की बातचीत करने में बिल्कुल भी अच्छा नहीं था। क्या वह मुझे अपने घर ले जा रहा था? क्या वह अपने माता-पिता से मिलने जा रहा था? मेरे हाथ पसीने से भीग गए और मेरे घुटने बुरी तरह काँपने लगे। मेरे विपरीत, वह आश्चर्यजनक रूप से शांत था।

वह एक अपार्टमेंट बिल्डिंग के बाहर रुका और सब कुछ एकदम से स्पष्ट हो गया। उसकी डायरी में पढ़ी हुई बातें मेरे दिमाग में कौंध गईं और मेरे हाथ ठंडे पड़ गए। वह मुझे यहाँ क्यों लाया? ऋचा के शब्द याद आ रहे थे।
मेरे दिमाग में तरह-तरह के सवाल उठ रहे थे। क्या सच में रघु के मन की बात पता चल सकती है? क्या वो कुछ योजना बना रहा था? पर वो ऐसा क्यों करेगा?

उसने गाड़ी खड़ी की और मुझे बाहर जाने दिया।

“यहीं पर सब कुछ हुआ था,” उसने गंभीर स्वर में कहा, उसकी आँखें भावहीन थीं। एक पल के लिए उसने कंक्रीट को बिना पलक झपकाए देखा और फिर ऊपर देखा। उसने एक गहरी साँस ली और आँखें बंद कर लीं। मुझे लगा कि मुझे यहाँ नहीं होना चाहिए था। उसने खुद को संभाला और उस जगह से मुँह मोड़ लिया।

'क्यों-'

मेरे सवाल का जवाब दिए बिना, वह इमारत की ओर चल पड़ा। मैं चुपचाप उसके पीछे-पीछे गया। हम सीढ़ियाँ चढ़े और एक जर्जर फ्लैट के पास रुक गए। जहाँ दरवाजा होना चाहिए था, वहाँ दीवार में सिर्फ एक बड़ा सा छेद था। अंदर अँधेरा था, और हर कदम के साथ एक अजीब सी खामोशी छाई हुई थी।

'क्या आपको यकीन है-'

रघु थोड़ी देर रुका, अपने सामने के दृश्य को निहारा, मेरा हाथ पकड़ा और मुझे आगे ले गया। मुझे अंधेरे और नमी भरे वातावरण में अभ्यस्त होने में थोड़ा समय लगा।

गंध।

“हमने पिछले कुछ दिन यहीं बिताए,” उसने धीमी आवाज़ में कहा। उसने उदास निगाहों से चारों ओर देखा। कालिख से सना और कूड़े-कचरे से भरा यह घर रहने लायक बिल्कुल नहीं लग रहा था। लेकिन शायद दो साल पहले, उन्होंने यहाँ रहने का कोई न कोई तरीका ढूंढ लिया था।

रघु ने कांपती आवाज को रोकने की पूरी कोशिश करते हुए कहा, “हमने यहीं पर यह समझौता किया था, यहीं पर अपनी जिंदगी खत्म करने का फैसला किया था। हम कितने मूर्ख थे।”

‘…’

'ऐसा लगता है जैसे बहुत-बहुत समय पहले की बात हो।'

'क्या उस दिन के बाद से आप पहली बार यहां आए हैं?'

उन्होंने कहा, 'मैं पिछले कुछ दिनों में यहां कई बार आ चुका हूं।' उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा, 'मुझे अब यहां आने से डर नहीं लगता।'

उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे इमारत की छत पर ले गया। मैं बहुत डरी हुई थी। उस जगह में कुछ बहुत ही... उदासी छाई हुई थी। उदासी की एक लहर मेरे अंदर से गुज़री और मेरी रगों में दौड़ गई। मुझे पता नहीं था कि ब्राह्मी कैसी दिखती थी, फिर भी मैं उसे वहाँ दीवार के किनारे पर, नीचे घूरते हुए, हवा में लहराते बालों के साथ, कोने में रघु को डायरी पढ़ते हुए देख सकता था, पहले तो उसकी आँखों में भोलापन भरा रोमांस था और फिर उलझन भरे गुस्से के साथ, मानो उसे अपनी प्रेमिका से धोखा मिला हो।

मैं उसे डायरी पढ़ते हुए देख सकती थी, फिर ब्राह्मी को रोकने के लिए दौड़ते हुए, यह महसूस करते हुए कि बहुत देर हो चुकी है, और फिर छत के किनारे से झांकते हुए, भयभीत, कांपते हुए, यह जानते हुए कि वह क्या देखेगा और फिर भी प्रार्थना करते हुए कि यह सच न हो। ये विचार मेरे मन में छा गए और इससे पहले कि मैं रो पड़ती, उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे किनारे की ओर ले गया। मैं भागना चाहती थी, मैं अपना हाथ छुड़ाकर घर वापस जाना चाहती थी। हर पल जब मैं वहाँ रुकी, मुझे लगा कि मेरा दिल सिकुड़ रहा है, बीते समय का दुख उसे जकड़ रहा है, उसकी जान खींच रहा है। हम पैर लटकाकर बैठे थे और उसने कहा, 'मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है, अद्वैत। मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है। यह... यह गहरी खाई एक पलायन की तरह लग रही थी, दर्द से दूर एक सुरक्षित रास्ता, एक त्वरित, दर्द रहित निकास, लेकिन अब मैं इसे उस तरह नहीं देखता। मैं देखता हूँ कि
आगे है।’

‘…’

‘आपने इसे संभव बनाया।’

मैं इसका श्रेय नहीं लेना चाहता।

‘यह सच है,’ रघु ने कहा।

‘मैं—’

‘कल जाने से पहले एक आखिरी चाय पीना चाहोगे?’ ‘तुम पूछ ही क्यों रहे हो?’

उसने अपने साथ लाए हुए थर्मस से, जिसे मैंने पहले ध्यान नहीं दिया था, हम दोनों के लिए दो कप पेय पदार्थ डाले।

मैंने कहा, 'मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी,' मेरा दिल थोड़ा हल्का हो गया। 'जब भी समय मिले, मुझसे मिलने जरूर आना।'

आपको दुबई आना चाहिए।

मुझे नहीं पता कि मुझे कब समय मिलेगा।

क्या आप सचमुच नखरे दिखा रहे हैं?

रघु ने कहा, 'मैं घर जाने की सोच रहा हूं।' यह बात मुझे बहुत बुरी तरह लगी।

उन्होंने आगे कहा, 'इससे पहले कि अनिर्बन जूनियर मेरे बिना यादें बनाए, मैं वहां मौजूद रहना चाहता हूं। मैं इसका पछतावा नहीं करना चाहता।'

और आपके माता-पिता—

'वहाँ पहुँचकर देख लूँगा,' उसने मुस्कुराते हुए कहा। 'कोशिश तो करनी ही होगी, है ना? मेरे इतने सारे दोस्त मेरे लिए, आपके और आपके परिवार के लिए एकजुट हो रहे हैं, ऐसे में कम से कम मैं इतना तो कर ही सकता हूँ कि एक और कोशिश करूँ।'

मैंने उसे गले लगाया। मैंने कहा, 'मैं रोना नहीं चाहती।'

‘तुम्हें जरूर जाना चाहिए। भगवान जाने हमें दोबारा ऐसा मौका कब मिलेगा।’ और यह कहते ही हम दोनों रो पड़े।

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

24 मार्च 2003

मैं डरी हुई हूँ। मैं अभी फ्लाइट में हूँ, लेकिन इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है। मेरा मन कर रहा है कि खिड़की खोलकर बाहर निकल जाऊँ। मैं रो रही हूँ। फ्लाइट अटेंडेंट मेरे आस-पास घूम रही है, मुझसे पूछ रही है कि क्या मुझे कुछ चाहिए, क्या सब ठीक है। मेरा मन कर रहा है कि उस पर चिल्लाकर कहूँ कि कुछ भी ठीक नहीं है, कि उन्हें अभी फ्लाइट रोकनी चाहिए और मेरे सबसे अच्छे दोस्त को बचाना चाहिए! दीदी, मम्मी और पापा उसे और बाकी यात्रियों को, जो मुड़कर हमें देख रहे हैं, बता रहे हैं कि मैं ठीक हूँ, कि मैं अपने सबसे अच्छे दोस्त को याद कर रही हूँ। मैं उसे याद नहीं कर रही! मैं अपने सबसे अच्छे दोस्त को बर्बाद करने की दोषी हूँ। क्या मुझे रोना नहीं चाहिए!

मम्मी और पापा मेरा हाथ थामे मुझे समझा रहे हैं कि सब ठीक हो जाएगा, सब ठीक हो जाएगा, लेकिन मुझे पता है कि कुछ भी ठीक नहीं होगा। वे सब झूठ बोल रहे हैं। उन्हीं की वजह से यह सब हुआ है। सारी गलती उन्हीं की है। अगर उन्होंने मुझे नहीं रोका होता, अगर वे स्वार्थी नहीं होते, अगर वे मेरी तरह डरे नहीं होते, तो रघु... सारी गलती उन्हीं की है। रघु को हमारे लिए कीमत चुकानी पड़ी।

मैं उनसे कह रही हूँ कि मैं ठीक हूँ, लेकिन मैं ठीक नहीं हूँ। मैं इस विमान में नहीं रहना चाहती, मैं अब उनके साथ नहीं रहना चाहती। मैं उनके साथ दिल्ली में रहना चाहती हूँ। इस विमान में रहने से बेहतर है कि मैं मर जाऊँ। कृपया रुक जाइए। कृपया। रुक जाइए। मैं यह लिख नहीं सकती।

दो कारें... हम दो कारों में थे... क्यों... मैं उस कार में क्यों नहीं थी जिसमें वो था? मैं हो सकती थी, मुझे होना चाहिए था, मैं इतनी बेवकूफ क्यों थी? मेरे पास अपने परिवार के साथ पूरा जीवन था, मैं उसकी कार में क्यों नहीं थी? मैं मम्मी, पापा, दिव्या दीदी और ड्राइवर के साथ क्यों थी? जब मैंने रघु को अपने दोस्तों के साथ हंसते देखा, जब मैंने ऋषभ को खड़े होकर सनरूफ से अपना सिर बाहर निकालते देखा, जब मैंने अरुंधति को साहिल को मज़ाक में थप्पड़ मारते देखा, तो मैं उस कार में, उनके साथ, उसके साथ होना चाहती थी। अधूरे बने फ्लाईओवरों के जाल में हम उनसे बिछड़ गए, और मेरा दिल बैठ गया, लेकिन फिर वे हमारे पीछे आ गए। मैं उसके बगल में हो सकती थी। एयरपोर्ट तक सिर्फ बीस मिनट बचे थे। मैंने सोचा, मैंने सोचा, ये वही दोस्त हैं जिनके साथ रघु रहेगा, उसे उनके आसपास रहना चाहिए, उनके साथ अपना रिश्ता मजबूत करना चाहिए।

फिर से दोस्ती हो गई, और मैंने उसके साथ यात्रा न करने का मूर्खतापूर्ण निर्णय लिया। मुझे वहाँ होना चाहिए था। मुझे उस कार में होना चाहिए था! मैं उसे बचा सकता था। मैं वह कर सकता था जिसका श्रेय उसने मुझे दिया था, इसके बजाय...

मोड़ पर हम उन्हें फिर से खो बैठे। और फिर मैंने उन्हें रियर-व्यू मिरर में देखा। मैंने रघु को देखा। मैंने उसे मेरी तरफ मुस्कुराते हुए देखा। बहुत खुश, बहुत राहत महसूस कर रहा था, बिल्कुल वैसे ही जैसे हमने तय किया था। हम रोएंगे नहीं क्योंकि तब ऐसा लगेगा जैसे हम फिर कभी नहीं मिलेंगे। उसने मुझे हाथ हिलाकर अपनी प्यारी सी मुस्कान दी। दो मिनट, बस दो मिनट बाद, अचानक एक टाटा सफारी कहीं से आ गई। उनकी कार लड़खड़ाती हुई और अचानक रुक गई। हम बड़ी मुश्किल से लाल बत्ती पार कर पाए थे।

उनकी गाड़ी दूसरी तरफ रुक गई थी। टाटा सफारी के दरवाजे खुले। ऋषभ ने गाड़ी को रास्ते से हटाने की कोशिश की, लेकिन सफारी ने रास्ता रोक रखा था। चार आदमी, जिनके मुंह पर रुमाल बंधा था, गाड़ी से बाहर कूद पड़े। ड्राइवर ने हमारी गाड़ी रोकी और यह देखने के लिए गाड़ी से बाहर निकला कि क्या हो रहा है।

सुबह के व्यस्त समय में, गाड़ियाँ बेरोकटोक हमारी ओर बढ़ती जा रही थीं, बेपरवाह, उन्मादी। जब मैंने गाड़ियों के बीच से उनकी ओर दौड़ने की कोशिश की तो मम्मी ने मेरा हाथ पकड़ लिया।

समय धीमा हो गया।

चारों आदमी नज़र आने लगे, हाथों में छड़ें और हॉकी स्टिक लिए हुए, उनमें से एक के हाथ में पीले रंग का तरल पदार्थ से भरा एक कनस्तर था, जो इधर-उधर छलक रहा था। करण भैया। अंशुमन भैया। मोंटी। मेघनाद। वे ऋषभ की कार की ओर दौड़े और रंगीन खिड़कियों पर ज़ोर से वार करने लगे। हम उनकी चीखें सुन सकते थे।

मेघनाद ने एक छड़ सीधे विंडशील्ड पर मारी, जिससे उसमें दरार आ गई। मैंने मेघनाद को मोंटी पर चिल्लाते हुए सुना, '*KAHA HAI SAALI! DAAL ACID SAALI PAR!*

DEKHTA HU KAHA JAATI HAI SAALI! (वो कुतिया कहाँ है! उस पर तेजाब फेंक दो! मैं देखूंगा कि वो कहाँ जाती है!)

करण भैया और अंशुमन भैया, जो हॉकी स्टिक से कार के दरवाजे पर लगातार प्रहार कर रहे थे, अब खिड़कियों पर स्टिक चलाने लगे और उन्हें तुरंत तोड़ दिया। उन्होंने टूटी हुई खिड़कियों से अंदर हाथ डालकर दोनों दरवाजे खोल दिए। मैंने उनकी तरफ दौड़ने की कोशिश की, लेकिन दिव्या दीदी ने मेरा हाथ पकड़ लिया। मम्मी ने मेरा मुंह बंद कर दिया। मेरी चीखें थम गईं।

'रास्ता गुजर गया!(उस कुतिया को जला दो!) अंशुमन भैया ने कहा, उन्हें नहीं पता था कि रंगीन खिड़कियों के पीछे केवल रघु, साहिल और अरुंधति थे। वे सभी

हाथ ऊपर उठाकर बाहर निकले और बात करने की कोशिश करने लगे। मैंने भी कोशिश की।

चीखने की बहुत कोशिश की, लेकिन मम्मी ने मेरा मुंह इतनी कसकर पकड़ रखा था कि मैं चीख नहीं पाई। मैंने करण को पुलिस को पुकारते सुना। ऋषभ बेतहाशा गाड़ियों के बीच भागा और एक तेज रफ्तार स्कूटर ने उसे टक्कर मारकर किनारे गिरा दिया। लोग ऋषभ के पास जमा हो गए, जो जमीन पर दर्द से कराह रहा था और अपना पैर पकड़े हुए था। उसका ड्राइवर भी डर के मारे देखता रहा। अब मैंने करण भैया और मोंटी को कार की डिक्की खोलकर हमें ढूंढते देखा, वे गुस्से में थे कि हम वहां नहीं थे। वे चीखती हुई अरुंधति को बाहर खींच लाए और उससे पूछने लगे कि हम कहां हैं। रघु अरुंधति की तरफ बढ़ा।
मेघनाद ने उसे रोका, लेकिन रघु ने उसे गुस्से से धक्का दिया और वह कुछ कदम पीछे लड़खड़ा गया। अरुंधति चीखती रही, लेकिन धीरे-धीरे उसकी आवाज बैठ गई और 'दूर रहो, दूर रहो' शब्द केवल होंठों की हरकत बनकर रह गए।

रघु ने मोंटी पर हमला किया और उसे अरुंधति से दूर धकेल दिया। अरुंधति को पकड़े हुए रघु के गले पर मोंटी ने ज़ोरदार मुक्का मारा। रघु लड़खड़ाकर पीछे गिरा और मेघनाद ने उसका गला पकड़ लिया। रघु ने खुद को छुड़ाया और मेघनाद को तीन तेज़ घूंसे मारे, जिससे मेघनाद के गले से खून निकलने लगा। साहिल, करण भैया और अंशुमन भैया से धक्का-मुक्की कर रहा था, जो साहिल पर हॉकी स्टिक बरसा रहे थे। 'हमें इन्हें रोकना होगा,' मैंने कहा, लेकिन मेरे मुंह से शब्द नहीं निकले। दिव्या दीदी और मम्मी मुझे गाड़ी की तरफ खींच रही थीं ताकि वे हमें देख न लें। साहिल के पैर पर हॉकी स्टिक मारने से एक स्टिक टूट गई। साहिल दर्द से चिल्लाया, लेकिन किसी तरह उन दोनों को गिराने में कामयाब रहा। हालांकि, मोंटी, जिसने अब अरुंधति के बाल पकड़ रखे थे, ने अपनी स्टिक साहिल के सिर के पीछे मारी और वह सड़क पर गिर पड़ा।
आस-पास खड़े लोग देखते रहे। मैं माँ की हथेली के छोटे से गड्ढे में
चीखती-चिल्लाती रही। दिव्या दीदी ने कहा, 'हम कुछ नहीं कर सकते!'
हम कुछ नहीं कर सकते! वे उन्हें छोड़ देंगे, लेकिन...

'हम नहीं!' हमारी आँखों के सामने का खौफनाक मंजर जारी रहा। मेघनाद और रघु ने एक-दूसरे पर बेरहमी से वार किए, मुक्के जबड़े और पसलियों पर ज़ोर से लगे। दोनों के मुँह से खून निकल रहा था, होंठ फटे हुए थे और खून से आँखें सूजी हुई थीं। रघु ने अपना सिर मेघनाद की नाक पर दे मारा और खून बह निकला। मेघनाद ने अपनी लाठी उठाई और रघु पर फेंकी, लेकिन निशाना चूक गया। मुँह से खून टपकता हुआ मेघनाद लड़खड़ा गया। रघु उस पर झपटा और उसके चेहरे पर दो लात मारी। उसने रघु को उठाया और उसका गला पकड़ लिया, लेकिन मोंटी की लाठी रघु की गर्दन के पीछे जा लगी।

और भी लोग उनके चारों ओर जमा हो गए, चुपचाप खड़े होकर खूनी मंजर देख रहे थे। किसी ने कुछ नहीं किया। मेरी चीखें अभी भी मम्मी के डर और दिव्या दीदी के थप्पड़ों से दबी हुई थीं, जिन्होंने मुझे चुप कराने के लिए थप्पड़ मारे थे। करण भैया और अंशुमन भैया चारों ओर देखने लगे, अब पकड़े जाने से डरे हुए थे। मेघनाद ने गिरे हुए रघु पर चिल्लाते हुए पूछा, 'वो कहाँ है!' मुश्किल से होश में आया रघु लड़खड़ाते हुए उठा और मोंटी पर झपटा, और उसे भी अपने साथ जमीन पर गिरा दिया।

कनस्तर लुढ़क गया। मेघनाद बोला, 'बताओ! वो कहाँ है!' करण भैया और अंशुमन भैया मेघनाद को जाने के लिए कहने लगे। 'पुलिस आ रही है,' वे चिल्लाए। मेघनाद टस से मस नहीं हुआ। मोंटी ने ज़ोर से वार किया। कुछ टूट गया। रघु की चीख हवा में गूंज उठी। छड़ रघु के खून से लाल हो चुकी थी। वह अधमरा होकर लुढ़क गया। डरी हुई दिव्या दीदी मुझे कार की तरफ खींचने लगीं। मम्मी और पापा ने मुझे पकड़ लिया। 'सुनो, सुनो, वो पुलिस है, सायरन की आवाज़ आ रही है, वे आ रहे हैं, ‘सब ठीक हो जाएगा, हमें निकलना होगा,’ दिव्या दीदी चिल्लाईं। ‘बस आ जाओ।’ पापा और दिव्या दीदी ने ड्राइवर को हमें एयरपोर्ट ले जाने का आदेश दिया। ड्राइवर ने कमज़ोर विरोध किया, लेकिन वह भी लकवाग्रस्त हो गया था। मुझे लगा जैसे मेरे शरीर से जान निकल रही हो। मम्मी मुझे घसीटकर कार तक ले गईं और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया। वे वहीं थे। ऋषभ और साहिल ढेर की तरह पड़े थे, बेसुध। करण भैया और अंशुमन भैया सायरन की आवाज़ सुनकर घबरा रहे थे। मोंटी और मेघनाद दोनों उठ खड़े हुए, अपने पैरों पर खड़े होकर रघु के ऊपर खड़े हो गए, जिसका खून ऐसे बह रहा था जैसे नल खुला रह गया हो। ड्राइवर ने कार को गियर में डाला। रघु के हाथ, छाती, सड़क, सब खून से सने थे। मेघनाद झुककर सवाल पूछ रहा था।*BATA BHENCHOD!* वह कहाँ है! चोदूंगा तेरे सामने मां, बेटी
डोनो को*!*(वो कहाँ है? मैं तुम्हारी आँखों के सामने बेटी और माँ का बलात्कार करूँगा!) कब तक भागते रहेंगे!’ करण भैया और अंशुमन भैया पहले ही कार की ओर पीछे हट रहे थे। मोंटी ने रघु के पेट में लात मारी। एक बार, दो बार। रघु के मुँह से सड़क पर और खून बहने लगा।

ड्राइवर हिचकिचाया। दिव्या दीदी ने उसे ज़ोर से पैर चलाने को कहा। मेघनाद की चीखें धीमी होती गईं, लेकिन उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। उसने रघु पर थूका। मुझे लगता है उसने उसकी ज़िप खोली, उस पर पेशाब करने के लिए। रघु लड़खड़ाते हुए उठा। मोंटी आगे बढ़ने ही वाला था कि ऋषभ और साहिल उस पर झपटे और उसे धड़ाम से नीचे गिरा दिया। मेघनाद ने लात मारी, लेकिन नाकाम रहा, वह फिसलकर गिर गया। रघु लुढ़क कर उसके ऊपर चढ़ गया। ड्राइवर हॉर्न बजाते हुए गाड़ी को और दूर ले गया।

मेघनाद चिल्लाया, 'मदार—' रघु के थके हुए मुक्के से उसके शब्द बीच में ही रुक गए। मेघनाद चिल्लाया, '*SAALE, AAJ TO BACH JAEGA*लेकिन कल? (आज तो तुम बच जाओगे, लेकिन कल?)

रघु ने मेघनाद को पागलों की तरह घूंसे मारे। मैंने मेघनाद का चेहरा एक बेजान गुड़िया की तरह इधर-उधर लुढ़कते देखा। पहले तो मुझे यह दिखाई नहीं दिया... मेघनाद ने अपनी पीठ से बंदूक निकालने के लिए हाथ बढ़ाया... उसने बगल में देखा, और उसी क्षण उसकी नज़रें मेरी आँखों से मिलीं, और मैंने एक ऐसी बुराई देखी जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था।
ऐसा पहले भी देखा था, मैं सहम गया और रघु की आँखों में देखा। तभी रघु ने वो कर दिखाया।

मैंने उसे देखा।

यह बहुत ही धीमी और कष्टदायक प्रक्रिया से हुआ।

मैंने सब कुछ देखा; रघु ने जैसे ही कनस्तर की ओर हाथ बढ़ाया, मैं डर के मारे कांप उठी, यह सोचकर कि आगे क्या होगा; उसने मेघनाद के सामने उसे लहराया, और मेरी नज़र ऋषभ और साहिल पर पड़ी जो भयभीत होकर देख रहे थे; वे भी जानते थे कि क्या होने वाला है, रघु किस तरह तबाही मचाने वाला था। फिर उसने कनस्तर का ढक्कन खोला। मैंने करण भैया और अंशुमन भैया के मुंह खुले देखे, वे चीख रहे थे, उनके चेहरों पर पछतावा साफ झलक रहा था, और राहत भी कि उन पर वह तेजाब नहीं गिरेगा जो बेरहमी से सब कुछ जला देगा। जब उसने कनस्तर को झुकाया, तो संक्षारक तरल बाहर छलक गया; तब मेरे मन में सिर्फ अनिर्बन जूनियर, रघु की भाभी और उस जीवन का ख्याल आया जिसे रघु संवारने की कोशिश कर रहा था, जो तेजाब से नष्ट हो जाएगा, जलकर राख हो जाएगा। जैसे ही मेघनाद के चेहरे पर पहली बूंद गिरी, मैंने अरुंधति, ऋषभ और साहिल के बारे में सोचा, जो अपने दोस्त को फिर से खो देंगे, उनका सारा इंतज़ार व्यर्थ हो जाएगा, उन तीस सेकंड में वे उसे फिर से खो देंगे। मेघनाद ने एक अमानवीय चीख मारी, एक दिल दहला देने वाली चीख, और पहली और दूसरी बूंद के बीच उस क्षण भर में, मैंने रघु के पास दौड़कर उसे अपना जीवन बर्बाद करने से रोकने की कल्पना की थी, लेकिन कुछ भी इतना तेज़ नहीं था, और दूसरी बूंद के साथ, मैं त्वचा को जलते हुए, आँखों को बिखरते हुए, पिघलते हुए देख सकती थी, और मेरे शरीर में अपराधबोध लावा की तरह दौड़ रहा था। यह हमारे लिए था, उसके लिए नहीं, और हर उस पल के साथ जब उसने कनस्तर को ऊपर उठाया हुआ था, उसमें से एसिड दृढ़ता से बह रहा था, वह सब कुछ नष्ट कर रहा था, न केवल
मेघनाद का चेहरा, बल्कि रघु को सामान्य जीवन जीने का जो बहुप्रतीक्षित मौका मिला था, वह भी। मेघनाद का विकृत चेहरा देखकर और उसकी दयनीय चीख सुनकर,

रघु चीख उठा। मेरी आँखें धुंधली होने लगीं, और जब तक कनस्तर खाली नहीं हो गया, जब तक मेघनाद मेघनाद नहीं रहा, बल्कि पिघले हुए मांस का एक ढेर बन गया, तब तक रघु को अपने किए का एहसास नहीं हुआ और उसने कनस्तर को एक तरफ फेंक दिया, और एक तरफ गिर पड़ा।

ऋषभ और साहिल ने उसे ऊपर उठाया। एक तरफ मेघनाद तड़पता, चीखता पड़ा था, उसके हाथ-पैर कांप रहे थे, वह गल रहा था, मानो मर रहा हो। एक आखिरी सांस, और फिर सन्नाटा। पुलिसकर्मियों से भरी कुछ जीपें घटनास्थल की ओर बढ़ने लगीं। रघु उठ खड़ा हुआ। हमारी कार तेजी से आगे बढ़ गई।

मेघनाद ने आखिरी बार जब मेरी तरफ देखा था, उस पल को याद करके अब मैं कांप रही हूँ। अधूरे काम को पूरा करने की चाहत, आँखों में बदले की भावना, वो नीचता, वो धमकी साफ़ झलक रही थी। रघु ने ये सब महसूस किया था। उसने मेरी तरफ देखा, फिर मेघनाद की तरफ, और उसके अंदर कुछ बदलाव आ गया था। रघु ने ये अपराध किसी आवेश में आकर या आत्मरक्षा में नहीं किया था। जब उसने वो कनस्तर खोला, तो उसे पता था कि वो क्या कर रहा है। उसने हर विकल्प पर विचार किया था। उसने जानबूझकर अपने भविष्य का दूसरा मौका बर्बाद कर दिया था। उसने अपनी जान बचाने के बजाय मेरी आज़ादी, मेरी सुरक्षा और मेरी जान को चुना था।

रघु गांगुली, मेरा जीवन भर का सबसे अच्छा दोस्त... क्या उसने किसी आदमी की हत्या कर दी थी?

ई-बुक यहां से डाउनलोड की गई:techiestax.blogspot.in

25 अप्रैल 2003

हम एक टेलीविजन की दुकान पर थे। एनडीटीवी की समाचार स्क्रीन हमारे सामने से गुजर रही थी।

सड़क पर हिंसक घटना में एक व्यक्ति की जान लेने का आरोपी रघु गांगुली अभी भी फरार है।

30 अप्रैल 2003

मम्मी, पापा और मैं रात का खाना खा रहे थे तभी फोन की घंटी बजी।

यह दीदी नहीं हो सकती थीं। वह अमेरिका जा रही थीं और अगले तीन घंटे तक लैंड नहीं करतीं। हम सबने एक-दूसरे को देखा। इस घर में फोन तभी बजता है जब दीदी किसी दूर देश से फोन करती हैं। वापस आने के बाद साहिल और अरुंधति रघु के गायब होने के बारे में बात करने के लिए हमें फोन करते थे, लेकिन वह भी धीरे-धीरे बंद हो गया। उन बातचीत में कुछ भी नहीं बदला। वह बिना किसी निशान के गायब हो गया था।

फोन मम्मी ने उठाया। उन्होंने कहा, 'यह

तुम्हारे लिए है।'

'मेरे लिए?'

'यह कौन है?' मैंने पूछा, मेरे सबसे बुरे डर सतह पर उभर रहे थे।क्या पुलिस ने उसे ढूंढ लिया? अब क्या होगा?

'ब्रह्मी शर्मा नाम की कोई लड़की है,' मम्मी ने कहा और रिसीवर मुझे थमा दिया।

बोलते समय मेरी उंगलियां कांप रही थीं। 'लेकिन... तुम...'

दूसरी तरफ से लड़की ने अपनी आवाज़ में कहा, 'मुझे जबरदस्ती यहाँ से भेज दिया गया।' रघु की याद दिलाता हुआ, अधिकारपूर्ण और आत्मविश्वास से भरा हुआ। '...उसके दोस्तों ने कहा था कि मैं उसके लिए अच्छी नहीं थी। यह सच था।'

उसके शब्द मुझ पर किसी हथौड़े की तरह लगे। ऋचा ने जो कुछ कहा था, वह सब मेरे दिमाग में कौंध गया। मैं बेचैनी से उसका अर्थ खोजने लगा।

... ताऊजी आए थे, लेकिन उन्होंने आने से इनकार कर दिया... रघु के दोस्त साहिल, ऋषभ और अरुंधति आए और बिल चुका दिए... और कुछ दिनों बाद, उन्हीं दोस्तों ने उसे यह दुखद खबर दी... ब्राह्मी की नींद में ही मृत्यु हो गई थी... रघु ब्राह्मी को आखिरी बार देखने के लिए अस्पताल के दरवाजे पर जा गिरा। अस्पताल अधिकारियों ने उसे अंदर जाने से रोक दिया...

बिना अनुमति के बिजली के श्मशान में घुसने की कोशिश करने पर पहरेदारों ने उसकी पिटाई कर दी... वह खून बहता हुआ वहीं खड़ा रहा, जबकि वे उसे पीट रहे थे।

उसने अपनी प्रेमिका को हड्डियों, राख और धूल में बदल दिया... जब उसके दोस्त उसकी राख लेकर आए, तो वह उनके चरणों में गिर पड़ा। राख मिलते ही वह गायब हो गया।

'तुम थे... तुम्हारी मृत्यु हो गई।'

'ऋषभ और साहिल ने उसे बताया कि मैं मर गई थी। वैसे भी मेरा बचना नामुमकिन था,' लड़की ने कहा। 'ये बातें फिर कभी करेंगे। मुझे आपसे मिलना है। हमें मिलना होगा।'

रघु को ढूंढो।

मैं जानता था कि क्या करना चाहिए।।।

आपको यह भी पसंद आ सकता हैं

वह लड़का जिसने प्यार किया
दुर्जोय दत्ता

जीवन में एकमात्र ऐसी चीज जिसकी आप योजना नहीं बना सकते, वह है कब और किससे प्यार करना...

रघु यह दिखाना चाहता है कि उसके जीवन में कुछ भी असाधारण नहीं है—प्यार करने वाले मध्यमवर्गीय माता-पिता, एक बड़ा भाई जिसे वह अपना आदर्श मानता है, और आईआईटी में पढ़ाई करने की योजना। और वह यही दिखाना चाहता है—कि उसका जीवन सामान्य है।

लेकिन भीतर ही भीतर, अपने सबसे करीबी दोस्त को डूबने देने का अपराधबोध उसे सताता रहता था।
स्कूल का स्विमिंग पूल उसे अंदर ही अंदर परेशान करता रहता है। और भले ही वह दुनिया से छिपकर और प्यार व दोस्ती से दूर रहकर खुद को सजा दे रहा हो, फिर भी वह आकर्षक ब्राह्मी की ओर खिंचा चला जाता है—एक ऐसी लड़की जो बिल्कुल उसके जैसी है, फिर भी बहुत अलग है। रघु चाहे कितनी भी कोशिश कर ले, उसे ब्राह्मी की परवाह होने लगती है...

फिर जिंदगी उसे एक ऐसी मुश्किल परिस्थिति में डाल देती है जहां उसे अपने सबसे बुरे डर का सामना करना पड़ता है।

क्या प्यार उसे इस स्थिति से बाहर निकालने के लिए काफी मजबूत होगा?

वह लड़का जिसने प्यार कियादो भागों वाली प्रेम कहानी का पहला भाग, गर्मजोशी भरा और रहस्यमय, तीखा और अनोखा, अद्भुत रूप से यथार्थवादी और खतरनाक रूप से अवास्तविक है।